

विज्ञप्ति.

॥ श्री जिनवरैज्ञायनमः ॥

श्री जैन धर्ममां रामरस अने ढालसागर ग्रंथ सर्वोत्कृष्ट गणाय ठे; जेमां रामरस ठपाएल हतो, अने आ ग्रंथ ठपाय्यो नहोतो; वली जखेली प्रत कोइ ठेकाणेशी रु० २०-२५ खर्चतां पण मलवी मुद्रकेल; एटलुंज नहि पण बीजा ग्रंथ करतां आ ग्रंथ सुत्र साथे घणोज मलतो आवे ठे; विगरे जातनी स्वामीउ दूर करायाना हेतुथी आ ग्रंथ जैन बंधुनी सेवामां मूकुंठे.

आ ग्रंथमां नव खंनठे. जेमां वसुदेव चरित्र, ढण्णवलदेव चरित्र, वायिसमा तिर्यकर श्री नेमजीनुं चरित्र, सामप्रद्युमन चरित्र, तथा पांन्यारख्यान विगरे घणी रसीक वावतोनी समावेश थयेलोठे.

जूदे जूदे ठेकाणेशी प्रतो मेलवी प्रसंगे नवी ढालो वधारी आ ग्रंथ पंमीतराज पुज्य श्री ७ देवजी स्वामीना शिष्य सर्व गुणालंकृत मुनीराज श्री द्विपचंदजी स्वामीना आश्रय तले सुधारी आ ग्रंथ प्रसिद्ध कीयो ठे; परंतु केटलाक कारणेने लीधे ताकीव थवाथी एफ सुधारयामां इष्टीदोष थयो होय तथा टाइप संबंधी कांड चूक पनी होय तो विद्वजनी सुधारी वांची शेवकने द्दमा करशो, एहवी मारी नमृता पूर्वक चिनंतीठे.

लि० मगनलाल जवेरचंद.

॥ दोहा ॥

श्रीवितरगायनमः ॥ अथश्री ढालसागर लिख्यते ॥

श्री जिन आदि जीनेश्वरु, आदि तणो किरतार;
अरतिअसुखडःखआपडा,
सुगलाथर्म निवारणो, वरतावण व्यवहार ॥१॥ सांति सकल सुखदायकु, सांतिकरण संसार;
सुरनरसारे सेव ॥३॥ पार्थ
मारी निवारण हार ॥२॥ नेमनाथ मति नीर्मलि, अनमिनमावण देव;
बालब्रह्मचारी प्रभु, विरस्वामी त्रिजुवन तिलो;
गुणम
पार्थ सारिखो, सुखसंपति दांतार;
धुडउपडव्य ढालणो, नामे सदा जयकार ॥४॥ कालअतितेजेहुवा,
वर्त्तमान जिन ईश;
कोफीदोयकेवल
खिनो प्रंफार;
तिर्थकर चडबिसमो, सासणरो सिरदार ॥५॥ गौतमगुरु गुरुमे वमो,
गौतम करं प्रणाम्,
धरा, चरणन मुनिसदीस ॥६॥ गणहर गौतम गुणनिलो,
गौतम गुरुयो नाम;
गौतम कंइ नमो,
॥७॥ कामधेनुं गौ शब्दथी, ततेतरु सुरवृद्ध;
ममेयुमणि चिंतामणि, गौतमस्वामी प्रतद्ध ॥८॥ देश देसांतर कांइ नमो,
गौतम करं प्रणाम;
करी मागु
सुखलोक अथाण;
घर वेठां हरीपुरिसो, गौतम करो ध्यान ॥९॥ ब्रह्मणी ब्रह्मा सुता,
सारइ मात प्रणाम;
करी मागु
मति निर्मली, जीम पासुं कवि नाम ॥१०॥ कविवाणि वारु कही,
जस तुवि तुं माय;
तुज तुवा विण बोलणो,
सुख
सांहि कहाय ॥११॥ पढे गुणे मति आगलो,
राजसन्ना सनमान;
लहेनिवाजा ताहरा,
मोटप मेरु समान ॥१२॥ मात
मया करी सांनलो,
सेवकनी अरदास;
तिमकर जीम पोहचे सहि,
माहरा मननी आस ॥१३॥ गरु नमीईं गुरुतानिण,
गुरुविण गुरुता नाहि;
गुरुजनने प्रगढो करे,
लोक त्रिलोका सांहि ॥१४॥ गुरु कारीगर सारीखा,
टांके वचन प्रहार;
पढरथी प्रतिमा किया,
पुजा लहे अपार ॥१५॥ अंधकार अज्ञानता,
ज्ञान सलाइ सार;
फेरी किया जग देखता,
धन्य
गुरुना उपगार ॥१६॥ तिर्थकर गणधर सहु,
सारइ सुगुरु सकाम;
सहु मलि सुज आपज्यो,
काव्यकला अजीराम ॥

॥१७॥ उत्तपति श्री हरीवंशनी, हलधर कृष्ण नरेश; नेमी मदन जुग पांमवा, चरित्र ननुं सुविशेष ॥१८॥ यादव कथा
 सोह्यामणी, जे सुणशे नरनार; सुठततणो फल पामशे, नहि संदेह लगार ॥१९॥ ढाल १ ली ॥ वांछ श्री आदि जिणंद
 कियो जिन धर्म प्रकाश ॥ए देखी॥ नहि संदेह लगार निरोपम, श्रीहरी वंश वखाणुं; वत्तम पुरुपतणा गुण सुथतां, धाई
 जन्म प्रमाणुं; जंबुद्वीप प्रसिद्ध प्रमाणे, जोयण लाख कहावे; पटकुलगीरिने खेत्रसातगुं, शोजा अथिक पावे ॥२०॥ नरत
 खेत्र जोयणसे पंच, तवीसकला ठोठावे; गीरी वैताढ्य विचाल विशेषके, आधोआप कहावे; सोल हजार सुसारदेशमें,
 आर्थ साढापचविसे; जिहां जिन पंचकल्याणीक होवे, इम जिनमतमां दिसे ॥२१॥ कोसंबि नगरी वनवामी, कुचा वाव
 विशेषी; गढमढ मंदिर पोल पागारके, इंडपुरीसम लेखी; राजा राज करंत विशेषे, विद्यावंत सनूरो; हय गय रथ पायक
 दल पुरित, राय महा रणसूरो ॥२२॥ आयो मासवसंत विराजीत, राय सुमुख सरागी; रामतिरंग करेवाकारण, नृपतिनी
 मति जागी; कोइ अटाले कोइ माले, नारी तमासे लागी; कौतकजोणुं वंसविगोणुं, हुइ घणुं अनुरागी ॥२३॥ वीरकोविंदक
 केरी नारी, वनमाला सुविशाल; नयणे निरखि हरखि राजा; राग धरे ततकाला; रुपे रुमी रंजा सरपी, वंश वरतावे देवा;
 आइ इहां हुं जाणुं ए मुऊ, पास करावण सेवा ॥२४॥ खेळी ख्याल बेहाल प्रणामे, राजा मंदिर आवे; मंत्रीधर उपाय करीने
 वनमाला राय मेळावे; नारी सुसिला पर पुरुपाने, कदिय न आवे पासे; वायतणे वलदेवलनीध्वज हुइअपुठि नासे ॥२५॥
 शीलसुथारी जे ब्रह्मचारी, नारी देखी नचुके; रामचंडजी सुर्पनखा ज्युं, माथे मारी मुके; जुंभंजुंमा दोय मीलंता, कोमीअ
 कारज किजे; दीरघराजा बुजणिराणी, केरी छपमा दिजे ॥२६॥ राजाराणी प्रिततणे वंश, जोगवे जोग छदार; वियुत पाते

मरण लाहि तव, हरीवरपे अवतार; त्रिजे प्रहरे के त्रीजे वासर, त्रण मासे त्रण वरषे; प्रगट उखाणो ए जग जाणुं, पुन्य
 पाप फल वरषे ॥७॥ नारी विजोगे विरकोविंदक, गहिलो गर्व गेमारो; रख्योपख्यो विलव्यो विलखाणो, विक्कल थयो
 अपारो; तापसरुपी चारीत्रपालि, कष्टताणि करी कोनी, स्वर्गसौधर्मेकील्विपीयामे, देव थयो दिन श्रोमी ॥८॥ किथांकर्म
 न कोइ बुटे, कांइ राव ज्युं राणो; राजा राणि साथे केहिपरे, साले वैरे पुराणो; पहिलि ढाल रसाल रागमें, आएंइ रंगविलासा;
 श्री गुणसागर सुरीपर्यपे, सबजुग मिति आसा ॥९॥ ॥दोहा॥ सेवकरुपि देवता, कहे तदा सिरनाम; कुण कारण
 सुर उपना, आप प्रकासो स्वाम ॥१॥ अवधिज्ञान करी देखियो, पुर्वजन्वंतरताम; राजाराणि पेखिया, युगलपणेअनी
 राम ॥२॥ अंगुठाथि उपनी, अग्नीज्वाल असराल; कालरुप कोप्यो तिहां, आव्यो सुर ततकाल ॥३॥ मारुतो सुरगति लहे,
 खेत्रस्वप्नावे एह; छःखफोड्यो फूटे नहि, तो फरी चिंते तेह ॥४॥ नरक तणी गति संचरे, पावे छःख अपार; एह मतो मनमें
 धरी, किधो तव अपहार ॥५॥ साथे लिया सुरजाय; वनमें मुकि देवता, मन रद्वियायत थाय ॥६॥ ढाल
 २ जी ॥ विसजणासु वादन किजे ॥ ए देशी ॥ आदिनाथनो नंदननीको, बाहुबल बलवंतजी; ऋरतेश्वर चुजबले हरायो,
 ए बहुलो विरतंतजी ॥ अ० १ ॥ पुत्र पनोता तेहने प्रगट, तिनलाख गुणधामजी; सोमजसाथी सोमवंसनी, थिरथापन अग्रनी
 रामजी ॥ अ० २ ॥ सोमयस्या कुंवर करमेतो, श्री श्रेयांसकुमारजी; आदिनाथने जीणे करायो, इक्षुरसनो आहारजी ॥ अ०
 ३ ॥ तेहनो नंदन सर्व जोमजी, तेहनो हुवो सुचुमजी; सुधोपराजा तस पाटे, वैरीकुलनो धुमजी ॥ अ० ४ ॥ घोषसुबुध्न
 तेहनो नंदन, महानंदसुनंदजी; सुनइसुनंकर सोमवंसे, उदया पुन्यमचंदजी ॥ अ० ५ ॥ कोमुगतेको सुरगति पामी, एह

वंसना नृपजी; अस्सव्यातमापेठीए उपज्यो, किरतिचंड अत्तुपजी ॥आ० ६॥ निसंतान राजा तय मूयो; देयतणे संजोग
 जी; नृपपववी लायक नहि कोइ, मजिया सधला लोकजी ॥आ० ७॥ पांचविद्य करी वनमें आया, सुनटने मंत्रीशजी;
 हरीहरलि युगलपणे देवी, मनमें धरे जगीशजी ॥आ० ८॥ अंबरधी सुरयाणी प्रगटी, सोच करो तुम्ह कांहिजी; चंपा
 नगरीनो जल नूपति, थाप्यो एह उवाहिजी ॥आ० ९॥ राजाराणिनें तुम्हे देज्यो, मदिरा मांस आहारजी; मारो वचन
 न मानशोतो, करगुं सहि संहारजी ॥आ० १०॥ सुरवचने चंपापुर नायक, करी थाप्यो सहु तेमजी; देरी देरपलुं नदि
 मुके, अमरत्व पाव्यो एमजी ॥आ० ११॥ हरिनामे राजा तय हुबो, लोक नम्यां करजोमजी; पायकजायक परीग्रह
 पुरो, हयगयरथनो कोमजी ॥आ० १२॥ एह थापना हरियंशनी, वसुधामें विल्यातजी; वसमा जीनवरजीने चारे, आंगेनी
 सुणो वातजी ॥आ० १३॥ हरी हरणीधी नंदन उपल्यो, पृथ्वीपती गुणधामजी; महागिरी हिमगिरी वसुगिरी राजा,
 उत्तम नाम प्रणामजी ॥आ० १४॥ मंत्रिगिरी सुयसानर नायक, ए मोटो राजनजी; त्रीखंड पृथ्वी मांहि अखंडीत,
 वरतावी निज आणजी ॥आ० १५॥ एवा हरियंशी नृप हुवा, संख्यारहित अपारजी; क्लिणसुगति क्लिण सिवगति
 साथी, सफल कीया अवतारजी ॥ आ० १६॥ मुनि सुवत स्वामि जगत्तारक, राजप्रही हरियंशजी; मुनि सुवत सुत
 सुवत राजा, वंशतलो अवतंशजी ॥आ० १७॥ सुरी नृपनो अंतर होतां, मधुरापुरीमोफारजी; वसु पुत्र वरवृहत्केतु
 वर, वंश विन्नुपण सारजी ॥आ० १८॥ केतजाइक कालने अंतर, यडराजा वरपद्मजी; जेहधी जावव नाम कहाया,
 धन एपुरुष रतनजी ॥आ० १९॥ यडराजानो सुत सनुरो, सुर सरीखो रावजी; साखा प्रतिसाखा हने चाली, तेकदेवा

चित्त चावजी ॥आ० १०॥ बिजी ढाल सुणंतागौरी, छःख डरगतिनुं नांजजी; गुणसागर गुणवंतनमंता, सिजे सधलां
 काजजी ॥आ० ११॥ ॥दोहा॥ सुरवंश सुरजमां, नंदन उपज्या दोय; पहेलो सौरी सुलक्षणो, सुविर विजोहोय ॥१॥
 सौरीकुमर राजा कियो, अपर कियो युवराज; सुरनुप संजमग्रही, सार्थी आत्मकाज ॥२॥ सौरीराय सोरीपुरी, वास
 कियो निज वास; लघु भ्राताने आपीयो, मथुरापुरी निवास ॥३॥ ढाल ३ जी ॥ इणपुर कंबल कोइ नलेशी ॥एदेशी
 सौरीराय नंदन वखाणुं, अंधक विष्णु वमो नृपजाणुं; सुविरराय सुत विश्वदित्तो, प्रोजग विष्णु जगमें जस जीतो ॥१॥
 रायसुविर मथुरानो राजा, सुतने दिधो जाणीसकाजा; सिंधुदेश जाइ पुरवासी, वास कियो नृपलिल विलासी ॥२॥ अंधक
 विष्णु कुमर पटथापी, हयगय रथ पायक सहु आपी; सुप्रतिष्ठ सुनिपें व्रत पामी, सौरीराय हुवासीवगामी ॥३॥ जोजंगविष्णु
 नरेशर राजा, पाले प्रजाना सारे काजा; उग्रसेन आदिक सुत सूरु, शल्लशास्त्रकला गुणपुरा ॥४॥ अंधक विष्णु धरेपटराणी
 रुपरुमी रंजा समाणी; सुभ्रञ्जा नामे गुणखाणी, सतियमांहि आदि वखाणी ॥५॥ जाया कुंवर दसहि दसार, पुत्रीदोय अति
 उत्तम सार; समुद्रविजय गुणनो भंभार, दाता नुक्ता अधिक उदार ॥६॥ अहोन्न ३ महारण सुरो, स्तमित नाम कुंवर गुणपुरो
 सागर ३ उपमाधारी, हिमतवान सहुने सुखकारी ॥७॥ अचल ३ संग्रामे लहि, धरणिधरसम धरण संग्रहि; पुरण पुरो सधली
 वात, धन्य अत्रिचंद्रतणा अवदात ॥८॥ श्रीवासुदेव दूगंधक देव, जेहनी सारे सुरीनर सेव; ए दसही बंधवनी जोमी, पुन्य
 पसाइं पहुचे कोमी ॥९॥ समआचारी सधला कहिया, महोमांहि सप्रिता लहिया; मायवापनि भक्ति करता, बहिन
 न आशीसे जयवंता ॥१०॥ बहिन प्रलि दोइ समसीला, प्राग्यवंति अति रुपसुलिला; कुंति रुप कलागुण पात्र,

माहेंद्रि महिमावंत सुगात्र ॥१॥ कुंतिकुमरि व्याहण काम, कवि कुरुवंश कहे थनिराम; आदिनाथनो सुत कुरु
 जाणुं, तेहथी कुरुदेत्र कहाणुं ॥२॥ कुरुसुत हस्तीराय कहायो, हथीणा उरचन नगर वसायो; हस्ती नृप संतान
 वखाणुं, विष्व विर्य नरेश्वर जाणुं ॥३॥ तदनतर कुरुवंशो वारु, सनंतकुमार चक्रीश्वर वारु; शांतिकुंधु अरजीसुख
 दाया, दोदो पदवी नाथ कहाया ॥४॥ इंद्रकेतु नृप किरति केतु, शुच विर्य समेतु; रायअनंत विर्यरुत्तविरज, सु
 जम चक्रीश्वर अति धिरज ॥५॥ असंख्यात नृप हुवा अनंतर, सांतनुराय हुवो हथीणाउर; दूखकेदारण साधुउजागर
 त्रिजीढाल कहे गुणसागर ॥६॥ ॥ दोहा ॥ हस्तिनागपुरवर धणी, पाले राज निशंरु; पण राजाने एकए, लाग्यो वनो
 कलंक ॥१॥ आहीमो करतो फीरे, जीवतणो संहार; शील्य नमाने केहनी, ए मोटो अविचार ॥१॥ सायरजल खारोकियो
 चंद कलंकी कीथ; कमलनाल कांटा घणा, दायक वित नदीथ ३॥ राजामन अविवेकतां, वाल्हा नरा वियोग; वाम
 वाम जुल्यो घणुं, फिटरे दैव कुलोक ॥४॥ ढाल ४ थीं ॥ देखी सखी प्रनु कंठ विराजे तथा श्री मंदिर साह्वि
 मेरा ॥ ए देशी ॥ एक दिवस राजा वन जाई, करी आहेंनी रूप हो; लंठ कुलंठ कुजाति कलेसी, चुंन नराजुं भुप
 हो, कुविसन मारग माथे धीग धीग ॥१॥ साच कहे ए लोकहो, इह लोके थपजस अति पामे; अरु विणसे परलोक
 हो ॥ कु० ३॥ मृग साथे राजा एकाकी, भटवी मांहि थावंतहो; गंगा तट एक देवल देखी, गाढो सुख पावंतहो ॥
 कु० ३॥ एटले लेचरनी वर कुमरी, अमरीने अनुहारहो; नयणे निरखी हरखी राजा, चिंतवे चित मोजारहो ॥ कु० ४॥
 के इंद्राणी के हरी राणी, के हरनार उदारहो; विद्याधर एक आबी नांखे, सांनज राय विचारहो ॥ कु० ५॥ जानु सुता ए

गंगा देवी, गिरा वताढानवासह; ५ कुंवरी वर पूठयो राजा, जंघाचारण पासहो ॥कु० ६॥सांतनुराया सीधो वता
 यो, गंगातट विवाहहो; देवल कीधो कारज सीधो, स्वामी आणी उच्चाहहो ॥कु० ७॥खेचर जइ खेचर गति लायो,
 मांड्यो व्याह संमाणहो; गंगा न्नाखे तो हुं व्याहुं, जो मानो मुज आणहो ॥ कु० ८ ॥ जीम कहीशुं .म करशो
 राजा, वाइ कीया रसनाहीहो; काम विमासने धुर कीजे, अविमास्यो डख प्राहीहो ॥कु० ९॥ काम असोचि कीयोथो
 आगे, सूर्यसा नरनाथेहो; इंद्रतणी नाटकणी परणी, अरति करी सहु साथेहो ॥कु० १० कणिक मांही पने जब
 पाणी, थय तामनी कामहो; वायस बोड्यो कुंन अकारज, लोकवचन अनिरामहो ॥कु० ११॥ पतिव्रता पति साथे
 न वाजे, जन्म अकारज जातहो; ठोकी वजाइ हांमी लीजे, अत्रतणी शी वातहो ॥कु० १२॥ सधली मानी करी
 पटराणी, आव्या मंदिर रायहो; लाम्हीनी लावनता निरखी, सहु रलियायत थायहो ॥कु० १३॥ गंगा जायो लोक
 सुहायो, श्रीगंगेव कुमारहो; राजा नव नवा कीधा उडव, जगमांही जयकारहो ॥कु० १४॥ गंगा वर मागंती बोले,
 स्वामी आहेमो ठोमहो; राय न माने पुत्र लेइसा, पिहर गइ मुहसोमहो ॥कु० १५॥ कुव्यसन वालो वाच न माने,
 मुंढ न जाणे मर्महो; नेम न माने प्रेम न माने, नवी माने कुल कर्महो ॥कु० १६ ॥ मात न माने तात न माने,
 धात न माने जोरहो; नारी न माने नंद न माने, बोले बोल सजोरहो ॥कु० १७॥ हाथी जेरे हरायो होवे, कीम
 सामो थया जायहो; जमीए नहीतो न्नाजी सकीजे, रुसी गइ सान्यायहो ॥कु० १८॥ मात पिता घर नंदन शिष्यो,
 सकल कला गुण बंदहो; चववीसां वरसानो हुन, नंदन आनंद कंदहो ॥कु० १९॥ एक दिवस राजा निकलायो,

साथे घणा नर वृंदहो; गंगातटे अति जगमो मञ्चो, श्री गंगेय नरेंद्रहो ॥ कु० २० ॥ गंगा चित्ते दोइ पवामा, ए
मुऊ आरति ठामहो; पुत्र मरंता नपुत्री प्रीतम, मरंता रंम कुनामहो ॥ कु० २१ ॥ गंगा आनी दो समजावी, पत्नी
गइ ततकालहो; गुणसागर नृप सुत घर आध्या, चौथी ढाल रसालहो ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ राजा कुव्यसन नवी
तजे, गंगा नाचे चार; साहंकारी नारीनी, ए सही नाणी विचार ॥ २३ ॥ आदरनो जजो कापमो, निरादर स्यो चरि;
नली समुहनी रावनी; महातम विणाली खीर ॥ २४ ॥ बालो सोनुं सामटुं, बाळो नोग विनास; आदर अजरामरमहा,
वीजुं सहु विलास ॥ २५ ॥ वेचीकुटी कामनि, लातधबुकाखाय; निःपितामर्यादरे, ते कीम मुहुगी थाय ॥ २६ ॥ तेज
एानसहेताजणो, त्रियन सहे अपमान; तीम तीम मूल बाधे घणो, शंरु धरे राजान ॥ २७ ॥ जाव जीवनुं रुशणुं,
गंगादेवी नरेश, एक वचनेने कारणे; शह्यो नजाय कलेस ॥ २८ ॥ कुंयरे करी नृप सोनीति, कमले करी जीमयार; दिवस
करी दिनकारज्युं, सिजेकरी जीमनार ॥ २९ ॥ जिमुनातट नृप आवीयो, दिठी कुमरी एरु, तनमन लाग्यो तेहस्युं, निसरीगयो
विवेक ॥ ३० ॥ ढाल ५ मी ॥ बंधव बोल मानोहो, ॥ ए देशी ॥ राजा प्रेम लाग्योहो, लोचन हुवा लाजनी; लज्यागुण
चांग्योहो ॥ ३१ ॥ नयन अन्याइठे खरा, जिहां तिहां लागेहो; सोचन आगत पाठले, जुंदापण आगेहो ॥ ३२ ॥
कोमी कुहेमा केजवे, एकिकिमां कुयाणीहो; चतुरा चहुटे पारीखो, एमनकी सहिनाणिहो ॥ ३३ ॥ स्वर्गमृत्य पाता
लनी, सव नारी जुंटीहो; जातीतींची अंधरे, अधयचपी तूटीहो ॥ ३४ ॥ एकही अंग यलाणता, रुचिपार नपावे
हो; ब्रह्मा विष्णु महेश्वरु, ए शिजा गावेहो ॥ ३५ ॥ इंच चंडनर राजनी, वज्रयंता बलीयाहो; कोको कोको को नदि,

एह माया बलियाहो ॥रा० ६॥ नयन न पाठा आवहि, जाणी बांध्या ताणीहो; नाविक साथे बोलीयो, राय कोमल
 वाणीहो ॥रा० ७॥ ए कहे केहनी कुंवरी, मोकर तुं जाणेहो; एकुंवरी नृप, माहरी, राय कर सुख आणेहो ॥रा० ७॥
 सत्यवंती नामे नली, सुरतरुनी वेलीहो; पुन्यवंत जे प्राणिया, श्राद्धतसु जेलीहो ॥रा० ८॥ राय प्रधान बोलावीयो,
 ए मुज परणावोहो; ढिल किहां ढीलो पमे, व्याह वेग करावोहो ॥रा० ९॥ नावमीयो माने नहि, एक अमवीरो
 मेहो; पुत्री पुत्रा कारणे, नृप पदवी लोमेहो ॥रा० १०॥ वीलखाणो राजा फीरी, निज मंदिर आवेहो; बापडचिंतो
 देखता, कुंवर छव पावेहो ॥रा० ११॥ जक्ति नहि साबापनी, नवी जाणे पीमाहो; तेतो बेटा जाणवा, पेटना किमाहो
 ॥रा० १२॥ जाणी वात सुवेगसुं, नाविक समजावेहो; करी दिलासा तेहने, नृप व्याह मनावेहो ॥रा० १३॥ राज
 तणे तो कारणे, सुत बापने मारहो; गंगेवा गुरु आपणो, गुरु कार्य सारेहो ॥रा० १४॥ माहरी धरणिश्नो, हुं धणीज
 कहेताहो; उंचा जाइ अंबरे, बोले गह गहताहो ॥रा० १५॥ करी नहि करशे नहि, को करत न दीवोहो; गुरु गंगेवा
 सारीखा, जगमें जस सीवोहो ॥रा० १६॥ नाविककुंवरसुं कहे, एठे नृप कुमरीहो; वेली समां फल नीपजे, एसा
 नहि अमरीहो ॥रा० १७॥ सत्यवंती गुंव्याहती, कीधां रंगरोलहो; पंचेंद्रि सुख जोगवे, वर पुन्य कलोलहो ॥रा०
 १८॥ सत्यवंती उर उपनां, दोनंद सलुणाहो; बाप थकी अधिका हुवा, तेजे करी छणाहो ॥रा० १९॥ चित्रांगद नामे
 नलो, कुवरजीनिकोहो; चित्र विरज एडसरो, कुरुवंशी टीकोहो ॥रा० २०॥ राजा आहेमो तजी, गुन्न मारग आयो
 हे; साधु संगति चालता, जगमें जस पायोहो ॥रा० २१॥ पाप स्वमावी पाबला, आतम आराधिहो; काल कीयो

धराण धणा, सुरनी गति सार्थीहो ॥१० २३॥ चित्रांगद राजा कीयो, सब लोका सार्वीहो; श्रीगणेशनरेश्वरे, निज
 वाचा सार्वीहो ॥ १० २४॥ निलांगद गांधर्वसुं, चित्रांगदलक्ष्मीयोहो; कल्हो न मान्यो जाइनो, समरांगण पत्नीयोहो
 ॥ १० २५ ॥ मायरोतीसुत डःखधी, फीर सोग मीटायोहो; पांचमी ढाले सांतनुं, गुणसुरे गायोहो ॥ १० २६ ॥
 ॥ दोहा ॥ सगपण संसारे घणां, जाइ समो नव कोय; लक्ष्मण काजे रामजी, कही केम दीधो रोय ॥१॥ प्रीम
 पड्या जाइ नजे, जाइ विराणा जाज; नरतनूप जर रात्रिमैं, दोम्हयो लक्ष्मण काज ॥ २ ॥ पुरुषोने नारी घणी,
 नारीधी सुत होय; माजागा बंधव हुये, अंतर मोटो जोय ॥३॥ जाइ वयरवीशोधया, श्रीगणेश कुमार; निलांगद
 रणमं हएयो, राख्यो कुल व्यवहार ॥ ४ ॥ लघु भ्राता पट थापीयो, वरती आणा श्रयंम; प्रवल प्रताप महावली,
 तसजुज बंद प्रचंम ॥५॥ काशी नूपतिने नजी, रुन्या तीन प्रधान; अंबा बाली अंबिका, व्याह तणो मंभाण ॥६॥
 काशी नूप ते तेनीया, राजा राजकुमार; गजपुर धरिने तेनीयो, जाती हिए श्रयधार ॥७॥ ॥ ढाल ६ ती ॥
 इम जिन पुजीए ॥ ए देशी ॥ आमण डमण होइ रह्योरे, गजपुर केरोरे राय; गंगासुत पुठघो तदारे, जावनदेणो
 जायरे ॥१॥ पद नजो सहि निपदिसिदायोरे, पद नगंजिए, पद्विणि इंम पायो ॥ ५० अंकणी ॥ अरति अचुर
 वाधी घणीरे, गहवरीयो नूपाज; जाणे धरणी विवर दीएरे, तो जइ ए पायालोरे ॥५० २॥ जाणी निश्रे वातनोरे,
 निखमररूप; मुज बड्वां लघुता हुयोरे, तो मुज बढो विरुपरे ॥५० ३॥ गंगासुत चाली गयोरे, काशी नूपने पास; कन्या
 तिने भपहरीरे, मांफ्यो जुज उलासोरे ॥ ५० ४॥ नाना लोगा सोचणोरे. बलीया नजम माग. बर्सीया होम करेजो

केरे, नली शिर उपर पागोरे ॥ प० ५ ॥ हत प्रहृत भुपति कीयारे, जीत्यो गंगानंद; कन्या लेइ आर्वीयारे, गजपुरमें
 आंणंदोरे ॥ प० ६ ॥ परणावी तीने तडारे, हरख्यो गजपुर इश; पक्ष प्रसादे हुइ सहीरे, सफल सकल जगीसोरे प० ॥
 ७ ॥ अंबीका उरे उपनोरे, श्री धृतराष्ट्र कुमार; बाला पांफु जाइउरे, अंबा विडर उदारोरे ॥ प० ७ ॥ रोग वसे आनुर
 धीयोरे, बुढ्या नृपनां प्राण; एदया गति अनुसारथीरे, प्राण लीया घट आनोरे ॥ प० ८ ॥ पांफु राजा थापीयोरे, थंनए
 सहु परिवार; पृथ्वी फलदायक महारे, राजा पुन्य प्रकारोरे ॥ प० १० ॥ ठवी ढाल सोह्यामणीरे, गुणसागर उच्चाह;
 नवीक जनो तुमे सांनलोरे, कुंता कुमरी व्याहोरे ॥ प० ११ ॥ दोहा ॥ श्री पांफु प्रथ्वीपति, मधु उठवने
 काज; राजी गाजी वनमें गयो, खेलण केरे साज ॥ १ ॥ खेल खेलतां खांतसुं, एक नर आव्यो हेठ; फलक विलो-
 कन कीजतो, उचो तरुवर हेठ ॥ २ ॥ फलक हाथ राजा लीयो, नारी रूप अपार; सुंदरता नखशीख लगे, जोवे
 वारंवार ॥ ३ ॥ ढाल सातमी ॥ ॥ सीताजी दीएरे उलंनमो ॥ ए देशी ॥ राजा रंज्यो रूपसुं, नयन
 रद्यां लोचाय; जोतां त्रपति न उपजे, सोजा मुख कही न जाय ॥ १ ॥ ए जग मांही मोहनी, मोह्यो सहु
 संसार; पशु पंखी नर देवता, वश कीया इण नार ॥ ए० २ ॥ पहीलो मोह्यो सुरपति, सो लाग्यो इंद्राणी पाय;
 इंद्राणी लाते हएयो, तो तस रोप न श्राय ॥ ए० ३ ॥ शंकर स्वांगज छावीयो, राख्यो पार्वती रूप; टेक तजी त्रिया
 आगले, नाख्यो धरी विरूप ॥ ए० ४ ॥ राधा रूप रामापति, रमीयो रलियायत होय; रासमंजल रचना कीया, ए
 कौतक प्रगढ्यो जोय ॥ ए० ५ ॥ राजा पूठे पुरुपने, ए रूप कहे केहनो होय; कुंति रूप सोह्यामणी, इम नाखे

परदशा साइ ॥ए० ५॥ खेल सहु ए विसस्थो, विसरीयो सहु काज; क्षुधा त्रपा सहु विसर्यो, जाणे मलीए आज
॥ए० ७॥ कुंति कुंति कुंतिको, लाग्यो राजा ध्यान; थोमे जल जीम मांठलो, नृप वेदन असमान ॥ए० ८॥ दीधो
दान अनगल, पंथी सोरीपुर जाय; राजा आगे वर्णवे, गुणवंतो गजपुर राय ॥ए० ९॥ तात गोदे वेठि सूणे, कुंति
नृपना वखाण; रूपकला गुण मन वस्यो, तव कुंवरी करहि निदान ॥ए० १०॥ के परणुं गजपुर धणी, के परणुं पर
न्रय जाय; अवर पुरूप बंधय समा, ए निश्चये मन लाय ॥ए० ११॥ पंढु नृप धर आवीयो, आहाट दोहट अपार;
करे फिरे उचाटीयो, न जणवे केहने सार ॥ ए० १२ ॥ एक दिवस वनमें गयो, खेचर खील्यो देख; आप चिंता
तजी पर चिंता, आणी मनसु विशेष ॥ ए० १३ ॥ विरला जाणे परगुणा, विरला पाले प्रेम; विरला पर कारज
करा, पर डखे डखीया तेम ॥ ए० १४ ॥ उरेपरे अत्रलोकतां, खांको दिवो उदार; उपथ वलिया दाय नजा, एक
घाव रुजावणहार ॥ए० १५॥ पीला काढया अंगथी, उपथे कीध निरोग; राजा पुठे ए वनो, कीयो तुज डख संजांग
॥ए० १६॥ खेचर कहे सुण मित्रजी, मुज राणी लीधो को जोय; केम हुवो हुं एकलो, तेह कारण डख थाय ॥ए०
१७॥ निःकारण उपगारीयो, हुं थारी फीरफीर वलजाठं चाम करावुं खासना, तोहि उर्सीगल नवि थावं ॥ए० १८॥
उपथ वलियां ए ग्रहो, ए मुद्धनीलीजे स्वाम; बहु गुणगारी ए मुद्धनी, लेइ जाये वंठित ठाम ॥ए० १९॥ अत्रवसर जाणी
कामनो, चित्तमांहि आणवो देव; इम कही सोइ चालीयो, निज स्थाने ततखेव ॥ए० २०॥ मुद्धनी प्रसादथी, मन केरी
पहूचे आश; जयति श्रीसुजगतिमति, पामे ते पुन्य प्रकास ॥ए० २१॥ ढाल सातमीए कद्यो, मीलवा उपाय अपार;

पामसे, तो चलो मरवो आज ॥१॥ एम चित्तविते नीसरी, गई महावनमांही; गलफांसो मांमों कह, सुणकलदवतप्रा ॥ह २

ढाल ॥७ मी ॥ गौतम समुद्धकुमार ॥देशी॥ तुं जई केहेजे माय, माहारा मन तणी, पांमु पृथ्वीपति जणीए; कुंतिकुमरी आज, चिरहतुंमारमे; प्राण तज्या विणतुं धणीए ॥१॥ ईम कही गले पास, मांडे जेटले, सानिध हूई तेटलेए, वर मुंछमी प्रभाव; मलवा सुंदरी, राजा आव्यो एटले ए ॥२॥ फलकरूप अनुहार, कुमरी जलखी; पासो तोमी नांखीयोए, पदमनिने परसंग; आतुरता घणी, भाव हैयानो भांखियोये ॥३॥ दासी पास मंगवी, सामग्री सहू, व्याहतणी विधी साचवीए, पूरा मनना कोम; होना होमसुं, हसीरमीमन राचवीए ॥४॥ गर्जे तणी उतपत, चित विचारीनुं; राय जयावी सादरीए, सहिनाणिने काज; आपी मुंछमी, राय गयो घर संचरिए ॥५॥ कुमरी पण घरे आवी, माय जणावीए; दिनकेतेए वातमीए, गूतपणो सूत जायो; जलमें वाहिनुं, जई निसरीयो सुन्न घमीए ॥६॥ कर्ण कहायो नाम मोटो राजवी, माता कीधी उजलिए; कुमरी केरो व्याह पांमूरायसुं, प्रगट कियो पुगीरलिए ॥७॥ सुनसुपना अवलोय सुन्न वेलासहि, युधीष्टर सुतजाईनुंए; जीम महा बलवंत, कौरव किचक, हुंता नाम धराविनुंए ॥८॥ अर्जुनअरि कुलकाल, निष्म करणनो; हणणहार कहाईनुंए, निकुल अने सहदेव; पांम्व पंचए, जगमांहि जसपाइनुंए ॥९॥ परमारथ आराधी, करणिनें बले; मातासुं सिव पामशेए, उचमगति मतिवास; लेहसे ते सहि, गरुअनां गुणगाथशेए ॥१०॥ ॥दोहो॥ तेये समे देश गंधारनो, नृप सुबल एणे नाम; आव ठे

तेहने श्रंगजा, गंधारी आदे गुणग्राम ॥१॥ गोत्रवेदीना वचनथी, धतराष्ट्रने गेह; सकुनी सुत सुं मोकली, कन्या
 आवे तेह ॥२॥ सकुनी धृतराष्ट्रने, जगनी परणानी आव; महामोक्ष्य मंदाणसुं, सयलो मेली ठाठ ॥३॥ कन्या
 नामे कौमुदीनी, देवक नृपनीताम; वीदुर पण परणयो यली, सुधस्या सगला काम ॥४॥ ढाल ॥मुलगी ॥
 श्री धृतराष्ट्र सुमेह, गंधारी उरे, कौरव सतहि सुतपणेए; उपजीया अबचूत उयोधन आदे, वाधे आनंद अतिघणो
 ए ॥१॥ मांहेडि कुमरी ब्याही, दमगोपां जणी, सुत सीसुपाल चरी घणीए; संदेपे संबंध, ग्रंथ यथतोघणो; जाणी कथा
 न रिस्तरीए ॥१२॥ ढाल आवमी एह, नेह धरी सुणे, तस आगणेअफला फलेए गुणसागर गुणगेह, तेह पनो-
 ताए, जेह रुथा रस सांजलेए ॥ १३ ॥ बोहा ॥ उयोधन कपटी महा, कपट केलने कोद; पांढ्य सरल सजाविया,
 न करे तोमा तोम ॥१॥ कौरवनिसखस खोटणी, पांढ्य जोर विशेष; बालपणाहीथी चलयो, मांहे मांही अवेपं, ॥२॥
 कौरव बांधी नीमने, नांखे पाणी मांही; बंधन तोमी कुटिया, कौरव सोहि प्रांहि ॥२॥ ढाल ए मी ॥ जुठन हाले
 ने जुठन चाले ॥ ए देशी ॥ बलवंतो जाणी खरो, श्री नीम कुमार होलाल; विप वीधो उयोधने, आणी द्वेप अणार
 होलाल ॥ १ ॥ जोजो क्युं न करे अरि, अरिनो शो विश्वास होलाल; कोईम करजो पंमितो, अरिथी विपनास
 होलाल जो ॥२॥ काम पन्था वेदो दूई, काम सरियां बापहोलाल, बावलहि वृजन घणुं, देखावे सहि आपहोला ०
 जो ॥३॥ अंतःकरण न मेलने, मूखे मीठा होय होलाल; सजन ललितांग संबंधी, समजो जविलोय होला ० ॥जो ४॥
 वाहहोलाल; कौरवनी गरसण कला, पांढ्यजुए राहहोला ० ॥जो ५॥ उरधामे

अंतर करे, मुंगाने ए जोईहोलाल; करता राखे जेहने, अरिथी सुं होईहोलाल ॥जा ६॥ विप अष्ट १६
 वायु सुतने सोईहोलाल; पूर्व पुन्य प्रसादथी, पहुंचे नहि कोई होला० ॥जो ७॥ विज कुंवेतादानजीउ, विणपात्र
 विचारहोलाल; वांजणसुं घरवासजी, नीफल ते अवधारहोला० ॥जो ८॥ कौरवना उप कर्मथी मारण श्री भीमहोलाल;
 एक न लागे आकरो, वाउलजीमहीमहोला० ॥ जो ९॥ बभोतर सो एकठा, पढवाने काजहोलाल; कृपाचारजजी
 नणी, सोंप्या श्री साहाराज होला० ॥जो १०॥ प्रज्ञा वले आगे निसरे, अर्जुनने ए कर्ण होलाल; बुद्धी विशेष
 विचारवे, ग्रहे पम्ता वर्णहोला० ॥जो ११॥ दिवस अणोजाने सहू, रमवाने जायहोलाल; गेमी दमे अति खेलतां,
 रलियायत थायहोला० ॥जो १२॥ दम्नी कूवे पम्नी, न कढाई जामहोलाल; मांखि जेम महूअलनें, रह्या विंटी
 तामहोला० ॥जो १३॥ झोणाचारज आवीयो, कीधो तव प्रणाम होलाल; वाणकला सुग इंद्रने, काढी ते अन्निराम
 होलाल० ॥जो १४॥ क्रपजारज पुबियो, नीष्म धरी स्नेहहोलाल; झोणाचारीज्य पाखति, मेल्या सुत तेहहोलाल
 ॥ जो १५ ॥ अखसखनकला, साधे तेसु विशेषहोलाल; कर्ण शशि तारा विघे, रवि अर्जुन देख होलाल ॥जो १६॥
 धनुष चहोम खंचवे, नांखेवे ए बाणहोलाल; करवे चोट अत्रुकजी, हरीनंदसु जाणहोला० ॥जो १७॥ दिन ३ तेज
 प्रतापसुं, वाधंतो ए वानहोलाल; सथला मांहे सामटो, पामे अति सनमानहोला० ॥जो १८॥ झोणाचारज एकदा,
 कालिंझे स्नानहोलाल; करतांतांताणिए ग्रह्यो, नवि दोम्या आनहोला० ॥जो १९॥ अर्जुन तव आयो धसी, बोमावणने
 हेतहोलाल; हेत धणो गुरु शिष्यने, जेहवा ए युगनेतहोला० ॥जो २०॥ बाहिर आव्या प्रेमसुं, न प्रसंसो तेहहोलाल; जाण्यु

कौरव कोपशो, गवसिवात्रि एहहोला ॥० जो २ ॥ एकतिहरीनंदसुं, गुरु बोल्या एमहोनाल, धनुष्यकला अवररा न्राण, देवा

मुजनेमहोला ॥ जो २ ॥ राधावेदे कला शिखवी, अर्जुन वाचा लीपहोला; दूर्योधनने नीम गदानी, युद्धतणी विधिसाध

होला ॥ जो २ ॥ यथा जोग्य जे जाणिया, तेहवीविद्या आपहोला; कला देखावण आपणी, वात विशेषे धायहोला ० जो २ ४

एतो नोमी ढाल विशेषे, कुमर विद्या पामहोला; श्री गुणसागर सुरजी, गुरु प्रणम्यो शिरनामहोला ॥ जो २ ५ ॥ दोहा ॥

निष्पन्न तो नलण नणी, मंचरु संव अरंज; मंभावी पुत्रा तणो, देखण समरंज ॥ १ ॥ वेग वन वन राजीया,

अगल सकल कुमार; कला देखावे आपणी, शस्त्रां तणी अपार ॥ २ ॥ रणरंगे राच्या सद्गु, विस्मय पाम्या ताम;

लोक सकल मन वित्ते, मतको धाय अकाम ॥ ३ ॥ दूर्योधनने नीमजी, मांहोमांही कलेश; करत निवार्यां झोणसुत,

लहि तात आवेश ॥ ४ ॥ ढाल १ ० मी ॥ तुम्हे पीतांबर पेरो होके मूखने मरकलने ॥ ए देशी ॥ एतो गुरु दृढक

प्रेस्थाहो, पाम्व अर्जुन उदाश; एतो विद्या देखावेहो, पाम्व धनुषकीवारु ॥ १ ॥ एतो राधा वेदहो, पाम्व निरखी

राजानो; एतो सराहण किजेहो, पाम्व मरु समान ॥ २ ॥ एतो कौरव रायहो, पाम्व सयनो वताई; एतो करण

कराईहो, पाम्व चंपापुरी पाई ॥ ३ ॥ ए तो सारथ सुतहो, पाम्व एतले आयो; ए तो रायके अंगेहो, पाम्व करणे

वेसायो ॥ ४ ॥ ए तो विपरीत वातहो, पाम्वराय रिसाणा; ए तो खरबावा झावहो, पाम्वकु विये सयाणा ॥ ५ ॥

ए तो अर्जुन नीमहो, पाम्व उठिया दोई; ए तो चंशक उपवेहो, पाम्व कण्ठे कोई ॥ ६ ॥ ए तो दोई वज्रविराहो,

पाम्व रणरंग मागे; ए तो कौरव करणहो, आइ वजा अंगे ॥ ७ ॥ ए तो हाकोहाकहो, पाम्व रवि रथ वाजी; ए ;

तो चालीया वेगेहो, पांमव रजनी विराजी ॥७॥ ए तो रजनी ठमासहो, पांमव कौरव जाणी; ए तो ममाया प्रातही,
पांमव गुरु द्या आणी ॥८॥ ए तो समजीया दोदहो, पांमव मेट लमाई; ए तो कौरव तातेहो, पांमव सुत बोलाई
॥९॥ ए तो पूढीयो वंशहो, पांमव मुंझा देखई; ए तो करणजी जाण्योहो, पांमव पांमव जाई ॥१०॥ ए तो गंगामें
आयोहो, पांमव लीयो कढाई; ए तो कियो मोडवहो, पांमव खाट वधाई ॥११॥ ए तो सहणामां देख्योहो, पांमव
सुरसतेजो; ए तो रविसुत नामहो, पांमव लहियो सहेजो ॥१२॥ ए तो करतल कानेहो, पांमव दीठा ताम; ए तो
थाप्यो अनिरामहो, पांमव वर्णजी नाम ॥१३॥ ए तो कौरव नूपहो, पांमव मडूर धरंतो; ए तो निज घर आवेहो,
पांमव सोच करंतो ॥१४॥ ए तो प्रभुताई पेखेहो, पांमव जगीमजारो; ए तो प्रतक खिजेहो, पांमव वहे अतिखारो
॥१५॥ ए तो मांहोमांहीहो पांमव उपज्यो विरोधो; ए तो पांमव नूपहो, पांमव टालवा क्रोधो ॥१६॥ ए तो देश
विलातहो, पांमव आपिया जुवा; ए तो एवमो पदहो, पांमव जुया जुया हुवा ॥१७॥ ए तो गडकरो शोकहो, पांमव
रंचन आणे; ए तो होनारी वातहो, पांमव अधिक न ताणे ॥१८॥ ए तो वरतति वारहो, पांमव वरते अपारो; ए
तो एहथी जाण्योहो, पांमव श्रीहरी प्यारो ॥१९॥ ए तो कहि दसमीहो, पांमव ढाल थुणिजे; ए तो श्रीगुण सागरहो
पांमव सुजस सुणिजे ॥२०॥ दोहा ॥ अंधक विष्णु दिक्षा ग्रही, पाले जिनवर आण; सुरिपुर राज करे नजो,
समुद्धविजे राजान ॥ १ ॥ नाम शिवादे नामनी, आश्रव तणो परीहार; सुखदाई सहू लोकने, शिलतणो शणगार
॥२१॥ इति वंशावलि संपुर्ण ॥ दोहा ॥ रूप शिरे लक्ष्मण शिरे, कलाशिरे गणधाम; श्रीवसुदेव कुमारनो, चरित्र

नहुं अन्निराम ॥ १ ॥ चारित्र पाली निर्मलो, नदिवेण अणगार; करी वेयावच साधुनी, पायो सुजश अपार
 ॥ २ ॥ आयु सागर विशनो, जोगवि सुर सुख सार; शोप पुन्यने कारणे, थयो वसुदेव कुमार ॥ ३ ॥ ॥
 ॥ ढाल ११ मी ॥ ॥ नणदलनी देशी ॥ श्री वसुदेव कुमारजी, रूप अनूप रसाल हो कुमार; जोग पुरंदर
 सुंदर, सोन्यागी सुकुमाल हो ॥ कु० १ ॥ मोहनबेल कुमारजी ॥ ए थांकणी ॥ अवर अनेरा राजीया, राजा नरत
 कहेवहो कु; अवर अनेरा कुमारीया, कुंवर तो वसुदेवहो ॥ कु० मो २ ॥ मित्र इंद्र समान ठे, सेवक अमर अनुपहो ॥
 कु; आपण सुरपति साचलो, गजएरावण रुपहो ॥ कु० मो ३ ॥ स्वर्ग सरीखो जाणीए, सोरीपुर सुख वासहो ॥ कु;
 सर्वज्ञा रमत करे, करतो लिल चिलासहो ॥ कु० मो ४ ॥ देव दूगंडक सारीखो, काम तणो अवतारहो ॥ कु; मोही रही
 अति माननी, लागी होमे लारहो ॥ कु० मो ५ ॥ करे कतोहल कामनी, ठांमो घर व्यापारहो ॥ कु; फिरे कुवति हरणली,
 न जहे घरनी सारहो ॥ कु० मो ६ ॥ केइ अलुणो रांधति, करे लुण दोवारहो ॥ कु; आधो पीरसी पिरसणो, जाइ तजी
 नरतारहो ॥ कु० मो ७ ॥ नूपण थानक पालटे, आधो करी सिएगारहो ॥ कु; टोले टोले सामटि, साथे फिरे सब
 नारहो ॥ कु० मो ८ ॥ धर अधामांहि रहे, थाये अति उजानहो ॥ कु; साहमली राव ले गयां, बालण पगे कमामहो ॥ कु०
 मो ९ ॥ राजा जांखे सादरो, केम पधारथा साहहो ॥ कु; पामी आदर अति घणो, साह बदे सोढाहहो ॥ कु० मो १० ॥
 पुण्य प्रसाद तुमारुं, सुखिया संघला लोकहो ॥ कु; जान घणो व्यापारमें, अनथन सर्व संजोगहो ॥ कु० मो ११ ॥
 तो तुमे केम देखाउंठो, अरतिवंता आजहो ॥ कु; जे जीमठे तिम दाखवो, लाजे विणसे काजहो ॥ कु० मो १२ ॥ वात

कहंता संकिए, अण कहियां नर हायहो कु; सापे ग्रहि बडुंदरी, एह परे अम थायहो ॥कु०सां १३॥ दाश न काइ
 कुमारनो, निरंकुशी त्रिय जातहो कु; विकल थइ विधुल महा, किशी कराई तातहो ॥कु०मो १४॥ कान गया लोचन
 गयां, गई लाज विशेषहो कु; कुमार देब्यांत्रियानी, रहिठे इंद्रि शेषहो ॥ कु०मो १५ ॥ तरुणि बुद्धि बालिका, एक
 सरीखि होयहो कु; सोवती नांखे सखी, आवंतो प्रनु जोयहो ॥कु०मो १६॥ साथे फिरे सघली सही, न लिखे घरनी
 वातहो कु; यान तणितो पाठली, भोजन विण अकुलातहो ॥कु०मो १७॥ कुमार नरहे खेलतो, त्रिया न रहे घरमां
 हिहो कु; वास अनेरी जायगा, आप आप नृप प्राहिहो ॥ कु० मो १८ ॥ नृपने थइ वीच्यारणा, कुमरश्युं अति
 प्रेमहो कु; लोग विणा नहीं साहिबि, अब कहो किजे केमहो ॥ कु०मो १९॥ अर्थ मीत दोई राखणो, एह सयाणो
 कामहो कु; विप्रसुता संबंधथी, सोच महा अनिरामहो ॥कु०मो २०॥ शिख देइ शाहा जणी, महिलमांहि नर देवहो
 कु; अपायो आरति जाएके, देवि वदे ततखेवहो ॥कु० मो २१ ॥ नामे शिवा शिव कारणी, षट गुण धारक नारहो
 कु; नेद लही लोग तणो, किम ले वात समारहो ॥कु०मो २२॥ एतले कुमार आवीयो, बेवो नृपनी गोदहो कु; राजा
 राणी रंजवे, वारु वात विनोदहो ॥कु०मो २३॥ त्रिती पोषी परिघल पणे, राय वदे सुविच्यारहो कु; आज काल तो
 अति घणो, डुर्बल थयो कुमारहो ॥ कु०मो २४ ॥ राणी नांखे रायश्युं, आणी अतिशे प्यारहो कु; माह्यरो वचन
 विशेषथी, माने नहींय लिगारहो ॥कु०मो २५॥ फिरे घणुं वन बागमें, तने लागे अति तापहो कु; थयो खरोही दूबलो,
 माहरे मन संतापहो ॥कु० मो २६॥ नृप नणे वड्ड सांजलो, मित्रा केरे संगहो कु; खेल करो मन जावतो, महिल

माहीं मन रंगहो ॥ कु० मो २७ ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, जाई पुत्र समानहो कु; व्रज सुखीए सुखीया हमे, तुंठे
 प्रेम निधानहो ॥ कु० मो २८ ॥ ए इयारमी ढालमें, मानी वात विशेषहो कु; श्रीगुणसागर सूरजी, अबकीम उपजे
 द्वेषहो ॥ कु० मो २९ ॥ ॥ बोहा ॥ महिला मांदिठे वाग वर, तरुवर जात अनेक; ब्रह्म अशोक सोह्यामणा, कृवा
 वाव्य विशेष ॥ १ ॥ कृण घरमें कृण वागमें, कृण जाई चित चाव; खेलाये अति खांतशुं, नोजाई जल जाय ॥ २ ॥
 ढाल १२ मी ॥ ॥ ऊठ गोविंदा ऊठ गोपाल ॥ ए देशी ॥ जूठ न हाले जूठ न चाले, जूठ न आयो थाप होलाल;
 जेव लही जूठी मायानो कुमर प्रवेशे जायहो ला ॥ जू० १ ॥ बावना चंदन कर कचोली, विधी वाशी हाथहो ला; एतले
 कुमरजी चली आयो, मित्रा करे साथहो ला ॥ जू० २ ॥ कुमर पूठे रे ए काई, सा तव बोले गाजहो ला; वेवि शीवाए
 चंदन त्रेज्यो, राय विलेपन काजहो ला ॥ जू० ३ ॥ थे मुजने ए चंदन चेटी, करु विलेपन थापहो ला; चेडीनापे जीन
 करंता, बीए मुह मांथे थापहो ला ॥ जू० ४ ॥ चंदन लेई विलेपन करी तन, धपुं पोमाये साईहो ला; माहरां मास्थां
 धुंवन वाहरु, पहिली न समजी काईहो ला ॥ जू० ५ ॥ होइ खिसाणी बोले ताणी, चेडी चंचल जातहो ला; तन मन
 जूठी ने अति रुनी, वाणी वदे अकुलातहो ला ॥ जू० ६ ॥ नमणो खमणो माणस निको, न नमे न खमे जेहहो ला;
 आका केरां ईंधण सरियो, लेखविए नर तेहहो ला ॥ जू० ७ ॥ जो एहवां लक्षण ठे तारां, तारे पोकास्था लोकहो ला;
 न्याये पज्योठे वंधीखाने, कुमर कहे ए रोकहो ला ॥ जू० ८ ॥ चित्तमे चमकी चतूर पणार्थी, करी विलासा तासहो ला;
 पूवंता तय प्रगट कीथो सट्टु संबंध प्रकाशहो ला ॥ जू० ९ ॥ साच जठनी कारण परिद्धा, पोले आये तामहो ला; वरयाने

रोकि तव जाएयो, साचो संघलो कामहो ला ॥जू० १०॥ पाबो फीरी मंदिर आयो, चित्तुं चिते एहहो ला; कुकर
 नूसानो काम नहीं कोई, जाएयो न्नाई सनेहहो ला ॥जू० ११॥ धिग मुज जाएणपणो ए अधिको, धिग मुज रूप रसालहो
 ला; डःखदाई हूउ हुं सहुने, अरु शिर आयो आलहो ला ॥जू० १२॥ अहि मणि कस्तूरि मृग मँगल, वंत थकि विप-
 नाशहो ला; चमरी पूंठ थकी नर रूपे, गुणथी वैरनिवासहो ला ॥जू० १३॥ विण गुणहे ए लोक पोकास्था, राजा मानी
 वातहो ला; अणख आया न्नाई रीसे, मेंतो डःख न खमातहो ला ॥जू० १४॥ मान गयो ने मातम मिटीयो, रहिणो
 नहि एह थानहो ला; नांगी शाखाए विलगेवो, तेतो उपजे हानहो ला ॥जू० १५॥ पुरुवां पाणी इम राखेवो, ज्यो
 राखे नालियेहो ला; गोकल कोतो पैडो न्यारो, साधां सूधो शेरहो ला ॥जू० १६॥ गाम तलाई न तजे बगलो, न
 तजे मालो कागहो ला; मानसरोवर तजे ततकिए, हंस तणो शो प्रागहो ला; ॥जू० १७॥ मज्जम राते अथ चढीने,
 साथे एक खवासहो ला; निकलियो पुर बाहीरे आयो, मतो करे सोटहासहो ला ॥जू० १८॥ लाकड लाथे चिता
 अलगो, शेवकशुं दाखंतहो ला; हुं विद्या साधु समसाने, जेद न को प्राखंतहो ला ॥जू० १९॥ जंघा चीरी लोही
 बनावे, मृतक आणी एकहो ला; आचुपण पहिरावी बाले, टालण खोज विवेकहो ला ॥जू० २०॥ पोले चिठी बांधी
 काढी, ताम लिख्यो ए लेखहो ला; में ए किधी राजा परजा, करज्यो राज विशेषहो ला ॥जू० २१॥ प्रात
 चाल्यो, धरी ब्राह्मणनो वेसहो ला; एह वारमी ढाले नांखे, गुणसागर सु विशेषहो ला ॥जू० २२॥ जूप जलीपरे पूठीयो, सेवक
 इथा प्रनु जागीया, कुमर न दीवो सोय; सुध न लाधी शोधतां आरतिवंतो होय ॥१॥

सोई सुजाण; विवरी वात कही सहु, आनूपण अहिनाण ॥२॥ चिठी दीठी देवजी, खोले वाची जाम; साची स-
 धनी जाणता, मुरवाणो नृपताम ॥ ३ ॥ मुरवाणा नाई अवर, मुर्गाणी नृपनार; वान गुलाम थादे करी, हाहारव
 संसार ॥४॥ चेतन लई राजा प्रजा, गुणनो करे प्रकास; हा वडनाग कियो किजुं, विलये राय उदास ॥ ५ ॥
 ॥ बाल १३ मी ॥ सांरंगीयो गणरुद्धिचे ॥ ए देशी ॥ कुमरजी एसी किजे केम, समुद्र विजय शीवावेची विजये;
 वेह न विजे एम ॥ कु० १ ॥ हा सोनाग निध्यान निरुपम, जादव वंश वतंस; हा सतयंत महंत गुणाकर, प्रथ्वि-
 मांहि प्रसंत ॥ कु० २ ॥ हा चंद्दानन पंकज लोचन, हा गुण भरित शरीर; सव विष सुंदर जोग पुरंदर, सायर
 जेम गंजीर ॥ कु० ३ ॥ हा नाई हा वंशु सहेदर, हा वडवीर सथीर; जीवियुं चित करि अति गाढो, मांढलडि विण नीर
 ॥ कु० ४ ॥ पुत्र पनोता पुनरपि होवे, रमणी रूप अनूप; गाम नगर पुर नवि पामिजे, नाईजी जल नूपा ॥ कु० ५ ॥ देवरियो
 दिल बरियो देखत, पेखत प्रनुता पूर; नजरे न थावे नर कोइ बीजो; कियो काम करूर ॥ कु० ६ ॥ श्युं किजे ए लोगा
 साथे, सोर मचायो चूर; यात कहंता विचिदण गुं, ऊडी गयो अति दूर ॥ कु० ७ ॥ रे कूडा फिरतार कलेशी, सोच
 नहीं तुज मांहि; साजन मेलि विठोहो करतां, कालज कांपे प्रांहि ॥ कु० ८ ॥ इम चिजवंता राजा राणि, एक नी
 मति ताम; वलते वांट सुधारस केरी, वाणि वदे अन्निराम ॥ कु० ९ ॥ कुमर न मूत्र ठे जयवंतो, थरति म करजो कोई
 लाज षणो दिन थोडा मांहि; आधि भिजशे सोई ॥ कु० १० ॥ कांईक ए निमति वचने, कांईक चित्त विचारी;
 सुसता हूथ्या राजा राणि, आशाने अधिकारी ॥ कु० ११ ॥ ए तेरमी ढाले राजा, वरते धरतो कोढ; श्री गुणसागर

जाई इसनी, ठे जग अविहड जोड ॥ कु० १ ३ ॥ दोहा ॥ चालंतो पश्चिम दिशि, मेलंतो बहू ग्राम; विजय खेडपूर
 पामियो, ताम ग्रह्यो विसराम ॥ १ ॥ नूप नलो सुग्रीवजी, सुंदरि नामा नार; पुत्र पंच उपरे हूई, पुत्रि दोग सुविब्यार
 ॥ ३ ॥ सोमा नाम सोह्यामणि, सोम सुसेना जाए; पढि गुणि मति आगलि, पुत्रि गुण मणि खाए ॥ ढाल १ ४ मी ॥
 वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए देशी ॥ गुणवंताने गुण चढे, किरति हो किरति वधति जोय; भैंगलनि परे मानवि,
 मूलेहो मूले मोंघा होय ॥ गु० १ ॥ हीरा लाल पिरोजडा, मोतीहो मोति मायेक मोल; पारखियाथि वाधतो, माणस
 हो माणस तिम निर मोल ॥ गु० २ ॥ कुमरी कला गुण आगलि, जायेहो जाये राग प्रमाण; वेण वजावे चातुरी,
 रीजेहो रीजे चतुर सुजाण ॥ गु० ३ ॥ एह अन्निग्रह मन धरयो, अमने हो अमने जिते जेह; वेण वजावी वेगशुं,
 पिउडो हो पिउडो म्हारी तेह ॥ गु० ४ ॥ राय जादा रूयडा, राजाहो राजा आवे केई; काज न सरहि कोईनो, जाईहो
 जाइ करशीर देई ॥ गु० ५ ॥ कुमर चाली तिहां आवियो, लिधीहो लिधी विणा हाथ; सुघड पण्येरे वजावतो, अचरिज
 हो अचरिज सघले साथ ॥ गु० ६ ॥ के किन्नर के खेचरु, के होके ए सुर अबतार; नूचर प्ररमाणा घणुं, कुमरीहो
 कुमरी मोहि अपार ॥ गु० ७ ॥ पहिरावी वरमालिका, किधोहो किधो अधिक उच्चाह; कुमरी दोईं शुं नलो, हूउहो
 हूउ ते विवाह ॥ गु० ८ ॥ सुख विलसंता सुंदरु, नंदनहो नाम अंकूर; सोम सुसेना जाईयो, दिन दिनहो दिन चडतो
 नूर ॥ गु० ९ ॥ एक दिवस आगे चढ्यो, खबर न हो खबर न जाणि केण; सजला वर्त सोह्यामणो, दीवोहो दिवो सरोवर
 तेण ॥ गु० १० ॥ सरोवर जलमें जीलतां, आयोहो आयो एक गयंद; गज शिक्दाए वश करी, चढियोहो चढियो ताम

नरद ॥ गु० १ १ ॥ खेलाचे अति खांतशुं, उन्नखियोहो उन्नखियो अस्वार; मंगल मनमें मोहियो, उलट हो उलटनो
 अधिकार ॥ गु० १ २ ॥ कुमरे उठो देखियो, इहांहो इहां नहि निज कोई; जे देखे बल माहरो, सोरीहो सोरीपुर कहि
 सोई ॥ गु० १ ३ ॥ आया कोई विद्याधरु, नांखेहो नांखे मीठी यात; नागावर्चन पुर नलो, राजाहो राजा विश्वविल्यात
 ॥ गु० १ ४ ॥ असनी वेग विराजतो, राण्हो राण्हि विजया पाम; कुमरी करमयति महा, जाईहो जाई शामा नाम ॥ गु०
 १ ५ ॥ कुमरीनो वर पूठतां, निमतिहो निमति नांख्यो सार; जे गजने यश थाण्यो, थारोहो थारो सोई नरतार ॥ गु०
 १ ६ ॥ बेशी विमाने हरखशुं, आवेहो आवे पुरमें चाल; राजा राणी रंजीपो, प्रचुनोहो प्रचुनो नूर निहाल ॥ गु० १ ७ ॥
 कंचननो मंरुप कियो, मणिनहो मणिना थंन उदार; पुतलिया मन मोहनो, शोनाहो शोना विविध प्रकार ॥ गु० १ ८ ॥
 दोल वदामा वढवडी, वाजांहो वाजां अधिक उदार; वियाह तणी विधि साचवि; वरत्याहो वरत्या मंगल चार ॥ गु० १ ९ ॥
 ए चढवमी ढालमें, सुखमें विसरजाय; श्री गुणसागर सूरजी, पूरवहो पूरव पुण्य पसाय ॥ गु० २० ॥ ॥ दोहा ॥
 शामा मंजुल नायिणी, सुयडमहा गुणजाण; विया वजावि एकदा, रंजवियो राजान ॥ २ ॥ रंजीयो राजाघणुं, चाखिवे
 अनूप; माग्य माग्य वर माननी, फिराफिर नांखे नूप ॥ २ ॥ ढाल १ ५ मी ॥ आदि जिणंद मया करो ॥ ए देशी ॥ तव
 बोले सा सुंदरी, सांजल जादव नाथरे; निसविन रेहेंशुं पावति, नचि ठोडूं तुम सापरे ॥ त १ ॥ प्रनुनर्णशुं मागीयुं, ए लघुता
 नी बातारे; पुरुष अबंध सराहियो, बंधक परयश धातेरे ॥ त २ ॥ अति सनमानि माननी, नर शिर चढती जायोरे; गंगा देवी
 शीवतणे, वेवी मांथे थायोरे ॥ त ३ ॥ नारी कहे निज सुखनर्ण, एतोहं नचि चांयुरे; कारण जाणि विशेषी, देव तमासो

खेचर अंगारक आकतो, पार्ष्णीमो मति पीमेरे; चुचर जाणी नीलवी, चुजबलशुं मति नीमेरे ॥ त० ५ ॥ चुप नीलीपेरे प्राखेरे,
 एठे कवण विचारोरे; रुपाचल इक्षणादिशे, पुरवरठे अति सारोरे ॥ त० ६ ॥ कीन्नर उठंगीत एवो, अर्चितमाली राजारे;
 प्रजावती उरे उपन्या, नंदन दो अति ताजारे ॥ त० ७ ॥ अग्निवेग अति आकरो, अशनी सुवेग सोजागीरे; समरथ
 जाणी नंदन, राजा थयो वैरागीरे ॥ त० ८ ॥ प्रज्ञपति वर विद्यासुं प्रथमने नृपपद आप्योरे; अवर न्रणी युवराजनो,
 पदतो स्थीर करी स्थाप्योरे ॥ त० ९ ॥ आपण संयम लेइने, सुनीनो मारग साध्योरे; तप जप करणीने बले, आपे आप
 आराध्योरे ॥ त० १० ॥ विमला नाम सुलक्षणा, राय घरे पटराणीरे; अंगारक सुत जइयो, कीरति अधिक वखाणीरे
 ॥ त० ११ ॥ युवराजा घर जाणइ, नामे सुभ्रन्ना नारीरे; तस उरे हुं उपनी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ त० १२ ॥ रायतणे
 पद स्थापियो, प्रीति नणी लघु न्नाइरे; विद्यासु निज नंदन, युवराजा पद गइरे ॥ त० १३ ॥ चारित्र लीथो मुनीवरु,
 मोटम मेरु समाणीरे; आप सरीखा लेखवे, जगमां जे ठे प्राणीरे ॥ त० १४ ॥ राय अने युवरायमां, उपज्यो अधिक
 कलेइरे; चुजबलने विद्याबले, राय ठंमायो देशेरे ॥ त० १५ ॥ नागावर्त्तसु नगरीए, राजाजी गयो नासीरे; पंखी पंजरनी
 पेरे, वासर जाए उदासीरे ॥ त० १६ ॥ एक दिवस नंदन वने, गयो एह नरंदोरे; जंघाचारण झानीजी, मीलियो एक
 मुनंदोरे ॥ त० १७ ॥ पगे लागीने पुढीयो, राज गयो के आ सोरे; पुत्री पतिथी थाइये, तारे लील विलासोरे ॥ त० १८ ॥
 पुनरपि नांखे रायजी, पुत्री पति कोण थाशेरे; सजलावर्त सरोवरे, हाथी सामो धाशेरे ॥ त० १९ ॥ गज शीखाइ खेजवी,
 हाथी वश करशेरे; श्री वसुदेव नरेश्वरु, सामा कुमरी वरशेरे ॥ त० २० ॥ ते उपर ए खेचरु, जासुसीने हेतोरे; काम

सस्थां प्रच्युतुमने, लेइ आब्यो गह गहतोरे ॥त०२१॥ विस्तरथी ए वातजी, खेचर सयली जाणीरे; पिशुनपणे तुम
हणवानी, बुझीअ ठे तिही गणीरे ॥त०२२॥ उ खेचर तुम भुचरु, मतके वीणसे कामोरे; तेहथी हुं वर मागुं, साथ
रही अनीरामोरे ॥ त०२३ ॥ तब वर आपी स्थापियो, गाढो प्रेम अपारोरे; ए पनरमी ढालमां, गुणसागर जय-
कारोरे ॥ त०२४ ॥ दोहा ॥ निशन्नर नीदमे सोवतो, खेचर ते अंगार; लेइ गयो वसुदेवने, थाणी वेश अपार
॥१॥ जागी सामा सुंदरी, पीठ न देख्यो जाम; शस्त्र ग्रही पुंठे हुइ, थाणी पहुती ताम ॥२॥ थरी संघाते सामीका,
जागी होई विरुप; अरीने सनमुख होवतां, कोप्यो जादव भुप ॥३॥ सुष्टी प्रहारे मारीयो, खेचर जादवराय; नाखी
दीयो आकाशथी, पब्यो सरोवर मांहर ॥ ४ ॥ समरंतां नवकारने, आल न आयो अंग; जलपथरि तट आवियो,
सुसतो थयो सुवंग ॥ ५ ॥ ढाल १६ मी ॥ गोरंजी धे मुने गोढे न राख्यो ॥ए देखी॥ धन धन करमे
तो नर कहीउ, जीहां जाइ तीहां आदर लहीउ ध ॥ ए टेक ॥ मारग जातां बलवेव केरो, देवल देखी हरख धयेरो;
जाणी गुन स्यान राते तिहां वसियो, कर्म चरि लखी मनमां हसीयो ॥ध० १॥ प्रातः हुयो एक थाब्यो पूजरो, देखी
कुमर मन हरख अपारो; पुठे प्रभुजी पुज प्रकासो, ए कवण पुरी कोण नृपनो वासो ॥ ध० २ ॥ नगरी चंपा नामे
निर्की, मु नामनीने सीर टीकी; चारुदत राजा जयवंतो, विशाला द्वित्रीपनो कंतो ॥ध० ३॥ श्री गंधर्व सुसेना कुमरी,
रुपे रुमी जाणी अमरी; चोसव नारी कला ते जाणे, राग कलामां अधिकुं ताणे ॥ध० ४॥ येण वजावे ने मुख गावे,
आपे रहीठे अधिके वावे. एह कनाए जीते जेही, मुज नरतार करुं तेंही ॥ध० ५॥ नृपतने नृपतिना जाया, पंच

सया परिमाण कहाया; श्री सुदर्शन गुरुना पास, रात दिवस ए कला अभ्यासे ॥ ध० ६ ॥ ग्राम तीन स्वर सात
 कहीजे, मूर्धना एकविस लहीजे; गुण पंचासत्र तान वखाणी, जाण कहावे ए विधि जाणि ॥ ध० ७ ॥ पुन्यने
 दिन सुजरो होवे, एना मों सामुं जेवे; कारजा करवा कोई न सुरो, कुमरी हसी कहे अबतो अधूरो ॥ ध० ८ ॥
 पुनरपि विद्या अधिकी सिखे, हठे पर्माया ए जूपति जांखे; बाणिनावे ठे एलेतन सेलत, मास मास एक आधो
 लेलत ॥ ध० ९ ॥ कुमर गयो आचारज संगे, साचवतो अति सेव सुचंगे; कलाग्रहंता वार न लावे, पण तो
 वेण विपरीत बजावे ॥ ध० १० ॥ राजकुमार तव करतां हांसो, मुख जांखे एवमो तमासो; अवर नही पण ए गुण-
 वंतो, थारो कुमरी केरो कथो ॥ ध० ११ ॥ तामस आणे यादव जाचो, अबही जाणो कुमो साचो; कांसो शब्द
 करेठे जेही, सोना शब्द करे नहि तेही ॥ ध० १२ ॥ तिलोत्तमा उर्वशी उलासो, सूर्य यदने पाम्ण पासो; स्वर्ग
 वी ए वहेली, साथे धणेरी तास साहेली ॥ ध० १३ ॥ तिगावे अने बजावे विण, मोदीरह्या सब लोक प्रवीणा;
 थकी जेम चाली आवी, विश्व मोहनी नाम धरावी ॥ ध० १४ ॥ जुप तदा जरमाणा नारी, विसरीया
 कुमरी रुप कला गुण देखी, एही सत्रामां सुख विषेखी ॥ ध० १५ ॥ नौतम घाट बनायो रुमो, कोइ
 सुधमाइ सारी; आरतियो आचारज होइ, विणा ग्रही कर कुंवर सोइ ॥ ध० १६ ॥ कुमरी जांखे वात
 वाते नांहिज कुमो; गान बजावणी ठे बेजा सरखी, कुमरी घणुं मनमांही हरखी ॥ ध० १७ ॥ कुमरी जांखे वात
 नलेरी, एसी विणा आणी अनेरी; विण सुधोषा नामे वारु, जेही रिजायो विणु कुमारु ॥ ध० १८ ॥ साविणा

कर साहि प्यारे, अचरज तव दृष्ट्यो जगसारे; कहे श्रव केवो गाउ गानो, सोने लागे श्रमी समानो ॥ ध० १९ ॥
 सा प्राखें सुण चतुर सिरोमणि, तुं देखाय ठे नचो मणि; यिन्नु कुमारनो ढालण क्रोधो, उषड्ढव्य मेटणने प्रति-
 बोधो ॥ ध० २० ॥ हाहा दुंदुरु नारद आयो, जेहि ग्याने रुपिजी रिजायो; जो श्रावे तो सोहि सुणायो, श्रवर
 ग्यान ठे मोहि श्रचायो ॥ ध० २१ ॥ नेद संगितहि जाणे सुधो, जेहि ग्याने रुपिजी प्रतिबोध्यो; सोहि सुणायो
 ग्यान सयाणे, नजो नजो कही खलक वसाणे ॥ ध० २२ ॥ रंजी रामा अति अनीरामा, पहैरायी वरमाल सकामा;
 व्याह तणो क्रीधो मंजाण, ए पण मोटो पुन्य प्रमाण ॥ ध० २३ ॥ बहू वरनी सरखीठे जोम्नी, पोहोचावे मन केरा
 कोम्नी; धर्म विये पण सरखा बोइ, सुखमांयासर जाता जोइ ॥ ध० २४ ॥ एक किवस हरी उंछव हेंते, आंचे कुमार
 निज महिलसमे ते; ढाल सोलमी कही सुणावे, श्रीगुणसागरजी गुण गावे ॥ ध० २५ ॥ दोहा ॥ वियाधर आख्या
 घणा, हरीउंछवने काज; हसत रमत सेले तिहां, नरनारी शुत्र साज ॥ १ ॥ वियाधरनी कुमरी, नीलजसानामेण;
 कुमरी रुपे रंगीली, अमरी जीती नेण ॥ २ ॥ नीजलसा यमुदेवने, छट्टि रागनी चूर; उषजी जाणी विशेषी, चमकी
 चुचरी चुर ॥ ३ ॥ प्रीतम लेइ पाथरी, आची निज श्यास; वियाधर उंछव करी, चाली गया आकाश ॥ ४ ॥ ढाल
 १७ मी ॥

हम भगनजइ प्रचु ध्यानमे तथा जिया गयुरे जोवनीयुं याइने ॥ ए वेशी ॥ कुमरी बूइरे उदासणी,
 हसत न बोझत मोलत चितमो; कुमार चरण नियासणी, ॥ कु० १ ॥ चोजन त्याग न पिवत पाणी, सोयत निव न
 श्यावती; लांधा अति निसासा लेती, यदूपतिने चित धावती ॥ कु० २ ॥ प्रेम रागठे तीखीकाती, कालजने श्रति

कापती; जो सुख चाहे माननी मनमां, परने चित्त मत आपती ॥कु० ३॥ जाणी अपारती अपार अर्चनापम, धाड
 पुढे वातजी; नुत तणा बलनीपरे तुंतो, दिसेढे अकुलातजी ॥कु० ४॥ तव सा धाड प्रते प्रांखे, श्रीवसुदेव कुमारजी; अण
 दिवो देव उड्डव करंतां, चित्तनो चोरण हारजी ॥ कु० ५ ॥ ए वरपासुं तो परणवो; अवर न परणुं कोडजी; अण
 सरखे पीडने पद्मनीनो, आवट मरणो होयजी ॥कु० ६॥ धाड तणा सुखनी सुणी राजा, एसयलो वृचांतजी; संतोकी
 वचने वर कुमरी, चाल्यो आप तुरंतजी ॥कु० ७॥ सोवंतो कुमर अपहरीयो, करीयो काम अनुपजी; नीजपुर आपणी
 राजाराणी, पुज्यो यादव नुपजी, ॥कु० ८॥ कुमारी अमरी सरखी सयली, सात सर्थो परिमाणजी; परणावी कुमरने
 हरखे, कियो अति मंदाणजी ॥कु० ९॥ सोर सुणंतो पुढे प्रनुजी, एशो सोर प्रकारजी; प्रतिहारणी नांखे स्वामी,
 एहनो एह विब्यारजी ॥कु० १०॥ कुमरी तणी माताशुं जाड, बोढयोतो ए बोडजी; जो माहारे होशे सुत सुंदर,
 तारे सुता अमूलजी ॥ कु ११ ॥ सगपणनो संबंध करेशां, ए हुवो ते न्यायजी; लोक मली ए जगनो नांज्यो,
 नारी कियो नवी थायजी ॥ कु० १२ ॥ कमली रमली करतो अति वरते, नोगी नमरो जेमजी; श्री वसुदेव
 कुंवर रमतो, पदमनियाने प्रेमजी ॥ कु० १३ ॥ गिरिसिर खेवंत निलकंवसो, आयो होइं मोरजी; निलयशाने
 लेइ गयो तव, कांइ न चाल्यो जोरजी ॥ कु० १४ ॥ इक्ष्णुदिश गीरीतटवर नगरे, सोमा राज कुमारजि, देवतणे
 वाडे जीती प्रभु, परणी रति अवतारीजी ॥ कु० १५ ॥ ए कहेता रायथो सुर आर्वा, लेइ गयो ततखेवजी; यदू तणा
 देवलमांही मुक्यो, साचवतो अतिसेवजी ॥कु० १६॥ रादूस एक तणेढे वासो, पेहेला देवल मांहीजी; देश नगरना

आधान, प्रथम्या कुमार उदारजी ॥ कु० १ ७ ॥ कन्या पांच सया परामाये, परणावी जुपालजी; सुख मानता वि-
 विध प्रकारे, पुढयो साजो ख्यालजी ॥ कु० १ ८ ॥ कुल अणजाण्या वि दम परणावी, कन्या ए सतपंचजी; सालो जखे स्वामी
 सांजल, सयलीनी एक संचजी ॥ कु० १ ९ ॥ निमत विचने यदूनाय ६, राक्षस जीतणा सुरजी; कन्या सकल तणोवरथाझे,
 वाज्या, एज सतुरजी ॥ कु० १ १ ॥ थादव राजा रायरायाना, जिहांजाइ; तिहां आपजी; गुणसागरसत्तरीढाले, पुर्वपुन्य प्र-
 तापजी ॥ कु० १ २ ॥ दोहा ॥ अचलपुरी प्रजु आवीयो, वनमाला सुखकार; पुत्री सारथ वाहनी, परणावी प्रेम अपार
 ॥ १ ॥ संचरतो सोमापुरी, आइ गयो ते स्वाम, कंपीलरायनी कुंमरं रे, परणि कपिला नामा ॥ १ ॥ विविधपरे सुख मानता,
 सरोवरसां जीलंत; निजकंठ गजरुप धरी, आइ कुमर चढंत ॥ २ ॥ ढाल १ ७ मी ॥ चंदलिनी देसी ॥
 हाथी आकाझे चालिउ, विद्याधर विद्या वलिउ; जन प्रांखे कुंवर वलीयोहो ॥ कुंवरजी १ ॥ कुंवरजीरुपे निको,
 कुंवरजी प्यारो जीको; कुंवर कुमरा सीर टिकोहो ॥ कु० २ ॥ हाथी तो चाल्यो जाये, राख्यो कोइजो न रहाये;
 कुंवर चित चित्ता थायेहो ॥ कु० ३ ॥ तव मुष्टि प्रहारे मास्थो, हाथिनो मद उतारथो; आ पुण कामहि समारथो
 ॥ कु० ४ ॥ पमीयो गंगजल मांही, नचकार नणंतो प्राहि; अंगे दुखाणो नांहीहो ॥ कु० ५ ॥ गंगजल पयरी
 जामो, अटविमें पनीयो तामो; अंगे आयो एक गामोहो ॥ कु० ६ ॥ सींह गुहा तस नामो, विमल प्रज नृप गुण
 धामो; त्रीय श्रीमति अनीरामोहो ॥ कु० ७ ॥ पुत्री पोमांवाइ वारु, अति वेद कला इंचारु; साजीति आणी

उदारुहो ॥ कु० ७ ॥ परणीने सुख मणीजे, आ पुण पुधन जाणीजे; अगोकि मति ठांणजेहो ॥ कु० ८ ॥ जयपुरना
 तो पति साथी, एक कुमरी नीकी लाधी; दिन अति किरति वाधीहो ॥ कु० १० ॥ अदिलपुर चाली आयो,
 तिहां राजा पौड सोहायो; प्रजुजी सौने मन जायोहो ॥ कु० ११ ॥ कुमरी धार्यो पुर्व वेसो, तस रुप कला सुविशेसो;
 परणे यडराय नरेशोहो ॥ कु० १२ ॥ पुरुष वेशनो जेवो, तव पुठे श्री वसुदेवो; सा उत्तर दे ततखेवोहो ॥ कु० १३ ॥
 तव एक नीमती राई, पुठ्यो मुज वरने ताई; तीहां नाम लीयो गोसांईहो ॥ कु० १४ ॥ योग कहो किम मिलशे,
 रुने जइ रुहुं चलशे; ए आरति वेगे टलशेहो ॥ कु० १५ ॥ रुप पुरुषनो ठाणि, सा राज राखंति जाणि; प्रजुजी मिलसे
 वेगो आणिहो ॥ कु० १६ ॥ गुरु गोत्रजने सुपसाइ, ए एकसरीखे दाइ; सातमे वासर जाइहो ॥ कु० १७ ॥
 अंगारक क्रोधे जरीयो, तिहां रुप हंसको करीयो; सुखे सोवंतो अपहरीयोहो ॥ कु० १८ ॥ सुधी प्रहार ज्यां दीथो,
 चेतनथी अलंगो कीथो; गंगामें पद्मीयो सीथोहो ॥ कु० १९ ॥ पाणि तरी कांठे आवे, अटवि तजी वसती पावे;
 इला वर्धन नगर सुहावेहो ॥ कु० २० ॥ हाटे वेवा वेपारी, ते लक्ष्मीवंता जारी; एक शेठ अठे अधिकारीहो ॥ कु० २१ ॥
 कुमर वेगो तस पासे, तिहां मलिया लोक तमासे; ए मोठो शेठ विमासेहो ॥ कु० २२ ॥ तव अन्न वखने नाणुं,
 युहरीयाने करीयाणुं; ते दिन अधीकुं वेचाणुंहो ॥ कु० २३ ॥ लान्तणो नही पारो, तव शेठ करेसुं विज्यारो;
 एतो एहनो उपगारोहो ॥ कु० २४ ॥ आदर अधिके घेर आण्यो, भोजनशुं प्रेम परमाण्यो; वखतावर पुरुष
 पिठ्याण्योहो ॥ कु० २५ ॥ कन्या ठे रुप रसाली, सारतनवति सु विशालि; परणावी जाक ऊमालिहो ॥ कु० २६ ॥

अष्टावशमी ढाले प्रेमो, सुख विलसे सुरपति जेमो; गुणसागर ज्ञांखे एमोहो ॥ कु० १७ ॥ दोहा ॥ लाने लोच
 वाधे घणो, उद्यमे अधिको लान; लाने सीर जाइ अमे, उंचो तो अती आज ॥ १ ॥ लान विशेष विचारवे, आगे
 चाल्यो स्वाम; महापुरी आयो सहि, हरल्यो अचरज पाम ॥ २ ॥ गम गम दिसे घणां, मंदिरनां मंनान; निश्चे
 करवा कारणे, पुठ्यो पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥ ढाल १ ए मी ॥ ॥ हुं वारी तुज साहिव ॥ कावल मति चालो तथा
 पांचमी वामे परमेश्वरु ॥ ए देशी ॥ पुरुष कहे प्रचुजी सुणो, ए वातज वारु; अचरजकारीठे घणी, चतुरा चितचारु
 ॥ १ ॥ सोमदच राजा जलो, राणी सुविच्यारी; पुरण नचा जाणीए, नृपने सुखकारी ॥ २ ॥ सोम श्री नामे जली,
 कुंमरी अजीराम; स्वयंवर मंरुप तेहनो, ए कीधां धाम ॥ ३ ॥ राय घणा चाली आधीया, ए जिमनरीखो; वचे हुवो
 संबंधजी, ते सुणण सरीखो ॥ ४ ॥ उपर जोमी एकदा, सा राजकुमारी; देखे लांठन चंडनुं, ले' लागी जारी ॥ ५ ॥
 रुपि केवल उठव जणी, सुर जाता देखी; जाति समरण पामीयो, सुखा सुविशेखी ॥ ६ ॥ उगामी बेठी करी, करी
 सांतलताइ; मौन ग्रहिने सारहि, कही वात न कांइ ॥ ७ ॥ धाय मायने पुठतां, दिए जवाव गरीठो; ज्ञान बले परज्व
 तणो, में प्रित्तम दीठो ॥ ८ ॥ हुं हुती देवांगना, तुं हुतो देवो; जोगवी आयु सुरगति तणो, चवीयो ततखेवो ॥ ९ ॥
 तुं ठपज्यो हरीवंशमें, हुं थाइ इंहाजी; देवे विठोहो पामीयो, केम कीजे माजी ॥ १० ॥ जो पति पामुं मुलगो, तोतो
 परणायो; नहीतर परणवा आखनी, सही संयम लेवो ॥ ११ ॥ धात्र जणावी वातनी, राजाने जाइ; लोक विसरजा
 वेगशुं, मनमां डचिताइ ॥ १२ ॥ त्रंठे जत्रर गल्यी, माह्यरो खग नाम; वियम वात थावी बनी, केम सीठे काम

॥ १३ ॥ एटले एक निमीतीयो, नांखेसु सनेहो; इंछ उठव देखण ज्ञणी, आवशो एहो ॥ १४ ॥ हाथा पास ठाकापण,
 परणशे अप्पो; एम सुणंता हरखीयो, कुमरीनो बापो ॥ १५ ॥ हरीध्वजने देखण ज्ञणी, अंते उर आयो; वाहन
 विविध प्रकारनां, अति सोर मचायो ॥ १६ ॥ बंधन तोमी जोरशुं, हाथी विफरायो; अबला उपरे अप्पकलो,
 होइने धायो ॥ १७ ॥ सुचट न आवे आसना, सहु जाइ प्राग्या; सहस्र ग्रहिने सामटा, संवाहण लाग्या ॥ १८ ॥
 साचो सुर सीरोमणि, यादवजी जाचो; अटल टल्यो नही वामथी, नरफामे माचो ॥ १९ ॥ अग्नीजाल गज केसरी,
 एह सामुं होणुं; निःसत्व नरने दोहिलुं, साहसियाने जोणुं ॥ २० ॥ श्वासजरी आवी धसी, शरणे सावाल; राख राख
 प्राणे सजी, कोप्योळे काल ॥ २१ ॥ ठलवल केलवी घणो, हाथी वश आण्यो; उवारी कुमारीका, जग
 जादव जाण्यो ॥ २२ ॥ राय त्रीयाने कुमारी, हरख्यां मनमांहि; ए मोटो उपगारीयो, पुरुषोत्तम प्राहि
 ॥ २३ ॥ सूर घणो ने बल घणो, धन्य यौवनवंतो; ए उगणिसमी ढालमां, गुणसुरी कंहंतो ॥ २४ ॥ कुमरीने
 ॥ दोहा ॥ विस्मय उपजावी घणो, सहू ज्ञणी सुकुमार; शेर कुवेरज दत्तने, घर आयो तेहीवार ॥ १ ॥ कुमरीने व-
 राणी सहू, निज घर करे प्रवेश; वाट वधी ए अति घणी, उठव कीयो विशेष ॥ २ ॥ ॥ ढाल २० मी ॥ व-
 गमीयानी तथा सुगण नरनारी रूप नजोय ॥ ए देशी ॥ एह सुणी नृप हरखीयोरें, करे प्रशंस अपार; वारंवार
 वधामणारें; मलीयो सहु परीवारें ॥ मोहनजी ॥ १ ॥ तुं सूरतिकां सोहनजी, तुं दूषजलका प्रोहणजी; तुं गुण
 मणिका रोहणजी, तुं चिच कजका बोहनजी; तेरारे तेरा धन अवतारें, मोहनजी मंगारें मेरा तुजशुं प्यारें; नृठ्यो

त्रुठ्यो मुज्ज किरत्तारे पायेरे पायो जल चरत्तारे ॥ मो० ॥ ॥ ए थांफणी ॥ व्याह तणी विधी साचवीरे,
 जेसा चित्त वित होय; आनंद रंग विनोदमारे, वासर जाता जोयेरे ॥ मो० १ ॥ मानो वेग मनोहरूरे, विद्याधर बल-
 यत; नीशजर सुखे शेवतोरे, आइ गयो मयमंतरे ॥ मो० २ ॥ सोमश्री कुमरी हरीरे, चाली गयो आकाश; जाग्यो
 श्री वसुदेवजीरे, देवि न दिवी पासरे ॥ मो० ४ ॥ प्रीया प्रीया पोकारतारे, सोमश्री आकार; अरी जगनी थायी
 धसीरे, वेगवति वर नारे ॥ मो० ५ ॥ जेव न जाण्यो जुपतिरे, पुण्ण लाग्यो तास; किहां गइती वीहीरारे, बोले
 सावल्हासरे, ॥ मो० ६ ॥ गर्मि हुइ मुजने घणीरे, सीतलताइ जाण; वज्रीधी हुं वायेरे, प्रीतम थरतिम आण्येरे
 ॥ मो० ७ ॥ रामा रची रुपसुंरे, नाकीयो कश्यो विचार; करी अति खीजमत खरीरे, जोगवे जोग उदाररे ॥ मो ७ ॥
 पोढयो प्रजुजी पालकेंरे, पोव्यो पदमनी प्रेम; विमासण विधी साचवीरे, अक्सर पामी तेमरे, ॥ मो० ९ ॥ एक दिन
 सुखे सोयतारे, खेवरी ए अजीराम; रुप धरीयो मुजगारे, जागीयो प्रजु तामरे ॥ मो० १० ॥ बाल मुझा शशिकलारे,
 युया हारया दाम; दिवस भ्रंजे प्रगटरे, तिमही एह अकामरे ॥ मो० ११ ॥ पुठी प्रजुजी पद्मनीरे, कोणठो
 तमे आप; रजुपणो चांखे जजोरे, कोइ न राखे पापरे ॥ मो १२ ॥ रुपा चल ददृणविशेरे, स्वर्ण प्रजपुर देख्य; चित्त
 वेग विद्याधरूरे, राय रुमो पेर्यरे ॥ मो० १३ ॥ त्रीय अंगारवति कहीरे, मनोवेग तसु नंद; नंदनी तो हुं जलारे,
 अठु नयना नदरे ॥ मो १४ ॥ रुप अधिको सांच्जीरे, मनोवेग नरेश; सोम श्री लेइ गयो, सीता ज्येरे लंकेशरे ॥ मो
 १५ ॥ सोमश्री साची सतीरे, जोर न चाल्यो चोर; 'केश मणिने' कामनिरे, न लेवाइ जोरे ॥ मो० १६ ॥ हुं

सखीबुं तेहनीरे, प्राणहीथी प्यार; मोकलीबुं तुम्ह कन्हरे, आणी एह विच्यारे ॥ मो० १ ७ ॥ सुछ संघाते ठे धणोरे,
 नाथजीको नेह; आकतो होइ खरोरे, मति तजे नीज देहरे ॥ मो० १ ८ ॥ रूपे मोही प्रभुतणोरे, शुधहि नावी दूर;
 हणि मनमथ बाणशुरे, उपज्यो राग सनूररे ॥ मो १ ९ ॥ रूप धरिने बेहना तणोरे, मानीयो में भोग; स्वारथीयो
 संसार ठेरे, आपवंबो लोगरे ॥ मो० २० ॥ स्वामी थारी सुंदरीरे, हुं हूइ सुख हेत; बांझी मणि चिंतामणीरे, काच
 कुण चित देतरे ॥ मो २१ ॥ सोमश्री अपहारनिरे, एहनी सुणी वात; हुं नुप उदासीयोरे, अरतिमें दिन जातरे
 ॥ मो० २२ ॥ ढाल नली ए विसमीरे, करत भोग विलास; श्री गुणसागर सुरीजीरे, पुन्ये पुरे आशरे ॥ मो० २३ ॥
 ॥ दोहा ॥ श्री वसंत ऋतु राजीयो, आयो अधिक विराज; फूलफल शोभा खरी, कोयल बोले गाज ॥ १ ॥
 मंत्रिना परिवारसुं, खेले वसंत नरेश; सुखे सोवंतो अपहस्थो, मानस वेग विशेष ॥ २ ॥ सुष्टी प्रहारे मारता,
 शुध रही नहीं कोय; समरतो नवकारने, जर होइ आयो सोय ॥ ३ ॥ गंगा तट विद्या धरु, विद्या साथे जाम; आणी
 पज्यो उपरे प्रभु विद्या सिंधी ताम ॥ ४ ॥ ॥ ढाल २१ मी ॥ आयुको दिहमो मोहे जावे हो नणदी , तथा
 हुंवारी धना तुं मुज प्यारोवे ॥ ए देशी ॥ आवी एक विद्या धरी हेयाइ, लेइ चाली जाम; प्रभुने मेली बागमे हे
 याइ, खबर करी अर्चिरामहे याइ ॥ १ ॥ ऊगम गयो तिहावे, परखंन परदेशमे हे ज्याइ; शोभा अधिकी पावेहे याइ
 ॥ ऊ २ ॥ राजा अमृत द्वारना हेयाइ, खेचर बंधव तिन; दधि मुख दिलनो सुरेहे हेयाइ, चतुर शिरे सुप्रविणहे याइ

॥ज० ३॥ दृढसु वेग विराजतो हेयाड, चंमसुवेग प्रचंम; आया प्रचुनी सामा हेयाड, माने आण अखंम हे याड
 ॥ज० ४॥ पथराची निज मंदिरे हेयाड, श्रीवसुदेव नरेश; मदन सुवेगा वेग गुं हेयाड, परणाची सुविशेष हे याड
 ॥ज० ५॥ प्रीतम पद्मनी प्रेमगुं हेयाड, मग्न महा मनमांही; उलट अति घणी मानतो हेयाड सुखमांही विन जाइ
 हेयाड ॥ज० ६॥ उगंतो दिनकारनो हेयाड, घनीए यथतो तेज; तिम नहिंद वसुदेवनो हेयाड, चमत्तो तेज सहेज
 हेयाड ॥ ज० ७ ॥ बाप ठोमावण कारणे हेयाड, बधि मुख ज्ञाखे वात; श्रीनमीवंश विशेषपी हेयाड, विद्युत वेग
 विस्थायत हेयाड ॥ज० ८॥ पुत्र पनोता तेहना हेयाड, एह मति नवियाण; धारा मननी ज्ञावती हेयाड, पुत्री चोपी
 जाण हेयाड ॥ज० ९॥ निमतने पुठीपुं हेयाड, कुमरी कारण कंत; निर्मल मति बोलियो हेयाड निमती गुणवंत
 हेयाड ॥ज० १०॥ चंम सुवेग कुमारने हेयाड, विद्या साधन जोइ; पमशे खांधा उपरे हेयाड, पुत्रीनो वर सोइ
 हेयाड ॥ ज० ११ ॥ ते विनयी लघु ज्ञाइजी हेयाड, निश्चय करया हेत; विद्या साधे वेगगुं हेयाड, शुजवांभीत फल
 देत हेयाड ॥ज० १२ ॥ नम्रनुं तिलक सोहामणुं हेयाड, नगरनी रुपम नाम; श्री त्रिशिखर नरेश्वरु हेयाड, सर्पक
 सुत गुण धाम हेयाड ॥ज० १३॥ तेहने अस्थे मागता हेयाड, पुत्रीनापी तात; युध हारवाता तेहने हेयाड, चाल्यो
 लेइ थारात हेयाड ॥ज० १४॥ बंधीखाने राखीया हेयाड, देव हमारो बाप; जोरन चाले माहरो हेयाड, अरिनो
 प्रबल प्रताप हेयाड ॥ज० १५॥ पुज्य प्रताप करी खरा हेयाड, सरसे सयला काज; आज थकीतो आगलेहेयाड,
 कुम ने सबलि लाज हेयाड ॥ज० १६॥ विद्या साधी सादरी हेयाड, बंधव तुम प्रसाद; साहाजे करी स्वामीने हे

याड, होसिए अहिलाद हेयाड ॥ऊ० १७॥ दिन वचन सांचली हेयाड, उठ्यो मुठ मरोम; आरति कौइ मराखज्यो
 हेयाड, करगुं कारज कोम हेयाड ॥ऊ० १७॥ साला पासे शिखीयो हेयाड, अख अनेक प्रकार; अग्नि अने ब्रह्मा
 नला हेयाड, श्री महेंद्र उदार हेयाड ॥ ऊ० १९ ॥ वैश्रव वारु नामथी हेयाड, जमदंम अख विच्यार; स्थंनन
 मोहन तोटिका हेयाड, अण रोहण अविधार हेयाड ॥ऊ० २०॥ बंधनमोदकन जाणीए हेयाड, जंनने ए सान;
 वायव्य वेदन भेदना हेयाड, आरुठ अख प्रधान हे याड ॥ ऊ० २१ ॥ सर्व सुअखहि बादना, शल्य
 निवारण हार; गुणसागर गुण गाजतो हे याड, ढाल एकवीसमी सार हे याड ॥ ऊ० २२ ॥ ॥
 दोहा ॥ साहण वाहन सामटो, साथे घणा नरेश; चढीयो आमंवर घणे, अरी उपरे सुविशेष ॥ १ ॥ मंगल
 मलियो मलपतो, धोमो दक्षिण हाथ; मंगल गाती गोरमी, सात पांचनो साथ ॥ २ ॥ उदयो जणती योगिनी,
 सामो आव्यो शाह; दक्षिण नयख कलकली, उंपज्यो अति उठाह ॥ ३ ॥ खर देवी मावी जली, बोले होमाहोम;
 कुंकर वामे उतरयो, काज ससारे कोम ॥ ४ ॥ हरिणमाल अथुरमी, जमणी जाइ प्रांत; सांम चास दक्षिण दिशे,
 वामे वायस जात ॥ ५ ॥ मावां लाली बोलीयां, अवर अनेरा सार; शुक्रन विच्यारी चालीयो, श्री वसुदेव कुमार
 ॥ ६ ॥ अरीपुण आयो सामुहो, दल वलनो नही अंत; रेणु रही जंची चढी, समजे न कोई पमंत ॥ ७ ॥ ढाल २२
 मी ॥ तेतरीयारे नाई तेतरीया ॥ ए देशी ॥ पुन्य वले अधिको यडराजा, करतो अधिक दवाजारि; खेचर साथे
 प्राणी अमीयो, वाज्या शुभ जश वाजारे ॥पु० १॥ हाथीओथी हाथी साथीओथी साथी, असवारे असवारे; रथसाथे

रथ प्रमोद्या नारी, मन्व्यो युद्ध अपाररे ॥ पु० २ ॥ नील सुकंठ अंगारक आतुर, सूर्पक मानस वेगारे; चंद्र संवेग तलो
 आगे ए, हारचो नफूरा तंगारे ॥ पु० ३ ॥ खंचरने यादवने लम्बे, देवो अचरज पायारे; विविध प्रकार विशेष विशेषे,
 वाले अंबर टायारे ॥ पु० ४ ॥ अग्नि शुं वाले अग्नि विकुर्वि, हाथी घोना बालेरे; वारुण वाले घनवरसावी, एह उपद्रव
 टांजेरे ॥ पु० ५ ॥ मोहन वाले नीदतणे बल, लोक सह ते सोयरे; बाण प्रबोधे निद निवारी, हौशीअरीमां होयरे
 ॥ पु० ६ ॥ श्री मोहन्द्र वाले हणतो, खंचर पम्नीयो मंदरे; यादवनी जग जीत गवाणी, उपज्यो अति आनंदरे
 ॥ पु० ७ ॥ सुसरो बंधनथी ठोनावी, देइ ददामे धावरे; पामी यश निज नगर जणी ते; आवे सह परीवाररे ॥ पु० ८ ॥
 सुर्पनखा नामे अरी नारी, बेर विशोधन आवीरे; मदन सुवेगा रूप विराजी, प्रजुर्जाके मन जावीरे ॥ पु० ९ ॥
 ठल पामीने प्रजु सोवंतो, चाली लेइ आकाशरे; मान संवेग जणी प्रजु सोंप्यो, करवा काज विनाशरे ॥ पु० १० ॥
 अरी करथी खसी अणुं मांही, पम्नीयो लागी थोमीरे; राज ग्रही नगरी चली आयो, जीतीकचन कोमीरे ॥ पु० ११ ॥
 कंचन वाटे देतां बोले, किरति चारण नाटोरे; श्रीवसुदेव पधारथा पहिली, जरासंध उचाटोरे ॥ पु० १२ ॥
 निर्मान पुठयोयो राजा, मुजने मारण हाररे; वेग वतावी करु उपकर्मा, केरो कोइ विष्याररे ॥ पु० १३ ॥ जोतिज्य
 जाण कहे जीतशे, जुवा खेळी जेहरे; कंचन कोडी तणा वरदाता, गुण मणि केरो गेहरे ॥ पु० १४ ॥ तेनो जायो
 रुद्र कुंवर वर, तु महंता जाणरे; निश्चय वात विशेष विच्यारी, संशय एक न आणरे ॥ पु० १५ ॥ एम सुणी जासु
 सिरारण, नृपनो लोक फरंतोरे; कंचन जाती त्याग करंता, मलीयो तंते तंतोरे ॥ पु० १६ ॥ चाम तणी नाथामे

घाली, हुंगरथी नाखंतोरे; गरुतो आवी पड्यो भू उपर, परमेष्टि नाखंतोरे ॥ पु० १७ ॥ वेगवांत राणा सागलाया,
 जब ए श्री नवकारोरे; नार्थी खोली देखत दीतो, प्यारो प्राण आधारोरे ॥ पु० १८ ॥ वेगवति रुवे प्रभु आगे,
 प्रभुजी सुसतो होइरे; नारी निहाली नेह धरीने, पुढी नांखे सोइरे ॥ पु० १९ ॥ तुम अपहरी श्रेणी दीयमें, शोधी
 शोध्यो नरतोरें; मदन सुवेगा घरथी तुमने, सुर्पनखा अपहरतोरें ॥ पु० २० ॥ सुर्पनखाथी मानस वेगे, लीधो मारण
 हेतोरें; सारी न शक्यो राजग्रहमें, आयो शुन संकेतोरें ॥ पु० २१ ॥ ढाल बाविसमी हुं धन प्रजुजी, जे तुम सेवा
 लाधीरें; श्रीगुणसागरसुरी जलो जे, जाणे अवसर साधीरें ॥ पु० २२ ॥ दोहा ॥ वेगवति साची सती, आवी पीउने
 काम; प्रिती विशेष विच्यारवे, अति सनमानि साम ॥ १ ॥ गिरि कांठे उद्यानमें, खेल खेलंता जाम; नागपाश बांधी
 शकी, दीगी कुमरी ताम ॥ २ ॥ बंधन ठोड्यां हाथशुं, सा नांखे सुविच्यार; विद्या सिद्धी माद्वरी, ए प्रजु तुम उपकार ॥ ३ ॥
 ॥ ढाल २३ मी ॥ सुगथासुसनेहि, आसनना योगी, तथा वेधक जग विरला ॥ ए देशी ॥ उपगारी होराजा,
 धारा अधिक दवाजा हो ॥ उ० ए टेक ॥ दक्षिण श्रेणि नगर निरुपम, नामे गगन प्रिय वारुहो ॥ उ० ॥ विद्युतदंत
 नरेशरु निको, गुणमणिनो नंझारु हो ॥ उ० १ ॥ तेनो नंदन बाल सुथाकर, हुं ठुं तास कुमारी हो ॥ उ० ॥ विद्या सा-
 धत बैरीए सुऊने, बांधी बंधन जारीहो ॥ उ० २ ॥ बंधन ठोड्यां करुणा आणी, हुं थाइश तमारी राणीहो ॥ उ० ॥
 असृत बांझी खारो पाणि, कोण पीए सुख जाणीहो ॥ उ० ३ ॥ विद्या आपुं विविध प्रकारे, अंतर न आपुं कोइ
 हो ॥ उ० ॥ वेगवतिने आप पनोति, नाखे प्रितम सोइहो उ० ४ ॥ प्रभु आदेशे वेगवतिने, लेइ निज घर आवीहो

॥ उ० ॥ विद्या साधन करती बरते, वेगवति सुख पाविहो ॥ उ० ५ ॥ तापस स्थानक पधारथो वनमें, अचरज
 अधिको पायोहो ॥ उ० ॥ नौतम तापस ते सहु दिसे, एक तदावृत लायोहो ॥ उ० ६ ॥ सो जांखे तुं सांजल स्वामी,
 वात अचंजा कारिहो ॥ उ० ॥ सावरती नगरीनो नायक, इंद्रतणो अचतारीहो ॥ उ० ७ ॥ एणी पुत्र पवित्र पनोतो,
 तास सुंदरी नारीहो ॥ उ० ॥ कुमरी अमरीने अनुसरती, प्रियंगु सुंदरी प्यारीहो ॥ उ० ८ ॥ स्वयंवर मंमप तेहतणे
 जी, नुप घणा बोलाव्याहो ॥ उ० ॥ कुमरीने मन कोइ न मान्यो, ताम घणुं अकलायाहो ॥ उ० ९ ॥ ऊगनो मच्यो
 कुमरी पिताशुं, दिऐ पुत्री परणावीहो ॥ उ० ॥ कुमरी हठीली अधिक अनीली, समजे नही समजावीहो ॥ उ० १० ॥
 नुप नणे हम जेरे बरस्यां, कुमरी पिता तब कोप्योहो ॥ उ० ॥ युद्ध करवा कारण कावो, सडपणाथी रोप्योहो ॥
 उ० ११ ॥ कोइ नरपति लछी लनी सुआ, कोइ नावा जुजुआहो ॥ उ० ॥ लाज धरी वनवास ग्रहीने, तापस रुपि हुआहो
 ॥ उ० १२ ॥ ते कुमरीने देखण केरी, यडपतिनी मति जागोहो ॥ उ० ॥ नगरी वनमे चाली आयो, अत्रयतो अनु
 रागीहो ॥ उ० १३ ॥ देवल एक नलोठे उत्तम, द्वार जनीत अति वारुहो ॥ उ० ॥ पेखी पूठिउ पुरप प्रजाविक, सो
 नांखे सुविचारुहो ॥ उ० १४ ॥ सकल सिरोमणि शेर प्रसीधो, कामदेव सकामहो ॥ उ० ॥ ताधर सुंदरी सुंदर नारी,
 रूपगुण अनरामहो ॥ उ० १५ ॥ तासपुत्री अठे गुणवंति, वंधुमति सुकुमारीहो ॥ उ० ॥ जोवन तन जन मोदन
 गरी, वाजी जाकजमालीहो ॥ उ० १६ ॥ शेठे पुछ्यो निमतिक वारु, सुता वर कुण थाइहो ॥ उ० ॥ द्वारखोलजे
 देवत केरो, सोइ वर सुखदाइहो ॥ उ० १७ ॥ एमनी सुणी मन ख्याजल लाग्यो, देहुलमांही जांयहो ॥ उ० ॥ विस

वार ए अर्गला केरो, द्वार खोल्यो रायहो ॥७०१७॥ देखी प्रचुने देवलमांही, शेर आश्र्वर्य पाइहो ॥७०॥ परणावी
 पुत्री निज खांते, ढील न कीधी कांइहो ॥ ७० १९ ॥ ढाल ए त्रेविशमी वरचारु, जोगवे जोग उदारुहो ॥ ७ ॥
 श्री गुणसागर सूरी पयंपे, यादव यश विस्तारुहो ॥ ७० २० ॥ ॥ दोहा ॥ अंते उर परीवारजुं, राजा वनमें
 जाय; दिवो प्रचु बाजारमें, नयण रखां लोचाय ॥१॥ लोचाया लोचण घणुं, देखी कुमरनी शोभ; कुमरीने संजोगनो
 लाग्यो अधिको लोच ॥२॥ शोध करंतां सांजल्यो, बंधुमति जरथार; बोलावी पुढे तदा, सखियण सुविचार ॥ ३ ॥
 ॥ ढाल २४ मी ॥ धन धन जंबुस्वामीने ॥ ए देखी ॥ वहिन जणे वाइ सुणो, ए वसुदेव कुमार; जोग पुरंदर
 सुंदरं, कामतणो अवतार ॥१॥ भाग्य प्रबल वसुदेवनो, एतो गुणमणि रयण जंझार; जाग्यवति जे जामनि, एतो
 पामे नल जरतार ॥जा०२॥ एकांते तव दूतिका, आवी प्रचुजीनी पास; कुमरी काम समारवा, आप करे अरदास
 ॥३॥ देव पथारो मंदिरे, पुरो कुमरीनी आस; हसी रसी रसरंगमे, कीजीए जोगविलास ॥अ०४॥ जो नवमानो वातए,
 तो थारो विपरित; प्राण तजशे कुमरी, अति डखदाइ ठे प्रित ॥ अ० ५ ॥ उचर दीधो अवसरे, झानी दीठो होइ;
 संतोकी धर मोकली, हरखी कुमरी सोइ ॥अ०६॥ वनमाता कुमरीतणी, वितरणि अजिराम; चलण प्रज सह चारणी,
 नागश्रीत सुनाम ॥ अ० ७ ॥ सोवंतो जरनिदमें, देवी कीयो अपहार; आवी वेडी बागमें, वाणी वेदे सुविचार
 ॥ अ० ८ ॥ आरति कोइ मत आणजे, हुं थारी हेतकार; चरी सुणाहुं आपणी, आलस निद निवार ॥अ०९॥
 अमोघ दर्शन नामथी, चंदनपुरनो राय; चारुमति पति जाण ए, जो सौने सुखदाय ॥ अ० १० ॥ चारु चंझनामे

जज्ञो, नंद महा सुखकंद; राज करे रलीआमणो, ठे सु कंद निकंद ॥ अ० ११ ॥ अनंगसेनानी सुता, सा रूप
 निधान; काम पताका प्रगटी, हयी नामनी ज्रीने वान ॥ अ० १२ ॥ काम पताका कामनी, ललित मनोहर गात;
 राजा कीयी रागनी, सुख मांहीं दिन जात ॥ अ० १३ ॥ दिन केताने अंतरे, राजा तापस थाय; गर्ज कहे वैरागनी,
 साथ रही सुख पाय ॥ अ० १४ ॥ तापसी दिन पुरते, प्रसवी पुत्री सार; रुषिदत्ता अन्नियानथी, वाधे रूप अ्यपार
 ॥ अ० १५ ॥ ए चोर्वाशमी ढालमे, श्रावकर्नां व्रत पंच; श्री गुणसागर आदरे, जंग न आणे रंच ॥ अ० १६ ॥
 दोहो ॥ सावयी नगरीनो धणी, शीलायुध नरेंद्र; घेने खांच्यो आवीयो, तापस वन आनंद ॥ १ ॥ पगे लागतां
 तापसे, आदर दीयो अ्यपार; तापस पुत्री साचये, विनय तणो आचार ॥ २ ॥ प्रोजन प्रक्ति विशेषयी, करती
 वरते जाम; आ पुन्य मांही उपज्यो, काम राग अन्निराम ॥ ३ ॥ ढाल २५ मी ॥ हुं तुज साथे नही बोलुं
 रीसजजी ते मुज्जे विसारीजी ॥ ए देशी ॥ काम राग अठे जग मोटो, जेहथी खाइं खोटोजी; एकलमे तीहुं जग
 हरायो, कुण वनो कुण ठोटोजी ॥ का० १ ॥ राजानी आतुरता जाणी, ऋषिपुत्री वृत राखेजी; व्याहतणो विधि
 साचयी, प्रेमतणो रस चाखेजी ॥ का० २ ॥ राजा बोले कामम मोले, नाम प्रकासे मारोजी; सावरथी नगरिनो
 नायक, ठे मुज्ज प्रितम प्यारोजी ॥ का० ३ ॥ विविध प्रकारे सुख विलसंता, वारु वचन वदेवोजि; जो अ्योधान
 र्हेंगे माहरे, तो शो उत्तर देवोजी ॥ का० ४ ॥ राजा नीकली गया पाठे, लोक घणुं अकलायोजी; गुंढ न लाधे
 तास पुत्री, पुठया उत्तर पायजी ॥ का० ५ ॥ तापस वन राजा ठेनी सुणी, सामा लोक सिधावेजी; राजा सन्मुख

देखी आगत, परम महा सुख पावेजी ॥ का० ६ ॥ तापस पुत्री मातपिताने, वात जणावी एहोजी; बानी राखत
 जायो वेढो, रुपकला गुण गेहोजी ॥ का० ७ ॥ रोग सुयाने माता मुद्द, सुरगतिनो अवतारोजी; साहू नाग श्रावितरणि,
 नही संदेह लगारोजी ॥ का० ८ ॥ श्री जिनधर्म अठे जग साचो, जो आराधे कोईजी; मोहूतणा फल आपणा
 हारो, सुर गति सहेजे होईजी ॥ का० ९ ॥ ज्ञान बले में देख्यो पावो, जाग्यो नेह घणेरोजी; मातपिताने सुत संघाते,
 मोही रह्यो मन मेरोजी ॥ का० १० ॥ चाली आव्यां मातपितातो, दुखिया दीवा दोईजी; मा पाखे बालक जेम
 जीवे, करे विमासण सोईजी ॥ का० ११ ॥ बालपणे माता मरी जाइ, तरुण पणे तो नारीजी; वृद्धपणे सुत मरतां
 चारव्या, ए तिने दुख चारीजी ॥ का० १२ ॥ आप जणावी मातपितानी, आरति अलगी टालीजी; एणीपेरे आप
 धवरावी, बालक लीधो पालीजी ॥ का० १३ ॥ एणे पुत्र कही बोलाव्यो, तापस सधले तामोजी; एहज नाम प्रसिद्धो
 चाल्यो, लोक वचन अनिरामोजी ॥ का० १४ ॥ मरण समे निज मातपिताने, जिनमतशुं स्थिर स्थापीजी; अणसणने
 आराधन बले, सुरवर पदवी आपीजी ॥ का० १५ ॥ तापसणी होइने हुतो, बालक लेइ लारोजी; शिलायुद्ध तणे
 घर आवी, सुपण बाल कुमारोजी ॥ का० १६ ॥ राजा साथे वदे मृडवाणी, ए ल्ये थारो नंदोजी; अपुत्रियाने नंदन
 क्यांथी, नांखे ताम नरंदोजी ॥ का० १७ ॥ मूलथी वात सुणावत जाण्यो, साचो शोअल विच्यारोजी; बालक
 लीधो कारज सीधो, मान्यो अति उपगारोजी ॥ का० १८ ॥ एणी पुत्र कीयो वमराजा, राय हुवो व्रत धारोजी; नेमि
 तीर्थकर तीर्थ एतो, वात तणो विस्तारोजी ॥ का० १९ ॥ एणी पुत्र तणेवर पुत्री, प्रियंगु सुंदरी बालाजी; रुपकला

गुण सुंदर साची, स्वामी सुख मालाजी ॥ का० २० ॥ तुमशुं राग धरे अधिकेरो, सारो एहनो काजजी; जाणी
 अदता मत खींचावो, में दीधी ए आजजी ॥ का० २१ ॥ ए घरमें हुं हरतां फरतां, महारुं कीधुं चालेजी; राजाजी
 तो एकमनो अति, आण हमारी पालेजी ॥ का० २२ ॥ कामदेवना देवल मांही, प्रित पनोती पोखीजी; करी
 विवाह विनोद करीने, सुंदरीने संतोखीजी ॥ का० २३ ॥ देवल मांहि देवि नापित, कीधो लीधो लाहोजी; राय
 लिखी वीतरणी विलसीत, प्रगट कीयो वियाहोजी ॥ का० २४ ॥ ए पचविशमी ढाले चाली, जिहां तिहां अधिकाइजी;
 श्रीगुणसागरसुरी कहीजी, पुन्य सदा सुखदाइजी ॥ का० २५ ॥ दोहा ॥ एकवार एकलपणे जागी जोवे जाम, काचित्
 कुमरी आगले, उनी दीवी तामा ॥ १ ॥ कवण अठो तुमकामनी, कहो आपणो नाम; काम किते आवीअठो; सोइ प्रकाशोकाम
 ॥ २ ॥ दाज २६ मी ॥ श्री श्री मंदिर साहेव मेरा ॥ ए देशी ॥ स्वामी सुणेने सुंदरी नाखे, संप कोइ न राखेरे; काज
 करवा कारण आवी, सोइ कारज दाखेरे ॥ स्वा० १ ॥ गिरि वेंताढे नगरी निरोपम, गंध स्मृदि सोहावेरे; गुणनो
 सागर अथिक उजागर, राय गंधार कहावेरे ॥ स्वा० २ ॥ प्रथवी राणी रंजा जाणी, कुमरी तेहनी जाइरे; नाम
 प्रसिधि प्रतावतिहुं, सुजनपणे सुखदाइरे ॥ स्वा० ३ ॥ मानस वेग तले घर गइती, स्वर्णसुप्रनपुर मांहीरे; मात
 अंगारवति सतीयामें, सती सीरोमणि प्राहिरे ॥ स्वा० ४ ॥ वेगवति निज पुत्री केरी, आश अधिकी आणेरे; में
 पुवी सा क्यां गइवे, खबर कोइ न जाणेरे ॥ स्वा० ५ ॥ सखियापणे सोमश्री बोली, माहरे काम सिधाधीरे; श्री
 वसुदेव नरेथर पास पण, पापण फरी नयाधीरे ॥ स्वा० ६ ॥ मानस वेग महा मयमंतो, मुजशुं अडीयो आवेरे;

माय इवावे शील सुधर्मणी, पोंहचो वान वीषावेरे ॥ स्वा० ७ ॥ तुं उपगारी सिरोमणि साची; माह्यरो कारज साररे;
 संदेसोसाइ संघाते, कहिता जीव उवाररे ॥ स्वा० ८ ॥ आश बले में ए दिन लिधा, आगे आशा बूटेरे; झुरी झुरी
 पंजर हुइ, अब मुज हइमो फूटेरे ॥ स्वा० ९ ॥ वेगे वा'र कीजीइं माह्यरी, नहीतर ठोडुं प्राणरे; शीलभंगथी नके
 जाणो, प्राण घणा घट आणारे ॥ स्वा० १० ॥ जीवन मरण तणुं शुं माह्यरुं, अबला तो धुर नामारे; पुरुषपणो
 तेहनो श्यो उप्राजो, जेहथी न सरे कामारे ॥ स्वा० ११ ॥ दिन वचनमें एही वीनविउ, ज्यम जाणो त्यम कीजरे;
 एटलो जाणी जोर अरिनो, क्युंए सुयश न लीजरे ॥ स्वा० १२ ॥ चालो तो प्रचुने पोंहोहचाबुं, सोमश्रीने पासेरे;
 चाली कहंता चतुरपणथी, चाली लेइ उट्हासेरे ॥ स्वा० १३ ॥ स्वामी नरखी सुंदरी हरखी, अपारति कीधी कोणरे;
 नारी रूप धरी प्यारो पेउमो, पद्मनिशुं सुख माणरे ॥ स्वा० १४ ॥ काम समारी सैह्यर केरो, प्रजावति घर चालीरे;
 लोकाचार वे'वार विशेके, चित्तमो पिउने आलीरे ॥ स्वा० १५ ॥ दिन केताने आंतरे मानस, वेगे लखी ए वातारे;
 कोपतणे वश, कलकलित्त अति, कालो पीलो श्रातारे ॥ स्वा० १६ ॥ मांडी समरतणीरे सजाइ, शोचन कीथो कोडरे;
 सिंहतणीपेरे सुरपणथी, आणी अडीयो दोडरे ॥ स्वा० १७ ॥ जाणी अन्याइ ठोमे जाइ, जाइ धर्म सहाइरे; खेचर
 प्रचुनो पद्द करंता, मची अधिक लमाइरे ॥ स्वा० १८ ॥ तव तो वेगवतिनी माइ, जाणी जमाइ प्यारारे; दिव्य
 तीरना तरकस दोई, दीधो धनुष उदारारे ॥ स्वा० १९ ॥ प्रज्ञापति वर विद्यावार, प्रजावतिथी पाइरे; विद्या बलने
 चुज बले बली, बांध्यो त्रीयानो जाइरे ॥ स्वा० २० ॥ सासु सामी आवी मागे, पुत्र निहा मुज दीजरे; बंधन ठोमो

साला साथे, परिधल प्रीति कीजरे ॥ स्वा० २१ ॥ सोमश्रीने प्रनु पहिराबी, साथे हुयो स्वग सोयरे; वेसी विमाने
 महापुरी आया, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० २२ ॥ विश अने खटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे; श्रीगुण
 सागर सुरी सजुणो, साजनीयो सुख दाइरे ॥ स्वा० २३ ॥ ॥ दोहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार;
 रूप धरी घोना तणो, कीधो नृप अपहार ॥१॥ उंचो जातां अंबरे, दीधो मुष्टि प्रहार; गंगाजल मांही पम्प्यो, श्री
 वसुदेव कुमार ॥२॥ गंगाजलधी नकल्यो, तापस वन आवंत; आदर देखी अति घणो, गाढो सुख पावंत ॥ ३ ॥
 ॥ ढाल २३ मी ॥ ॥ देशी वनमालानी ॥ एक दीवी रमणीराइरे, सासु धन जाणे कांइ; विकल रूपणी
 दीसरे, सादांत घणेरु फीसे ॥ १ ॥ बल्ल बिहुणी बालीरे, नर हाम धरघा विकराली; एधेली नाम धरंतीरे, नृप
 देखनि रंग करंती ॥ २ ॥ तव पुठीयो तापस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा; ए जरासंधनी जाइरे, ए केतुमतिरे
 कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेश राणीरे, ए रूपे रंजा समाणी; ए सर्व सुलक्षणा धारीरे, ए मात पितानी प्यारी
 ॥ ४ ॥ ए कर्म न वृटे कोइरे, सुंदर दानव मानव होइ; एह अवस्था पामीरे, तव पुनरपि पुठे स्वामी ॥ ५ ॥
 ए वाय तणो ठे जेरोरे, किणही कीधो मांमो दोरो; जे जीम हशे तिम जासोरे, हुं जोगुं एह तमासो ॥ ६ ॥
 कोई मंत्रवादियो आयोरे, ते आपुण परे खीजायो; ए तेहनां कीधां कामोरे, ए ठे राजसुता अन्निरामो
 ॥ ७ ॥ ए परबश हुं जामोरे, धुर फेनीयो तेहनो गमो; ए मारीविमारी देहोरे, तस हाम साथे सनेहो
 ॥ ८ ॥ तव करुणानी मति आणीरे, सा कीधी तामसयणि; श्री नवकार पसाइरे, न वांठित काम सराइ

॥ ९ ॥ जम रूपीया जण ध्यायारे, राजाना रोश नराया; उपकार कोई न जाएयोरे, प्रभु राज ग्रहि में आण्यो
 ॥ १० ॥ पुठतां उत्तर नाखेरे, ते काणि न कोइ राखे; ए केतुमतिने बापेरे, वर एक निमतिइं आपे ॥ ११ ॥ ए
 पुठयोथो पेहजुं वारुं, जगजीवन आ सहु मारु; मुफ हता आप्यवता विरेरे, तुं नांख्य भावि नलीपेरे ॥ १३ ॥
 तव जाणे नर सहि नाणिरे, कही दासीए अहिनाणि; तुम्ह पुत्री सारी कस्येरे, तस नंदनथी तुम रस्ये
 ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप अप्रदेशरे, हुशियारमिं सुविशेष; वरतता तुं अब लाधारे, सुर इष्ट नणी अप्राराथो ॥ १४ ॥
 अब वध जुमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां केइ; ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने वव आपी ॥ १५ ॥ स्वामीनो
 काम समारीरे, हम वाहला होस्यां नारी; एह सुणतां वातोरे, प्रभुनो मन अकलातो ॥ १६ ॥ चिंताए चांण्यो जामोरे,
 एक खेचर आयो तामो; प्रभु लेइ चाल्यो ठोमइरे, ते सुनट रद्या मोहवाइ ॥ १७ ॥ आकाशे जाता जोइरे, खग साथे
 पुठे सोइ; तुं कुंण अठे सुखकारिरे, कहे वात विशेष विचारी ॥ १८ ॥ हुं प्रभावतिनो बाबोरे, माहरो ठे अधिक
 अपसाबो; मुफ नागीरथी अपनीधानोरे, हुं रायानो राजानो ॥ १९ ॥ अब पोतिने परणावारे, वैताढ्य गिरिरे वसावा;
 तुफ लेइ जाउं विरारे, था साहसवंत सधीरा ॥ २० ॥ ए दृष्टीरागनो साजोरे, ठे प्रभावति शुं जाजो; ए सताविशमी
 ढालोरे, गुणसुरी कहे सुविशालो ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ जुमंमलने परहरी, गज वीशहजार; उंचो जातां अंबरे,
 दक्षिण श्रेणि उदार ॥ २१ ॥ गंधसमृश पुरवरां, आइ गया तत्काल; खबर जयावी सादरी, सहु नणी सुविशाल ॥ २१ ॥
 ॥ ढाल २८ मी ॥ तुं सांचल हो जिनपति, तथा वांसलडी वेरण थइ लागी तुं ब्रजनी नारने ॥ ए देखी ॥

जग जाचो हो यडुपति, तस माथे दिपति रति; सुर मानवने माठायति, अति किरति गावे ठति ॥ ज० १ ॥ साजन
सनमुख आवीयां, ते प्रनुजीने मन जावीयां; पुरमाहि सीधावियां, ते परम महा सुख पावियां ॥ ज० २ ॥ सुहूर्चनो
मंदाणोजी, तव कीजे कोमकल्याणोजी; तव मेल्या जोसी जाणोजी, दिन साध्यो सार प्रधानोजी ॥ ज० ३ ॥
प्रत्रावतिने प्रनु तणो, तव कीधो ब्याह सोहामणो; वर रुमने रलीआमणो, तव घर घरवार वधामणो ॥ ज० ४ ॥
सुख सागरमांही जीलइ, तव तन मनगुं अति फुलइ; तव नेम सुरति पुलिण, पाठो सयलो हि जुलिइ ॥ ज० ५ ॥
सुपर्क आप विगोवतां, तव आणी पोहतो जोवतां; अति नीडावश होवतां, प्रनु लेइ चलयो सुखे सोवतां ॥ ज० ६ ॥
अंवर जातां जागीयो, तव कावो दोइ लागीयो; गरदनमें गमदो वागीयो, तव वैरीनो बल जागीयो ॥ ज० ७ ॥
उंढा पाणिमें पड्यो, जल पयरीने कां अड्यो; प्रनु वसति त्रणि अति दमवड्यो, तव कुंदनपुरी आवी चड्यो ॥
ज० ८ ॥ राजा राज करे नलो, ते पद्मप्रन्न ठे निर्मलो; ते गुण आचारे उजलो, ते तेगने त्यागे आगलो ॥ ज०
९ ॥ पद्मश्री नारी सती, तस पुत्री ठे गुणवति; सा चाल्ये चाले मलपती, सा कोमल वाणी जल्यती ॥ ज०
मा राग कलाए अति ताणे, अनीमानपणो मनमां आणे; सांचली बुराइ न पीठाणे, जग सयलो हि तूण करी जाणे
॥ ज० ११ ॥ इम सुणी आयो चाली; जीतीने परणी सा बाली; सा नारी मेली जे टाली, लहरीए जो जिन आझा
पाली ॥ ज० १२ ॥ रस रंगे रमतो संवरे, तव निलकंठजी अपहरे; तव सीख देतां करगरे, प्रभु पत्नीयो चंपा सरवरे
॥ ज० १३ ॥ मंत्रिनी पुत्री परणी, सा कंचन वरणी सुख करणी; सा रूपे रंजा मनहरणी, सा इंझाणी उपम धरणी ॥

ज० १४ ॥ सुपकरी सधरे धणी, जाणे सुख पावुं एहणी; पण जेहनो खवालो धणी, तिहा कासा चल वार तथा ॥ ज०
 १५ ॥ तव अरि आ खुण जाण्यो कीयो, प्रभु जल क्रिमा करतो लीयो; तव मुष्टिं हणतां हियो, ते अंबरथी नाखी
 दियो ॥ ज० १६ ॥ तव पनीयो गंगजल मांहि, तव अटविमे फीरतो प्राहि; प्रभुवन राजा उवाहि, नगरीए आण्यो
 धरीबाहि ॥ ज० १७ ॥ कुमरी जरा परणावतां, तव गीत घणोरा गावतां; तव मंगल च्यार करावतां, तव सुंदरीं सुख
 पावतां ॥ ज० १८ ॥ तव नंदन नीके जाइउ, राजाने आणी सुणाइयो; तव दाने दरिद्रग माइउ, तेजरत कुमर
 मन नाइउ ॥ ज० १९ ॥ तव अथवंति सुंदरी करी, तव सुर सेन्यां वरी; सामा देवी तव आवे खरी, विनति करे
 करधरी ॥ ज० २० ॥ बेसी विमान प्रचू आवे, अशनी वेगने सोहावे; सेन सकल लेइ आवे, चाली अरिनोपुर पावे
 ॥ ज० २१ ॥ अंगारक चढी आयो, सुर्प निलकंठ बोलायो; रणथंन तीहारो पायो, बहुविध युद्ध वणायो ॥ ज० २२ ॥
 विद्याधर बहु वाग, युद्ध करता अति त्राग; जाए अपुग नाग, प्रभुजीं अति गाग ॥ ज० २३ ॥ अशनी वेगने
 राज आप्यो, सहु वदीतो स्थिर स्थाप्यो; अणीमांहि मुख्य करी ठाप्यो, सधलो तेहनो दुख काप्यो ॥ ज० २४ ॥
 निलयशा आवी धरी, हाथ जोमी विनति करी; ए दोइ विन्यावर सहचरी, ए सह सबहुं तेरे गुणचरी ॥ ज० २५ ॥
 ए ढाल विशने आठमी, शीवपुरी जाशे आतम दमी; ए नारी सहू सरखी समी, श्री गुणसागर मन सारमी ॥ ज०
 २६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शुद्धि सधली लेइ करी, श्री वसुदेव कुमार; मध्य खंममें आवता, सुणीओ एह विचार ॥ १ ॥
 श्री अरिष्ट पुर वर भलो, श्री हरी ब्रह्म नरेश; पटराणी पदमावति, पद्मा वास विशेष ॥ २ ॥ कुमरी नामे रोहिणी,

अमरीनो सुविलासः नख शिखतांश्च शोभति, स्वयंवर मंनप तास ॥ ३ ॥ जरासंध सुत बांधवा, पांनच कौरव राय;
 यादव खेचर नृप अवर, मिट्या एका आय ॥४॥ वैठा वन वन आसणा, वन वन नृपाल; वनी वनी शोभा
 करी, दिसे जाकजमाल ॥ ५ ॥ ढाल ३ए मी ॥ धन प्रचु रामजी, धन्य परिणामजी ॥ ए देशी ॥ कुंवर आयो
 श्री वसुदेववे, रुप विरुप करी कोलिको; जाइ न लहे नेववे ॥ कुं० १ ॥ रोहणि रंजा सरस विराजे, साजी सवरो
 वेसवे; मंनप थायी जगत सोहावी, मिच करी सुविशेषवे ॥ कुं० २ ॥ प्रतिहारणि आगे होइ, प्रगट करे नृप नाम वे;
 जरासंध त्रीखंद नरेश्वर, ए प्रचुजी अचिरामवे ॥ कुं० ३ ॥ अपराजीत बंधन कुंवरजी, कालयवन कुलमांहिवे; दाता
 नोका दल दरिआको, नाम धरावत प्राहिवे ॥ कुं० ४ ॥ पांनच पंच प्रतापवले अति, कौरव सत ए देखेवे; कर्ण
 कहावे कल्प तरु जे, जे ए परतख पेखवे ॥ कुं० ५ ॥ उदधिविजय आदे नव जाइ, अधिकाइमें आणवे; उग्रसेन
 थलोल करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कुं० ६ ॥ खेचर खेचर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालवे; कुमरी मोह मचकोनी
 चाली, हा आथेर चालवे ॥ कुं० ७ ॥ वन वन राणा वन वन राजा, परहरीया सब डखे; चतुरपणाथी चाली आवी,
 श्री वसुदेव हजुरवे ॥ कुं० ८ ॥ आप वजावे वाजा वारु, सुधमाइनो संचवे; कुमरी देखे रुप मुलगो, नजर नखंचे
 रंचवे ॥ कुं० ९ ॥ धौ धौ धप पम मुजवर, मादल शब्द करंतवे; धसी वरमाला रलियात रोहणि, कुंवर कंठ धरंत
 ॥ कुं० १० ॥ आप मने कुमरी तो कीथो, एतो सर्व सयाणवे; मर्म अणाल हेवे राजा सयला, हुया अधिक अयाण
 ॥ कुं० ११ ॥ उधत कुंवर कालय वनजी

प्रवर वरानी नाठी पनीधी, ए वर न्याय वरंतवे

॥ कुं० ११ ॥ कुमरी चूली हम नहि चूल्या, ल्यो वरमाल बिनायबे; काग गले कंचननी माला, एतो जली न देखाय
 बे ॥ कुं० १३ ॥ चाकर आबी माला मागे, नृप सुत वचन सुणायबे; कुमर कहे क्यम राज करेले, करता एहवो
 न्यायबे ॥ कुं० १४ ॥ कर्महिन तो केश कयांथी, कांइ करन चढायबे; पाणियहणने रजक ए मोटो, अण सरज्यां
 न लहायबे ॥ कुं० १५ ॥ निर्नर्था ते जरासंधशुं, बोल्यो चटक लगायबे; ए मातंग अढे मयमंतो, हम सरखा शुं
 थायबे ॥ कुं० १६ ॥ जरासंध कोपे कलकलीयो, वरु वना सुजट सजायबे; हाथी घोडा रथथी उठी, रेणुं रही नम्र
 बांयबे ॥ कुं० १७ ॥ श्री हरि ब्रह्म नरेश जाखे, अक्सर जाण कहायबे; जोतरी रथ कुमरी बेसारी, अब तो तुटली
 जायबे ॥ कुं० १८ ॥ कुमर कहे ससराजी एहवो, बोलन फेरी बोलबे; एतो संग लाचार हमारी, था दढता मम मोलबे
 ॥ कुं० १९ ॥ विद्या बलने मन बले बलीयो, बलीया ठे नुज दंभबे; त्रणा जीम सुजट उभाइ नाख्या, प्रनुजी पवन प्रचंभबे
 ॥ कुं० २० ॥ बीजी फोज बनी अति आबी, कुंवर कुलीयो घेरबे; कांइ अधरम करो सुर कहेतां, लाजी चल्या दल फेरबे ॥ कुं०
 २१ ॥ संयकेतु नुपाल पधारथो, दल बल सबलो साजबे; जडपति सिंह उठावणी आगे, मृग जेम चाल्या जाजबे ॥ कुं० २२ ॥
 महा बल राजा अति बलवंतो, सन्मुख आयो चालबे; उगंता रवी आगे तम जीम, सो पण गयो सुह टालबे ॥ कुं०
 २३ ॥ उदधि विजय नृप बीमो पायो, ए तुम सराखो काजबे; जाइव जोर विशेष जणावत, आवत करत अवाजबे ॥
 कुं० २४ ॥ आनंद डुंडची साहमो आयो, हाको हाक होवंतबे; अचरज पामी अंबरस्वामी, कौतुक अति जोवंतबे ॥
 ॥ कुं० २५ ॥ आगे पावन ठावे कोई, होइ रद्यो ए सोचबे; किंउ न धसे अरि उपर राजा, लोगा ए आलोचबे ॥

कुं० २६॥ सिर लोचनेने नुज पण बदिण, राजाना फूरक तवे; करत विचारण ए स्थिरस्थापी, कोइक इष्ट मिलंतवे
 ॥कुं० २७॥ कुमर कहे लम्बो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे; साक्षर बाण चलाब्यो आब्यो, नृप आगे
 अहिनाणवे ॥कुं० २८॥ अक्षर बांच्या लघु जाइना, जीलो प्रनु प्रणामवे; बहुतर सहस ए गुण राणी, जाणी
 आज सकामवे ॥कुं० २९॥ साजन मेले वसीए सोतो, वास नलो कहेवायवे, साजन मेला पाखे वसवो; जंगल
 मांही गणायवे ॥कुं० ३०॥ जाइ धाइ सन्मुख आयो, कुमर लाग्यो पायवे; उठाइअल जे अधिकेरे, लीधो कंठे
 लगायवे ॥कुं० ३१॥ चाम रुधिरने मांस हारुधी, नीजी नीतर जाइवे; पंचहि पुट नेवाणी नारी, गाढी सीतलता
 इवे ॥कुं० ३२॥ जरासंध नरेखर आदे, हरल्या राय अपारवे; धन रोहणी कुमरी करमैति, पायो नल नरधारवे
 ॥कुं० ३३॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणेरी पायवे; विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि बली वन रायवे ॥
 कुं० ३४॥ सधली रमणिशुं प्रनु प्रगट्यो, सो रिपुर आवंतवे; घर घर मंगल च्यार वधाइ, साजन सुख पावंतवे ॥
 कुं० ३५॥ साहसहु मलि चरणे लाग्या, प्रनु वीधो सनमानवे; रामचंद्र जेम गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे
 ॥कुं० ३६॥ गज सायरने चंद्र सिंघवर, देखी सुपना च्यारवे; शुन वेलाइ रोहणी जायो, श्री बलनद्र कुमारवे ॥
 कुं० ३७॥ ए गुण त्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष प्रधानवे; गुणसागरे हरि वश तणेठे, विन विन चमत्तो वा
 नवे ॥कुं० ३८॥ ॥चोपाइ॥ खंन खंन रस ठे नव नवा, सुणतां मीगा साकर लवा; श्री हरिवंश चरित्र जय
 जयो, ते प्रमथ खंन ए पुरो थयो ॥१॥

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा प्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ अथ द्वितियखंभप्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीसंभर स्वामी तणा, चरण नमुं चित्त लाय; अथ बीजो अग्रिकार
 चर, यः नणतां सुख श्राय ॥ १ ॥ न्रोजंग विश्नु नरेन्द्रजी, मनमें करे विचार; अथ अयसर संयम तणो, तज ए
 त्रिपय विकार ॥ १॥ यय पलद्वयायाला पणो, बांठे विविध प्रकार; विटल विगोवे आपने, नह ले शोच लगा ॥ २ ॥
 उग्रसेन निज पुत्रने, राजनार श्रापंत; धर्मघोष मुनिवर कने, संयम लीयो तुरंत ॥ ४ ॥ संयम पादयो साचशुं,
 केवल कीधो प्रकाश; न्रोजंग विश्नु महा मुनि, साधो मोक्ष निवास ॥ ५ ॥ मथुरा राज करे नदो, उग्रसेन राजान;
 न्याय निति गुण धारणो, शोना गुण मणि खाण ॥ ६ ॥ ॥ ढाल २० मी ॥ रामको सुजश घणो ॥ ए वेरी ॥
 राजा गुणवंतो न्याय धर्मप्रति पालहो ॥ रा० गरुड गोत्र गोपालहो ॥ रा० ए टेका ॥ उग्रसेन राजा प्रलोहो, पाले
 राज दुदार; प्रजा तणी प्रतिपालणाहो, नहि अनित्य लगरहो ॥ रा० १ ॥ श्राप श्रापणो साचवेहो, सह्रए कुल
 श्राचार; जोर न जास्ती करी सकेहो, को केहनी कण चारहो ॥ रा० २ ॥ नाम प्रणमे धारणीहो, पटराणी सुचि-
 शाल; पति त्रिकि साची सतीहो, गजगति चाल रसालहो ॥ रा० ३ ॥ श्रानन एहु विराजतोहो, वयण सुधारस
 सार; मनसा धर्मज तत्यनीहो, रति वेवि श्राकारहो ॥ रा० ४ ॥ स केहि परीवारगुंहो, वेय गुरुशुं प्रेम; पोसा
 पमीकमणां करेहो पाले सुधा नेमहो ॥ रा० ५ ॥ प्रीतगुं श्रति प्रीतनीहो, जीय एक तनुवोय; श्रानं व रंग विनोव,
 मेहो, राजा राणी होयहो ॥ रा० ६ ॥ तापस एक निवानगुंहो, राणी उर अयतार; उजापवे ते मोहलाहो, पति काल
 जनो धारहो ॥ रा० ७ ॥ मंत्रि बुद्धि विशेषथीहो, मोहलो पुरो होइ; जयो जलहि प्रवाहिउहो, जुंभा सगो नहीं

कोइहो ॥रा० ७॥ सौरीपुर विवहारीयोहो, शेठ सुनइ उदार; कांसाथा काढा लापाए, ॥ रा० १० ॥ शेठ
 ए॥ बाजाने बिहामणोहो, कंस स्वप्नावे आप; शंक न माने कोइनीहो, न ठपे तेज प्रतापहो ॥ रा० ११ ॥ पासे रहे वसुदेवनेहो
 कडेस विचारवेहो, कीयो राय हजुर; श्रीवसुदेव कुमारनेहो, दिथो जाणी सनुरहो ॥रा० १२ ॥ ब्रह्मश्र वारु महाहो, हरिवंशी
 सारे सेव अपार; कुमर न दूण अलगो करेहो, विनय वमो संसारहो ॥रा० १३ ॥ जरासंध वरु राजविहो, त्रिखंभ तणो जुपाल; राज
 राजान; राणी नामे श्रीमतिहो, जायो पुत्र प्रधानहो ॥रा० १४ ॥ अपराजित आदे करीहो, बंधव केरी जोम; कालयवन आदे
 ग्रहमां राजतोहो, पिशुन नरानो कालहो ॥रा० १५ ॥ सिंह रथ राजा बांधीयोहो, राय तणे आदेश; श्री वसुदेव कुमारजीहो,
 घणाहो, कुमर सुठ मरोमहो ॥रा० १६ ॥ करत जमाइ आपणोहो, हरब्या लोक अशेष; कुमरी जाणी कुलदणीहो,
 सुजश लियो सुविशेषहो ॥रा० १७ ॥ निश्रय लाथो वातनोहो, लोक वचनथी जाम; मास्थुं रीस न उपजीहो, ज्ञान
 कीयो कंस नरेसहो ॥ रा० १८ ॥ पतित पिताबे बोमवोहो, माय न बोमी जाय; गर्ज धरेवे पोषवेहो, मा मोटी
 विचारत तामहो ॥ रा० १९ ॥ मागी कर मेंजावणेहो, मथुरा करण उपाय; बाप दियो कंठ पंजरेहो, वयर विलय न
 कहेवायहो ॥रा० २० ॥ अस मंजस देखी घणोहो, श्री अतिसुकु कुमार; पाले चारीत्र सादरोहो, राग न रोस लगा
 विजायहो ॥रा० २१ ॥ कंसवतं सक सारीखोहो, वरते आण अखंभ; मर्दन मान महाबलीहो, पाले राज प्रचंभहो ॥रा०
 २२ ॥ ढाल जली ए त्रिसमीहो, निसुणे जे नरनार; गुणसागर गर्जे महाहो, अन्न धनने अधीकारहो ॥ रा० २३ ॥

॥ दोहा ॥ अनिक जत्याजस आगजो, अनंत सेन ब्याल; अर्जित सेन सोह्यामणो, अनहित रीपु सुकुमाल ॥ १ ॥
 देवसेन तो देवता, शत्रुसेन अतिथीर; उपजशो हरी माउरे, सामल वरण शरीर ॥ २ ॥ विरा वरणे सामला, विरा
 शोच निधान; विरा सबला सारीखा, विरा पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥ विरा जोगी जमरला, जोगवशे जल जोग; रयागी तो
 त्रिनुवन सीरे, योगवशे वरयोग ॥ ४ ॥ विरा साधु सनुणना, जोतां सहस्र अटार; हांशे शिवपद साधणां, साचा
 संजम धार ॥ ५ ॥ ए खटहि विरा तथा, पुर्व जवंतर सार; मुळ फहेतां तुमे सांजलो, जविक जलो गुं विचार ॥ ६ ॥
 ॥ दाल ॥ ३१ मी ॥ परजव वात सुणावेरे स्वामी ॥ ए देशी ॥ पट जाइना पुर्व जवंतर, वेककीनंदन ठेरे
 सुहंकर; चरम शरीरी छत्रम प्राणी, नेमजीने सरजीनीए वाणी ॥ १ ॥ मथुरा नामे नगरी बोजी, जाणीए
 इंदूपरी समतोली; जानुं नामे शेर ठवार, कंचन कोमी अठेत सुवार ॥ २ ॥ जमुना नाम निरुपम नारी,
 साहने साहृणीठे अति प्यारी; पुत्रा सातनी ते माता, जगमांहि ठे अथीक विल्याता ॥ ३ ॥ सुजानुंने जानुं किराति,
 जानुं खेणए त्रिजो विरति; चौथो मुरजने सुरदेवो, ठडो सुरदत कहेयो ॥ ४ ॥ सुरसेन ए साते जाइ, नारी साते
 ए परणाइ; कालिंडि तीजकाने कांता, श्री कांता सुंदरी अति साता ॥ ५ ॥ युति समयुति वंसे विशाली, चंखशुं
 कांता रूप रसाली; सात सहोदर साते नारी, साता माने विविध प्रकारी ॥ ६ ॥ शेर अने शंगणी विदा, लेइ
 पाले सुधी सिद्धा; संथारो करी ठोमी प्राणो, ततखीण पाग्या अमर विमानो ॥ ७ ॥ पाळे कुंवर कुयिसन पढाया,
 धन उजामीने रमवनीया; आपव सुरधाने अति जाग्या, तब ते चोरां करवा जाग्या ॥ ८ ॥ उजणी नगरी

चली आया, चोरी करवा काज सीधाया; लघु जाइने मूझी मसाणो, बिजा चोरीनी मती गणे ॥ ९० ९ ॥ तिले
 अबसर तिहां राजा निको, वृषध्वज राय रायासिर टिको; कमलाराणी मंगी कुमरी, रूपे रुझी जेहवी अमरी
 ॥ ९० १० ॥ दृढ मुष्टिने सात वव्याही, सासरमे आर्वारे उमाहि; सासु क्रोधणी बहु वभवति, नीत लमाइ सासु
 सेति ॥ ९० ११ ॥ सासु बहुथा ए बहु आंगे, तो बहु सासुने पगे लागे; जो सासु अति आप खंचावे, तो बहु
 सासुने वझनावे ॥ ९० १२ ॥ पापज प्यारो ने धर्म न प्यारो, घरमे वरते बहुने वारो; नारी नेहनो नाथ्यो पिडनो;
 माथी दूर त्रियाथी नेयनो ॥ ९० १३ ॥ आयो मास वसंत विराजी, खेलण केरो साज सुसाजी; राय जमाइ वनमे
 आवे, खेल करी रनीयाय तथावे ॥ ९० १४ ॥ पापणी पाप विच्यारे गाढो, विसहर मोटो आणी समढो; घटमे
 राखी कहे विकराला, बहुलावो कुसमकी माला ॥ ९० १५ ॥ विसहर उनी साह्यो हाथो, सामुरबाणी मलीयो सह्यो साथो;
 मुइ जाणी मसाणो मेली, परम महासुख पामि पेलि ॥ ९० १६ ॥ राते घर आयो भरतारो, छचितो देखि परि-
 वारो; खबर लहि समसाने आवे, एक रुषि देखी सुख पावे ॥ ९० १७ ॥ पगे लागीने उन्नो होइ, चांखे आरतिवंतो
 सोइ; जो हुं मंगी नारी पावं, तो तुम चरणे अति चित लावं ॥ ९० १८ ॥ आगे जाता मंगि पामी, साधु समीपे
 लायो स्वामो; रुषि तनुवाये फरसी जामो, विसहर विस उतरीयो तामो ॥ ९० १९ ॥ मंगी मुकी मुनिवर संगे,
 आपुण घर आयो मन रंगे; लेवा महिला साज सुचंगे, आचूयण वख बहु भंगे ॥ ९० २० ॥ एतले वितक वितो
 केहवो, ते सांभलिए जे के जेहवो; सुरसेन मसाणें बेसायो, ते मंगीनी दृष्टि आयो ॥ ९० २१ ॥ रूप धणो ने यौव

वृत्ति, तदृणी त्रियानो चित हंता; मंगा माह दखा तासा, पति करवानी मांदी आसो ॥ ५० ३२ ॥ वनिनाः
 वेदी सरखी साची, पासे लहे तस साथे राधि; ते शुं मंगी पाले जांखो, सुख विलसणनि ठे थनीलायो ॥ ५० ३३ ॥
 चोर कहे तुज पतिधी संकु, मंगी मुह किंयुं तव वंकु; पति मारी तुज साथे आबुं, पण जो धारी वाचा पावं ॥ ५० ३४ ॥
 ३४ ॥ कौतरु जोवा वाचा आलि, मंगी पति तव आयो चालि; खामो मंगनि पकमायो, रुपि पग पुजणने चिः
 लायो ॥ ५० ३५ ॥ मंगो चोट करंति जाणि, मा रुहि वोल्यो करुणा थाणि, रंती चंभीरे कुलजंभी, शुं चाहे नीः
 पति शीरखंदी ॥ ५० ३६ ॥ प्रितम प्रेम वसे हसी जांखे, ए शुं सातव उतर दाखे; जांमे मारी मुऊ कर कंः
 म्यान पद्मयो उटकी एम जंवे ॥ ५० ३७ ॥ जुंमाने छपले अति थाइ, पेळी जिम यदु मुरति लाइ; प्यारि थइ प्रिः
 मने प्रमाइ, तिम मंगीए यात वणाइ ॥ ५० ३८ ॥ जाइ चोरीनो धन लाया, वाटा साथे ताम कराया; लघु प्राः
 वाटो नरि इडे, संजम लेयो मनमां वंठे ॥ ५० ३९ ॥ जाइ पुठे ए कुण कारण, मंगी चरित सुणायो तारण, हः
 कर्मी वैरागे राता; धन सपजो लेइ वन भ्रता ॥ ५० ४० ॥ घर आवी बहु याने आपी, आपुण संजमनी मः
 थापो; कारण जाणी बहु ए वैरागी, चछंदे माणस दुआ त्यागी ॥ ५० ४१ ॥ दृढ मुष्टिने मंगी मीलिया, सोः
 माणस सुरगति नानिया; दो सागरने पालि आबो, स्वर्गसौ धर्म पुन्य प्रभाबो ॥ ५० ४२ ॥ जाइ संमं प्ररत बखाः
 गिरां वेताढ्य ददिण दिसी जाणुं; नित्या लोक नगरनी नामो, चित्र बुन राजा अर्नारामो ॥ ५० ४३ ॥ नामः
 प्रणामे नारि मनोहर, साते सुत उपना तस उवर; एक निमतज मोढो देख्यो, सात हिने वैराग्य विशेष्यो ॥ ५० ४४ ॥

३४ ॥ संजम पालि सनतकुमारे, देव थया करणिं अनुसारे; सागर साते आउज हुयो, वरु बंधव उपजीयो जुयो
 ॥ ५० ३५ ॥ कुरु जंगल हथीणापुर केरो, गंगदेव ठे नुप नलेरो; नंद जस्या राणि मन न्नावि, खटहि सुत उपजी
 या आवी ॥ ५० ३६ ॥ गंग गंग दत गंग सुमित्रो, नंद सुनंद नंदिखेण पवित्रो; ए षटहि बंधवनि जोमो, मात
 पिताना पुरे कोमो ॥ ५० ३७ ॥ मात पुत्रा चारीत्र लिधो, माएस जन्म क्रतारथ किधो; अणसण अवसर सुत
 मुख जोधे, मात मोह तणे वस होधे ॥ ५० ३८ ॥ किधो एह नियाणो माइ, आगे हेज्यो एह सगाइ; स्वर्ग सातमे
 तेह सिधाया, सोले सागर आय लहाया ॥ ५० ३९ ॥ देश मृगावड नामे वारु, नगर दसारण सोजे अपारु, देवसेन
 राजा गुण नरीयो, बहु परिवारे अठे परवरियो ॥ ५० ४० ॥ धन देवि राणी सुखदाइ, नंदयस्या जीव उपजी आइ; देवकि नामे
 कुमरी जाइ, रुप कला गुणनि अधीकाइ ॥ ५० ४१ ॥ उ खट बंधव लीए अवतारो, केहि विध तेनी सुणो अधीकारो;
 ढाल एकत्रिसमी एम न्नास्थे, श्री गुणसागर पुन्य प्रकासे ॥ ५० ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ कंस प्रशंस करी घणी, श्री
 वसुदेव नरेस; दीधी देवी देवकि; किधो व्याह विशेष ॥ १ ॥ हय गय रथ कंचन रयण, घणा तेम पटकुल; आप्या
 वरने दायजे, मंणी माणिक बहु मुल ॥ २ ॥ एक सहस गोकल वली, नंद गोकुलि साथ; देवक राय पुत्री चणि,
 आपे बहूली आथ ॥ ३ ॥ कंस नंद साथे ग्रही, श्री वसुदेव नरंद; मथुरा नगरी आविया, मनमां धरी आणंद ॥ ४ ॥
 कंस हवे तिहां कण करे, सहुने जमणवार; विचमें जे वितक हुवो, ते सुणजो सुविचार ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ३२ मी ॥
 हरीया मन लाण्यो ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेठि गोखमें, जीव जस्यावरनाररे; मुगथा मानचरी, नणदि साथ कतोहलि

सारि यनके परीयारे ॥ मु० १ ॥ करे पवन प्रतिचारणा, आपि केइ मुखवासर ॥ मु० ॥ कइ अश्रुत जलपी भर्मा,
 दासी उन्नी पासरे ॥ मु० २ ॥ केइ विलेपन करी धरी, कुंकुम ठाँटे केयरे ॥ मु० ॥ केइ उन्नी मुख अगले, अः
 रसी कर लेयरे ॥ मु० ३ ॥ सुरज रथ खँचि रह्यो, मथ्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी तणा, रूप रंग न,
 बिलासरे ॥ मु० ४ ॥ ए ह्वे मुनीवर मलपतो, एमंतो रुयीराजरे ॥ मु० ॥ उंच नीच मज्जम कुले, फरतो आहाने
 काजरे ॥ मु० ५ ॥ मोहो मचकोनो माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥ एहवा रतन ते जनमीयां, धन्य माता तः
 जाग्यरे ॥ मु० ६ ॥ मद ठाकि बोलेइसु, जीव जस्या तजी लाजरे ॥ मु० ॥ भले आव्या रुपिरायजी, उठयदिन से
 आजरे ॥ मु० ७ ॥ धन्य घनी धन्य आजुनी, मुज मन अर्धोकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देवरजी आपणे, मलीने गाः
 गीतरे ॥ मु० ८ ॥ नि सुणि वचन ते मुनिश्वरु, नरखे उंचो ते वाररे ॥ मु० ॥ बेवी दिवि गोखने, वम बंधवनी नाररे
 ॥ मु० ९ ॥ असंमजस देवि थयो, रोपां कुल रुपिरायरे ॥ मु० ॥ आ जो कीनी चापनी, चनी सोनइए जायरे ॥ मु०
 १० ॥ ज्ञानी तव बोले इस्युं, डर करण ए हंकाररे ॥ मु० ॥ मकर अंजसकारमो, नाची मुगध गेमाररे ॥ मु० ११ ॥
 देखी जौवन धन आपणो, तुं मन फूलेठे एमरे ॥ मु० ॥ पण जेम वित्तिपातने, कुपल आखर तेमरे ॥ मु० १२ ॥
 धोम दिवसने कारणे, महे किस्थो अत्रिमानरे ॥ मु० ॥ संक्षा राग तणि परे, ए सुख जातो जाणरे ॥ मु० १३ ॥ नग
 दलनो सुत सातमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुज पाताने कंतनो, नहि संदेह लगाररे ॥ मु० १४ ॥ साधु वचन
 तव सांजलि, जीव जस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मनमें जय अति छपन्यो, मुज कोप्यो रुपिरायरे ॥ मु० १५ ॥

आवि कंसने विनवे, साधु कह्यो विरतंतरे ॥ सु० १६ ॥ को नवी
 जाणे ज्यां लगे, ता पहीलो उपायरे ॥ सु० १७ ॥ माग्याजो मुज
 नापसे, सात गरत्र निज तेहरे ॥ सु० १८ ॥ इम चिंतवी
 निज चितमें, महुअ्राजनपरे कंसरे ॥ सु० १९ ॥ डर थकी करजो
 मने, देखी करतो सेवरे ॥ सु० २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो,
 ताहरे मन शी वातरे ॥ सु० २१ ॥ कंस कहै करजोमने,
 माणस तें मुज किधरे ॥ सु० २२ ॥ तिम हवे देवकी पुत्रनां,
 सात गरत्र यदूरायरे ॥ सु० २३ ॥ जात्र मात्र देवरावगुं, जीम मुज मन सुख थायरे ॥ सु० २४ ॥ सरल चिच नृप सांजली,
 कहे कंसने एमरे ॥ सु० २५ ॥ अंगीकार किधो अम्रे, वयण कह्यो ते तेमरे ॥ सु० २६ ॥ कंस वात अणजाणातां, कहे नृप
 वसु सुविच्यारे ॥ सु० २७ ॥ मुज सुत सुत ताहरा, इहां अंतरम विच्यारे ॥ सु० २८ ॥ ते जे अम जोमी करीरे, तेणे तो
 गुं अति प्यारे ॥ सु० २९ ॥ तुम न उणो मत हुवे, वालाजी वन आधारे ॥ सु० ३० ॥ घणो बोल्यो कारमो, लागे केहेद
 साररे ॥ सु० ३१ ॥ सात गर्त्र देवकीतणा, देवरावे सुविच्यारे ॥ सु० ३२ ॥ ढालजली वत्रीसमी, निपट रसिली वातरे ॥ सु० ३३ ॥
 श्रीगुणसागर एकही, हरीया गीतनी जातरे ॥ सु० ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ महापसाडलही करी, मद्र पर डुरंगमाय;
 करी वसुदेवगुं, कंस हवे घर जाय ॥ १ ॥ मुनीनी वात सुणी करी, सोचेहवेदसार; देखो कंसे हुं बटयो, वचन

ग्रही अविच्यार ॥२॥ गरज धरे जव देवकी, तव तिहां कंसराय; चौकी राखी पापथी, कपटे खेले दाय ॥ ३ -
 ॥ ढाल ३३ मी॥ गोविंदा मजाणे ते गुण विसरा ॥ तथा कोमल वचनेरे कंत प्रत्ये कहे ॥ ए देखी ॥ ज्ञावी न
 मटे नवीयणा सांज्जो, जाविना धनजोरेरे; रंचन आधीपाठी होइ सके, सिद करोठो सोरेरे ॥जा० १॥ बांधु कीयारे
 जल अनेकजी, आगे नायो कोइरे; बांधव दोइ वावी मुवासही, चंपक ग्रहपति होइरे ॥जा० ३॥ गरज धरे रे राणी
 देवकी, चरम शरीरी जीवोरे; केम मेरे ते उठे आयुपे, ए जीन वचन सदिवोरे ॥जा० ३॥ नदिल पुरनीरे वासण
 आविका, सोलसा एहवो नामोरे; सुर आराध्योरे सुतने कारणे, सुत सहुने अर्जीरामोरे ॥जा० ४॥ सुर जाखेरे
 पुन्य प्रजाविका, तुं मृत वंजा नारोरे; आणि आपुं हुं तुज पारका, देवकुमर अनुहारोरे ॥जा० ५॥ बलतुं वनिता
 इणीपरे उचरे, सांजल सुर सुख दायोरे; हुं स्युं जाणुं तुं लावे केहना, ते मुज्जे न सोहायोरे ॥जा० ६॥ कंसरायोरे
 मारण मागीया, देवकी तनयानंदोरे; आणी आपीश तुज्जे माननी, करीदे शुं आणंदोरे ॥जा० ७॥ एक समेरे
 राणी आविका, गर्ज धरे ते दोयोरे; सारथो फेरो सुर शक्ति करी, ज्ञावीने बल जोयोरे ॥जा० ८॥ इम विजो ने
 त्रिजो चतुरथो, पंचम ठळो तेमोरे; सोलसामंदिर होइ वधामणा, पुन्य तणे बल एमोरे ॥जा० ९॥ खट सुतनी
 जोमी विराजती, मातपिता आणंदोरे; वत्रीस ३ नारी सोह्यामणी, परण्या सथला नंदोरे ॥जा० १०॥ दस दस
 वार आविदायजे, कंचन करी कोमोरे; नेमी वचने वैरागी थायजे, कामनि कंचन ठोमोरे ॥जा० ११॥ करणीने
 बले केवल पामशे, लेहसे मोदनी वासोरे; एहवा मुनीवर केरा होइए, चरण कमलना दासोरे ॥जा० १२॥ मुवा

बालीक कंसे पवामीया, रिस तणे वस जोयोरे; ब्रेह तणा फल आगे लागशे, ते सुएज्यो सहु कोयोरे ॥ जा० १३ ॥
 वना वनेरी जगमां जांखए, स्यो जुतो अजीमानोरे; चंड तणी तव लगे चांदणी, जब लग न जगे जांणोरे ॥ जा०
 १४ ॥ मीमिक मातो मलयतो फीरे, सरप नजरथी डोरे; हरण हरिलो हरिने आगले, न सके आइ हजुरोरे ॥ जा०
 १५ ॥ ढाल तेत्रीसमी रे होतार्थ होवे, नहेवे बीजो कोड्रे; गुणसागर समजावे वरतए, जले जालाइ होड्रे ॥ जा०
 १६ ॥ ॥ दोहा ॥ एक जगे एक आश्रमे, एक हरखे एक सोग; एक संकुचे एक विकसतां, सहु सरखा नही लोग
 ॥ १ ॥ जे जाखे बालक बतां, जे जांखे अणगार; जे जांखे वरकामनी, ते निफल न हुवे लगार ॥ २ ॥ उष्ट दैत
 निकंदवा, करवा जग उधार; विष्णुदेव सिवमतमें, फिर ३ लीए अवतार ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ३४ मी ॥ देशी
 बिंदलीनी ॥ हरीके गुण गाउ, हरि लीला कही यसोहायो; हरी रसतें अधीक सुख पायोहो ॥ ह० ॥ हरी योगी
 मांहि योगी, हरी जोगीमांहि वन जोगीहो ॥ ह० १ ॥ हरी नाना मांहे नाहनो, हरी मोटो गगन समानोहो ॥ ह० ॥
 हरी एकए रुपही एक, हरी पसरो रुप अनेकहो ॥ ह० २ ॥ हरी आपन बुढो वालो, हरी जगमें लावो चालोहो
 ॥ ह० ॥ हरी लोग लगायो लारे, हरी जांजे घने समारेहो ॥ ह० ३ ॥ हरी नव नव नाम धरावे, पण गणतां पार न
 पावेहो ॥ ह० ॥ हरी सांधा जोमा लावे, हरी मांहोमांहि ज्रीमावेहो ॥ ह० ४ ॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार
 मांहि समायोहो ॥ ह० ॥ हरी नौतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो ॥ ह० ५ ॥ हरी रुप नरखन काया, हरी घट
 उदाहो ॥ ह० ॥ ॥ क० ॥

किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ह०॥ सो हरी करण उपायां, हरी वसुदेवा घर आयाहो ॥ह० ७॥ हरी उदर देवकी
 माया, हरी सुपना सात देखायाहो ॥ह०॥ सीहणी सुत सिंह सनुरो, माय देखी प्राक्रम पूरोहो ॥ ह० ८ ॥ आनंद
 अंग अपारा, धन धन राणी अचतारहो ॥ह०॥ तेज पुंज रवि रुनो, हेतकार महा नही कुनोहो ॥ह० ९॥ अग्नी
 सिखा दिपंती, ते मंगल गुण जीपंतीहो ॥ह०॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपवेहो ॥ह० १०॥ वृज
 गगने अवलंब्यो दिसे, सुन्नकारी विस्वा विशहो ॥ह०॥ देव विमाने विराजे, तिहांधपमपमावल वाजेहो ॥ह० ११॥
 पद्म शरोवर पाणी, नरीयो अति शोन्न वखाणीहो ॥ह०॥ ए सुपना देखी माइ, पेत्र पासे वयाइ खाइहो ॥ह० १२॥
 गर्भ वंधंतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥ह०॥ तुम मुज पुत्र मराया, पण में गाढा डख पायाहो ॥ ह०
 १३॥ पुत विना जग सुनो, त्रिय जाणे जगत अजुणोहो ॥ ह० ॥ पशु पंखीणी धन कहीए, जे पुत्र तणो सुख
 लहिए हो ॥ह० १४॥ धारे तो पुत्रा केरी, नही कोइ मणा अनेरीहो ॥ ह० ॥ हुं डखीयारी झुरं, विण पुत्र
 अशा किम पुरंहो ॥ ह० १५ ॥ जीणे कीधो ए कर्म अपार, तिने फिरी करतां सिवारहो ॥हो०॥ दूधे
 दाया जेह नर, दाशे सिजावे तेहहो ॥ ह० १६ ॥ ए बालक किमही उगारो, इहां रहेशे नाम तुमारोहो
 ॥ह०॥ ए सुपनाने अनुसार, पिउमा तुं क्युं न किच्यारहो ॥ ह० १७ ॥ नंदतणि जे नारी, ते नाम जसोदा प्यारीहो
 ॥ ह० ॥ ते सहियर ठे मेरी, नपतिजुं नारी अनेरीहो ॥ह० १८॥ गर्भव वृद्धिजीम पावे, तिमतिम दोहजा उपजावे
 हो ॥ ह० ॥ सीहासाथे रमीए, माता हस्तीने अति दमिणहो ॥ ह० १९ ॥ खनगमांहि मुख जोवे, तिम २ रलिया

यत होवेहो ॥ ह० ॥ शत्रुशिरे पाद धरेवा, ए माथ मनोरथ करेवाहो ॥ ह० १० ॥ गर्ज सातमो जाणि, नृप कंस
 तथा आगे वाणहो ॥ ह० ॥ खवालि कारण रहिया, तिहां कष्ट महा दुःख सहियाहो ॥ ह० ११ ॥ उवेला नवि
 पामि, जीहां कारज सिधे स्वामिहो ॥ ह० ॥ मिनिना वाढ्या सिकां, नवि तुटे जे ठे निकांहो ॥ ह० १२ ॥
 खवाला सयला सुता, निंझावसे होए वगुताहो ॥ ह० ॥ कोमति जलफल करजो, सहु सरजा सुं अनुसरज्योहो
 ॥ ह० १३ ॥ कंस हणोवा काजे, एहि उतावल साजेहो ॥ ह० ॥ मास घटावे दोइ, तव सात मासनो होइहो
 ॥ ह० १४ ॥ सुन्न वेला सुत जायो, तनु तेजे तिमर मिटायोहो ॥ ह० ॥ स्वजन धरे उलासो, दुर्जन घर पमियो
 त्रासोहो ॥ ह० १५ ॥ कोइ न विलंब करायो, तव राणिये राय बोलायो ॥ ह० ॥ तत्र सुरासुर जाल्यो, तव नृप
 सुत लइ चाल्योहो ॥ ह० १६ ॥ दोइ पासै चामर ढाले, दिपकसुं पंथ दिखलावेहो ॥ ह० ॥ सानिधकारी देवा,
 हरजीकि सारे सेवाहो ॥ ह० १७ ॥ दिधा ठे दरवाजा, ए अरति अर्थीकि राजाहो ॥ ह० ॥ हरी पाय अंगुठा
 अम्नीया, तव ताला तो ऊरु पमियाहो ॥ ह० ॥ उग्रसेन कहे ए कोइ, तुम वंथन ठोमसे सोहिहो ॥ ह० ॥ एह
 सुणि सुखदाइ, कहे वेगे सथायो नाइहो ॥ ह० १८ ॥ पुर वाहिर चलि आया, जसुनामे मारग पायाहो ॥ ह० ॥
 सुत जाइ जसोदा दिधो, मनवंडित कारज सिधोहो ॥ ह० १९ ॥ जसोदा जाइ बाला, नृप लेइ आया ततकालाहो
 ॥ ह० ॥ कर्म जेहनो बलियो, स्यो किजे अमरख अलियोहो ॥ ह० २० ॥ नंद धरे आणंदा, तव वाजे मावल
 वंदाहो ॥ ह० ॥ गोकलनि नारी हरखी, ते हरजीको मुख नरखिहो ॥ ह० २१ ॥ नाचे नाच रसालि, ते हाथे

बजावे तालिहो ॥ ६० ॥ उवार्णफेर लिजे, ए लाल सदा चिरजीवी जेहो ॥ ६० ३३ ॥ हरी कोमपवामा किधा,
 ए बालपणे जस लिधाहो ॥ ६० ॥ ए चोत्रिसमि ढाल गुणसागर, अधीक रसालहो ॥ ६० ३४ ॥
 ॥ दोहा ॥ जाग्या हवे ते पोहरु, देखे कन्या तेह; आणि कंसजणी दिइं, सेवक धरी मन नेह ॥ १ ॥ कन्या
 देखी कंस हवे, धारे मनमां एम; मारण एतो माहरे, शास्थे कन्या केम ॥ २ ॥ मारणजणी ग्रह सातमो, मुनि
 मुजु चांख्या जेह; पण जाण्यो इणजाण मति, कुनो हूवो तेह ॥ ३ ॥ तो मारु एस्या जणी, इम निज मनशुं जोय
 नासापुट ठे वीकरी, बहिनजणी दिए सोए ॥ ४ ॥ ढाल ३५ मी ॥ मोरा साहिबहो श्री सितलनाथके हूँतुं
 सेवक ताहरो ॥ ए देशी ॥ हवे बालक होकालो ते देहके, ऋश्रनाम सहू तिण कहे; राखिजेहो देवेनितुं तेहके,
 बाधे नंद घरे सुख लहे ॥ १ ॥ नेहगेहलिहो गोवालनि नारके, हरी देखि हैअशुं हसे; हाथोहाथेहो संचरतो बालके,
 नमृत्युं कर कमले वसे ॥ २ ॥ आख्यंगनहो चुंबन लख कोमके, कोइ कमल कंठे तवे; केइ लावे रमकमा रंगके,
 मुक्ताफल सीर सोहवे ॥ ३ ॥ हांसीलिहो हरखे लेइ गोयके, धवरावे पय पानने; आंखे काजलहो घाले केइ नारके,
 करे चुंबन मुख कानमें ॥ ४ ॥ सीर खुलितहो सींदा अनीरामके, जाल विराजीत चंदलो; जग बल्लजहो नंदन
 तुजु मातके, लाल अनोपम बंदलो ॥ ५ ॥ हवे पुठेहो मास छहरे मातके; श्री वसुदेव जणी कहे, उल्कंवाहो देखण
 निज पुत्रके, जाइस गोकुल जिहां रहे ॥ ६ ॥ तव बोलेहो वसुदेव नरंदके, रखे कंस तुजने उलखे; तिहां आतांहो
 नितप्रते तुज पूत्रके, देखता कारण पखे ॥ ७ ॥ तेणे लेइहो बहू नारी साथके, गाय पुजंति सुचपरे; तुम्ह पहूचोहो

गोवालीएण संचके, देवकि पाण तिमहिज करे ॥ ७ ॥ नीलुपलहो दलसम तनु कंठके, हृदये श्रीवठ सोजतो; चक्रा
 दिकहो लक्षण इग हाथके, सहु जनना मन मोहतो ॥ ८ ॥ एहवो निजहो नंदन अत्रीरामके, गोद जसोदाने
 रह्यो; देवकिहो देखि नीज नयणके, मनमांहि बहु सुख लह्यो ॥ ९ ॥ माता श्रीमीहो निज हृदया
 साथके, गोद धरयो हरी नानमो; तुज विरहो चित्त द्रुण कृण सुजके, खटके ज्युं विंठी आंकनो ॥ १० ॥
 संच्या पोढाहो पातिक अति जोरके, मेंकोइक पूर्व ऋवे; तुज सरीखो हो नंदन गुणवंतके, पाण सुज चिंतीत
 नव हुवे ॥ ११ ॥ पुत्रजहो दीवो तुम देवारके, धन वेला धन आजुनी; निज अंगजहो देखी न नजे रागके, एतो दशा
 मुनीराजनी ॥ १२ ॥ धवरावीहो निज स्तन पयपानके, पालणीए पोढावीयो; मोह मातिहो कोइ मधुरे सादके, हेत
 घणो हुलरावीयो ॥ १३ ॥ देशी जरमरीयानी तथा सुधारस मोरली वाजे ॥ ए देशी ॥ पनणे राणी देवकीहो,
 त्रिजुवन सिर टिको, बाइ धारो बालुनो निको; तुजवन वखत यशोमतिहो, थारे एकीको, सुरनरना मन मोहतोहो,
 प्यारो हमर्जीको ॥ बा० १ ॥ अद्भूत रूप सोह्यामणोहो, मदन कीयो फिको; रंग रसावे गोदमेंहो, त्रायग ताहिको
 ॥ बा० २ ॥ मान महा मद मारणोहो, देवि केरीको; कुंवर कनइउं सालसेहो, उपज्यो वयरिको ॥ बा० ३ ॥ अानन
 चंद्र विराजतोहो, वालो सब त्रियको; ग्वाल ग्वालणी जावतोहो, दर्शन जग पियको ॥ बा० ४ ॥ सजन जन जननी
 तणोहो, हार ज्युं बातिको; डरजन जन आ सोहामणोहो, धाव ज्युं कांतीको ॥ बा० ५ ॥ सोजा गुण विस्तारणोहो,
 किरति कांतिको; देवादेवि खंचराहो, रंगे रातिको ॥ बा० ६ ॥ इहिअरु डध खवारजेहो, धेनु मातिको; हमतुम कुल

अजयाजणोहो, विचो वातिको ॥ वा० ७ ॥ नखसीख ताए सजुणमोहो, सुखरोनारागिको; जोतां तृपति न
 पाइएहो, धन जीयत माजीको ॥ वा० ८ ॥ दरस फरस कुपंथमेहो, नाह इंजाणिको; सो खेले तुज अंगेणेहो, सारंग
 पाणीको ॥ वा० ९ ॥ योग ध्यान ध्याये अतिहो, यसल्ये वधारीको; पुत कहाये ताहरोहो, अचरजकारीको ॥ वा० १० ॥
 नाम वल्लन जग जाणिन्हो, गीरवरधारीको; गुणसागर सुख पावहिहो, अर्मीय आहारीको ॥ वा० ११ ॥ ढाल ए-
 हिज ॥ जे लेणोहो सो लिजइं आजके, एह मनमां निश्रे धरे; मन मेलिहो निज सुतने पासके, राणि आवि नीज
 धरे ॥ १५ ॥ जीण दिनथीहो गोकुल हरी मातके, गोपुजा मस करी गइ; तिण दिनथीहो संगले जगमांहिके, गो-
 पुजावततिथ यइ ॥ १६ ॥ इम करताहो वितो एक बरसके, एहये एक वितक नयो; सना सजी हो वेवा कंसरायके,
 एक विबुध तव प्रगट थयो ॥ १७ ॥ देइ आदरहो तेज्यो निज पासके, पुढे ऋषि जाखीत सहि सो जाखेहो चवित-
 व्यजेहके, अन्यथा ते होवे नहि ॥ १८ ॥ नृप न्नाखेहो केम जाणुं तेहके, अनुग्रह करी मुजने कहो; तुमनेहो मिलसे
 बहु ष्वयके, मुज अरीनोहोए नियहो ॥ १९ ॥ निमित्तकहो बोले तव एमके, पुरो ज्ञान न अभ्यासियो; सहि नाणी
 हो तुज देउं घतायके, जिम तुमने होए विसासियो ॥ २० ॥ तुज मासिहो पुतना ठे दोयके, निस्यंदता चुसी करे; जिम
 जुतेहो ग्रहि मद्रिका जाणके, प्राण दोयना तिम हरे ॥ २१ ॥ तुम शत्रुहो जाणोनि: संदेहके, इम कहि विबुद्ध गयो;
 कंस तेमहो कहि बेरीनी वातके, मासो मन उल्कर्प थयो ॥ २२ ॥ हवे तिहाकणहो निज वापनो वयरके, लेवाने
 थती उमही; वसुदेवसुहो नचि जागे जोरके, सयजासुवल को नही ॥ २३ ॥ इम चिंतविहो मनमांहि विचारके, सुरपन

खारी दिकरी; मदमातिहो आणे अहंकारके, संकुनी पुतना खेचरी ॥१४॥ कंसे प्रेरितहो गइ गोकुल मांहीके, बाल
 कने मारण न्रणी; गोबालणीहो संतापे निज बालके, जती मन आणी घणी ॥१५॥ नंद सदनहो चाली गइ तेहके,
 विप खरमी स्तनने धरी; धवरावतीहो तव जसोदा देखके, मागे हरीने जोसे करी ॥१६॥ अंशु पुरितहो थयी आप्यो
 जाणके, हरि मनमांहि विचारियो; ए दिसेहो सहि कोइ विपदके, एहथी प्रय अथ धारियो ॥१७॥ चुसि लीयोहो
 रुधिरने उधके, अलि जिम कुसमनी वासना; थइ निथासहो फाट्या तस नयणके; हरि गया मातने आपसना ॥१८॥
 बोलाव्योहो नंदने तेणिवारके, आव्यो अति उतावलो; जसोदाएहो कह्यो सर्व व्रतांतके, निसुणी मनमां खलजटयो
 ॥१९॥ हु मुसिन्हो सुख कहेतो नंदके, कृश न्रणी खोले धरि; तिहां जोवेहो हरिनो ते अंगके, वारमवार हेते करि ॥२०॥
 निसा समेहो गोवालिया पासके, प्रेत वने सवने धरयो; नंदसहित आव्या निज गेहके, प्रठनपणे सहुए करयो ॥२१॥
 एम विजिहो कंत पुतना नामके, सापण थइ तेणहीजपरे; कंसे जाणीहो मासीनि वातके, प्रेत कार्य तेहनां करे ॥२२॥
 गोकुलमांहो करे वारमवारके, उद्घोसण जाणण न्रणि; नंदे वरजीतहो न करे कोइ वातके, जिम धुक सुर्य तर्णी ॥२३॥
 गोवालियाहो पुठयो हवे नंदके, अमे ए मरम न जाणियो; किम मुद्दहो साइण सम एह के, एह अचंनो आणियो
 ॥२४॥ पामोसणहोइण गति जाणके, ढाल कहि पांत्रिसमी; सारंगेहो रागे मन लायके, सूरिगुणसागर मनगुं गमी
 ॥२५॥ दोहा ॥ गोप कहे हवे नंदने, बाल एकीले एण; खेचरीया वे मारीया, टाल्यो विवचन बलेण ॥२॥ एह वात नंद
 सांनली, दाखे उचर तिवार; एहनी खवर मुजने नही, मानो प्रपंचाचार ॥३॥ कंस सोचे निज रुद्रयमां, अहो २

दंब कुलदः; मासा मुइ वरातणा, काइ न थयो प्रतद्ध ॥३॥ मंत्रीने तेमी कहे, शो करवो हवे उपाय; विण उ-
 लख्या पोहोचे नही, मारा मननोदाय ॥४॥ सचिव कहे तुम बहेर्ननि, पुत्री हुइ एकंत; ए सर्व प्रत्यद्ध निरखतां,
 मुको एहनो तंत ॥५॥ नंद धेर आब्यो धसी, बोलावी निज नार; करी शिखामण एहवी, मत जाजेकोइठार ॥६॥
 क्रम्र एकिलो मुकिनें, पमते पण घृत वांम; ते अनत्रन जाइवुं, किणहि विजे काम ॥ ७ ॥ कान्ह जणी सुजपरे
 रखे, हवे जसोदा माय; तोपण चंचल बल करी, आयो पाठो शाय ॥ ८ ॥ ता सुध्या नथी विहति, दामणिसु हरी
 तेह; वांधी उखलसुं जइ, पामोसण रइ गेह ॥ ९ ॥ वयर पितामह सांजलि, सुर्पक सुत तिहा आय; पठवांने श्री
 क्रम्रने, जमलार्जुन तरुवाय ॥ १० ॥ हवे तिणे वेहु तरुविचे, हरीने मारण रुप; जांजी ते तरु हरी सुरा, मारे तेह
 विरुप ॥ ११ ॥ हरी कुंजपर ऊखण्या, जमलार्जुन तरु जाण; नंद जसोदा गोपने, मुखधि ए सुणिवाण ॥ १२ ॥ नंद
 जसोदा आधीने, चुजसुं नीने बाल; दामोदर तिण दिन थकी, नाम कहे गोपाल ॥ १३ ॥ सिवादेवि सिवकारीया,
 सुपना देखी उदार; प्रितम पासे विनवे, स्वामी कहे विच्यार ॥१४॥ चुपति जाखे जामनी, होस्ये कुंवर सार; तिन
 ज्ञोयन खिर सेहरो, सुरनरको आधार ॥ १५ ॥ वाय अनुकुल वाइया, हरखित सहु परिवार; श्रावणसुदी पंचम
 दिने, जनम्या नेम कुमार ॥१६॥ ॥ढाल ३६ मी॥ कोइजो परवत धुधलारे लाल ॥ए देशी॥ सुज बेला
 सुत जाइयारे लाल, वरत्यो जय जय कार; सुख दातारे, सुरनर घरहि वधामणारे ॥ला०॥हरख्यो सहु संसार ॥सु०
 १॥ भेरे मन जनजी वस्यारे ला०॥ श्री श्री नेमकुमार ॥सु०॥ मुरति सुरति मोहनीरे ॥ ला०॥ शोना गुण जंनार

॥सु० मे ॥१॥ आबी तपन कुंवारीकारे ॥ला०॥ निज १ करवा काज ॥ सु० ॥ गावे गीत सोह्यामणारे ॥ ला० ॥
 सफल गणे दिन आज ॥सु० मे ३॥ चउसठ इंद्र पधारीयारे ॥ला०॥ मंदिर गीरीने श्रुंग ॥ सु० ॥ जन्म महोत्सव
 करवा जणीरे ॥ला०॥ आणी अति उठरंग ॥सु० मे ४॥ रुपशुं पंच करे जलारे ॥ला०॥ सोहम इंद्र उदार ॥सु०॥
 हाथे लिया एक रुपशुरे ॥ला०॥ त्रिभोवन तारणहार ॥सु० मे ५॥ विजे ठत्र धरे जलारे ॥ला०॥ चामर ढाले दोय
 पास ॥सु०॥ वज्र लइ आगे चलारे ॥ला०॥ करतो अरी अण नाश ॥सु० मे ६॥ न्हावण करी विधी साचवीरे ॥
 ला०॥ पहिरावे शणगार ॥सु०॥ आवे नक्ति घणी करे ॥ला०॥ नाटीक नृत अपार ॥ सु० मे ७ ॥ धौधौधपमपवा
 जहिरे ॥ला०॥ मादल नव नवठंद ॥सु०॥ तालर वाव उपांगसुरे ॥ला०॥ होइ रद्यो आनंद ॥ सु० मे ८॥ इंद्राणी
 नाचे जलीरे ॥ला०॥ थैथे शब्द उचार ॥सु०॥ प्रभु उपर करे जुंठणारे ॥ ला० ॥ जाइ हरी बलहिर ॥सु० मे ९॥
 माता पासे मेलीयारे ॥ला०॥ सुर पोहोता निज वाम ॥सु०॥ राए मोहेठव मांढीयारे ॥ ला० ॥ मलीया साजन
 आण ॥सु० मे १०॥ वादव जलधर उनयारे ॥ला०॥ वरसे कंचन धार ॥सु०॥ याचक जन संतोखीयारे ॥ ला० ॥
 घर १ मंगल च्यार ॥सु० मे ११॥ टोले १ सामटीरे ॥ला०॥ आवे कामनी चाल, ॥सु०॥ धवल दिए नृप आंगणारे
 ॥ला०॥ रमती रंग रसाल ॥सु० मे १२॥ वारसमो दिन आइयारे ॥ला०॥ सुतिक कर्मनी वार ॥सु०॥ नाम दियो
 वर नेमजीरे ॥ला०॥ शंभण सहु परीवार ॥ सु०मे१३॥ चंदकला जीम वाथतारे ॥ला०॥ देह कला गुण सार ॥सु०॥
 रुप करे सुर तेहवारे ॥ला०॥ जेहवा प्रचुने प्यार ॥ सु० मे १४ ॥ राखण चलण हसतथेरे ॥ला०॥ नृत्यन गायन

ग्यान ॥ सु० ॥ जलपन जनमन रंज्योरे ॥ ला० ॥ लाल न लीलां थान ॥ सु० मे १५ ॥ वनाक्रान्तने कारणोरे ॥ ला० ॥ राजा
 वनमें जाय ॥ सु० ॥ अंतै वर परीवारसुरे ॥ ला० ॥ साथे नेम सोहाय ॥ सु० मे १६ ॥ इण अयसर सोहमजीरे
 ॥ ला० ॥ इंद्र अन्नोपम ज्ञान ॥ सु० ॥ क्रिमारंग विनोदसुरे ॥ ला० ॥ विठा श्री जगवान ॥ सु० मे १७ ॥ जे जेहना
 होय रगीयोरे ॥ ला० ॥ तेह तेहनां गुण गाय ॥ सु० ॥ अणरागी असोहामणारे ॥ ला० ॥ हुता पण न कहाय
 ॥ सु० मे १८ ॥ इंद्र प्रतंसा आकरीरे ॥ ला० ॥ जननी करे तेहिवार ॥ सु० ॥ लालपणे बल आगलोरे ॥ ला० ॥
 नही धीजो संसार ॥ सु० मे १९ ॥ एक आम्ही सहु लोकनोरे ॥ ला० ॥ एक आम्ही जीनराय ॥ सु० ॥ तोहि न होये
 बराबरीरे ॥ ला० ॥ जिन बल अधीक कहाय ॥ सु० मे २० ॥ एह बचन सहि नाशक्योरे ॥ ला० ॥ अमरख आणी
 अपार ॥ सु० ॥ सुर सुरलोकधी उत्तरयोरे ॥ ला० ॥ आयो विपनमोजार ॥ सु० मे २१ ॥ काका साथ कुतुहलीरे ॥ ला० ॥
 होइ रह्या निजराय ॥ सु० ॥ एक खेलावे गोदमेरे ॥ ला० ॥ एकलीए कंठ लगाय ॥ सु० मे २२ ॥ एक अंगुलीया लेइ
 फिरे ॥ ला० ॥ एक खेलाण खेलाय ॥ सु० ॥ एक नचावे रंगसुरे ॥ ला० ॥ तालि नाद सुणाय ॥ सु० मे २३ ॥ घम
 पम वाजे बुधरीरे ॥ ला० ॥ उमक उमककि चाल ॥ सु० ॥ मेरे उगन मगनारे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो अति ख्याल ॥
 सु० मे २४ ॥ कबहु आंख्य अंजावतोरे ॥ ला० ॥ परहो उटक जाय ॥ सु० ॥ बोलायो फिरनावहिरे ॥ ला० ॥
 माता पकने धाय ॥ सु० मे २५ ॥ तव प्रजुजी रहे रिसायनेरे ॥ ला० ॥ टवकि गाल कराय ॥ सु० ॥ विद्याधर
 सुरमानविरे ॥ ला० ॥ सबहु रहे रीजाय ॥ सु० मे २६ ॥ गगने विलांवि वरंगनारे ॥ ला० ॥ मोहन सु मन मेल

॥ सु० ॥ सुरज रथ शंभ्री रह्योरे ॥ ला० ॥ देखि कुमरनी केल ॥ सु० मे १७ ॥ तृणचरां त्रण ठोमीयारं ॥ ला० ॥
 ॥ सु० ॥ सुरज रथ शंभ्री रह्योरे ॥ ला० ॥ जंगम जिवजी केतिकेरे ॥ ला० ॥ प्रचु सुंरहे लवलाय ॥ सु० मे १८ ॥ अ० वगुणहारा
 पंखी चुगन चुगाय ॥ सु० ॥ माषी चंदन नादरे ॥ ला० ॥ असुचि तिहां चलि जाय ॥ सु० मे १९ ॥
 देवतारे ॥ ला० ॥ गुणतो कोन गहाय ॥ सु० ॥ माषी चंदन नादरे ॥ ला० ॥ रंगतरसे राचे घणुरे ॥ ला० ॥ बिजो हेत न
 १९ ॥ अमृत थान लगावतारे ॥ ला० ॥ जोकन ड्य पियाय ॥ सु० ॥ नाचनिहालि मोरुंरे ॥ ला० ॥
 कहाय ॥ सु० मे २० ॥ सुवा शब्द सोहांमणोरे ॥ ला० ॥ मानिने न सोहाय ॥ सु० ॥ मृग मठ मारणाहार ॥ सु० ॥ गुन हर्षतां
 पापी पल न तजाय ॥ सु० मे २१ ॥ निहंकारण वैरी कह्यारे ॥ ला० ॥ खेल करी प्रचु पालणेरे ॥ ला० ॥ सोत्रे सेवंता लिथ
 विण साधुनेरे ॥ ला० ॥ नीच दहंत अपार ॥ सु० मे २२ ॥ खेल करी प्रचु पालणेरे ॥ ला० ॥ सोत्रे सेवंता लिथ
 ॥ सु० ॥ गगन चढ्यो ते देवतारे ॥ ला० ॥ जाणो कारज सीध ॥ सु० मे २३ ॥ अविधी ज्ञानपर जुजीयोरे ॥ ला० ॥
 जाणे नेद दयाल ॥ सु० ॥ लेशमात्र बल फोरव्योरे ॥ ला० ॥ सुर चांभ्यो पयाल ॥ सु० मे २४ ॥ सुतो सिंह जगा
 वियेरे ॥ ला० ॥ अहि मुख घाले हाथ ॥ सु० ॥ किम मुख पावे बापनेरे ॥ ला० ॥ जे रोमे जगनाथ ॥ सु० मे २५ ॥
 एतले सूरपति आवियेरे ॥ ला० ॥ सुर ठोड्या वण काज ॥ सु० ॥ राख राख जग राजीथारे ॥ ला० ॥ तुमहिने सह
 लाज ॥ सु० मे २६ ॥ ठोडाव्यो ते देवतारे ॥ ला० ॥ पामे नीज अपराध ॥ सु० ॥ आगल बना विनवेरे ॥ ला० ॥
 किथाना फल लाथ ॥ सु० मे २७ ॥ पोढाव्या प्रचु पालणेरे ॥ ला० ॥ पाखर सुरनी कोम ॥ सु० ॥ सेवा कारण मुकियारे
 ॥ ला० ॥ इंद्र नमे करजोम ॥ सु० मे २८ ॥ खेदि ख्याल घर आवियारे ॥ ला० ॥ बाल गोपाल नरंद ॥ सु० ॥

घर शहोवे वधामणारे ॥ ला० ॥ घर श परमानंद ॥ सु० मे ३ए ॥ श्री हरी वसे विराज्योरे ॥ ला० ॥ नेमजी नंद
 दयाल ॥ सु० ॥ प्रवल प्रताप महा बलिरे ॥ ला० ॥ हलधर क्रश क्रिपाल ॥ सु० मे ४० ॥ ढाल नली ठत्रीसमीरे
 ॥ ला० ॥ पढत गुणत सुखदाय ॥ लीला नीम जीणंदनीरे ॥ ला० ॥ गुणसागर गुरुराय ॥ सु० मे ४१ ॥ दोहा ॥
 आवण जावण होवतां, रखे लखे के बात; एम जाणि पासे रहे, हलधर नामे व्रात ॥ १ ॥ अकुरादिक कंसने,
 नवि ठाना सुत एह; मुख्यो कंस अणजाणियो, तेणे रामगुण गेह ॥ २ ॥ इस धनुष उंचा वेहू, गोकुल रमे कुमार;
 काम तजी तिहां ग्वालणी, देखे आवि अपार ॥ ३ ॥ क्रश ग्रहि सगलि कला, राम पासे सुखकार; धनुष्य कला
 तिम बलि नणे, क्षत्रिनो आचार ॥ ४ ॥ ढाल ३७ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥
 जोहो राम अने हरी मील्लि हवे लाला, धरता अर्थीक सनेह; जीहो एक जीवतनुं जुजुया लाला, जाणीजडन संदेह,
 चतुर नर हरी रमे रसरंग ॥ १ ॥ जीहो सुंदर रूप सोह्यामणा लाला, चलतो जाणे अनंग; ॥ च० ॥ ए टेक ॥
 जीहो हवे हरी चलता बलदने लाला; पुठ ग्रहे जइ जाम, जीहो क्रश जोर ते देखीने लाला, अचरज पामे राम
 ॥ च० २ ॥ जीहो जीम श हरी वाधे तिहां लाला, तिम श गोपिरे चित; जीहो काम विकार लहे घणो लाला, घुमे
 लागी प्रीत ॥ च० ३ ॥ जीहो राधे सुता वृखुनाननि लाला, कंचन कोमल गात; जीहो ख्याल लागी हरी आगले
 लाला, महि वेचण मीसजात ॥ च० ४ ॥ जीहो रोके तव आमो फिरी लाला, मोहन श्री नंदलाल; जीहो हठ जरा
 हरी आगले लाला, बोले राधा बोल ॥ च० ५ ॥ जीहो हम गोपीयनपर दाननी लाला, किए किधीनेरे आद;

जीहो आपसमे हरी राधीका लाला, करतां जखवखवाद ॥ च० ६ ॥ जीहो आ ब्रजमा वसतां थकां लाला,
 कदिय न दिधोरे दाण, जीहो कुंवर बावा नंदनालाला; जात नहि ब्रखुभान ॥ च० ७ ॥ जीहो जावाद्यो हव किम
 करो लाला, सुज वेचण हजी माट; जीहो वेला वनमें बहू थद लाला, माता जोति हशे वाट ॥ च० ८ ॥ जीहो
 नीत३ इम हरी राधीका लाला, करे वचन रस केज; जीहो नेह धेलि आवे तिहां लाला, काज सकल अवहेल
 ॥ च० ९ ॥ जीहो सोलसहस गोवाक्षणि लाला, हरीने रंजन काज; जीहो दाखे नव ३ चातुरी लाला, हाव भाव
 करी लान्न ॥ च० १० ॥ जीहो गोपी हरी पाखल मली लाला, घुमर गावरे रास; जीहो लुवधा जमरा जीम जमे
 लाला, कमल तणे नीतु पास ॥ च० ११ ॥ जीहो हरीने जोती गोपिया लाला, नयण नभिचरे केम; जीहो क्रश्र ३
 इम बोखवे लाला, हो वनमे वेतेम ॥ च० १२ ॥ जीहो एकसमे गोपि तीहां लाला, गाय छे नुपित; जीहो टलिन
 जाणे दोहणा लाला, हरीसुं लागी दिव ॥ च० १३ ॥ जीहो विविध कुसम गुंथिति केला०, माल करी उत्तकंव; जीहो
 वरमाला परे गोपीयाला०, घाले हरीने कंठ ॥ च० १४ ॥ जीहो जिएतीण विध करी हरीज्जणि लाला, गोपताणितेनार
 जीहो बोलावे फरसे मिले लाला, करतिकाम विकार ॥ च० १५ ॥ जीहो मोरपिंठ मात्रे धरीलाला, हरीगोवाणिसाथ; जीहो
 गावे धुनिपुरेति केलाला, जाली हरखेहाथ ॥ च० १६ ॥ जीहो निर अथाहे जीलतो ला० हंसपरे हरीजाण, जीहो पंकज गोपी
 मांगीया लाला ॥ लिलाइं दिए आण ॥ च० १७ ॥ जिहो गोवालणीया रामने लाला, जलंने एकवार; जीहो तुंम
 बंधव अम नेहरे ला० ॥ अण दिठे बहुवारें ॥ च० १८ ॥ जीहो मधुर बजावे वांसली ला० ॥ गीरीकमणे आणंद,

जीहो घणुं दुसाये रामने ला०॥ नाचे नय नय तंय ॥५० १७॥ जीहो गोगाळणी ला०॥ नाचे क्रश कुमार, जीहो
 रंगानार तणी परे ला०॥ तालविड्ड हलधार ॥५० २०॥ जीहो इम रमता हरी रामने लाला, घोट्या गरस इयार;
 जीहो गुण सागरसुरि एरुही लाला, ढाल साम्नात्रिसमी सार ॥५० २१॥ ॥वीह्या॥ कंसराय मथुरापुरी, सुलभं
 राज करंत; वद्विन तणे घर आर्यीयो, कन्या देखी दुसंत ॥ १ ॥ वद्विने गर्भ जे सातमो, किम मुळ मारण हार;
 के रुपि नारव्यो अन्न्यथा, के कोडू नात निचार ॥२॥ निमतियाने पुत्रीयो, रुपियर वचन विच्यार; सो जाले नृप
 नची मीढे, होण हार विवहार ॥ ३ ॥ चुप चणे निमति सुणो, हुं किम जाणुं तास; अण जाएया अणउंजलया,
 किम कहं तस नास ॥४॥ निमतिण सही नाणीका, राय वताये ताम; केसी ह्ययखरमेख वृप, एहनो केमण वाम
 ॥५॥ धनुष चोद्वेने जुज घले, नाथे कालिनाग; तुम युग हाधी पाटनां, मारी मेलाने माग ॥ ५ ॥ मल अखादि
 मलने, जाली पवाड्ये जोर; ते तुम वेरी जाणजो, एद हलायी मोर ॥ ७ ॥ कंस भुप अति खलजल्यो, अरीनो
 सुणी अर्थीकार; व्रयन मेल्यो मोकल्यो, पुंठे घणा असवार ॥ ८॥ ॥ढाल ३८ मी ॥ रसीयानी वेडी ॥
 मत कोडू रमग्यो हो साजन सोगटे ॥९ वेडी॥ ह्ये म्बकाले हो कंसनरवने, अरीष्टवलां वृद्धवंत; चतुरनर वन-
 रायनमें हो आये आरुतो, करतो कोण अन्नंत ॥५० १॥ सुणजो साजन अचरजनी कथा ॥ ए अयांकली ॥ सिंगे
 वपानी पवादि गायने, नवीककनपरताम ॥५०॥ तीम वली कोण धरी पग पावटे, ढोलें वृतनां वाम ॥ च० सु २ ॥
 राम सधित गोविंद तर सांजनां, कोलाहल अति होय ॥५०॥ जड हथायार धसी हरी आर्यीयो; अरिप्रयलवतिहां

जोय ॥ च० सु ३ ॥ वारे सहु इहाँ नदगोवालीया, नहीं गोधृतनो काम ॥ च० ॥ विनवे सहु पण नवी रहे, वलद
 बालावे ताम ॥ च० सु ४ ॥ सोपण आयो हो हरीने उपरे, रिस प्ररथो विकराल ॥ च० ॥ मारे अपुवो हो हरी निज
 चुज बले, हरख्या बालगोपाल ॥ च० सु ५ ॥ हरी रमतं वली आयो हो अनदा, केसी कंस किशोर ॥ च० ॥ मही
 तलगाजे हो पग खुफतालसुं, हयहिसार वजोर ॥ च० सु ६ ॥ ग्रहतो हो दंत विचाले लोकने, खुरेहणतो गाय ॥ च० ॥
 देखिहो सोर मच्यौ वन गोकुले, गोधन नावो जाय ॥ च० सु ७ ॥ लोक पोकार सुणी हरी आवीयो, तरनि पासे जाय
 ॥ च० ॥ हरिने हो मारण धायो हयवरु, लोक रद्यां अकुलाय ॥ च० सु ८ ॥ नांखीहो फाल केसी जव आवीयो,
 दोट करी हरी आप ॥ च० सु ९ ॥ मुखगुं हो जाली तामवेदारीयो, टाल्यो सवल संताप ॥ च० सु १० ॥ कंस तणा खरमेख-
 तिमहिज वली, गोकुलमें समकाल ॥ च० सु ११ ॥ फरतां वनमें हो हरी छटे पने, नांखे ताम उठाल ॥ च० सु १२ ॥
 एक दिन जमुना हो जलमें परिसरे, हरि रमे सुविचार ॥ च० सु १३ ॥ कंडक उठलीने तव पड्यो, कालंड्ह मोजार ॥ च०
 सु १४ ॥ ते लेवाने हरी इहांतर गया, सोधी लीयो गंधद ॥ च० सु १५ ॥ पिठे फिरतां तव पेखीयो, आवास तेजनो कंड ॥ च०
 सु १६ ॥ चिते दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक अधिक पाम ॥ च० सु १७ ॥ देइ फलांग माहि गया, निरीक्षण करे काम ॥ च०
 सु १८ ॥ आगे जाता पल्यंगमें जीलंता, देखे कालीनागा ॥ च० सु १९ ॥ सहस्रफणो सुतो सुख निदमें, महीथर विखनो ढाग ॥ च०
 सु २० ॥ करे तिहां नागणी नागपतालनी, नव श्चात विनोद ॥ च० सु २१ ॥ पामीअचरज तामहरीभणी, बोलिवचनसरोद च० सु २२ ॥
 ॥ अथ नागदमन ॥ नागणवाच ॥ कांड तुं वाट विरासियारे बाला, कांड तुं मारग भुलियो; कांड ते तारो काल

घटियो, जे आणे मारग आवियो ॥ जल कमल ठंमि जायरे बाला, साम मोरो जागसे ॥१॥ कानवाच ॥ नहि ते
वाट विरासियोरे नागण, नहि ते मारग जुलियो; नहि ते मारो काल घटियो, हुं एणे मारग आवियो ॥ जल०
२ ॥ नागणवाच ॥ किहां तुमारो बेसणोरे बाला, कुण तुमारो गामरे; कुण रायनां चलण चाले, सुं ठे तुमारो
नामरे ॥ ज० ३ ॥ कानवाच ॥ मथुरां हमारो बेसणोरे नागण, गोकल हमारो गामरे; कंसरायना चलण चाले,
गोवालीमो हमारुं नामरे ॥ ज० ४ ॥ नागण जगामो तोरा नाहने, बली केसे जेवेसासीयो; कंसरायथी जुवटे
रमतां, नाह तुमारो हारीयोरे ॥ ज० ५ ॥ नागणी नाग प्रबोधन वाच ॥ चरण चोली अंग मोमी; नागणे नाहो
जगावीयो, उठोने बलवंत वेवा थाने, बालुमो हम धर आवीयोरे ॥ ज० ६ ॥ देशी ढालनी मुलगी ॥ उठयो हो महि
धर विप नरे लोचने, कोप धरी ततकाल ॥ च० ॥ आयोहो सनमुख हरीने उपरे, रोस नरघो विकराल ॥ च० सु १ ३ ॥
नाथ्यो हो जाली बेल तणीपरे, पाम्यो अधिकी त्रास ॥ च० ॥ उपरे वेशी हो हयपरे वाहियो, जोरकीसो हरी पास
॥ च० सु १ ४ ॥ थाको हो नाग तजी अज्जीमानने, प्रणमे प्रभुना पाय ॥ च० ॥ हुं तुम पायक लायक साहीवा, मेहेर
करो महाराज ॥ च० सु १ ५ ॥ हवे हुं शेवक आजथी ताहरो, न नजुं अवर भुपाल ॥ च० ॥ लइ सतकार आयो हरी
निज घरे, मलीयां बालगोपाल ॥ च० सु १ ६ ॥ हवे वृपादिक हणीयां सांजली, बयरी जाणण हार ॥ च० ॥ सारंग
धनुष्य पुजण थापोयो, प्रपथामें महाराज ॥ च० सु १ ७ ॥ कंसे करावीहो तिहां उद गोपणा, नामा कुमरी व्याह
॥ च० ॥ सारंग धनुष चढावे जे भुज बले, परणे तेह उठाह ॥ च० सु १ ८ ॥ एमनीसुणीहो आवे तिहां कणे अलगथी

राजान ॥ च० ॥ धनुष बनावी पण को नवी सके, सारंग जे अजीधान ॥ च० सु १ ॥ एहवे नंदन श्री वसुदेवनो,
 सुर सुनट गुणधीर ॥ च० ॥ उलाकि रथ उपर वेसीने, अनाथुष्ट वरुनिर ॥ च० सु २ ॥ मारग जाताहो गोकुल
 गाममें, वास रह्यो सुभटेवा ॥ च० मथुरां वाट देवाभरण तव लिया, साथे हरी बलदेव ॥ च० सु ३ ॥ वरु उन मेलियो
 हरी मारग करे, हरबुधो बल महि राण ॥ च० ॥ हरी बल देखिहो मन अचरज लह्यो, रथे तेने राजान ॥ च० सु
 ४ ॥ अनुक्रमे जमुना जल उत्तरी, पइसे मथुरां मांहे ॥ च० ॥ धनुष सज्जाइहो आया रंगसु, वेठा धरी उठाहि ॥
 च० सु ५ ॥ जामांहो हुइ अति अनुरागणि, निरखि हरीनुं रूप ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य खेंचण तव उठिया हुंस
 धरी वर जुप ॥ च० सु ६ ॥ निरखि धनुष्यहो, पाठा इसरे, सहिषति मोटा राय ॥ च० ॥ होइ अपुठाहो नव परणी
 तपरे, उजा मुख उपाय ॥ च० सु ७ ॥ एतले कुमरश्री वसुदेवनो, होइ सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चमवमी चाल्योहो
 नय मन अवगुणि, चाप ग्रही करे जोर ॥ च० सु ८ ॥ लक्ष्मण्यो तामहो होइ अधोमुखे, पमीयो नोमी आय
 ॥ च० ॥ हांसो करताहो देखि सजा सहु, तव उठो हरी राय ॥ च० सु ९ ॥ सो धर्म फरसेहो जीम निज वजने, सा
 रंगपति पण तेम ॥ च० ॥ चोहमी धनुष्यने टंकारव कियो, हरी बल अर्थीको एस ॥ च० सु १० ॥ लेइ वरमालहो
 हरी कंठे धरी, नवल सनेहि नारा ॥ च० ढाल आमत्रिसमी गुणसागर कहे, घरे आयो मोरार ॥ च० सु ११ ॥ दोहा ॥
 कंसराय हवे एऊदा, आखाने मल युध; करवा कारणे भिया, राय अनेक विसुय ॥ १ ॥ वसुदेवने तेमीया, सगला
 आपण जाइ; अंकुरादिक पुत्रसुं, कंस हवे चित लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसारीया, कंस ते सहु कोय; उंचे मांचे दिपता,

पामे सोना सोय ॥३॥ मल युध हवे सांजलि, कळ रामने एम; कहे मथुरां जाइए, अचरज जोवा जेम ॥ ४ ॥
 मानी वचन बलनइजी, एम जसोदा पास; न्हावण कर अम्हे जायसां, मथुरां चिच उलास ॥५॥ देखि जसोदा
 मातने, हटक कहे बलदेव; कंस हण्यो हरी बंधवा, वात कर सुन टेव ॥ ६॥ पहि लुणो सुं विसस्यो, तुज्जने दासी
 नाउं; जिण न कियो कारज तुरत, वचन गण्यो अम्ह वाचं ॥ ७ ॥ एह सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार;
 बोलाव्यो बोले नहि, तव चित्ते हलधार ॥८॥ ॥ ढाल ३ ए मी ॥ ॥ मोलि माथे मार ॥ ए देशी ॥ हलधार साहि
 हाथ, बोलावे नरनाथ; नाइ किंम अणमणो ए, वचन दयामणो ए ॥१॥ वादल ठावो चंद, डखल दिसे मंद; तिम
 तुम मुख इत्सो ए, कहो कारण कित्यो ए ॥ २ ॥ एणवाते गुण गेह, जुटो दिसे नेह; बंधव तुम तणो ए, साचो मुज
 जणो ए ॥ ३ ॥ हरी नाखे इम वाय, तुं मोटो महाराय; हुं मन जाणतो ए, हठ नवि ताणतो ए ॥४॥ पण तुम
 अथीक गुमान, दिसेठेरे राजन; मुज जननी वनि ए, कही तुम दासनी ए ॥५॥ इण वाते तुम लाज, नवि आवि माहा
 राज; विणवे धेवहो ए, अणघटतुं कहो ए ॥ ६ ॥ पामी अंतर नेव, हसि बोले बलदेव, नहि तुम जामनि ए, जसोदा
 स्वामनि ए ॥ ७ ॥ किंतु देवकि माय, देवक सुता सुखदाय; वठ तुम मावनी ए, वसुधा मावनी ए ॥ ८ ॥ नंद संदेन
 सुख हेत, माता धरीय संकेत; मुक्यो तुम जणि ए, आरीति मन धणि ए ॥ ९ ॥ पण न करे तुज गोर, कंस तणो
 जय जोर; तुज विरहा नुरीए, रहे मथुरां पुरी ए ॥ १० ॥ मास मासने बेह, माता धरि मन नेह; आवे विलखती
 ए, तुम मुख निरखती ए ॥११॥ नंद जसोदा नार, संखीयपणे सुविच्यार; राखे हेत धरी ए, हेजथे करीए ॥१२॥

वसुदेव आपणे तात, सुज सुक्यो विख्यात; कंस कारण पखे ए, वात न को लखे ए ॥१३॥ बांधव इसे दसार, जा
 दवनो परिवार; तुज सीर राजतो ए, जग जस गाजतो ए ॥१४॥ हुं वन बांधव सार, गुप्तपणे सुविचार; रुहुं मन
 नेहथी ए, प्रेम विसेषथी ए ॥१५॥ दासी जणी करी रीस, तिए कारण तुम इस; अलेक गुनो कहेए, वढवी रच्यो
 सहिए ॥१६॥ ढाल नवत्रिसमी सार, पाम्यो जेद मोरार; फरी पुढे एसुंए, गुणसागरकी सुंए ॥१७॥ ॥वोहा॥ हवे
 पुढे बलजडने, किम सुक्यो सुज तात; कारण विए इहां कणे, तेम जणो सहु वात ॥१८॥ वलतुं बलजड कहे, वात
 सविविस्तार; कंसे तुज बांधव हएया, कोप धरी तिए वार ॥१९॥ तात मात मथुरां रहे, कंस तणे हव जोर; सोल वरसतो
 वही गयां कोय न आवे नोर ॥२०॥ जरासंधता पदथी, चसकी न शके कोय; मोटा साथे बांधवी, घणी विमासण
 सोय ॥२१॥ आज कंस वन राजीयो, पाले राज अखंन; आवीने केइ नम्या, पुहवी पाल प्रचंन ॥२२॥ वढ आपण सुत
 पाषति, वरते ए विरतंत; तो एम जाणी सींधनो, खज सीयाल जखंत ॥२३॥ बांधव मरण सुणी करी, कोण्यो क्रभ
 मोरार; चरीत करे जे आगले ते सुएजो सुविचार ॥२४॥ ढाल ४० मी ॥ कोइ लो परवत धुंधलोरे लाल ॥ ए देशी ॥
 आज पवामो कंसनोरे लाण ॥ इम करी पण रीसाले ॥ सोजागील ॥ हरी हलधर बेहु चालीयारे लाण ॥ साथे घणा
 गोवालारे ॥ सो ० आ ० १ ॥ हरी हलधरने कानजीरे लाण ॥ बेहु गुणे अमोलरे ॥ सो ० ॥ मथुरां दिसे चालतारे लाण ॥
 पामे पुरनी पोलरे ॥ सो ० आ ० २ ॥ पद्मोतर चंपक जलारे लाण ॥ कंस तणा गज दोयरे ॥ सो ० ॥ पुर प्रवेश करता थ-
 कारे लाण ॥ साहमा आव्या सोयरे ॥ सो ० आ ० ३ ॥ दांत उखेनी मारीयारे लाण ॥ हरीपदमोतर तेहरे सो ० ॥ तिम

चलनई मारीयोरे ला० ॥ चंपठ गज तिहां जेहरे ॥ सो० आ० ४ ॥ राम ऋश वेहु देखीनेरे ला० ॥ कहे लोक सहु
 भोयेरे सो० ॥ अरीष्ट प्रमुखइणे हएयारे ला० ॥ नदपुत्र एबोयेरे ॥ सो० आ० ५ ॥ जुटे वजार दयामणीरे ला० ॥ गो-
 वालीया तेणीवाररे सो० ॥ वख जुपणने सुखनीरे ला० ॥ कोइ न वर्जनहाररे ॥ सो० आ० ६ ॥ व्यापारी भिली
 एरुवरि ना० ॥ कस जणी कहे तामरे सो० ॥ गोयाजीए पुर लुंटीयोरे ला० ॥ न राखी कोइनी मामरे ॥ सो० आ०
 ७ ॥ कंस कहे धोरा रहारे ला० ॥ आगणद्यो इण तामरे सो० ॥ कुटी रुखुं पाथरारे ला० ॥ पोचानीस यम धामरे ॥
 सो० आ० ८ ॥ निजे पीने पूननेरे ला० ॥ कवे धरी यरमात्तरे सो० ॥ मन्न अखामे आगियारे ला० ॥ रामकृश रडियालरे
 ॥ सो० आ० ९ ॥ कस तिन्या परीयारसुरे ला० ॥ बेसे हरीहलथाररे सो० ॥ मोटे एक मांचा थकीरे ला० ॥ सुजट
 सवन उताररे ॥ सो० आ० १० ॥ राम देखायि ऋशनेरे ला० ॥ कंस जणी तेवाररे सो० ॥ समुद्रविजय थादे करीरे ला०
 ए आपणनो परियाररे ॥ नो० आ० ११ ॥ हवे तिहां मन्न झुजतारे ला० ॥ जोवे रांणो सो० कंस आदेसे उ-
 रियोरे ला० ॥ चाणुरमन बलमानरे ॥ सो० आ० १२ ॥ मेहतणी परे गाजतारे ला० ॥ थापोटे निज हाथरे सो० ॥ उंचे
 स्वरे डम वोजतारे ला० ॥ सरुल नरेसर साधरे ॥ सो० आ० १३ ॥ विर जननी ले जाइयारे ला० ॥ राजपुत्र
 मठरालरे सो० ॥ आवि अमो मुक आगले ला० ॥ अहो मोटा जुपालरे सो० आ० १४ ॥ अणस हेतो हरी उठियोरे
 ला० ॥ न्हानो पण मन मोटरे सो० ॥ मांचिधी आयो उतरारे, ला० जुजा आप थापोटरे सो० आ० १५ ॥ ठश थापोटे
 बांहेनेरे ला० ॥ गवण यरा कपायरे सो० ॥ दोखि गवण धन उमयोरे ला० ॥ अष्टापद अकुलायरे ॥ सो० आ० १६ ॥

१ ७ ॥ मुल कि दामोदर बोलीयेरे ला० ॥ वचन वदे तव गोररे सो० ॥ आव्य चारुण उतावलारे ला० ॥ जोड थारो जोररे ॥ सो०
 १ ८ ॥ मंद गोपनो पुत्रबुरे ला० ॥ उध तणी मुज देहरे सो० ॥ तो हुं हरी गजनी परे ला० ॥ उतारुं वल एहरे ॥ सो० ॥
 १ ९ ॥ वचन चातुरी क्रशनीरे ला० ॥ देखी बीजो मलरे सो० ॥ कंस आदेसे उठियेरे ला० ॥ मौठीक नामे मुगलरे ॥ सो०
 २० ॥ उठि बीजा मलनेरे ला० ॥ साथे अमो हलधाररे सो० ॥ थापनी नुज तिम आवियेरे ला० ॥ चाणुर हरीनी
 लाररे ॥ सो० ॥ २१ ॥ राम अने मौठीक लनेरे ला० ॥ तेम हरीने चाणुरे सो० ॥ विंदाचल गजनी परे ला० ॥ लाग्या
 रोस आपुरे ॥ सो० ॥ २२ ॥ कपेधरा पगला तसुरे ला० ॥ उदने रज अतिपुरे सो० ॥ उठि सना अलगी थड़े ला० ॥ नरखे
 उना छरे ॥ सो० ॥ २३ ॥ कंसव मुवे चाणुरेनेरे ला० ॥ नांख्यो धरति उंठरे सो० ॥ वज्रजेम सक्रेसनोरे ला० ॥ पमीयो
 ग्रहे कुण चोठरे ॥ सो० ॥ २४ ॥ सात धनुंय पाढो पमेरे ला० ॥ तिए धाते चाणुरे ॥ सो० ॥ सासलहि चाणुर
 नेरे ला० ॥ क्रश हकारे सुरे ॥ सो० ॥ २५ ॥ केम जाली नीज जानसुरे ला० ॥ वांहे सीस न माथरे ॥ सो० ॥
 हयमे हणीयो मुतसुरे ला० ॥ क्ण हरी जोर खमाथरे ॥ सो० ॥ २६ ॥ अा ॥ मोहमे लोहि नाखतारे ला० ॥ फ्राटि
 देखि आंपरे ॥ सो० ॥ २७ ॥ प्रांण ठांम्यां पापीएरे ला० ॥ हरी पण दिथो नाख्यरे ॥ सो० ॥ २८ ॥ ढाल नली
 चालिसमीरे ला० ॥ युध करी बहू जातरे ॥ सो० ॥ गुणसागर हवे कंसनीरे ला० ॥ आगेनीसुणो वातरे ॥ सो० ॥ २९
 आ ॥ दोहा ॥ कंस हवे जय कोपथी, बोले कंपित देह; आलस तजी गोवालीयो, मारो उन्नो एह ॥ ३ ॥ जेये

ए पापि पोसीया, ते एण मारो नंद; ग्रंथ ग्रहो सहू तेहनो, काढो घरनो कंद ॥ २ ॥ श्रीर करे जो विचको, तेहने
 राखण काज; ते हणवो मुज आणथी, नीश्रे सुतजी लाज ॥ ३ ॥ ढाल ४१ मी ॥ ऋश्रलणानी तथा नुपति
 आइ मल्यो ॥ ए देशी ॥ एम सुणी हरी कोपीयोरे, कंस जणी कहे इम; चाणु रमास्थो तुं जीववारे, मुख वंबे कम
 ॥ १ ॥ सो श्रवसर आय मल्यो, रुयियर नांख्यो जेह ॥ सो० ॥ ए आंकाणी ॥ राख्य जीव तुं ताह्यरोरे,
 जलगन हणुं तुज; पबी नंद हणवा जायजेरे, देखी प्राक्रम मुज ॥ सो० २ ॥ इम कहि कुवि आवियोरे, मांचापर
 हरीराय; कंस पामी जय आकरोरे; नावो मुख विलखाय ॥ सो० ३ ॥ सासजस्यो आव्यो धसीरे, अंते उरमें चाल;
 जीव जसारहि वारखेरे, मान जरी मठरालेरे ॥ सो० ४ ॥ रामे तव मुठीक जणिरे, पहोंचामो जम पास; लोक नावा
 सहू वेगलारे, पामीने अति त्रास ॥ सो० ५ ॥ एटले सुनट कंसनारे, धाया लेइ हथीयाय; हरी हलधर हणवा
 जणिरे, सुनट मोटा सीरदार ॥ सो० ६ ॥ इं१ एक मांचा तणिरे, राम लेइ नीजदाय; मधुपर मांखिनी परेरे, नासी
 सुनट सहू जाय ॥ सो० ७ ॥ जिय जस्था आमी फरीरे, बोले ठोमी लाज; मांमि श्रव अलगा रहेरे, मांमो मलवो
 आज सो० ८ इम कहि तलपि आवियोरे, लाते ज़ांगी कमाम; जाणे कंस दरबारमेंरे, पनीज्चिति धाम ॥ सो० ९ ॥
 अते उर सहू अयगणिरे, रोस जस्यो हरीराय; केसग्रहि कंसरायनेरे, नांख्यो धरणी आय ॥ सो० १० ॥ मुगट,
 पम्ह्यो द्वार पीर गयोरे, तरवा लाग्या नयण; मरणदसा आवि कंसनेरे, कान्ह वेदे एम वयण ॥ सो० ११ ॥ जीव
 तव रापेवा कारखेरे, बाजक हणिया जेह; हमणा फज ते पामीयोरे परतख पापो एह, सो० १२ ॥ कंससीर लाते

१ मारतारै, वरजेतवदसार; देखि हरी निज तातनेरे ठोम चल्थो सुविब्यार ॥ सो० १३ ॥ रामकभने नीज रथमारै,
 अनादृष्टी बेसार; समुद्र विजय आ देसथीरे, मुके नीज घर उआण ॥ सो० १४ ॥ उग्रसेन साथे मखिजी, समुद्र
 विजय नरराय; कंसनो प्रेत कारज करेजी, जमुनाने तट जाय ॥ सो० १५ कंसनि मात तिम नारीएजी, जलतणी
 अंजली दीध; जीवजसा निज पति तणोरे, प्रेत कारज नवी कीध ॥ सो० १६ ॥ राम अने कभ तणोजी, प्रेत कारज
 करी तेम; कारज करी सहु नाहनोरे, कोप धरी कहे इम ॥ सो० १७ ॥ एकतालीसमी ढालमेरे प्रगढ्यो श्रीहरी
 आप; गुणसागर जादव तणोजी, प्रबल पुन्य प्रताप ॥ सो० १८ ॥ ॥ दोहा ॥ सतनामा पुत्री जणी, परणावे त्यां
 जुप; उग्रसेन हरी रायने, अनी नवरंजा रूप ॥ १ ॥ नित नित नवलां आचरण, नित्य नित्य नवला वेष; नित्य नित्य
 नवली रतिकला, करे हरीसु विसेष ॥ २ ॥ सोरिपूर आव्या हवे, जादव सकल विख्यात; श्रोतासांचलजो तुमे, जीव
 जस्थानी वात ॥ ३ ॥ विलखीजीव जस्था हवे जरासंधने गेह, पोहति परतद चालती; अस्त्री रूपे एह ॥ ४ ॥ जरासंध
 पुढे थके, रोति जंपे वात; यादव कुमर हरी हलधरु, करी मुज प्रितम घात ॥ ५ ॥ ढाल ४२ मी ॥ सोवन सिंघासण रेवति
 ॥ ६ ॥ देशी ॥ आंसुमाने लुह्या निज हाथसुं, चांपी ३ हयमाने वाररे ग्हेवथो मन आति बापनो; पुढयो ३ सकल विब्याररे
 ॥ १ ॥ आवारै पनोति जरासंधने, कंतनो करीय संहाररे; बाप तणो करवा जणी, बंधव काली कुमाररे ॥ आ० १ ॥
 सोमसुनट तव मोकल्यो, समुद्रवजे नृप पासरे; कंसना मारणहारने, मोकल्यो शिख दियो तासरे ॥ आ० २ ॥ समुद्र
 विजय कहे सोमजी, एहमकुल शरणाररे; रामने कलष दो चाइला, थंनण सहु परीवाररे ॥ आ० ४ ॥ नामतुंसीसके

धनुषने, मुम्यतुं मानके बाणरे; धर शीर आणके टोपने, गहाला जोयठे प्राणरे ॥ आ० ५ ॥ पुत्र तो प्रनु नरः
 स्वामीजी, जो प्रनु तो नहि पुत्ररे; वोड में एकज होयशे, तिम करो जीम रहे सुतरे ॥ आ० ६ ॥ पुत्र तो आपधं
 उपजे, प्रनु करे आपनो ठेदरे; जम चिन्या मालतो सुकशे, पाशेश वंस विडेद ॥ आ० ७ ॥ एह सुणी हरी कोपीये;
 उठियो खमग संचालरे; सोमनो राहु हुं सामलो, बेगे दठ आमलो टालरे ॥ आ० ८ ॥ रुप नत्रिजगुं चिनये, मारः
 नही थचसिठरे; सगामीने बले बलियो महा, शेचक होये अति छिठरे ॥ आ० ९ ॥ सोम सुनट तय चाजीयो, पोहो
 नुपति संगरे; वात सुणी अति परजल्यो, अग्नी जी घृत प्रसंगरे ॥ आ० १० ॥ समुच्चविजय सहु तेमिया, कियो किः
 वात विच्यारे हवेरे इहां रहेयो नही, रखा होये असुख अपाररे ॥ आ० ११ ॥ कोटर एकनीमतियो, पुठपोर याद
 नाथरे; किहारे गया हम उगरा, बगमीठे मोटका साथरे ॥ आ० १२ ॥ सोरे कहे नृप सांजलो, आरति कांइन ठामरे;
 रुप हणी निज नुज बजे, त्रिलंन धणी होसे स्वांमरे ॥ आ० १३ ॥ नेमने हलधर क्रश्रजी, लेहना वंशमां होयरे; ॥ १४ ॥
 जो आप कोपे घणुं, पोंहची शके नही कोयरे ॥ आ० १५ ॥ एह स्यानक तुमे परीहरो, इहां सुख नहि लगाररे; तः
 तलाहि जाणके, खाइ २ गारी गेमारे ॥ आ० १५ ॥ पभिमविश तुम्हे शपि करो, सायर तट अनिरामरे; सतनः
 सुत जनमस्ये, जानु जमरतशुं नामरे ॥ आ० १६ ॥ तिहारे करज्यो तुमे सादरो, वासतणोरे मंमाणरे; अनथन निः
 कपुरस्युं, पामशो कोम कल्याणरे ॥ आ० १७ ॥ अष्टारेदश कुज कोमस्युं, चाजीयो जादयरायरे; मररे व्यापे घणो
 जो, तेहथी निकल्या जायरे ॥ आ० १८ ॥ जोमीनि मत कोइ झरज्यो, जोमी तजी किमजायरे; जोमी तजी जज्ञजादः

अवरतणी कुण वातरे ॥ आ० १ ए ॥ भुप नलिपरे चांखही, कोयठे वावनवीररे; जादव साथेरे लागणी, जे करे साह
 सधीररे ॥ आ० १० ॥ काल कुंवर ग्रह्यो विमलो, हुं जाडं यादवाजाररे; जिहारि जाय तिहां केमले, जइ लावुं
 परीवाररे ॥ आ० ११ ॥ यवन अनुज राजा पांचसे, हय गय पायक तेमरे; काल कोपे करी धम हम्यो, दम्वम्यो
 जादवा केमरे ॥ आ० १२ ॥ जेहेनो पुन्य सखाइयो, तेहना वम रखवालरे; तिहारि न चाले बलदैवनो; केतलो ए
 कुंवर कालरे ॥ आ० १३ ॥ लगवग आया ए आशना, तव सुरि करेहि विच्याररे; तेम परपंच उठाइयो काल
 कियो तव कालरे ॥ आ० १४ ॥ यवन कुंवर सह राजवी, पाठा बली चालीया तेहरे; भुपती सुख डख पामीयो, वात
 सुणी धुरबेहरे ॥ आ० १५ ॥ विर संहारीयो पापणी, लाग्यो १ पाप अपाररे; बलतीरे जिहां जाइ गामरी, तिहा तिहां
 बालण ए हाररे ॥ आ० १६ ॥ यादव विधन सह ए टल्योरे, सह टल्यो मर ततखेवरे; दांन ने पुन्य किया घणा, किधी
 गुरु देवनी शेवरे ॥ आ० १७ ॥ सत्य प्रीयाणने आवीया, सोरठ देशमोजाररे; दूरथी दीवो अति रुयमो, विमल
 पणे गीरनाररे ॥ आ० १८ ॥ साथरने तट आसना, आवीया जादवरायरे; सतजामा सुत जनमीया, तिहां कियो
 कटक पनावरे ॥ आ० १९ ॥ ढाल नली वेंतालीसमी, नय हरणी अनीरामरे; श्रीगुण सागर पुरवे, मन तणा
 वंडित कामरे ॥ आ० २० ॥ ॥दोहा॥ उदधी विजय परीवारशुं, करेरे मसलत ताम; विण सुरवर आराधीया,
 सरे न मोटा कांस ॥ १ ॥ जीहां जंबुक वासो वसे, तेतो बहुला ठाम, ते तरुवर जग थोमला; जीहांले गज वी-
 आम ॥ २ ॥ तप विन सानिधी नवि करे, देव महा सुखदाय; तप विण लब्धि न उपजे, पाप विलय नवि जाय

॥३॥ दूःकरथि दूःकर महा, जे जग दिसे काम; ते तप करी आराधीए, इम चिते नृप स्वाम ॥४॥ निमतिए दिन
 आपियो, खान कियो बलि कर्म; सायर पुजा साचवि, साधेवा सुख सम ॥५॥ ॥ ढाल ४३ मी ॥ एक दिवस
 लंकापति ॥ ए देशी ॥ क्रश्र करे अपवासजी; वासजी वास करेवा कारणे ए, तिजा विननी
 जामनि; जाणे के प्रगटि दामनी, स्वामनी जाय ते सुर उवारणे ए ॥१॥ हरीने संख पंचायण, दियो रोहीणि नंदन
 नंदन संख सु गोप सोह्यामणो ए, वर बख पहिरामणि; किधी सायरने धणी, अति घणी जक्ति करी ज्ञांखे घणो ए ॥२॥
 कहे हुं किम आराद्धियो, तप बले आयो साथियो; मुजने ते दियो कारज आवेशमो ए, हरी ज्ञांखे सुर सांजलो;
 आयो धानक निरमलो, अति जज्ञो धानक अमारो पम्पमो ए ॥३॥ सुर सुरपति पासे गयो, सुरपति मन हरखित
 थयो; हरखीत थयो धनदने कारज सौष्यो सहु ए, धनद समारे अति जली; पुरो धारीका मन रलि मन रलि,
 पुगी आस फलि बहु ए ॥४॥ नव जोयण वीस्तारजी, लांवणो ते वारजी; सारजी सुवर्ण कोट पाइ जलि ए, हाथ अद्वार
 उंचापणो; नव धरणी पायो खणे, पोलापणो हाथ वार रांगु चलि ए ॥ ५ ॥ रतन तणा वर कांगुरा, देखी मोहे
 सुरनरा; किधा ए कोवा नवरंग जलकंता ए, एकसो अमसठ पोलहो; दिसे सरखि उंजहो, उंजहो सात जोमी ध्वज
 लेहकता ए ॥६॥ वृत तंस चउरंसहो, देव करे परसंस हो; किधी मंदिरनि अति मांमणी ए, दस जोमी रत्ने जमा;
 सहे सबहुं तेरे परवमा, वसुदेवना मोल तणि शोभा घणी ए ॥ ७ ॥ मध एकविसे जोमियो, धंज हजारे शोनीयो;
 शोनीयो मणि माणोकज जुसीयो ए, धनद करे हरी हेतथी; नव नव घाट विशेषी, विशेषी रंगचुवन करी धार्पीयो

॥७॥ इंद्राणी अनुहारना, रूहे सब त्रीसे नारनां; नारनां मेहेल तणि शोना घणी ए, बांध्या सोवन घाटहो; मांहि
 हिंमोला खाटहो, खाटहो विविध प्रकारे कोरणी ए ॥ ९ ॥ मेहेल सोल हजारहो, उंची नोमी अढारहो; सारहो दिपे
 श्री बलदेवना ए, गोल त्रंस चञ्जुणिया; मोल विविध सोहाविया, सोहाविया दस नोमी दसारना ए ॥ १० ॥ सना
 सुधमीं मन रलि, किथी शोना ऊजमलि; ऊजमलि रामकृश वर आगले ए, वडा श्री गजराजहो; मदऊरंत सकाज
 हो, काजहो हाथी साला पासले ए ॥ ११ ॥ मोटा विविध जातहो, मोल भोमीया सातहो; सातहो उपनक्रोरु
 परिवारने ए, राज मार्गने पासहो; सोवन जमीता वासहो, वासहो राय उअसेन कारणे ए ॥ १२ ॥ धर धर बोमा साल
 हो उत्तम वाग विसालहो; विसालहो कल्पवृद्ध घर वारणे ए, वाविनो वित्तारहो; नरिपुरीत सारहो, सारहो नारी मंजरा
 कारणे ए ॥ १३ ॥ एकखंमा दीखंमा कह्या, त्रिखंमा सतखंमा लह्या; गह गह्या साठ कोमी वस्ती खरी ए, नाम जुजुया
 धारि ए; रुधी घणी विस्तारीए, विस्तारीए अन धनसुं मेल्या नरी ए ॥ १४ ॥ दिपंती घर उंजहो, वणति वणति
 पोलहो, पोलनहो पोनुं तो उंचि कहिए ए; कलस कांति अपारहो; उगंतो दिनकारहो, कारहो कांतिकरणेमजरहिए
 ॥ १५ ॥ हाट तणि वर सोहहो, सोहनो संबोहहो; दोहनहो सोह गुणे धन गाजीयो ए, स्वर्ग मृत पातालहो; तिन लोक
 रसालहो, रसालहो सार सोधीने आणियो ए ॥ १६ ॥ कुवा वाव्य सरोवरु, वन वामी अति मनोहरु; हरीपुर ३ सरस
 कहावियो ए, ए सवलो विस्तार ए; गढमढ पोल पगारु ए, वारुहो अहोरारात्रि मांहि कियो ए ॥ १७ ॥ पितांबर अति
 निर्मल, नक्षत्र माला अति नल; कौस्तभहो गरुध्वज रथ आपियो ए, कौमुदि गदावर; सारंग धनुष्य नला सर,

नंदकहो खज्जा मुगट हरिने दियो ए ॥ १ ॥ वनमाला मुसल हल, वसनताल ध्वज रथ भल; हलधरहो पुजो तण ॥ १ ॥
 देइ ए, ग्रीवा आत्रण बेहिरखा; हारसुं कुंमल नवलखा, जनजीनेहो आये भूपण सुर केइ ए ॥ १ ए ॥ गंग तरंग विराजनाः
 वसन समुजल राजता, पुनरपीहो रतन तेज हार सुंदरुंए; समुखविजयने वखजी, दिव्य सुररथ शखजी; पांमुहो ॥ १ ॥
 हाश नामे परुंए, ॥ २० ॥ यथा योग्य ते जाणीया, ते सुहूए सनमानीया; मानीयाहो राजा राज कुमर तदाए, इंडः ॥ १ ॥
 अदेसए; ए सयलो विसेसए, कियोहो देव कुबेरे धरी मुदाए ॥ २१ ॥ राम रथे सिधारथी, हरिने दारु कसाराः ॥ १ ॥
 परवारथि बेसी रथ उपर नलाए, पेसारी पुरमां कियो; सहूको मन हरखीत थयो, देखिहो सुंदर नगरी ऊलामनाः ॥ १ ॥
 ॥ २२ ॥ सुरपति साथे मलि, करता मोठव मन रलि; मन रलि पहराव्या डवारामतिए, रत्न कनक धनधानः ॥ १ ॥
 वरसावे मन खातसुं, खांतसुं त्रण दिवस लगे ठतिए ॥ २३ ॥ नरसुर असुर विद्याधरु धन देदेव अत्रेसरु, अत्रेः ॥ १ ॥
 मंगल चार कियां नलाए; कियो नृपपद अत्रीपिक, हरी हलधरसुं विवेक; सुविवेक तेज पुज्य गुण आगल ॥ १ ॥
 ॥ २४ ॥ चुबर खेचर राजीया, सेवकरे अति साजीया; गाजीया नगर दारकां यडुपति ए, लोग जोगवे जोग ॥ १ ॥
 सुपनांतर नहि सोग ए, लोग ए आरति चिंता नहि रति ए ॥ २५ ॥ आप आपणो आचार, सहू पाले सुविचः ॥ १ ॥
 अविचारको नसके तिहां करीए, ढाल ए तेंतालिसमी; गुणसागर गुरु मन रमी, मन रमी कमला केल करे खः ॥ १ ॥
 ॥ २६ ॥ दोहा ॥ कमला केल करे खरी, कमला हरी अरथंग; कमला कोम वधामणा, कमला रंग सुरंग ॥ १ ॥
 कमलापति कटप तरु, कमलापति किरतार; कमलानो विस्तार ॥ २ ॥ कमला हयंवर गयंः ॥ १ ॥

कमला सदन साज ॥ ठाकुर चाकर सहु विषे, कमला रहि विराज ॥ ३ ॥ कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर
 असेस; कमलापतिना राजमां, कमला तणो विसेष ॥ ४ ॥ यादव जगमें जगमगे, यादव जोति अपार; यादवपतिनी
 साहेबि, चंद्र कला विस्तार ॥ ५ ॥ ढाल धध मी ॥ एक दिवस कोइ मारगथ आयो पुरंदर पास ॥ तथा वंडु श्री
 आदि जीएंद ॥ ए देशी ॥ चंद्र कला जीम बाधे श्री हरी तेज अपार, कार न लोपे सुरनर मानव एक दगार; श्री
 हरी वंस वतंस कहंस प्रसंस अनूप, क्रम क्रिपाल के सुरीजन डरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमकि सीतलताइके
 तेजे तपत दिणंद, मेरुजुं धीर गंचिरके गुणे गुरुजु गोविंद; सिंह अबिह सुलिहके सुरमें सुरसनुर, इंझकि प्रचुता
 प्रगटित पुरव पुन्य अंकुर ॥ २ ॥ दाता दिव दरीयाको नाम धरंत अनंत, पण ए तिनुं त्याग तणे मननेम वसंत;
 परनारीने हयो न दिधी वैरीने पूंठ, याचकने नाकारो न किधो साहमो उठ ॥ ३ ॥ सब विध सुंदर राज करंत
 कलेस न कोइ, नामे सुनामा गुण अनीरामा जोइ; चंद्रमुखी अडखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनुप
 के उपमनोरे संदेहे ॥ ४ ॥ नेह धणरे धर्मीयो विधीनां घाटसु घाट, अवर सकल त्रिय साथ मथो विधी फोगट माट;
 रूप सोहागणी रागणी राजा राग असेष, पंचंडि सुख माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥ एक दिवस नारायण
 परखदा पुरी जाम, समुद्रविजय राजादिक राजा वेठा ताम; गगनथी उतरतो दीवो एक सतेज, अग्नी पुंज्यको को कहे सुरज
 तेज सहेज ॥ ६ ॥ एटले ते अतिआसनो आयो जाण्यो जेवार, तीम रुषिस्वर दिवो के नारद नाम उदार; नारायण
 पथे लाग्यो के चांग्यो नरम अपार, हरी रुषिस्वर आप पुढे सुख वारंवार ॥ ७ ॥ नारद नारायणने पुढे अित प्रकार,

तुम्हें पटराणि सुणि में अमरी अवतार; साहुं देखण चाहुं वंधव तुम आवेदा, कश्च कहे धन स्थानक जीहां
 तुम्हे करो परवेश ॥ ७ ॥ मुनि जाण्यो थोनामां नामनि लागशे पाय, नाविने वस रहि कतु उपजी इहां
 आय; देव न दुपण दिजे कह्यो नर एक लिंगार, हांवाणहार होवे सहि निश्रे एह विचार ॥ ८ ॥ सतनामा
 तय आगले मांकी दरपण सार, मनगमता रस आव्या तनु पेरे शणगार; प्रिति रूपे मोहि सोहि करे हास विलास,
 थाप सराहण कर्तिके धरति श्रंग बलास ॥ १० ॥ पाठल उन्नो आइ रह्यो तिहां महा मुनीराय, श्रंग विचुति
 जटा शिर रूप विरूप देखाय; मुलकिश सत नामां नाखें मनसु ताम; एक रूप ए एक ए जीजो विधीकां काम ॥
 ११ ॥ मेरो तो वदन चंदके जाणी सुधारस वास, ए कोइ मुखको राहके चंदके आयो पास; मों मचकोमी रुपी
 सुनामा किधो हास, चाख्यो तव पिठताय नारद मन हुनु उदाश ॥ १२ ॥ वानरमो अति चंचल पिधो मदिरा
 पान, विंदुमे चटकायो के लाग्यो नुत थयान; थागे नारद ने हरी नारी खिजायो जोइ, खिजावणना फलें लागे ते
 सुणज्यो सोइ ॥ १३ ॥ अणदी वाल्या जे नर नाचे नाच अपार, वार्जा वाजे ते नरके मन नाचणहार; अण ठेढ्यो
 हि अनर्थे कारी नारद होय, ठेढ्यो क्युं क्युं न करे चिमाशी जोय ॥ १४ ॥ नारद चित्ते काहुं आयो इण घर
 आज, जे घर मान न पाए के तिहां नही जावानो काज; जइ देवो कैलाशगिरे समुद्रोप प्रणाम, जोएबुणस न
 काहुं तो स्यो मुंज नारद नाम ॥ १५ ॥ जो अपहार करायुं तो दूख पावे मित्त, जेरे कलंक चढाचं तो ए चिंता
 चित्त; सति गिरोमणी बीज तणे बले साची थाय आगेहि मुज वचन न माने को. हरीराय ॥ १६ ॥ इम चिंतवता

छपजी ए रुषिने मनसांहि, शोक्य तणो दूख गाढो के नारीने अति प्राही; चमालीसमी ढाल जली नारदशुं विलास
 श्रीगुणसागर पुन्य तणे वले पुरे आश ॥१७॥ ॥दोहा॥ हुं समन दाव न चुकही, वैरी न तजे वाण; वैरी बाघ
 कथी बुरो, अरति उपावे आण ॥ १ ॥ सहु साथे सुख राखीए, सहु साथे समजाव; पुरो पमवो दोहलो, जल
 अथविचे नाव ॥१॥ नामा नमैं जुली घणुं, मुज सम नारी न कोय; पण एतो जाण्यो नही, वना वनेरी होय ॥३॥
 नारद ए निश्चे धरथो, शोक तणो वन साल; नारीने साले घणुं, विजो सहु जंजाल ॥४॥ढाल ४५ मी॥ राम
 रसेरे राची घणुं ॥ए देशी॥ सोक तणो दूख अति घणो, सोक दहे मनमांहिरे; सोक साल साले खरो, जावशुं जीव
 हि प्रांहिरे ॥ सो० १ ॥ सोकने सुली सारखी, सुलीकावजुएकोरे सोक काठ दिसे घणो, विधे हारु अनेकोरे ॥
 सो० २॥ सोक्यने आग्य समी कही, सोक्य तणे अधीकाइरे आग्य वली बुजे सही, सोक्य नसीली थाइरे ॥सो०
 ३॥ सोकने घाव वरावरी, घाव तो रुजी जाइरे; सोक घाव रुजे नही, खटके कालजामांहिरे ॥सो० ४॥ सोक शत्रु
 सरीखो नही, शत्रु एक अंग व्यापरे; सोक्य शत्रु वहे आकरो, अंगोअंगथी कापेरे ॥ सो० ५ ॥ सोक्य सोहाग्य
 विवोकता, सोक्य लहे दुख केतोरे; जीन न एक कही शके, मोटो अंधर जेतोरे ॥सो० ६॥ सोक्य प्रियु सम लेखवे
 आधो सुख वटावेरे; नाम न जावे सोक्यनो परतदु केम सोहावेरे ॥ सो० ७ ॥ सुवाही पांढे वली, आणी दहत
 अपाररे; जाणी अशाता आकरी, कंठ वहांति विच्यारे ॥सो० ८॥ करजोमी किरतारने, नारी पोकारी जाइरे; नारी
 मकरजे जो करे, मकरे एह सगाइरे ॥सो० ९॥ वर दालीछ गोरमी, वांछपणे अर्जीमोरे; वर पंखणी वर टोरमी,

पण नही सोकही नामोरे ॥ सो० १० ॥ ए दुख जाणी सोकनो, नारद निश्चे किधोरे; नामा उपर सोकनो, जाणे
 के विमो लिधोरे ॥ सो० ११ ॥ अढी द्वीपमांहे फरुं जिहां तिहांथी आणीरे; नामा उपर नामनि; थापुं हरी पटराणीरे
 ॥ सो० १२ ॥ श्रेणी दोय चडतामनी, सोधि तिहां अनीरामोरे; नारी न निरखी एहवी, जेहवी ए सतनामोरे ॥ सो०
 १३ ॥ उत्तर दक्षुण नरतमां, फिर २ नारी जोइरे; नामा पण अंगुवने, पंहुंची न शके कोइरे ॥ सो० १४ ॥ उलंजो दिइं
 देवने, रेपापिशुं किधोरे. रुप हतो जे नारीनो, नामाने सहू विधोरे ॥ सो० १५ ॥ म्हारा फोमा पेटना, फूटंतां न दे-
 खायरे; इम चिंतयतो आवीयो, श्री कुंमनपुरमांयरे ॥ सो० १६ ॥ कुंमनपुरनां पाणीथी, उपजे आठि बालरे; स्वेत
 सनाये सुंदरी, दिसे जाकज्जालरे ॥ सो० १७ ॥ नांपम जुपती परपद्या, आयो नारद चालीरे; उंचो आसण मांडीयो
 किधी नाकि रसालीरे ॥ सो० १८ ॥ एतले आयो रुखमीयो, कुमर कुल शणगारोरे; रुप कला गुण नरखतां नारद
 हरख अपारोरे ॥ सो० १९ ॥ नारद पुठे रायने, ए तुम्ह कुण कहावैरे; प्राणथकी अति पीयारमो, नंदन नाम
 धरावैरे ॥ सो० २० ॥ अंतर हरखि पुठियो, एहने वहिनम कोइरे; पुज्य प्रसाद तुम्हारने, वहिन नलेशी होइरे
 ॥ सो० २१ ॥ परणाचि के कुंवारीका, राजा उत्तर विधोरे; आजलगी तो कुंवारीका, रुपिनो कारज सिधोरे ॥ सो०
 २२ ॥ रुपिने लांगी चटपटी, अंते उरमें आवैरे; रलियायत में रुखमणी, जुवा आणि वंदावैरे ॥ सो० २३ ॥ रुपिजी
 विधी आसिसका, क्रुध धरे पटराणिरे; होजे जाग्य विशेषधि, जुव नहि अम वाणीरे ॥ सो० २४ ॥ नाम सुणी हरजी तणो,
 रुखमणिनो मन राब्योरे; गयणागण घन गाजीयो, मोर महितले नाब्योरे ॥ सो० २५ ॥ पिसतालिसमी ढालमे नारद

वंभितफलसेरे, गुणसागर गुरु इम नणे, रुमे रुमो मलशेरे ॥१६॥ ॥दोहा॥ रुखमणिनांखे सुण चुवा, किंसी कहें रुष
 वात कवण क्रश नरेशरु, कवण पुरी विख्यात ॥१॥ कवणसुं देसांदि समो, कवण वंस विसाल; कवण रीधी रुपे
 कवण, कवण तास परीवार ॥१॥ कवण नाम माता पिता, कवण शुं बंधव जोम; बंधवने परसादने, पोंहचे सधना
 कोम ॥३॥ कवण बहिन सोह्यामणि, विक्रम तणो विच्यार; भुवा नणे रुषिरायजी, कहो सहु विस्तार ॥४॥ नारद
 बोले गह गह्यो, सुणो वमबाइ वात; संजलावुं धुर बेहथी, कशतणा अवदात ॥५॥ ॥ ढाल ४६ मी ॥ इमर
 आंवा आंबलि रे, इमर दामम छाख ॥ ए देशी ॥ द्वारीकां नगरी अति प्रबि हो, द्वारीकां क्रश नरेश; द्वारीकां
 सहु मन जावति हो, द्वारीकां पुन्य विशेष; हो हरजी द्वारीकां केरो राय, जेहनां सेवे सुरीनर पाय ॥ हो^० १ ॥ देश
 सोरठ देशमो हो, देसांनो शिणगार; रल पांच सुं राजतो हो, शोभा अर्थीक उदार हो ॥ ह^० उ^० २ ॥ जल तंबोल
 रेवत नलो हो, द्वारीकां अर्थीक उदार; वंश श्री हरीवंशजी हो, सहु वंसा शीरदार हो ॥ ह^० उ^० ३ ॥ वय जोवन
 जेहनि हो, वंठे जे वर नार; रीधी कुंबर सारखिरे, लाप वसे घरवार हो ॥ ह^० उ^० ४ ॥ रुप अनूप सोह्यामणो
 हो, मदन तणो अवतार; दश दशार आदे करी हो, यादवनो परीवार हो ॥ ह^० उ^० ५ ॥ माता नामे देवकि हो,
 करमेति कहेवाय; बाप नलो वसुदेवजी हो, महिमा कह्यो न जाय हो ॥ ह^० उ^० ६ ॥ बंधव श्री वलदेवजी हो, दिसे
 केइ हजार; बहिन शुभ्रजा शोभति हो, अर्जुन तस भरतार हो ॥ ह^० उ^० ७ ॥ विक्रम सक्र तणो वहे हो, जेनहि
 केहने मान; रिपु कुल काल कहावियो हो. गण मणि केरो खाण दो ॥ ह^० उ^० ८ ॥ बालपणे उपामीयो हो,

गोवरधन गोरी तेण; छट व्यंतरी पुतना हो, नांम करी हरी तेण हो ॥ ह० उ० १० ॥ जमना जलमें जीलतां हो, नाय्यो
 कालि नाग; गज जेवि मामो हण्यो हो, पाम्यो जग सोनाग्य हो ॥ ह० उ० १० ॥ सायर तिरि साधोयो हो, सायर
 पति सुरराज; धन देवजाए सारिया हो, हरिना सयला राज हो ॥ ह० उ० ११ ॥ लोक त्रिलोका राजीयो हो, नेमनाथ
 जगदिश; जेहने पासे शोभता हो, अति सयवंत अर्धाश हो ॥ ह० उ० १२ ॥ एक जीजे केम वरण्युं हो, हरोगुण
 पार न कोय; सुर गुरु आप वखाणता हो, अंत न पामे सोइ हो ॥ ह० उ० १२ ॥ नारद वचन सुणिकरी हो, भुवा
 नतिजी दोइ; परम माहासुख पाइयो हो, ज्ञानि जाणे सोइ हो ॥ ह० उ० १४ ॥ जुया नतिजि गुं कहे हो, साचि
 रूपीनि बाण; किम साची सुखमणि कहे हो, हुं दियी वर थाण हो ॥ ह० उ० १५ ॥ जुवा कहे इमहि कह्यो हो,
 अथमुं ते रुपिराज; मुज सुणतां वर पुढियो हो, श्री नीखम तुज काज हो ॥ ह० उ० १६ ॥ साधु सीरोमणी गुण
 निलो हो, अथमंतो अणगार; एह वचन नहि अन्या हो, सांसोम कर लिंगार हो ॥ ह० उ० १७ ॥ नारद अथमंतो
 मुनि हो, साचा दोनुं प्रकार; हुं वर मागी सोसुपालने हो, ए मुज सोच अपार हो ॥ ह० उ० १८ ॥ तुं राजा
 सोसुपालने हो, दिधी वधव देख्य; मातपीत्या दिधी नथी हो, ए विंभीसुं विसस हो ॥ ह० उ० १९ ॥ मातपित्या
 देवा थकां हो, बंधव कियो न होय; एह वात सहु पायरी हो, सोच न किजे कोइ हो ॥ ह० उ० २० ॥ जुवातणो
 तो मानजे हो, सावो वचन विजास; करी कश्चनि कामनि हो, यहुचतुं सहु आसहो ॥ ह० उ० २१ ॥ मन वचन
 कृमणसुथ हो, सुखमणि केरो प्रेम; कश्च वांमो अचरां नरां हो, कवण करावण नेम हो ॥ ह० उ० २२ ॥ कल्पतरु तजो

केरमेहो, हाथ न घाले कोइ; चिंतामणी तजी कांकेरो हो, लियो न चाहे लाय हा ॥ ह० उ० १३ ॥ गयंवर तजी
 अति गाजतो हो, कुण गहमो लेत; कामधेनुं तजी डुजाण हो, कुण गामरचित देतहो ॥ ह० उ० १४ ॥ कण नांखी
 कुण कुसका हो, ग्रहे मुंठ गेमार; सीतल अमृत जल तजि हो, कोण पिये जल खार हो ॥ ह० उ० १५ ॥ आंबो
 तजी कुण आंबलिहो, खाइ मुख लोग; हरख तजी हइमा तणी हो, कुणसुं वंठे लोगहो ॥ ह० उ० १६ ॥ क्रशकंत
 तजी रुखमणि हो, किम वंठे सीसुपाल; कृश कंधालो केसरिहो, उ सीसुपाल सियाल हो ॥ ह० उ० १७ ॥ रुखमणि
 राग मजिठ ज्युंहो, कृश साथसुं विनास; नारद उपजो जाणके हो, आयो गीरी कैलासहो ॥ ह० उ० १८ ॥ ढाल
 ए ठेंतालिसमि हो, प्रिती उपजावण नाम; गुणसागर जे सांजले हो, सरे अचिंता काम हो ॥ ह० उ० १९ ॥
 ॥ दोहा ॥ रुखमणि रुप अलंकियो, नखसिख लगी अनीराम; गुपतपणे पट राखियो, प्रगट न सिजे काम ॥ १ ॥
 राजसजा आयो धसी, कृश दियो बहू मान; कुसल वात पुढि खरी, नयण वतावि सान ॥ २ ॥ निर्वजन स्थानक
 जइ, हरी रुखि बेठा जाम; पट पसारि देखाइयो, नारी रुप चित्राम ॥ ३ ॥ रुखमणि रुप विलोकतां, विस्मय
 पाम्यो नुप; नारदने पुठे तदा, कवण नारीनुं रुप ॥ ४ ॥ आप विध्याता निरमइ, नारी निरोपम प्रांहि; एहवि
 हूइ न हुंइसे, कृश चिंते मनमांहि ॥ ५ ॥ ढाल ४ ७ मी ॥ ताहरा मोहला उपर मेह ज्युके विजविहो लाल ज्युके विजालि
 ॥ ए देशी ॥ गीरधर रुखमणि रुप निहाले फिरी २ होलाल निहाले फरि फरि, ए कुण नवलि नार अपठरा किनरी
 होलाल अ० ॥ नरखि सुंदर अंग वखाणे तेहनो होला० व० ॥ फूल्याजासुरंग चरण तल एहना होला० च० ॥ १ ॥

मस्तक धेणि शामके जेसि नागणी होला० के० ॥ मुख उदय पुनम चदके रुप साहायाय हा० ॥
 सुवान अघर रंग रातनो होला० अ० ॥ लेहके लोमवे बांहेके मोह्यो जग वापनो होला० ॥ मो० २ ॥ कवण कंचुकि
 जाग निलांघर खंचियो होला० नि० ॥ देइ तबु काम आवि जग वंचियो होला० आ० ॥ जेहवुं पोथण पान उदर
 तस पातलुं होला० उ० ॥ ऊजके सेवन वान सेहे जेम मांमलुं होला० ॥ सो० ३ ॥ सुंदर कटिनो प्राग विराजे
 लंरुथि होला० वि० ॥ मावे करतल माग नलो मथ अंकथि होला० न० ॥ सुभा चांच समान सोहावे नासीका
 होला० सो० ॥ मणि दरपण उपमान कपोले नोमीका होला० ॥ क० ४ ॥ काने कुंमल जेम सेहे शणगरथि हो
 ला० सो० ॥ रति पतिने घर एहरि न दिति आकारथि होला० न० ॥ देखि कश्र मोरार थयो मद नाकुलो होला०
 प० ॥ बांध्यो विरह विशेष अलेख उपापलो होला० ॥ अ० अहो३ रुप निहाल चतुर गुण धारीका होला० च० ॥
 प्रणिठे ए बाल के हजी कुमारीका होला० ह० ॥ कवण अठे ए जात रहे किहां बलि होला० र० ॥ नाम कवण
 कुण तात विचार महा बलि होला० ॥ वि० ६ ॥ कहे कहे नारद एह सरुप तुं सादरो होला० स० ॥ मुजुगुं अण्णि
 सनेह मथाइस निरादरो होला० म० ॥ देश कुमलपुर तणि महिमा ठति होला० त० ॥ राय न्नीपम धर पटराणि
 श्रीमति होला० ॥ प० ७ ॥ तेहनि जाइ नामे रुखमणि गुणवंति होला० रु० ॥ रूपे रंजा समान कहुं उपमा ठति होला०
 क० ॥ नमियो नोमी अपार जीहां रवि संचरे होला० जी० ॥ विजी कोइ न नार जे एहनि सरीकरे होला० ॥ जे०
 ८ ॥ ए परणी के कुयारि हो नारद ते कहो होला० ना० ॥ तुरत कुमारी मोरारि ए साधुं सरव होला० ए० ॥

मागी नृप सीसुपालने में ए सुणि खरी होला० में० ॥ पण तुम्ह स्या नुपालने योग्य ए कुमरी होला० ॥ यो० ए॥
 नारद रठ लगाइ गयो तव संचरि होला० ग० ॥ भोरंभायो हरी राय सचेत थयो फरी होला० स० ॥ एहवे कुमरी
 लेख लखी प्रेज्यो जले होला० ल० ॥ हेत तयावण काज हरीने आगले होला० ॥ ह० १० ॥ माधवे सकल
 उदंत चतुरपणे वांचियो होला० च० ॥ पद पद अंग अनंत हरख रोमांचितीयो होला० ह० ॥ तुम विरहे मुऊ काय
 रहि ए ऊलबलि होला० र० ॥ नेट देइ महाराय करो हवे सियलि होला० ॥ क० ११ ॥ वांचिइम विरतंत हरी मन
 विधीन होला० ह० ॥ नेह निवरुनें तत बेहु मन संधीत होला० वे० ॥ हरी लख्युं सुण बाल करो चिंता किसी होला०
 क० ॥ करवा तुम संजाल आवि सहु उलसी होला० ॥ आ० ११ ॥ लागी चटपट चित चंजानन उपरे होला० चं० ॥
 जीम तनु पुत्यो साल कह्यो इम सुतरे होला० ॥ हलधरे जाण्यो इम हरी उदासीयो होला० ह० ॥ मरम लहि सुख हेत
 वचन प्रकाशीयो होला० ॥ व० १३ ॥ रुखमणी लेसुं जाव देसुं सीसुपालने होला० दे० ॥ हुवोनि सुणि वातके सुख गोपालने
 होला० के० ॥ नामा थइ निकाम रुखमणि रुपे करी होला० ॥ रु तेल न लागे मीठ खाथो जाये घ्रत वरी होला० खा० १४ ॥
 अणदिवा अनुराग ए उपज्यो अति घणो होला० ए० ॥ जो जो अति सोजाग के जग रुखमणितणो होला० के० ॥ चिततो
 पद्म निपास वस्यो हरी रायनो होला० व० ॥ श्रवण सुयंत उटहास सथण सुखदायनो होला० ॥ स० १५ ॥ रुख-
 मणी रुखमणी नाम जपे जीहां जापथी होला० ज० ॥ तम्रफनें तन अकुलायके मलवा आपथी होला० के० ॥
 ढाल चालीसने सात जली सुरति तिहां होला० ज० ॥ गुणसागर वरवाल बेहु मजशे इहां होला० बे० १६ ॥

॥ दोहा ॥ एह प्रयसर स्तिसुपाल नृप, लग्न गणायो जोइ; मनगमता कारज नणी, दिन कर नहीं कोइ ॥१॥ रुमान
 चाहे सहु, ए जगनो वयहार; पण रुने रुमी मले, इहां नहीं कोइ विचार ॥ २ ॥ रुकमणि मनमां खलनली, कहे
 भुवाशु जाय; चंदेरी पति अंकतो, कहांशु जाइवराय ॥ ३ ॥ मुज मन ए निश्चे सहि, वरत्यो देवमोरार; कनक
 कुसमनी उपमा, मन महरामोजार ॥ ४ ॥ भुवा नतीजी शुं कहे, चिंता मकर लिंगार; आपणा इतने आसनो,
 गरुड तणो असवार ॥ ५ ॥ कुमरी चित चिंता खरी, रखे न आवे स्वाम; नयणे आंसुना जे, मोह तणे ए धाम
 ॥६॥ अथ लेख लखतो ॥ टट जमनानोरे अति रलायीमाणोरे ॥ ए देवी ॥ रुखमणीना मनमारे चिता बोली
 उपनीरे, हजीए न आव्यो दिनोरे नाथ; यातुर थइ वेठीरे लखवा लेखनेरे, कुमरी मन हुइरे अनाथ ॥१॥ चंझगढ
 धेरोरे बेलेरा पधारजोरे, करो मुज अवदानी सार; हुंतो मांझी वेठीरे आशा तुम उपरेरे, अहो प्रजु प्राणनारे आ
 धार ॥ चं० १ ॥ जरनिझामां सुतारे आज मुज मंदीरेरे, दिवो कांइ सुपनोरे रसाल; जाणुं में सांजलीधेरे आव्यो
 मुज प्रणवोरे, साथे लेइ बंधवनी परीवार ॥ चं० ३ ॥ चोरी वच्ये वेतारे नाथ माहारा एकतारे, हाथे बांधी मीमलनोरे
 आचार; आंझी जनरे जांखेरे फरी ३ साहिवोरे, परो करी घुयटपट उदार ॥ चं० ४ ॥ इम जखनामारे आठे पोहोर
 माहेरोरे, जायठे कांइ मलवानी आशा पेठजी उवेखिरे अलगा केम रहेरे; नाखी मुने प्रेमने पास ॥ चं० ५ ॥
 आज उदयथीरे दिवस सातमेरे, शुक्र अष्टमी व्रगुवार; जान लेइ जोरेरे दावल राजीधोरे, आवशे कांइ नयरीमो
 जार ॥ चं० ६ ॥ मुज अंतरनीरे साहिव मारा जाणजोरे, तुजथी कांइ बांध्या ए प्राण; तुम नवि आव्योरे मुज

मरणो सहिरे, चाधे एम जाणमजाण ॥चं० ७॥ कुरुणा किजरे हवे मूज वाढहारे, हे जे धरी लिजरे हाथ; ते आप
 वसुरे किधो जग जोवतारे, वसगहि तुं केहनेरे नाथ ॥ चं० ८ ॥ आसना अवलवनेरे एति अवधारजारे, राची हुं
 तुम चेरे राग; आपणमी करीनेरे राखो दिलनरीरे, आपी जे मुज एह सोहाग ॥चं० ९ ॥ ज्ञादु खमियोरे एहनी
 वातमारे, जाणे जेकां एह जगदीश; माहरा मनथीरे मेंतो एम आदरथोरे, जीम गोरीधर इश ॥ चं० १० ॥
 अंतरजामीरे डर डख तुं लहरे, जाणिये आपणी लाज; हवे गोरी किजरे निज साचापणारे, किस्तुं घणुं गरीवनि
 वाज ॥चं० ११॥ कागलीयो तो चीनोरे लखतां आंसुएरे, तेहवोज वींटीने दिध; पुरव लख्याथीरे संबंध जे हुयोरे,
 वली मुख वचने इम किध ॥ चं० १२ ॥ ॥ दोहा ॥ कुमरी काज समारवा, लेख लखी अचरिराम; उत चलान्यो
 द्वारीकां, करह चढावी ताम ॥१॥ ॥ढाल ४८ मी॥ करहला तुं वेगो चालेरे, तुंने चारिश अमृतवेल; क० ॥
 तुं जाजे मारग वेळ, क०॥ ए आंकणी॥ सुन सुकने प्रेरथो घणुं, उत कुसल अनिधान; आयो नगरी द्वारीकां हो,
 देख्यो बहु मंमाण ॥क० १॥ अनुक्रमे आयो चालके, देवतणे दरवार; प्रतिहार आगे धरीहो, किधो राय जूहार ॥
 क० २॥ राजा पुढे कुणतुं, कहे विदेशी उत; बेवी नृप आदेशथी हो, चतुरादु अदनुत ॥क० ३॥ रामकलने उतए,
 बेवा जदु एकांत; लेख धरथो आगे सुदा हो वांचे क्रश्र तुरत ॥ क० ४ ॥ कागल मांभ्यो वांचवा, वरण न दिसे
 कांड; जिहां तिहां टवका आंसुमा तणा हो, समजो मनना मांदि ॥क० ५॥ आंसुमा आदे न लखी सकिरे, मारे
 विरहे एम; हुं न गया ए त्रामनि हो, दिवस निगमले केम ॥ क० ६ ॥ मुख वचने कहे उतजी, सांजल देव विच्यार;

आ कुम्भपुर राजाया हा, आपम नाम उदार ॥ क० ७ ॥ पटराणी तस श्रीमति हो, तस उदरे उतपन; सर्व सुल
 क्ण गुणवति हो, रुक्मणि कुमरी रतन ॥ क० ८ ॥ सुरलोका सोधी घणुं, माणस लोकमो जार; पाताला पामि
 नहि हो, रुक्मणिनि अनुहार ॥ क० ९ ॥ मागी नृप सीसुपालने, बंधव लाहि बहु मान ॥ एतले नारद जांखियो हो,
 वरतो श्री नगवान ॥ क० १० ॥ माघ सुकल अष्टमि दिने, लग्न लियो राजान; कांतो धाउ प्रनु वाहरु हो, कांतो
 दूटे प्राण ॥ क० ११ ॥ प्रचुने उपनि सोचना, ए मोटो जंजाल; न गया मरणो रुक्मणि, गया मरे सीसुपाल
 ॥ क० १२ ॥ माग न भेले मानविरें, ना नाहीए न्याय; नारी प्रतिज्ञा नवितजेहो, कहो किसीपरे थाय ॥ क० १३ ॥
 कुशल कहे तुम्हहि अबो, अंतरजामी थाप; सोई करो जीम एहि मटेहो, रुक्मणीनो संताप ॥ क० १४ ॥ सिपे ते
 तुमहि धकीरे, तुम्ह किहां शिखण जाउ; सोच्यो सल बेसे नहीहो, एक मतो ठहराउ ॥ क० १५ ॥ हलधरने हरी
 पुगीपेरें, उत कहो शु किध; हरीनो हेत विचारवे हो, हलधर उत्तर विध ॥ क० १६ ॥ अबला प्राण उगारवा, पुरुष
 तणो ए धर्म; एम विमासी पुगीयो हो, मज्जा केरो मर्म ॥ क० १७ ॥ प्रमोद नाम उद्यान मे, कामदेवनो ठाम; ब्रह्
 अशोक सोह्यामणो हो, उपर ध्वज अजीराम ॥ क० १८ ॥ ए सहि नाणी कर धरीरे, गमन जाएवा काम; वेग करी
 पाठ धारजो हो, गुतपणे सुण राम ॥ क० १९ ॥ चतुर शिरोमणी रुक्मणि, पुजानो मिस ठाण; उंहि थानक चली
 आवबो हो, बेसी सकल केकांण ॥ क० २० ॥ जो प्रनु नयणे निरखशे हो, तो हेसे सुख प्रित; अण दिठी आतुर
 पइ हो, करसे अति विप्रित ॥ क० २१ ॥ हमे जणावीं बात ए, कारज तो प्रनु हाय; देइ दान न विसरजो हो, उत

तदा जगनाथ ॥क० ११॥ उत चलयो ते वेगसुं हो, आयो रुखमणी पास; काज सरथो डख विसरथो हो, उपल्यो
 अति उल्लास ॥क० १२॥ हरजी हलधर हरखसुरे, जोतरीया रथ दोय; सल्लतणो करी संग्रहो हो, सनयबंध अति ॥
 होथ ॥क० १४॥ नामा नय नारे धरीरे, गुप्तपणे निसी प्रांही; चाली आया उतावला हो, कुंमनपुर वनमांहि ॥ क०
 १५॥ रथ ठोमी हय बांधीया, जोवे रुखमणी वाट; फूल्या अंग नमावहि हो, रंचन करे उचाट ॥ क० १६ ॥ ढाल
 आठ चालीसमी, हरी आयो त्रिय हेत; गुणसागर गुरु एम जणेहो, सुच वंठीत फल देत ॥क० १७॥ ॥दोहा॥
 नारद नाम प्रणामथी, नारद सोचन कोइ; साजो नाजन फोमके, फेर धमं तो जोइ ॥१॥ अण म्बिलते मेलो करे,
 म्बिलते करे विकार; ज्ञान विना नवि जाणीये, नारद चरित्र अपार ॥ १ ॥ रुखमणी मन हरी आणीयो, हरी मन
 रुखमणी नार; चंदेरी पतिसुं जइ, बोल्यो कवण प्रकार ॥३॥ ढाल ४ए मी॥ ॥देसी नणदलनी ॥ होनारद
 चंदेरी पतिसुं कहे, में सुण्यो तुम्ह विवाह हो ना०॥ घर धर रंग वयामणा, लुफ मन अधीक उबाह हो ॥ना० च०
 १॥ कलहकारी जनमारणो, मन वचन योगसपाप हो ना० ॥ सांथा जोमा मेलवे, करे अधिक संताप हो ॥ ना०
 चं १॥ हसी बोल्यो सिसुपालजी, स्वामी तुम प्रसाद हो ना०॥ रंग ब्यांहम ए होस्ये विजा व्याह सोवाद हो ॥ना०
 चं० ३॥ कवणपुरी कियकी सुता, कित्यो कुमरीको रुप हो ना० ॥ कुंमनपुर जीखम सुता, रुखमणी रूप अनुप हो
 ॥ना० चं० ४॥ कवण लग्न ते व्याहको, लग्न देखायो राय हो ना०॥ रूपि नांखे छपण घणा, इहां उपल्य थाय हो
 ॥ ना० चं० ५ ॥ हम निसप्रही दरसनी, नहि ग्रह चित्या काम हो ना० ॥ प्रिती जणी तुम्हशुं कहुं, हुसीयारीको

काम हो ॥ ना० चं० ६ ॥ एम कही रुखी पांगरयो, रंगमांहि करी जंग हो ना० ॥ जगत मांहि अति परगढो, एकु
 सेहजो अंग हो ॥ ना० चं० ७ ॥ सीसुपाल हवे जाननी, करे सजाइ जोर हो ना० ॥ ठंड टकोरा गमगने, गुहिर नि
 साणे घोर हो ॥ ना० चं० ८ ॥ साये सखला राजवी, जोर जुगति झुझार हो ना० ॥ रथ अस्वार उष्टरतण्यं; कहेतां
 नावे पार हो ॥ ना० चं० ९ ॥ कोक बाण आगे कियों, तोपारो नहि पार हो ना० ॥ जंजाला सापे लिया, साथीमा
 सीरदार हो ॥ ना० चं० १० ॥ लसकरमलीजं सामटु, पंचक्षोणी परमाण हो ना० ॥ हयदल पेदल गज घणां, मजीपा
 आप समान हो ॥ ना० चं० ११ ॥ सलह सनाह सजी करी, हयगय रथ परियार होना० ॥ राजा रुमे रावणो, आयो
 होइ हुसीयार हो ॥ ना० चं० १२ ॥ कुंमनपुर विंटी रह्यो, तारा जीम गीरमेर हो ना० ॥ अहि जीम चंदन तरवरा,
 विंटाणा चोफेर हो ॥ ना० चं० १३ ॥ राजाना बेसी गया, दरयाजे दरयान हो ना० ॥ आयागमन न होइ सके, कुमरी
 दुख असमान हो ॥ ना० चं० १४ ॥ जुवा जलीपरे मेलवे, पुजा तणा प्रकार हो ना० ॥ मंगल गति सुवंदुं वाजां
 नाद अपार हो ॥ ना० चं० १५ ॥ पांच सात साहेजीयो, अन्नबेसीया उदार हो ना० ॥ चाली जाये रंगमें, रोकाणी
 दरवार हो ॥ ना० चं० १६ ॥ चारु ठार विनवे, कुमरी वनमें जाय हो ना० ॥ जाण न पावे इम कहे, चंदरनि
 राय हो ॥ ना० चं० १७ ॥ जुवा नणे चाइ सुणो, कहो रायने जाय हो ना० ॥ तुम्ह तनमन सुख कारणे, एह अर्जी
 ग्रह थाय हो ॥ ना० चं० १८ ॥ चंदेरी पति वरपणे, जइ देसे तुं देव हो ना० ॥ लग्न तणे विन आयके, करस्युं धारी
 सेव हो ॥ ना० चं० १९ ॥ कामदेव मुरति तणी, पुजा करवा जाय हो ना० ॥ अणपुज्या नही परणयो, जइ सुखावो

राय हो ॥ ना० चं० १० ॥ कपटतणो बल अति घणो, कपटे वंभीत थायहो ना० ॥ विष्णुरूपकोलिक सुत; रायकुमरी
 वरे जाय हो ॥ ना० चं० ११ ॥ एह वचने राजा कह्यो, काम करो ततकाल हो ना० ॥ प्रबल जोर जावी तणो,
 किशुं करे सिसुपाल हो ॥ ना० चं० १२ ॥ नृप आदेस लेइ करि, सेवक लाग्या लार हो ना० ॥ वनद्वारे उजा
 करी, बाइ कहे सु विव्यार हो ॥ ना० चं० १३ ॥ आपणे सहु इहां रहो, कुमरी वनमें जाय हो ना० ॥ एकाकी
 निज स्वामनी, सेव करे मनमाय हो ॥ ना० चं० १४ ॥ पहेलो वर एह वातनो, बिजो पिउनो मान हो ना० ॥
 त्रिजो सोकन परात्रवे; चोथो पुत्र प्रधान हो ॥ ना० चं० १५ ॥ नारि मनना बालहा, ए ब्यारे वर देष हो ना० ॥
 एकांते आराधतां, आपे देव विशेष हो ॥ ना० चं० १६ ॥ जा पुत्रि उतावलि, पुरे मनोरथ कोम हो ना० ॥
 सेव घणि नीज स्वामीनि, करजे वे करजोम हो ना० चं० १७ ॥ स्वामी सेव्यो पाइइं, अणसेव्यो अति डर हो ॥
 ना० ॥ एह सिख मनमें धरी, रहेज्ये स्वामी हजुर हो ॥ ना० चं० १८ ॥ एम सुणि वनमें चलि, भय अति हयमा
 मोछार हो ना० ॥ युथ अष्ट जीम हरणली, जोवे दृष्टि पसार हो ना० चं० १९ ॥ दृढ थाने आवि सति, तरु
 अंतर चरी नयण हो ना० ॥ निरखंता प्रजु पाइयो, अर्थीक महा सुख चयन हो ॥ ना० चं० २० ॥ ए गुण
 पचासमि ढालमें, मलियो तंतोतंत हो ना० ॥ गुण सागर कुण लखि सके, हरिके चरीत अनंत हो ॥ ना० चं० २१ ॥
 ॥ बोहा ॥ रुखमाण वचन प्रकाशियो, हो त्रिभोवनना नाथ; अंतरजामी आसना, आइ ग्रहो मुज हाथ ॥ १ ॥
 एटले हरी प्रगट थयो, श्री बलदेव नरेश; लज्या पामी रुखमणी, मनमां हरख विशेष ॥ १ ॥ बांहे धरीसा सुंदरी,

वेसारी रथ मांहि; आप जणावण कारणें, इण वोढ्यो हरी प्रांहि ॥ ३ ॥ ढाल ५० मी ॥ ॥ देशी कल्पानि ॥
 सुण हो शि.सुपाल नृप नीपम सुत रुपमीया, जाणवा वात तुम्हने सुणावा; द्वारिकानाथ श्री ऋश्र हलधर हमे,
 रुपमणि कुवरि लेइ सिधाब्या ॥ सु० १ ॥ अवर जे सुन्नट अति विकट बल धारक, जोध जे जगतमें रहे तदा वे;
 आवियो धावियो वेग करि पाठजे, माग थारि हम साथ्य आवे ॥ सु० २ ॥ एम सुणता शिसुपाल नृप परजल्यो,
 भत्री जाणे घृत होम पायो; सेन दल सबल अति प्रबल प्रतापसुं, आप बल प्रबल लेइ धायो ॥ सु० ३ ॥ निपम
 राय अति लाज पाग्यो घणुं, रुखमियो कुंवर जीम काल कोप्यो; उठियो धसमसी धरणि तव कसमसी, दसमसी
 अगले आवि रोप्यो ॥ सु० ४ ॥ गमगने गयंवर हिंसता हयं वर, तो रय शोन्न अथकेरि पावे; पाय कलायक काज
 सहायक, नायक नव जस काज धावे ॥ सु० ५ ॥ ढाल नेजावरां फरहरे फरहरां, वगतर तोप तव तेज ऊजके;
 आयुधकारका जे ठात्रिस सयंवरा, ऊजहले खमग अतिसे चलके ॥ सु० ६ ॥ ढोल निसाण सरणाइ वर काहला, झुजको
 राग सिंधु सुणावे, कायर थरहरे जीव आशा धरे, परहरीस्वामिपरहापुजावे ॥ सु० ७ ॥ रेणुं उनी घणी गयण
 रवि ठाड्यो, आपणो पर नवि जाय जाण्यो; देव देवी घणी चउसठ जोगणी; अंवरें आप सुख आज मान्यो ॥ सु०
 ८ ॥ नाचतो नारद फिरत रस रंगमे, अंगमे आनंद अथीक पावे; खिणक शिसुपाल नृप खिणक हरी हलधरा,
 वाप म्हारा इम कहि सुणावे ॥ सु० ९ ॥ उदयी किलोल दल पसरीयो चिहुं दिसे, रे रे गोपाल किंहां जाय जाग्यो
 नृप शिसुपाल कुंवर वर रुक्मीयो, इम कहेतो प्रनु पुंते लाग्यो ॥ सु० १० ॥ आबतां दल हरि हलधरे रोकिया,

नदियुना पुर जीम उदधी रोके; फोज बांधी रह्या सुन्नट अति गहगह्या, पण कही सिंधने कुण रोके ॥ सु० ११ ॥ देखि
 दल पुर घटि नुर रुकमाणि हुइ, आरति उपजि ए अपारो; एह धणो रावणो अधीक विहामणो, एह तो बंधव दोइ
 सारा ॥ सु० १२ ॥ कठिन घन लोह तन लोग माहि जण्यो, पण बहु मले जोलीहाला; गालवे लोहनें एह अवरज
 वनो, एमं जाणी शरहरी एहि बाला ॥ सु० १३ ॥ क्रश बोले हम कोन तोले अठे, घणी थोम्रा तणो स्थो पतारो;
 रातनो संचियो अति घन माचियो, उगते सुर नासे अंधारो ॥ सु० १४ ॥ तोय पण शंक जाइ नहि रुखमणी सुंइ
 नि वज्र हरी तामचुरे; करी अति चुन पनी पुन चिपाट करी, साथियो हाथ माहेज पुरे सु० १५ ॥ एक बाणे करी
 विंधीया तव हरी, ताम साते त्रियाने देखावे; तव अति खलन्नलि एह अतुलि बलि, मारसे सहि मुज बाप जाइ ॥
 सु० १६ ॥ क्रश बोल्यो हसी एह चिंत्या कीसी, ताहरो बाप जाइ नवि मारुं; अवगुण सा सहु अवर केति कहुं,
 बुरो न मनावसुं देवि शारुं ॥ सु० १७ ॥ हलथर इम कहे कुण मुज बल सहे, पण सिसुपाल मास्थो न जाय; अवरने
 आगसुं रंग रणमें रमुं, अति दसुं साहमो तुं जेह श्याय ॥ १ ॥ कहे हरी केसरो खांध उंचो करी, कुण सिसुपाल सियाल
 साचो; रण मांहि रोलवुं पवन तृण मोलवुं, तो जाणजो पितु उध काचो ॥ सु० १८ ॥ इम रुखमणि मुकि बैरी
 जणि आणिया, दोइ बंधव रण मांहि सनुरा; क्रश सीगुपाल असराल क्रोधे चढ्या, नमनच्या आप ३ मांहि सुरा ॥
 सु० १९ ॥ श्री बलदेव ततखिए रण रस चढ्यो, वरु वना राय जाइ पुलाणां, सिंधकि दोम गजराज गीर गीर पमे,
 आंकतां प्राण बोमे खलाणां ॥ सु० २० ॥ सेन दल जंग गतरंग देखि करी रुकमीये बलप्रति बाण सांध्यो; वज्र

का । त्रिणि बाण लाग्यो नहि नागपासे करां सोइ बांध्यो ॥ सु० ११ ॥ नखशीखे जकनीयो गाढो करी पकमियो,
 अकनीयो अंग मिट गयो दावो; आणि रथमें धर्यो वयण इम उचर्यो, कल वहू त्राइ मांखि उभावो ॥ सु० १३ ॥
 रुश्च त्सिपुपाल चिरकाजरण साचव्यो, अख सखाकरी मांहोमांहि; जितीयो इस जग विसजग जल्पन, पुन्य प्रसादे
 जय हुइ प्राई ॥ सु० १४ ॥ दोव वन विर अति धीर गंनिरण करी, रुखमणी तणे पास आया; ढाल कमपातली
 सुणत सोह्यामणी, तिस अरु विसमी हरप पाया ॥ सु० १५ ॥ यिसुन मदमान मर्दन जगवानजा, साधुपरे त्राण
 ए वरदानिको; श्रीगुणसागर अर्धीक उजागर, नागर नवलयस सुजस टिको ॥ सु० १६ ॥ ॥ दोहा ॥ रुखमणी
 रिजी अति घणी, देखी जेत पति काम; एह अदनुत प्राकमी, अवर पुरूप स्यो नांम ॥ १ ॥ करजोमनि विनवे,
 पेठजी करो पसय; बंधव बंध न ठोमीए, माहरे मन ए जाव ॥ २ ॥ बंधन ठोमा हाथुं, कृपा करी जगनाथ; सुजन
 पणे अति राख्यो प्रिती जाव हम साथ ॥ ३ ॥ ढाल ५१ मी ॥ रघुपतिजीत्योरे ॥ ए देशी ॥ यडुपति जीत्योरे
 जीत्यो १ श्री वसुदेव कुमार यडु ॥ जीत्यो २ रुखणीनो जरथार य० ॥ जीत्यो ३ वाइ सुनधानोविर य० ॥
 जीत्यो जीत्यो साहसवंत सधीर य० ॥ जयजयकार करे घणो, आकाशे सुरनार; देइ डदामाजीत काहो, चाल्यो
 देवमोरार ॥ य० १ ॥ श्रीगारनारे आवीया, मनमें अति उठाह; आरण कारण साचवियो हो, कियो रुखमणी व्याह ॥
 य० २ ॥ व्याह हुइ जेह धानके, रुखमणी वन तस नाम; संगति मोटा माणसा हो, सर्वहीपरे अनीराम य० ॥ ३ ॥
 पवर हुइ द्वारामति, परणी आयो नाथ सजन सुनट जन सामटा हो, आइ मील्यो सहु साथ ॥ य० ४ ॥ नगरीनी

शोनाकरी, आली ज्ञात अनुप; घर घर द्वार वधामणा हो, हरल्या यादव भुप ॥ य० ५ ॥ कोइ अटाले उरने, कोइयांगणो
 अपार; गोखे चमी कोइगोरनीहो, कोचातुरी चौबीर ॥ य० ६ ॥ कोगलीएकोचोतरे, चाचरउर्नी कोइ; लाजन सुसरा जेठ
 किहो, कौतक मीठो होइ ॥ य० ७ ॥ डलह डहलणी देखवा, लालच लागी नार; होइ रही बेकूमताहो, तनमन सुधन विसार
 ॥ य० ८ ॥ अचरज किथां एतलां, तुम्बाबंध उदार; केने पेहेर्यो कटीमेखलाहो, माथेकृत सणगार ॥ य० ९ ॥ कुंकुमला
 या लोचनां, काजल दियो कपोल; उधाने माथे फरेहो, निलज थइ निटोल ॥ य० १० ॥ पुत परायो लेचनी आपरो
 वंतोमेल; अलजा लगे आधी धसेहो, एकएकने तेल ॥ य० ११ ॥ कोइ वधावे फूलने, कोइ हिरालाल, मणी माणिक
 ने मोतीया हो, अद्धत थाल रसाल ॥ य० १२ ॥ कोइ वडे वरकामनी हो, धन रुखमणी अवतार; सब विध सुंदर
 सामजो हो, जेह पास्यो जरतार ॥ य० १३ ॥ अवर अनेरी ज्ञामनि हो, ज्ञांखे वारंवार; वरुवखता श्री कश्मजी हो,
 पामि नार उदार ॥ य० १४ ॥ विविध विनोद विचारनि, वात सुणतां स्वाम; सोहासण कृत मंगले हो, मंदिर
 आया ताम ॥ १५ ॥ धन्यश माता देवकि, वर बहु लाग्या पाय; दिये आसिस सोहामणि हो, फूलि अंग न माय
 ॥ य० १६ ॥ मंदिर उंचो नव खुणो, अधीक अनोपम सार; रुखमणिने हरि आपियो हो, अन धन भरित अपार
 ॥ य० १७ ॥ हय गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार; हरि आनुषण अति घणा हो, ते घर मांहि उदार
 ॥ य० १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस परीवार; स्वामी मयाथी सहु हुवे हो ए सुधो ववहार ॥ य० १९ ॥
 स्नान अने ज्ञोजनपणे आसन सयन विचार; हसन विलोकन ज्ञांखणे हो, रुखमणिनो अधीकार ॥ य० २० ॥

काया न्नाय थाप लाथा ताह नागनात नस साह वांध्यो ॥ सु० २२ ॥ नखशीखे जकनीयो गाढो करी पकनियो,
झकनीयो थंग म्मिट गयो दाचो; आणि रथमें धस्यो वयण इम उचस्यो, कल वह नाड मांखि उम्मावो ॥ म० २३ ॥

मनसा ने वाचाये करी, काया केरो तेम; खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री हरी स्वमणि प्रेम ॥ य० २१ ॥ दक्षणा
श्रेणि जंबुपुरी, जांबु पुत्रि जाण; जंबुवति रुपि वास्यधि हो, आणि श्री जगनांन ॥ य० २२ ॥ ततक्षण रोमज राजियो,
संयला नायक जोइ; लखमणा नामे कुंवरी हो, परणि श्री हरी सोय ॥ य० २३ ॥ राष्ट्रवर्धन रायजी, सोरठ केरो
इस सुसिमां पुत्रि वरि हो, बंधव हूणी जगदिश ॥ य० २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामीजी, मेरु भुप वन राय; पुत्रि गौरी
गुणनरी हो, गीरधरने सुखदाय ॥ य० २५ ॥ हलधरनो मामो जलो, हिरण्य नान्न नरेश; पुत्रि तो पद्मावति हो,
संवर वरीय विशेस ॥ य० २६ ॥ देश महा गंधारजी, इंद्रगिरी पति तास; पुत्र मारी पुत्रि वरी हो, गंधारी सोल्हास
॥ य० २७ ॥ ए आठे पटरागनि, ए आठे समतोल; ए आठे सिव गामनि हो, ए आठे निरमोल ॥ य० २८ ॥ ए
एकावनमी ढालमें, वंठित फलि जगदिश; श्री गुणसागर सुरजी हो, पुन्य करो निशदिश ॥ य० २९ ॥ गाथा चोपाइ ॥
खंन खंन रस ठे नव नवा, सुणातां मीठा साकर लवा; श्री हरी वंश चरित्र जय जयो, विजो खंन ए पुरण थयो ॥ १ ॥

॥ इति ढलसलगरडुरबुधे हरलवुशनाडुल डुवलतुडुधलकरः सुडुलसुतः ॥

॥ संन ३ जो ॥

॥ दोहा ॥ अरि हणवे श्रीहंतजी, तास करी परिणाम; अथ त्रिजा श्रधीकारनो, उद्यम

कहं सकाम ॥ १ ॥ सखमणि रागे राचियो, सुख माने हरी राय; तिमश नामा आयेटे, ते डख कह्यो न जाय ॥२॥

नारद आवि बोलियो, नामासुं ततखेव; बांको मुख किया तणो, ए फज जोगव देह ॥ ३ ॥ तिम तिम सा गाढि

बले, आरति घणि मन मांहि; सोक्य साल हयमे चढ्यो, ते उत्तरे नहि प्रांहि ॥ ४ ॥ उतम उतमता प्रजे, न करे

ताणो ताण; सखमणि हरिशुं विनवे, नामा आरति जाण ॥ ५ ॥ ढाल ५१ मी ॥ ॥ श्री श्री मंदिर साहिव

मेरा ॥ ए बेसी ॥ एरु दिवस सखमणि हरि साथे, किधी ए अरदासोरे; नामा घर प्रीतम पाव धारो, सहुने पेचनि

आओरे ॥ ए० १ ॥ ऋश्न कहे ए सा अहंकारणि, तेहधी न लहे मानोरे; ते सोनो गुं करवो सुवरी, जेहधी तूटे

कानोरे ॥ ए० २ ॥ सखमणि बोले अमृत तोले, यदपी जो तूटे कानोरे; तोपण सोनो कोइ न नाखे, ए द्रगट

उखाणोरे ॥ ए० ३ ॥ आ पुण आवरीपुं केम अलगुं, किपुं जाइ कंतोरे; विप अने विपघर डखवाइ, शंकर संग

वसंतोरे ॥ ए० ४ ॥ जोगवणो जग खाटुं खाहं, जेतो लागुं लारोरे; उजा आगे नहिइ ज्ञाखे, शिव शाता वातारो

रे ॥ ए० ५ ॥ नोतन हिरो लाल नगीनो नोतन नारी नरखिरे, जोरे पुरातनने परहरीये; तो ए नहि घर सरखीरे

॥ ए० ६ ॥ आग थकि अधिको अति उन्हो, नारीनो निसासोरे; नाहनीपटनी तेह पण त्रिय, तजवी नही

नी रासोरे ॥ ए० ७ ॥ वेगे सिधावो वार मलावो, पोखो परीषल प्रेमोरे; जो न गया तो तुम्हसुं बोलण,

आज थकी मुजने मोरे ॥ ए० ८ ॥ सखमणी वचने राय विच्यारी, घात सकलहि वारुं निर नरेसरे न्याय

कहाणां, फेरणहारा सारूरे ॥ ए० ए ॥ रुपमणि सुखनी सुरची सुगंधो, लेइ तंबोल नरंदोरे; नामा नामनिने घर
 आयो, नामा मन आणांदोरे ॥ ए० १० ॥ बक्र वचनसुं नामा जाखे, ए तुम्ह गेहन होवेरे; जुलें पधारथा
 प्रथवि पति तुम्हे, रुखमणि मारग जोवेरे ॥ ए० ११ ॥ क्रश्र कहे हाड घर नाहि, पण आयो सो आयोरे;
 नर्मसु गर्म वंचन केलवतां, नामा अति सुख पायोरे ॥ ए० १२ ॥ क्रश्र कहे मुज निंजा आवे, एतो मेधुर जाणिरे;
 सोवा कारण हम घर आया, उ नव परणित राणिरे ॥ ए० १३ ॥ जीमश आवो नीतश आवो, सुख निंजा प्रनु किजेरे;
 हमे पुरातन उतो नोतन, नवश लाहो लिजेरे ॥ ए० १४ ॥ क्रश्र कहेरे तुं इम शुं बोले, नवि घणोरी नारीरे; तुं माहरे
 धुरकी पटराणी, आदि लगे सुं विचारिरे ॥ ए० १५ ॥ कपट निंदमें प्रनुजी पोढ्या, अंचल गांव निहालीरे; खोजी
 लियो तंबोल तेवारे, भ्रमे भुली साबालीरे ॥ ए० १६ ॥ उरसीइं मुकी चंदन साथ्ये, घसी लियो सतनामारै; करे वि
 लेपन वदन सरिरे, वशीकरण अजीरामेरे ॥ ए० १७ ॥ एतले जागी उठ्या जगपति, रेभोली प्ररमाणीरे; रुखमणी
 मुख तंबोल शरीरे, तुं दिसे लपटाणीरे ॥ ए० १८ ॥ हांसो क्रश्र तणो न समावे, हाश्रे वजावे तालीरे; होइ बिसा
 णी हरी पटराणी, बोले उचर वालीरे ॥ ए० १९ ॥ थारो सेहज न गयोरे गोवालीया, खुंवरुमारय कहायोरे; प्रीती
 पनोती काजे आज, एजाणी बुज तनलायोरे ॥ ए० २० ॥ क्रश्र कहे हातो तुं साची, पुनरपी नामा नाखेरे; रुखमणी
 मिलवा तणो उमाह्यो, प्रेउमा जो दिन दाखेरे ॥ ए० २१ ॥ जुप प्रणे हुं तुज गपतिजुं, के साची के जुवीरे जुव कहे
 जुवा नाजाया, जाणिके अधिकी उवीरे ॥ ए० २२ ॥ मुलकत श ताम मोरारी, माननीनुं मन मोहरे; ए नव हीथि

॥ खंम ३ जो ॥

॥ दोहा ॥

अरि हणवे अरीहंतजी, तास करी परिणाम; अथ त्रिजा अधीकारनो, उचम

॥ ॥ ॥ गणे गच्छिष्यो सख माने दरी रायः तिमश नामा आवटे. ते इव कद्रो न जाय ॥ ७ ॥ ।
रीस करेवि सुंदरी शुं सति सोहरे ॥ ए० ३३ ॥ सुस करे जो बाबाजीका, कपट न करवो कोइरे; खिरनिर जिम
मांद्दोमांहे मिलस्यां वहेनम दोइरे ॥ ए० ३४ ॥ तो हुं तुजने रुखमणी मेंडुं, नामा कहे एनीकीरे पिसाणी पण
हुइ अयाणी, न पिठांणी प्रनुकी किये ॥ ए० ३५ ॥ ऋश्र देव रुखमणी घर आया, नामा पाय लगावारे; कुण
उपाय करे करमे तो, लागो चाव सुणावारे ॥ ए० ३६ ॥ स्वेत सटीकारक कांचुजी, जल जुयण पहिरायोरे; वृद्ध
अशोक तने नामा वन, पद्मासन पुरायोरे ॥ ए० ३७ ॥ नामा शुं नांखे जल चावनि, सही करी रुखमणी मिलसेरे
ऋपनाथ ऋपा जो करशे, छे साकर चलसेरे ॥ ए० ३८ ॥ आप गुटममें गुत्तपणे रही, कौतक जोवे जामोरे
सतनामाएकाकीरामा, वनमे थावि तामोरे ॥ ए० ३९ ॥ पद्मसीला उपर सांबड्वी, विवी रूप रसालीरे; सतनामा
जाणी वनदेवी, लागी तनमन तालीरे ॥ ए० ४० ॥ के अमरी के किनरी सारदा, रोहीणी रति जगजाचोरे; कमला
नाग तणी बरकुमरी, सुरपति रमणी साचीरे ॥ ए० ४१ ॥ कोइ होज्यो ए देवि परतद्ध, पुन्य जोगे प्रगटाणीरे; सेवा
फज देसे इम जांणी, लावी पाती पाणीरे ॥ ए० ४२ ॥ पुजी प्रणमीने वर मागे, माधव मोयश आवेरे; मात मया
करशो परकिजे, रुखमणीनामनचोवरे ॥ ए० ४३ ॥ नाथा बेलतणीपरे चाल्यो, हरी थावे मुज पासरे, तो तुम
सेवा जाणुं साची, उथी अलगो नासेरे ॥ ए० ४४ ॥ एम कही पगे लागी नामा, करती लालच लाखोरे; अरथी दोस
न देखे कोइ, सहने सुख अन्न लाखोरे ॥ ए० ४५ ॥ ए बावनमी ढाले नांख्यो, पगे लागण अधिहारोरे; गुणसागर
कहे सोहि सोहागण, जेहने वडा नरधारोरे ॥ ए० ४६ ॥ ॥ दोहा ॥ नामा नरमपनी घणुं, नांखे वारंवार; देवि

वरदे वेगशुं, रुखमणी आवणहार ॥ १ ॥ आख नरे आतुर थइ, देविन आपे वाच; एतले हरी प्रगट थयो, माग श
 वर साच ॥ २ ॥ ढाल प३ मी ॥ मुदमीया लाल घमावे ॥ तथा सीयल सरु तरुवर सेविए ॥ ए देशी ॥
 माग्य माग्य वर माननी. अवर न एहवी देवि हो; जो चाहे सुख संपदा, सुधी एहने सेवि हो ॥ मा० १ ॥ हरी
 हरणादी शुं कहे, तजी विजो जंजाल हो; रुखमणी रागे राचतां, सधली वात रसाल हो ॥ मा० २ ॥ उठी ततद्धण
 तारणी, रुवी मारणहार हो, अवर न देवी एहवी; जेहवी एह वरनार हो ॥ मा० ३ ॥ क्रोध न किजे कामनी, क्रोधे
 होय विणास हो; क्रोध तजी ए धावतां, पुरे मननि आश हो ॥ मा० ४ ॥ जामा नारे जमनरुं, उठी अति
 वरनाय हो; रेरे धुरत सिरामणी, वादे हस्यां शुं थायहो ॥ मा० ५ ॥ ए परदेशण प्राहुणी, सगो न को कहेवाय
 हो; जो हुं मन खेंची रहुं, फाटी हयो मरी जाय हो ॥ मा० ६ ॥ ते माटे पगे लागनि, में दियो सनमान हो; नंद
 नंदन तुं मोहशुं मेलण लाग्यो तान हो ॥ मा० ७ ॥ जे नर बाहिर सांमला, मनमां मझला सोइ हो; उमुहा माणस
 माणसा, मांहि गणे नहि कोइरे ॥ मा० ८ ॥ उदर वस्यो जब मायने, तबहीथी परपंच हो; उपजीयाथी अति घणा
 आजलगे उसंच हो ॥ मा० ९ ॥ वाध्या जइ धर गोवालने, ग्वालतणा गुण जोमहो; नाब्योराब्यो रंगशुं करत कतोहल
 कोमहो ॥ मा० १० ॥ रित न जाणी राजनी, जाणी गाय चरायहो किसोप लेखो किजीए, देवां अबलोन्यायहो ॥ मा० ११ ॥
 निखमनि ठोमि हरि, करि घणा संहार हो; जोगीनि वाहे वहि, लागी तोनटलारहो ॥ मा० १२ ॥ जेति मनमां
 उपजे, तेति मोहमे मझाण हो; लोहिने लमवे करी, चंमलि चित आण हो ॥ मा० १३ ॥ क्रभ कतोहल केनवि,

आयो पुरमोजार हो; लेहणो जाने आपणो, ए दोइ वदनार हा ॥ मा० १४ ॥ रुखमणि उठि धसमसि, लागी
 नामा पाय हो; नामाये जन जावसुं, लिथी कंठ लागय हो ॥ मा० १५ ॥ कुशल वात पुठि घणि, नामा धरी अति
 प्रेम हो; धारी देवि कृपा थकि, माहरे नितोहे खेम हो ॥ मा० १६ ॥ हसी रमी हेत प्यारसुं, चालि लहिय पसाव
 हो; अप्रांवी पाक्यो उपरे, मांहि न जाय कसाव हो ॥ मा० १७ ॥ अबर अनेरी वातनो, थोन्नो धरे गुमान हो;
 नामाने फने लागणो, साले साल समान हो ॥ मा० १८ ॥ जलण जलंतो जाणिये, जखसुं रहिइ लाग हो, जो जल
 आपणहि जले, तो किहां जाय प्राग होय ॥ मा० १९ ॥ जो पेट पांमे अपंतरो, लोगसुं स्यो रोस हो; नामा मन
 समजावलि, कर्म आपणो दोश हो ॥ मा० २० ॥ ए त्रेपनमि ढालमें, रंग विनोद विदास हो; गुण सागर गुन
 कर्मधी, पाँचे मननि आश हो ॥ मा० २१ ॥ ॥ दोहा ॥ रवि उगे शशी आयमे, शशी उगे रवि तेम; रवि
 शशी होवे एकठा, एक आकासो केम ॥ १ ॥ वासुदेव वसुधा विपे, आण मनावे ताम; प्रतिमल मद मारवे, सु
 जस लहे अनीराम ॥ २ ॥ ॥ ढाल ५४ मी ॥ ॥ वे वे मुनिवर वोरण पांगथार ॥ ए देशी ॥ होवे हो कश्च सकल
 जगनी धणि, जांबो हो नवमां प्रतिमलने हणारे ॥ ए आकर्णी ॥ पवनथी पथी आवियारे, वेपारी वद नामारे; रल
 कांवल रुयनारे मुल घणे अनीरामारे ॥ हो० १ ॥ जान विच्यारी अति धणारे, राज ग्रहि आवंतारे; जीव जसाने
 आणले, वस्तु नलि लावंतारे ॥ हो० २ ॥ घटी मोल जव सांनल्यारे, विणजारा बोलंतारे; ठोमी नगरी द्वारिकारे,
 न्याय हम मोलंतारे ॥ हो० ३ ॥ चमकि जीव जस्था खरीरे, सुणि नवलो अनीरामारे; कवण देश पुर केवमारे,

कहनि वतैं आण्योरे ॥ हो० ४ ॥ सोरठ देश सोह्यामणोरे, साधर दत्त निवासोरे; नव वारी नगरी नखिरे, ऋश
 नरेसर तासो रे ॥ हो० ५ ॥ आदि विगोइ व्यंतरिरे, नाथ्यो कालि नागोरे; गोवर्धन गीरि धारीयोरे, जेहनि अविचल
 पागोरे ॥ हो० ६ ॥ दांत उखालण गयंवारोरे, मल पढारुण हारोरे; कंस कंद निकंदणोरे, उग्रसेन आधारोरे ॥ हो० ७ ॥ बिरुद
 ४ ॥ चंदेरि पति मद मारणोरे, अरि कुल कैरो कालोरे; ऋश कहावै के हरिरे, नामे उर्जन सालोरे ॥ हो० ८ ॥ हइइंचोहटा
 सुएयां अति आकारोरे, अंगुठाथि जालोरे; उठि आवि मस्तकैरे, आतुर थइ असरालोरे ॥ हो० ९ ॥ हइइंचोहटा
 आण कैरे, कंत अने नलजाइरे; विरहे विगोहि विल विलोरे, वेदन सहि न जायरे ॥ हो० १० ॥ थडपतिनी पदमणि
 रे, पोखे प्रियसुप्रेमोरे, हुं रंभापो जोगबुरे; अब मुफ जीवणाने मोरे ॥ हो० ११ ॥ जरासंध पासे जइरे, पापणि
 मरणो मारोरे; कंत अने जाइ तणोरे, अरि फिरे मुफ आंगेरे ॥ हो० १२ ॥ चुप नणे मत रोवहिरे, रोसे तुज रिपु
 राणोरे; अरी तुं वर तो जीवतोरे, पण में खबर न जाणिरे ॥ हो० १३ ॥ सामी झेहना पातकिरे, रेमंत्रि तुं दिसेरे;
 वयरी किम वधवा दियोरे, होठ मसे नृप रीसेरे ॥ हो० १४ ॥ अथ कमखो ॥ कोपियो राज अहि पति राजनि,
 नि सुणि पुत्रि तणा बोल भारी; कहे राज जरासंध सुण पुत्रिका, पुरुहुं आज आशा तमारी ॥ को० १ ॥
 मुलथी वंस उनमुल शुं थड तणो, कोपियो मंगवेश कहे एम वाणि; चढतरी वात सेना नणि, आ दिसे मंत्र
 चिवारीयो पण राय गुमानि ॥ को० २ ॥ थयो परनात करी शणगार शोचा धरी, भंचासालेतामंत्रं चावजावे,
 राच राणाजीको हाथ लोढो धरे, नाना मोटा कोइ रेण न पावे ॥ को० ३ ॥ निसुणि प्रबल दल सबल भेजा हुवा,

केन्द्र कशीया तणा देइ तशीया; थापने कंध एक एक हयवर तणा, मुठ बल धाल संग्राम रीसया ॥ को० ४ ॥ रज
 चट्टि गयण रणपन्न जिम उपड्यो, पाखरे रोल घमसाण वाजी; स्वांमि तणि वात अद्रियात करवा भणि, सुचटनि नयन
 ब्रह्मान लागी ॥ को० ५ ॥ सब लट्टि चाल सीशुपाल मुठाल तिम, सकल सिमामिया नुप आया; पुत्र सहदेव आदिक
 वक्रा राजवि, सख ठत्रिस धरी वेग धाया ॥ को० ६ ॥ तेम डुर्योधनादिक वक्रा राजवि, राण राजा नरा उत्तर ढालां
 सहेस्य गमे तिहां नृपति आवी मल्या, केइ गजरथ तुं रंगम केइ पाला ॥ को० ७ ॥ चढतवेला मुगट सीसयी खीर
 पमयो, तृट्ठी निज हाथशुं हार नुड्यो; वाम तसु आप फूरके घणुं उपरे, लोक संगला कहे पुन खुड्यो ॥ को० ८ ॥
 गृध अंधरे फिरे ठिक आगल करे, वायरो ते प्रतिकुल वाजे; बहुल अपसुकन वारी जतो राजीयो, खिजतो आप
 णा बोल काले ॥ को० ९ ॥ पारविण पायदल तुरोय गयं वरतणो, कलकलाट शब्दे वधीरलोक थायो; अश्व पुरा
 आहणी सबल रज सांधणी, ठज नणी जाय आकाश ठायो ॥ को० १० ॥ धनुहने धरणी तलस बलसे नान्नेरे,
 जनयी जल उठने अति जोरे; सलसले पनंग नारे करी संकतो, पलनल्या देव कटक गणेशोरे ॥ को० ११ ॥ मगध
 देसाथी पति मदे नरयो मलपतो, गंध हस्ती चढे गर्व गेहलो; सामहो द्वारकां नगरी सीमा नणी, चाल्यो सेन्या लेइ
 राय बहेलो ॥ को० १२ ॥ एहवे आवीयो नादर मुनी कौतकी, जरासंधशुं हस्ती इम चांखे; आज हरी हलधर प्र
 बल प्रताप धर, नवी चाले एहथी घणुं शुं जांखे ॥ को० १३ ॥ राय सुनट तव कोपी नारव नणी, देइ चपेटा
 चरण लात कुड्यो; फोनी कमंमल कोपिन खंचो घणो, हाहा नहि २ एम करी मांमनुड्यो ॥ को० १४ ॥ राग आशा

अने सिंधुए ए सुणी, जरा सिंधु चढतरी वार ए ठामे; जात कमखे कहीं ढाल लावण न्नाणि, सुणतां सुरमा सुर पामे
 ॥को० १५॥ ॥ढाल मुलगी॥ चंन्या वजावी ततखीयेरे, किधो राय प्रियाणोरे; वेलापुगी आण केरे, डुर गयो
 सयाणोरे, ॥हो० १६॥ साहण वाहण सामटोरे, साथे सहु राजानोरे; धसमस धाया आव्हारे, दलबलने प्रमाणोरे
 ॥हो० १७॥ ए चोपनमी ढालमेरे, नावी लीधे जातोरे; गुणसागर नवी शुंकरेरे, होवे होनारी वातोरे ॥हो० १८॥
 ॥दोहा॥ सेन लेइ जरासंध ते, आयो रणनी सीम; चक्र ब्युह आकारमें, संप साजथी न्नीम ॥ १ ॥ आरा सहस्र
 कियां नलां, लशकर मेली थाट; एक आरे राय सहस्रबे, रेके आना घाट ॥३॥ रथ वेसहमा मांहे नला, गज एक
 सहस्र वखाण; पांच सहस्र तेजी तपे, पायक सोल प्रमाण ॥३॥ आठ सहस्र जोधा नला, सुरामें सीरदार; चक्र
 मुखे कौरव घणा, कहेतांनवे पार ॥ ४ ॥ मध्य नाग पोते रहे, आरा सहस्रने मांहे; बल अरि चाली नवी सके,
 अतुली बलबे त्यांही ॥ ५ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो, अवगुणीयो मुज आज; गुमानी माने चम्यो, राखी नही
 मुज लाज ॥६॥उत्पत्यो अंबर मारगे, कलुप प्रश्यो रुखी ताम; आयो नगरी दारीकां; हरीने जणावण कांम ॥ ७॥ तव
 नारद क्रशने कहे, आव्यो नृप जरासंध; क्रश्रे नंजा वजामीने, करीकटकनो बंध ॥८॥ढाल ५५ मी॥ देशी आख्यानी
 हरी सुतो थइ सुंधीर, आव्यो जरा सिंधु नदवीर; मुज दीवे सही करी मानो, कीम अरी अणराखस्ये बनो ॥१॥
 ॥ ढाल ॥ ॥थारा मोहोला उपर मेह ज्बुके वीजली हो लाल ज्बु० ॥ ए देशी ॥ भिड्या तिहां दशे दशार, जाणे
 उर्धर केशरि हो लाल उधर० ॥ समुद्रविजय अति सुर, समुद्र जीत्यो तनुजे करि हो लाल॥जीत्यो० ॥१॥ माहानेमी

सत्यनेमी छट नेमीसुं नेमी लह्यो हो ला० नेमी० ॥ रथनेमी श्री अरिष्ट नेमी, जिनवर जग गुरु ते जयो हो ला० जग०
॥ ११ ॥ साहा जयने जय शेन, गौतम चित्रा स्वते गुणि हो ला० चित्रा० ॥ सुकल्क तेजशेन, सुरा मांहि जे शिरोमणि
हो ला० जे० ॥ ३ ॥ जय भेष अने सिबनंद, विरफसेनाविवलेपुराहो ला० विव० ॥ समुद्रविजयनां ए पुत्र, एकरथी
ते अर्धीरु सुरा हो ला० ते अर्धिक० ॥ ४ ॥ विजो वशार अक्षोच, आठ पुत्र तेहनां जाणिए हो ला० तेह० ॥ उधर
अधुनीत, वांमदेव छट व्रत वखाणिए हो ला० छट० ॥ ५ ॥ महो अंचोजलने प्रागल्ये, निधी शब्द जिहारि जोमिए
हो ला० जिहां० ॥ होजी थाए तिहारि त्रिणे ताम, सुत्रने किम अयखोमीए हो ला० किम० ॥ ६ ॥ स्तिमित त्रिजो
वशार, पांचते पुत्र तेहने अठे हो ला० तेह० ॥ श्रुर्मिमानने वसुमान, विरपाटल स्थीर युधे गेठे हो ला० यु० ॥ ७ ॥
सागर चोथो वसार, पट पुत्र तेहना वाल्हेसरि हो ला० वा० ॥ कंपन निःकंप लक्षिमयान, श्रीमान युगांतने केशरि
हो ला० युगा० ॥ ८ ॥ पांचमो वशारहेमयान, त्रण पुत्र तेहनां जाणजो तुमे हो ला० जाण० ॥ विद्युत प्रचने माल्य
वान गंधमाद न गण्यां अमे हो ला० नग० ॥ ९ ॥ अचल ठगो वशार, सात पुत्र तेहनां सम क्रिलिया हो ला० तेहन ॥ १० ॥
मांहेछमलय माहा गिरी शैल, नग बले कुल निर्मल किया हो ला० कुल० ॥ १० ॥ धरण नामे सातमो वशार, पंच
पुत्र तेहनां पठयो हो ला० तेहना० ॥ वियरूप धन जय कर्कट, स्वेत मुख वासुकिइ धयो हो ला वासु० ॥ ११ ॥
पुरण नामे आठमो वशार, सुत चार तेहने सुंवरुं हो ला० तेह० ॥ कर्मल कर्कर कःपुरः कर्पर महा बल नाथरु हो
ला० महा० ॥ १२ ॥ नवमो वशार अनीचंड पट पुत्र तेहनां जाणो खरा हो ला० तेहना० ॥ शशि चंड चंडान

शशांक, शोभ अमृत प्रभ सुंदरा हो ला० ॥ प्रभ० १३ ॥ दशमो दशर वसुदेव, तेहने तो पुत्र ठे घणा हो ला० ॥
 पुत्र० ॥ कुर अंकुर ज्वल न प्रन; अशनी वेग वायु वेग नही मणा हो ला० ॥ वायु० १४ ॥ मांहे छगती सिधार्थ,
 अमित गती वली शदरयो हो ला० वली ॥ सुदारु कदारुक अनाधृष्टी, रंमसुष्टीशिलायुद्ध करयो हो ला० ॥ सिंला
 १५ ॥ जरा कुमारने बाहलीक, गंधार पिगल आदे गणा हो ला० गल ॥ रामने विडरने शरणं, रोहीणीना पुत्र त्रिल्ये
 ए हो ला० ॥ पुत्र० १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृश, जग विख्यात जाणो जेह हो ला० जाणो ॥ सुरवीर कोटीर, अधीक
 तेजे जाणजो हो ला० ॥ तेजे० १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्सुक पीठ, मारुदत जक्रदमणो हो ला० शक्र ॥ क्रसनो पुत्र
 एक जानु नमर आगे सुंणो हो ला० ॥ आगे० १८ ॥ धीर गंजीर गौतम, शौधमां उदधी वली हो ला० उद॥ धर्म
 प्रशेन जिन सुर्य, चंद्र मारु क्रसक आता मीली हो ला० ॥ भ्रा० १९ ॥ उग्रसेन आदे नरेस, यादव वंशी नागएया
 हो ला० वंशी ॥ अंग जात्र जाणो अनेक, इानी वीण न जाए गल्यां हो ला० ॥ नजा० २० ॥ सामाइ फइयाइ अनेक
 स्वसुर पइनां जाणजो हो ला० पइ ॥ एतो ढाल रसाल, उदय करी मनमां आणजो हो ला० ॥ मन० २१ ॥ ॥ दोहा ॥
 कोष्टुकेकथी तसु सुहुरते, गुरु मध्वजरथारुढ; क्रभ थया तव दारुके, अथ ते जोम्या पौढ ॥ १ ॥ चतुरंगी सेना
 सजी, सजा सह जादव साथ; शुन्न सुकने इशान दिशां, चाले श्रीपडनाथ ॥ २ ॥ जादवने पांभव तणां, कटक
 तयो नही पार; चालंता अचला चले, कुला चल चल्या तीणीवार ॥ ३ ॥ पस्तालीस जोजन अरहा, आवी करयो
 पभाव; शत्रिपलि गामनि सिमसां, बहु विध करि वनाव ॥ ४ ॥ एहवे तिहां क्रभ सैन्यमां, वैताढ वाशि अनेक;

विद्याथर आचि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥५॥ कहे स्वामि तुंज बांधवे, वसुदेवें धरि नेह; सेवक करि अस्म थापियां
 उपगार किया अठेह ॥६॥ युध समय जाणि करि; आब्योतुं तुम पास; सेवक अमने लेखवि, कांय वतावो खाश ॥
 ७॥ वचन सुणिने हरखियां, समुद्रविजय राजान; तेह नजरे निरखि तदा, आपे अति सनमान ॥८॥ वसुदेवे पण
 तव तिहां, पंचरने बहु प्रेम; अति सनमानि राखियां, पुठि कुशलने खेम ॥९॥ विद्याथर कहे रायजि, रामकृश्र सम
 जात; जगमां कोइ लाजे नहि, जरासिंध कुण मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो अविश; वैताढ्य
 वाशि विद्याथरा, अन्य अठेसु विशेष ॥११॥ जरासिंधना पक्षी, तुमने न माने जेह, तेहने जीतवा कारणे, जाइए
 अमें गुण गेह ॥१२॥ ढाल मूलगी ॥ सुणी नारद वयण वेधाला, वाजे गुहीर त्रंबालु गुंजाला; सिंहनाद
 हरी तय मुके, सज यादव थड्ढेने घुके ॥ १ ॥ दस सेनेदसारथ चाल्या, जुजुआ नवी रहे पाल्या; उठ कोम पुत्र
 परवरीया, पहीरी सनाह खग वेगे धरीया ॥ ३ ॥ अयसेन कटक पोतानो, लेइ चाल्यो देइने तानो; महसेन राजा
 युद्ध रागी, बलतेगचीहुबुटवागी ॥ ४ ॥ मांहे पांच पांगव वम योध, रण करतां नअावे योध; तीम ससरा
 साला बहु मित्रीया, कायराचीत मांही खलजलीया ॥५॥ सर्वे कटक मिलु शुच शुक्ने, कुण घुके ए जाणी तकने
 रण बाजंत्रजना वाजे, रय वेठा श्रीकृश्र विराजे ॥ ६ ॥ बली निपट कुमर सीरदार, धरयो महानेमी सेननो नार;
 आबो खेंच्या रणने तीर, नेरा देइने उतराधीर ॥७॥ गरुड ब्युह आकारे कहीए, चंडु अग्ने बलजद्र लहीई; एह्ये
 इंद्रपुरीमें वेगो, अरवधे सो धमें इंद्रे दीगो ॥ ८ ॥ प्रभु युद्ध कारण परवरीया, बालपणे कौतक रस जरीया; मुखो

सारथी मातुल सार, रथ पोतानो करीने तैयार ॥९॥बहु तत्रीस आयुध धरांगा, नट मुकीने मंचरीया; कवच सनाह
 पहेरी सयणे, चाल्यो सारथी नेमने वयणे ॥१०॥प्रचु बेशी रथ सोचाव्यो, सवी जोतां सेन्यमे लाव्यो; केइ सुरसून्नट
 सज थावे, अष्टापद ज्युं उपमा पावे ॥११॥ साहे त्रीम गदानो रसियो परसेन देखीने हासियो; एम सुन्नटनी कोमा
 कोमी, रण करवाने होमाहोमी ॥ १२ ॥ समपाधर जोइने चौखाल्युं, सेन आप आपणुं वाल्युं; रणथंच तीहां आ
 रोप्यो, धज मंने करी बहु उल्यो ॥ १३ ॥ वीर विद्याधर बहु मलीया,सगवटे सहु आची नलीया;कोइ कौतक जोवा आवे
 नम देखीने नय पावे ॥१४॥ गजसुंने सांकलनां खलकां, मोरचाबांधी करे वलकां; हयवर पाखरीया पलाणे, नाथा
 वलगाम्ना नरी बांणे ॥ १५ ॥ वीर रसें चढ्या रजपुत, रणखेत मच्यो अदचूत; दलपसारीयाचीहुंडर, कालीखांम
 घटा धनघोर ॥१६॥ बरबीए बरबीए करत जुहारा,वीजली जेम वहे खगथारा;मंमीया अति जोध अखांमां, शीर वीन्या
 धम करे रमांमा ॥ १७ ॥ आव्यो सुरसहेअसिधारी, जो होय होस अपठरा नारी; बोले बोल सुन्नट एम हामा,
 एक कायर धरे हाथ आमा ॥१८॥ जादव सुन्नट चढ्या रसपुर,करे सिंधु सेन्या चकचुर; दल नंग देखीने राय,आव्या
 धसमसता अति धाय ॥१९॥ प्रियंगद धुमकेतु नरंद, जादव सेनने पांमंतां मंद; वही एक धारी करपाण, हरी कट
 कमां पम्हुं नंगण ॥ २० ॥ उठयो महानेमीतीणीवार, अनादृष्टी निषट कुमार; चाल्या रथ बेशी गुणवंत, आवंता
 रीपू दल रोकंत ॥ २१ ॥ रोसे नरथो रुखमीयोराय, ड्योथन साथे सहाय; साते नृप आव्या रणखेत, एक एकने
 पाबल लेत ॥ २२ ॥ समकाले साते नृप होमे, नरमुठी अने सर बोमे; महानेमी सुन्नटने आगे, रुखमिया साथे

अन्त्या मध्य जाग ॥२३॥ सत्यय वास आहे अति वेगे, वागे खडेमाट सुन्ननेतेगे; खलके लोही वहे जीम
 पनीया हय गय पाय पसारी ॥२४॥ योगणी पत्र पुरेरे असंखी, त्रपत हुयां घणा ग्रथ पंखी; महानेमी तए
 तूटे रुखमीया रथनी सांध यवुटे ॥२५॥ रुखमीयो ने डुर्योधन जुपाल, कोपे चढीया आ अत्रसाल; वेणुवाली
 सरोखी, पटराय आख्या बल पोखी ॥ २६ ॥ महानेमी तणो रथ घेरी, आठि राय रद्या चहुंफेरी; जाइ संनः
 तुम्हारो, आज आव्यो सही जमवारो ॥ २७ ॥ रेरे सोर करे स्योगेमार, आव्य सनमुख था हुसीयार; इः
 त्रोमे सरथार, धनुष आठि तणा तिणीवार ॥ २८ ॥ सक्ति पुरण दाय अरिने, मुके रुकमइयो रीस जरीने; तः
 नाद करंत जोर, देखी सुनट करे अति सोर ॥ २९ ॥ नांखे सब घणा सुरचंगा, जाणे अग्नी मांहि बले
 ए हवे अरिष्ट नेमी सरस्वामी; सुर मातली कहे शिरनामी ॥ ३० ॥ वली इंड्र थकी एणे पामी, एह शक्ति
 कामी; पामी प्रजुतणोरे आ देश, सुर सानीध करे गुं विशेष ॥ ३१ ॥ तिणे बलसरे अति त्रामी, लेइ शक्ति
 भुंए पामी; जेजेकार करे नरदेव, जादव विघन टल्यो ततखेव ॥ ३२ ॥ हुइ सांजने वित्यो संग्राम, आळः
 आपणे मुकाम; गुणसागर कहे अर्जीराम, ढाल पंचायनमी गुणधाम ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ नित्य प्रते इः
 घणा, कहेतां नाये पार; जरा मुठीए हये, ते सुणजो अधीकार ॥ १ ॥ नालथ बुके नवनवी, रजमें ठायें नाः
 सुरा रणमें आयने, रथ जुत्या केकाण ॥२॥ तसलीमुकरतां थका, एक रने ग्रही वांह; कहे जस जगमें कः
 करयो जगनाह ॥३॥ सुकुलीनी माता तणा, धाव्या हशे जे डुध; ते पग पाठा नही दिए, घणा कियणे पुध

इम हुकाहुक करी रघ्यां, जाणे हनुमंत विर; जइ अमारणं शंभने, वना वनारण धीर ॥५॥ बाणधार वरशे घणी,
 धरणी नधरे धीर; कायर नर बानां ठपे, साहसीक साम सधीर ॥६॥ युथारंभ थयो घणो, नवीको हारे ताम; ए हवे
 सनानी सिंधु तणो, हिरण नाजी अचीराम ॥ ७ ॥ कहे एम नीज स्वामी प्रणी, कुणालो जादव रंक; द्यो आदेश
 संग्रामनो, टालुं एहनो वंक ॥८॥ राय पसाय लेइ करी, रथ वेशी तिणीवार; चर्मीयो आनंवर घणे, दल वलनो
 नही पार ॥ ९ ॥ ढाल ५६ सी ॥ श्रेणीकराय हुरे अनाथी निग्रंथ ॥ ए देशी ॥ सेनानी शेसे प्रस्थो,
 आवेहि दल ठेल; गसस्थो दल सिंधु तणो, जीस साअरनि वेल ॥१॥ रंगीला राय आवी मल्या रणखेत, कांइ पाबी
 रे पुंत न देत ॥२० ॥ ए आंकणी ॥ अरजुन सेनानी तणो, आवंता बेदे तिर; ए हवे प्रीस जुजावली, उपानी गदारे
 आयो अमीर ॥२० १॥ सेनानी रथ उपरे, मेली गदा वलपुर; सेनानी पाठो खस्यो, रथ प्रांगीरे हुवो चकचुर ॥ २०
 ३॥ आव्यो केसरी जेम गाजतो, जीम उपर धरी बाग; तिदण बाण वरसावतो, कोइ नवीपामेरे रेहवालाग ॥२ ४॥
 जयसेन कुमर माहा बलि, ससुद्धवेनो नंद; आवि आमो आंतस्थो, खंचि धनुष उचो सोनंद ॥२० ५॥ राय हसी
 इम वोलिउ, तुं कासरे चाणोज; इम केहेता तस सारथी, हणियारे जयसेन सहेज ॥ २० ६ ॥ खंचि बाण अति
 आकरो, सेन्यानी सरदार; तस सारथी चेदी करी, कांइ मास्थारे जयसेन कुमार ॥२० ७ ॥ महा जय ध्यायो वेगसुं,
 बंधव मारयो देख; ते पण मारयो सेनानीइं, देखि कोप्यारे अनाइष्टी विशेष ॥२० ८॥ हिरण नाजी राजा तणो,
 बेदे धनुष मनरंग; जीम अर्युन यादव अवर, कांइ झुजेरे बीजा नृप संग ॥ २० ९ ॥ अनादृष्टीने मारवा, रथथि

वृत्तरीति नेम; श्लोच पीसे रोसे नास्यो, त्रिरण नानीरे द्याधो परी सेम ॥१० ॥ १०॥ अनास्यो पण एम भक्तिरे, अतरीयो
 ले तरवार; आम्ने रोप्ते भेङ्गेने, कांड रोरे तणु मद्रुवार ॥१० ॥ ११ ॥ अनास्यो अना पासिने, अथवा अणि करमाणा
 त्रिरणनानीने वृणि करी, कांड नास्योरे विषा मज्जात ॥१० ॥ १२ ॥ अथ गिरा गृध्र मयण, गोक्षीयाका पां, अको
 नीम अर्युन रुरी आकरी, वेखिरे राग पुगोनि शेणत ॥१० ॥ १३ ॥ कुरार मय भंखि करी, अथवा दोगिरे ताप, अमखिण्य
 चित्त चिंतयी; तिणे अयसर कुन येति अनीगम ॥१० ॥ १४ ॥ जरांकीरी कृतां परी, वापवा भागो एम अ मग
 अटारो रणमें मिट्टयो, कांड सारोरे कुननि ताज ॥१० ॥ १५ ॥ भंनि कोणि तलमिणं, अथवा भावम रोग, अमनि
 कुनि अति वणि, जाले प्रगळोरे अयानक येन ॥१० ॥ १६ ॥ धाकोरी अभावा करवा, गुण भंने मक्ष तांता मय
 निमाने मुक्किने गइ वेगिरे अंयर ततकाज ॥१० ॥ १७ ॥ प्रगी जग जावम रोगां, अभावा भावा मयण, मय मग
 हतुधर निव्या, नेप जसमय मद्रु भाय ॥१० ॥ १८ ॥ दोरे मज्जा मरुको, निरुणि अथ भाव एम अंनद निम
 क्रिम थायशे, उयनोरे मुरि तापां अतपात ॥१० ॥ १९ ॥ पक्षे भायुदा मारपी, अंनो कळे तां पां मणिप एत
 रिण्यु आपणे, तो कांड पागेरे धार अवार ॥१० ॥ २० ॥ वेप भयंणे प्रणु एम कळे, निरुण अंणे धाल शोक्य म निम
 परंपग ने त्रिनि, अंसेरे त्रिगंजा थीम क्रम ॥१० ॥ २१ ॥ एम कळि चाणो एम नुतंन, अंनो वाज मदीम विमं
 दधीमां जीम नावकि, कांड तरतिरे विरे तिर ॥१० ॥ २२ ॥ उंमया काणवा ओंम, निरु भंनत अणदत, विरु रोग भाग
 गयो, तिम मिट्ट वेगिंर अजाना मंत ॥१० ॥ २३ ॥ अथ गुंन प्रनं रंग, गापी अथ किम अंम, विम अथवा मय

साहमों, हुश धरीरे जोवे सेवे सहू सेवे ॥ २० १४ ॥ हरी आरति देखि करी, मातुलि कहे इम-वात; प्रचु नवण जल
बांटा, कांइ रेहेशेरे वक्रनो उपधात ॥ २० १५ ॥ प्रचु पुजी प्रणमी करी, नवण बांटे तिणीवार; जरा नाठि लोटि
जविया, कांइ सुरारे सुनट शिरदार ॥ २० १६ ॥ प्रचु रथ रेणु फरसी जेहने, अंगे अंगे तिल मात; तेहना उपद्रव्य
सर्वे टले, अकथ कथानि ठे नात ॥ २० १७ ॥ ढाल ए पट पंचासमी, प्रचु महिमानी वात; ब्रह्मचारी जीन वाविसमो,
गुणसागर गुण गात ॥ २० १८ ॥ दोहा ॥ हवे जरासिंधु आपणा, मंत्रि तेम्हा ताम; नामे हांसोहिं शके, उजा
करी प्रणाम ॥ १ ॥ यादव सेन जिहांयठे, जइ आवो करी गुज; सेना साहमा आवजो, वहिला करजो झुज; ॥ २ ॥
दृप जुना जाणे सहि, पुरण प्राक्रम सोय; समुद्ररायने विनति, वृधपणनो राखे तोय ॥ ३ ॥ पशु टोले गोवालियो,
आपे मुजने आज; हलधर जुग पांमव वलि, आभ्यां सरसे काज ॥ ४ ॥ हांसो आब्यो तिहां थकि, प्रणमे समुद्रना
प्राय; विनति स्वामी नरकनी, करवा मांफी वाय ॥ ५ ॥ समुद्रविजय तटक कहे, रे सांनल मंत्रिश; मागवा क्रभ तुं
आवियों, हिन बुधी तुंज इश ॥ ६ ॥ हरी जे कंसने मारीयो, करतो कुलमें उतपात; उत्रसेनने पांचसें; मारतो
कसा घात ॥ ७ ॥ इमनि सुणि पाबो वल्यो, वीनव्यो निज नरेश; अब केटलवो जलो, जादव जोर विसस ॥ ८ ॥
थयो प्रजात उग्यो तपत, करण राजा तेणीवार; सेनापतीने तेनीने, नांखे वात विचार ॥ ९ ॥ सेना सज करो सहू
जासु जादव लार; संग्राम करवा कारणे, मत लगावो वार ॥ १० ॥ इम सुणी सेनापती, कीधुं कटक तैयार; ह्य गथरथ
पायक घणां, ते केतां नावेपार ॥ ११ ॥ ढाल ॥ चीत्रोदा राजानी ॥ ए देशी ॥ कारण सज थयो हवे जास,

बढवाने अती अन्नीराम; आयो राजा संधुने आगे, पाए लागीने अनुमत मागे ॥ १ ॥ प्रभु करपा करो तुमे नाथ, आज
 जइ देखाहुं हाथ; एम बोले मथुरी वाणी, जरासंध कहे गुणखाणी ॥ २ ॥ जायो वेगे मलायो वार, राणमांहे रेजो
 हुंशीयार; एम सुणी राजी थयो मनमां, पेरयो सनाहक ठोटो तनमां ॥ ३ ॥ करण करण समठे तेज, जग देखतां
 उपजे हेज; रथे वेगो करवा काज, हाथ मुदगल लई माहाराज ॥ ४ ॥ नाग ससरो सांनीधकारी, आवीरथे वेगो अधी
 कारी; वरी देव घणा तसलार, करण आव्यो थै हुशीयार ॥ ५ ॥ गेगे वगरुवो गुणखाणी, करण राण चमो एम
 जाणी; आवी नेरो थयो उमाइं, सुसंती सल हाथमां साई ॥ ६ ॥ रणथंन आवीने रोप्यो, करण जादव उपर
 कोप्यो; देखे करण केरी अधीकारी, नाठा सुभट हुता जे चारी ॥ ७ ॥ त्रास पामी आव्या हरी पासे, पाए लागीने
 घचन प्रकाशे; आव्या करणने नीपम दोए, प्रभु अमथी तो काथि नहोए ॥ ८ ॥ नेम गदा लइने सनुर, अरजण
 उनी वाणावरी सुर; सज थया रण रमवाने काज, तव वरजे जुदीठर माहाराज ॥ ९ ॥ नीपम पित्याने करणठे जाइ,
 एणथी बढतां नहोए बन्नाइ; मारीए मरीए तो नरंगे जाइए, ते माटे सामा नव थाइए ॥ १० ॥ तव वसुदेव चढोया
 आप, दसार हाथ गृही रणथाप; उग्रसेन केरी अधीकारी, चाल्या वढवाने वसे जाइ ॥ ११ ॥ हलाधर तव हेतज
 जाणी, कहे तात प्रते एम वाणी; लेयो गदा अमारी पास, इणथी वेरो पामशे त्रास ॥ १२ ॥ गदा लेइ प्रभु रणथाये
 देखी करण प्रते बोलावे; आवो सामा सुरजनानंद, आपणें लमशुं दोए आनंद ॥ १३ ॥ वसुदेव करण ए दोए,
 बढे हुंश न राखे कोए; एकबीजाने करे प्रहार, वेवे कोप चम्यां असराल ॥ १४ ॥ उग्रसेन गंगेवज साथ, जुजे

बिजा घणा नरनाथ; उमाया अति रण रसीया, एकर्बिजाने मारण धशीया ॥ १५ ॥ न्नीषम नढमोडे अति न्नार,
 करे चोट हुइ हुशीयार; न्नीषम विद्या धरीनो वेढो, न्नीषम उग्रसेन रायने नेढो ॥ १६ ॥ उग्रसेन तणुं दल मोढे,
 बली धनुषरायेनां तोढे; रिसे करे मुसंदी प्रहार, राय मुरबी पमो तेणीवार ॥ १७ ॥ न्नीषम वृधअठे पण नानो,
 न्नीषम रणमां न रहे बानो; न्नीषम नारे हाक वजावे, न्नीषम सुर सून्नट न वीसारे ॥ १८ ॥ सारथी जोवे नजर
 पसारी राय मुरबी पमो डखकारी; हाहा न्नीषमे अनरथ कीधो, रायेने प्रहारज दीधो ॥ १९ ॥ रथवारी बाहेर लीधो,
 बली जलसें चावत कीधो; एम कीधां घणां उपचार, राये सुसता थया तेणीवार ॥ २० ॥ करण वसुदेव संग्राम न्नारी
 जोवा देव आव्या तेणीवार; जोवो माणस पण देव जोवां, सावढतां दीतां तेवां ॥ २१ ॥ करण कोप करी करसाइ,
 ग्रेही मुद्गर मुके धाइ; बाणवरी अधीके जोरे, मुके श्रीवसुदेवनी कोरे ॥ २२ ॥ मुद्गर आवंतो दीवो जाम, हलधरे
 गदा दीधी ते ताम; गदा उपामी ते तामे, मुद्गरने ते जुंए पामे ॥ २३ ॥ वसुदेव कहे सुणराए, कथं उचारे पग
 वाए; अगन बाण थकी तुजने वारुं, सेन सघलीनुं कारज सारुं ॥ २४ ॥ मुंगर उपर देवथी पामी, हाथ लीधुं वसुदेव
 स्वामी; मुके करण राजानी लार, अगन ऊार वहे अस्सराज ॥ २५ ॥ अगन देखीने देवज खशीयां, सहु आधा पाठां
 धशीयां; नाग नेरा हता जे देव, सुर नाशी गया ततखेव ॥ २६ ॥ बाण देखीने अतिशे नारे, नाग सामो आव्यो
 तसवारे; जल बइने अगन ओलावे, बाण देव ते नाशी जावे ॥ २७ ॥ करण बाणवरी केवाए, एथी जोथ जीत्यो
 नचि जाए; बली नाग साए जो पामी, वढतां कांयि न राषेखामी ॥ २८ ॥ वसुदेव तणां नम जेह, ते तो नासी

गीया ततखेय; देखी हठने रया विचारी, करण मोटो इ अधिकारी ॥ ३ए ॥ वसुदेव विचारे मन, करण मोटो इ
 राजन; तेज प्रताप करीए पुरो, जोध लम्बामां अति सुरो ॥ ३० ॥ जोधे जीत्यो इनवीजाइ, वरी पाबुं पण न खसाए
 सापे गृही वतुंदर तेह, जुठखाणुं मलीज एह ॥ ३१ ॥ एटले नारदरूपतिर आवे, वासुदेव प्रते बोलावे; शुं राघ
 जंखाणोडो आज, आव्या एण रमवाने काज ॥ ३२ ॥ वसुदेव कहे रूपीदेव, पाए लागीने करी शेव; में नवी दीवो
 जगतमां कोए, जेवो करण लमेठे सोरा ॥ ३३ ॥ नारद कहे मत बमासो, करण रथे वेठो देव खासो; वाण तमतणा
 सरवे जागे; करणरायने एक नवि लागे ॥ ३४ ॥ हवे एहनो उपावे करशुं, राए चिंत्या सधली हरशुं; एम करीने
 रपि सर जाए, प्रभु देखीने बहु सुख पाए ॥ ३५ ॥ मातोली प्रते कहे रूपीराज, चालो संग्राम देखण काज; देवमां पण
 एवी न देखो, वसुदेव करण लने ते पेखो ॥ ३६ ॥ एम कहीने रूपी तेनी आवे, वसुदेव तणे रथ ठावे; नाग देखत
 त्रासो मन, खम्बनीतं अति घणुं तन ॥ ३७ ॥ इतो अंघ्रतणो देव मोटो, केदीए नवी थाए खोटो; जो जीवतराखवी
 आशी, तो एयो जाबुं नाशी ॥ ३८ ॥ देव नाशी गयो निज नवन, सुर आयम्यो तम; दोए राजारथ वाली वरीयां, सजन
 जनमां सहु मलीयां ॥ ३९ ॥ इतो ढाल नजी रसाल; पुने फले मनोरथ माल गुणसागर केइसार; सतावनमी राग रसाल ॥
 ४० ॥ ढाल ५७ मी ॥ शिथल मुबरनी खरीरे प्यारी, जे पाले नर नारजी ॥ ए देशी ॥ एहेवे राज ग्रहि पति आगे,
 त्रिजा मेहता संगजी; वचन कहे इम हांसो मेहतो, करी आलोच अन्नंगजी ॥ ए० १ ॥ पहिलुं पण अविमासुं
 कीधुं, कंस मुगे अकालजी; विण आलोच कीया डल थाय, निश्रे उतर कालजी ॥ ए० २ ॥ अरि सबलो निचलो

जो एहवो, लेवो जेहनो गुफ्जजी; ए सबलो गोपाल बले करी, तेशुं इणशुं झुफ्जजी ॥ ए० ३ ॥ सयंवरा मंमप रोहिणी,
श्री वसुदेव दसारजी; तुफ्ज चुपति संधला चांल्या, ए आगे तिणवारजी ॥ ए० ४ ॥ जुवटे जीति कोमी इणे तुफ्ज, सुता
जीवामी चावीजी; इण अहिनाणे मराव्यो न सुवो, ए वसुदेव सचाविजी ॥ ए० ५ ॥ जीणथी हुं आराम अने हरी,
नंदन अति बलवंतजी; जीयाने काजे धनदे किधी, पुरी द्वारकां कंतजी ॥ ए० ६ ॥ ए बेहु सबला जाणीने, पांमव
सेवा काजजी; गरव तजी गुण मनमें आणी, जोरावर शीर ताजजी ॥ ए० ७ ॥ जाणे बीजा हरीने हलधर, सहा
नेमीनी खट कुमारजी; अथवा जमने जोर नयंकर, नीम अर्जुन अवतारजी ॥ ए० ८ ॥ कियुं अनेरा शुभ्रट
वखाणे, एकलो नेम कुमारजी; लोलाइ करी करे भुजाबली, धरणि बत्राकारजी ॥ ए० ९ ॥ इमगोष अंगज रुकमी
यो बेड, तुफ्ज कटकमें बल धीरजी; एण बल दिवो बलचड् रणमें, रुवमणीने अपहरजी ॥ ए० १० ॥ डुर्योधनने
सकुन नरेसर, आपणे कटके एहजी; न गणे केइ सुभ्रटइ यारी, सुरवीरमे रेहजी ॥ ए० ११ ॥ अंगाधीपती तिम
करण कहीजे, आपणे कटके डवजी; तेतो कृश कटक सागर विच, जेणे सोतु सुवजी ॥ ए० १२ ॥ जेहनि अच्युता
दिक संधला, सेव करे सुरनाथजी; जुध चणी कहो कुण सजाइ, श्री नेमीसर साथजी ॥ ए० १३ ॥ दिसे गीरधर
कटक सनुरो, जोता संधली वातजी; इणे उणे कटक घणो गणो अंतर, जाणे दिनने रातजी ॥ ए० १४ ॥ ऋश्रपद्
आदरीने देवी, मारयो तुफ्ज सुतकाजजी; तिणे मरवे प्रतिकुल दिहानो, दिसे तुफ्ज जुपालजी ॥ ए० १५ ॥ तृणां तालि
परे तुफ्जने गणता, जोरावर असमानजी; मथुरा वांमी, गया धारापुरी, दे सुरपति सनमानजी ॥ ए० १६ ॥ गीरी

कंदर माहे ते सुतो, कोश्र जगावे सीहजी; उठलतो वलवंत हवे केम, गणेश ताहरी लीहजी ॥ ए० १७ ॥ सांजलो
 यचन कोप्यो नृप बोले, जरासींधु धरी खेदजी; सहि सुध तुं यादव फेरयो. तिणे देखावे जेदजी ॥ ए० १८ ॥ शत्रु
 तथा गुण कहि कहि मोंने, विहामे इण वारजी; पणरे डुरमति सीह अड्यासुं, स्थल तणो फेकारजी ॥ ए० १९ ॥
 फिटतोने जे रणधी वारे, थाव्या रण अर्थीकारजी; बालगोपाल गोवाल तियाने, उमाधीश करी वारजी ॥ ए० २० ॥
 हवे बोले मंजक मंत्रिसर, गमतो नृपने एमजी; अयसर थाव्या रणनो कारज, ठामे दूत्री केमजी ॥ ए० २१ ॥ सामे
 पाइ रणमें जफतां, मरण तिको जस कामजी; जाग्या रोजीवत अकारथ, होय न आदर वामजी ॥ ए०
 २२ ॥ चक्र ब्युह करी निज कटके, हणस्युं ए शत्रु निकर्जी; जलो कह्यो मंत्रिसर मुजनें, तुं मंत्रि नीरजीकजी ॥ ए०
 २३ ॥ एहवे हंसक मंजक धेदु मेंहतां, विजा हिरा जानजी; चक्रब्युह करे नृपने वचनें, रीपु पण असमानजी ॥ ए०
 २४ ॥ सहस आरानें ठामे सेहस नृप, तेहनो बहु परीवारजी; एकण राजाने केमें, सेहस पांच असवारजी ॥ ए०
 २५ ॥ दोय सहस रथ तिम सोगे वर, पायक सोल हजारजी; सवा सेहस उ तकट भुपति, रहे चक्र नीरधारजी
 ॥ ए० २६ ॥ पांच सेहस मारगने माथे, तुवि विचे मगधेशजी; रहे तिहां कौरव सो बंधव, नृपने ददण देशजी ॥
 ए० २७ ॥ सकुनजने सिधव नृपनो वज, पुंते रहे गज गाहजी; मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥
 ए० २८ ॥ सांधी सांधी रहे तिहां नरपति, कटक ब्युह पंचासजी; विच विचमें रहां वीजाहि पण, पुरेवा मननी
 भाशजी ॥ ए० २९ ॥ जरासींधुइं तव थाप्यो, सेनानीने ठामजी; दावल राजा दल बले बलियो, सीसुपाल

रा० ९ ॥ निलुतपल अथ ए श्रीमना, ठना कोपे विकरालरे; सोवनवर्णे अथ ए सहि, समुच्चविजय दयालरे ॥ रा० १० ॥
 १० ॥ हंसले घोमे उन्नो कटकमां गरुमन्वले गोविंदरे; द्राहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वजे नट चंदरे ॥ रा० ११ ॥
 इम देखावे सुनटने, पार विगर अनेकरे; मगधेश सुणी धनुष थाफले, कोप धरी अविचेकरे ॥ रा० १२ ॥ जुवनांरे
 मगधनरंदनी, जवन नामे कहायरे; वसुदेव सुत अंकुरादिक नणी, हणण काजे ध्यापरे ॥ रा० १३ ॥ अपरालांन
 अने हळधर लंके, विंध्याचल गज जेमरे; अनादृष्टि सिंगुपालजी, सत्यने अर्जुन ते मरे ॥ रा० १४ ॥ रथ सने
 रथ थायमे, गज सापे गजराजरे; पेहेदल पेहेदल गुंलने, अथ अथे करी सालरे ॥ रा० १५ ॥ बाण धारा वहे द्या
 करी, मेघपरे अशरालरे; महिधर धीर धरे नहि, मौलियादिगपालरे ॥ रा० १६ ॥ नाचंती नारव इम कहे, रेजने
 सिंधु भुपालरे; वाहलो अने देरी एकवो, छःकर मलचो हवालरे ॥ रा० १७ ॥ अंकुरादिक हणतां थका, राम सुतरु
 कुमालरे; साणें रथ दोन्नावियो, जवन सापे ततकालरे ॥ रा० १८ ॥ बाण वहे अति आकरा, जवन कोष्यो तेषां
 वाररे; जंजीयो रथ सारणतणो, सुकी गदा परहाररे ॥ रा० १९ ॥ वैशी सारण रथ छुमरे, रोस नरथो असरालने
 खांचि बाणने आहण्यो, जवन नृपनी जालरे ॥ रा० २० ॥ आठवसार आदिक अवर, यादव नृप चमर्नीचरे; विर
 नृप बहु आहणी, डर नसावे दिचरे ॥ रा० २१ ॥ एहवे जरासिंधुना राजवी, नाश्यावा चिलखे वयणरे; जरासिंधुने
 ततखिणे शरण गथा सुख लयणरे ॥ रा० २२ ॥ पुत्र मरण देखी करी, दोन्नीयो तरत रिसालरे; आनंदादिक सुत
 रामना, इत राखीया रणकालरे ॥ रा० २३ ॥ पुत्र वध देखी हरी, फोज जांगी राणरे; मगधे सध्यायो सिंधनीचरे, गाय

केने जीम जाणरे ॥ रा० ३४ ॥ सेनानी सिसुपाल हवे, हसतो जंपे वाणरे; गौकुल न हुवे कान्हए, क्वत्रिनो रण
 जाणरे ॥ रा० ३५ ॥ कृष्ण कहे हवे नाशतुं, नाश पळे अयाणरे; रुक्मीने रण तुं मल्यो, चिंता नावे प्राणरे ॥ रा०
 ३६ ॥ मरम वचन सर विधीयो, धनुष ताणी शिसुपालरे; सर ठेदे हरी रायनो, ते हवे श्री गोपालरे ॥ रा० ३७ ॥ धनुष
 तेम सनाहरथ, ठेदे हरी ततकालरे; खमग काढीने आहण्यो, सुगट सहित शिसुपालरे ॥ रा० ३८ ॥ एह वेग मगधे
 सराजवी, नाम जरा सिंधु तामरे; वध देखी शिसुपालनो, कोपीयो रिपुने कामरे ॥ रा० ३९ ॥ निज नरपति सुतशुं
 मीजी; मांने सवलो झुणरे; उंचे स्वरे कहे यादवा, कांइ मरोरे अब्रुणरे ॥ रा० ४० ॥ हजी लगे कांइ नवी गयो, आपो
 वेहु गोवालरे; सुखे रहो इम सांजली, यादव कोपे करालरे ॥ रा० ४१ ॥ हणो३ करता थाइया, ठोमतां बहु तिररे;
 ते हवे मगधनो महिपति, जुध घोर करे रणधीरे ॥ रा० ४२ ॥ मागधेश सैनदि सोडिजे, भंजीयो इणप्रतिकुडरे, तिम
 रही नवी शक्यो कोइ मुखे; वाय मुखे जीम तुजरे, ॥ रा० ४३ ॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अठ्यावीसरे; गुणहतरिसुत
 हिमली, कक्षजणी शंजगीशरे ॥ रा० ४४ ॥ घोर झुज थयो तिहां, रामदले हवे खंचरे; अठ्यावीस ए कुमारने पिसे मुस
 लसींचरे ॥ रा० ४५ ॥ मगधेश कहे गोवालीया, तुमारे मुज्जंदरे; इम कहीने मारी गदा, रामपादे आक्रंदरे ॥ रा० ४६ ॥
 गदाघाते लोही वहे, यादव कटके तामरे; हाहारव सुराकरे, कहेतां मुख श्रीरामरे ॥ रा० ४७ ॥ ते हवे देखी रामने, कोपीयो
 श्री गोपालरे; गुणह तरीसु कुमारने, हणे सवल ततकालरे ॥ रा० ४८ ॥ जरासिंधु चित चिंतवे, मरसे वलि इण
 घायरे; अर्जुन मार्यो शुं होवे, क्रभ हणुं इम धायरे ॥ रा० ४९ ॥ क्रभ हण्यो एम कटकमें, पसरि सवले वातरे;

रा० ९ ॥ निलुतपल अश्व ए श्रीमता, उजा कोपे विकरालरे; सोवनवर्षे अश्व ए सहि, समुद्रविजय दयालरे ॥ रा०
 १० ॥ हंसले घोमे उजो कटकमां गरुध्वजे गोविंदरे; दाहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वजे नट चंदरे ॥ रा० ११ ॥
 इम देखावे सुनटने, पार विगर अनेकरे; मगधेश सुणी धनुष थाफले, कोप धरी अविंकरे ॥ रा० १२ ॥ जुब-
 मगधनरंदनो, जवन नामे कहायरे; वसुदेव सुत अंकुरादिक जणी, हणण काजे ध्यायरे ॥ रा० १३ ॥ मपराल-
 अने हलधर लमे, विंध्याचल गज जेमेरे; अनादृष्टि सिंगुपालजी, सट्यने अर्जुन ते मेरे ॥ रा० १४ ॥ रथ र-
 रथ थायमे, गज साथे गजराजरे; पेहेदल पेहेदल गुंलमे, अश्व अग्धे करी साजरे ॥ रा० १५ ॥ चाण धारा वहे :-
 करी, मेघपरे अशरालरे; महिधर धीर धरे नहि, मोलियादिगयालरे ॥ रा० १६ ॥ नाचंतो नारद इम कहे, रेज-
 सिंधु मुपालरे; वाहलो अने वेरी एकवो, डःकर मलवो हवालरे ॥ रा० १७ ॥ अंकुरादिक हणतां थका, राम सुत
 कुमालरे; साणें रथ दोभावियो, जवन साथे ततकालरे ॥ रा० १८ ॥ वाण वहे अति आकरा, जवन कोप्यो तेर
 वाररे; नांजीयो रथ सारणतणो, मुकी गदा परहाररे ॥ रा० १९ ॥ वेशी सारण रथ डसरे, रोस नरथो अस्सरा-
 खांचि वाणने आहण्यो, जवन नृपनो जालरे ॥ रा० २० ॥ आतदसार आदिक अवर, यादव नृप नमनीचरे; वि-
 नृप बहु आहणी, डर नसावे टिचरे ॥ रा० २१ ॥ एहवे जरासिंधुना राजवी, नाशीया विलखे वयणरे; जरासिंधु-
 ततखिण शरण गया सुख लयणरे ॥ रा० २२ ॥ पुत्र मरण देखी करी, दोनीयो तरत रिसालरे; आनंदादिक सुत
 रामना, इस राखीया रणकालरे ॥ रा० २३ ॥ पुत्र वध देखी हरी. फोल जंणी मग्धे सध्यायो सिंधनीपरे, गाट

खरी ए, इम मरमनी वाली ए; हरी मुखयी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रोसे करी ए ॥ ५ ॥ वेहु
 मली सर बोधे ए, रणने होमा होमे ए; तिम त्रोधे ए तिर धनुपएक एकनां ए, वेहु सबल विहावे ए; जल रासि
 खोजावे ए, कंपावे ए गीरा अने खेंचर नामना ए ॥६॥ देव व्यंतर बल लेवा ए, उजा आकाशो बलदेवा ए; गयणे
 देवा ए, जोवा मीलिया कौतकी ए; हरीइं तव संनारी ए, ऊऊ मज्यो अति नारी ए; आज अटारीए देखी नावा
 जो तकी ए ॥ ७ ॥ वेहु सामा रथ फेरे ए, फेरंता ठल हेरे ए; बहु तेरे ए शस्त्रे ऊऊ करे सहि ए, नृप मागधीने
 काजे ए; सबदपणे हरी राजे ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमडं ए ॥७॥ मन बिलखो अती थाइं ए, जरा
 सींधु रीसाइं ए; सवाइ ए चक्र संनारे एहवे ए, चक्र हाथे आवे ए; मगधेश मन जावे ए, सनावे ए वचन कहे इम
 तेहवे ए ॥८॥ मथुरां मांहि जारक ए, रहेतो करी घणो वारक ए; कंसमारकए आव्योतुं इहां एकलो ए, बैर पुर्वतुं
 मातो ए; तिले घणी मुऊ वातो ए, रखे जातो ए मार्ग जाणी बेखलो ए ॥९०॥ हवे नमुं कुलारो ए, करमा टिपणो
 तारो ए; कहेतुं सारो ए रण साधेठे थइने नलो ए, इम घणुं ललकारी ए; चक्र नमानी नारी ए, नचचारी ए नांखे
 राखी आमलो ए ॥ ११ ॥ खेंचर देखि त्रासे ए, सैना जन सहु नासे ए; तसु पासे ए सुरा पग सांझी रह्यो ए,
 चक्र उपडव टाले ए; पांनव उजा निहाले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥११॥ गयणा गण गाजे ए,
 चक्र तणे अवाजे ए; विराजे ए आबी उचो हरी आंगले ए, बंधव परे सोहावे ए; देखि हरी मन जावे ए, खेइ
 वधावे ए चक्र नणि मुक्तांफले ए ॥१३॥ यादव कटक ते वारो ए, हरख्यो सहु संसारो ए; नरनारो ए मिलियोठव

तेहवे मातलिनने मने, विनति करे विख्यातरे ॥ रा० ४० ॥ सहाज आपो प्रभु एहने, हरीनो संपय जायरे; स्वष्ट करे
 यादव चमुरे, धरणी गगन पुजायरे; ॥ रा० ४१ ॥ सुरी गुणसागर एकहि, वांड अवायनमी ढालरे; हवे जयी तुम्हे
 सांचलो, प्रभु लीला गुण मालरे ॥ रा० ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ नेम कथने मातुलि हवे, रथ फेरे रण मांहि; तिर
 याह सबलि करे, सामी सहेजउ ठाह ॥ १ ॥ एकले पण सामीं, जांज्या लाख नरंद; जरासियुने नवि हएयो, तिर
 हणशे तसु गोविंद ॥ २ ॥ क्रश्र हएले प्रति क्रश्रने, राखे प्रजुने मान; रथ सुं रोम्यां स्वामीं; शत्रु तणा राजान ॥
 ३ ॥ ताम वठोहा बुटिया, यादव नृप जय गेह; अनुज हणियो पांम्बे, लमतां रणमें जेह ॥ ४ ॥ सुख थयो बलवेव
 पुण, उपामी निज रीस; जंग करते आ हणो, रणधेरी रीपु इस ॥ ५ ॥ ढाल ५ए मी ॥ ॥ देवी डुरगंध
 डरथी, मोह मचकोमे माणरे ॥ ए देशी ॥ हवे मगधेश नरंदो ए, कहे सुण गोविंदोए; आनंदो ए ताहरी मायां
 घणो ए, हणियो कंस जुजालो ए; हणियो तिमज कलो ए, ए जालो ए संगलोठे माया तणो ए ॥ १ ॥ शिखीयो
 रण नाहि ए, ठले सुर कहाहि ए, हवे वाहिए जो ज्यो हम खत्रि तणो ए, तुज प्राण सेंति ए; ठे माया जेति ए सवि
 तेंति ए, तिने मेजुं तुं धणी ए ॥ २ ॥ पुत्री तणी वाचा ए, पुराउ मन साचा ए; ते काचा ए जाएया; मानु गोयालिया
 ए, हशी माधव इम बोलेए; सुं नुपति तुं बोले ए, क्रिण तोले ए साचा बोल संचालिया ए ॥ ३ ॥ हुंतो माया जालो
 ए, नहि कुमो नुपालो ए; संनाओ एथें तो रजवट आपणी ए, आपणदि अधीकाइ ए; ते परने न कहाइए, पण
 नाइ ए तुं जोले वमाइ हमतणी ए ॥ ४ ॥ तुज आगन जंपारुं ए, तो हं कान कडानुं ए; सराहुं ए तुम पुत्री वानं

खरी ए, इम मरमनी वाली ए; हरी मुखथी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रोसे करी ए ॥ ५ ॥ बेहु
 मली सर बोधे ए, रणने होमा होधे ए; तिम त्रोधे ए तिर धनुषएक एकनां ए, बेहु सबल बिहावे ए; जल रासि
 खोचावे ए, कंपावे ए गीरा अने खेंचर नामना ए ॥ ६ ॥ देव व्यंतर बल लेवा ए, उजा आकाशे बलदेवा ए; गयणे
 देवा ए, जोवा मिलिया कौतकी ए; हरीइं तव संजारी ए, ऊज मन्थो अति नारी ए; आज अटारीए देखी नावा
 जो तकी ए ॥ ७ ॥ बेहु सामा रथ फेरे ए, फेरंता तल हेरे ए; बहु तेरे ए शखे फुज करे सहि ए, नृप मागधीने
 काजे ए; सबदपणे हरी राजे ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमई ए ॥ ८ ॥ मन बिलखो अती थाई ए, जरा
 सीधु रीसाई ए; सवाइ ए चक्र संजारे एहवे ए, चक्र हाथे आवे ए; मगधेश मन जावे ए, सजावे ए वचन कहे इम
 तेहवे ए ॥ ९ ॥ मथुरां मांहि जारक ए, रहेतो करी घणी वारक ए; कंसमारकए आव्योनुं इहां एकलो ए, वैर पुर्वनुं
 मातो ए; तिले घणी मुज वातो ए, रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥ १० ॥ हवे नमुं कुजारी ए, करमा टिपणो
 तारो ए; कहेवुं सारो ए रण साधेठे थइने जलो ए, इम घणुं ललकारी ए; चक्र जमानी नारी ए, ननचारी ए नांखे
 राखी आमलो ए ॥ ११ ॥ खेंचर देखि त्रासे ए, सैना जन सहु नासे ए; तसु पासे ए सुरा पग सांजी रह्यो ए,
 चक्र उपखब टाले ए; पांफव उजा निहाले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥ १२ ॥ गयणा गण गाजे ए,
 चक्र तणे अवाजे ए; विराजे ए आवी उजो हरी अगले ए, बंधव परे सोहावे ए; देखि हरी मन जावे ए, देख
 वधावे ए चक्र जणि मुक्तांफले ए ॥ १३ ॥ थादव कटक ते वारो ए, हरख्यो सहु संसारो ए; नरनारो ए मिलियोठव

१५॥ बंधु मतीने रेवतीरे, सीता सुंदर शोभ न० ॥ वर राजीव सुलोचनारे, पति शैब्यानो लोच ॥ न० १६ ॥ ए
 च्यारे थादे करीरे, रमणी रूप अपार न०॥ श्री बलनछ्जी तणीरे, नारी अति हजार ॥ न० १७ ॥ इंद्र तणा सुख
 जोगवैरे, पुरव पुन्य प्रकार न०॥ अानंद रंग विनोदमारै, पाले राज मेरार ॥ न० १८॥ छुजोधन नामे जज्ञोरे, कुरु
 जंगलनो राय न०॥ इत तेहनो आबीयोरे, लाग्यो हरीजी पाय न० १९॥ कागल छुयोधन तणारे मांहे एह विच्यार
 न०॥ म्हारे तुम ठाकुर धणीरे, थाशु प्रेम अपार ॥ न० २०॥ प्रेम वधावण कारंणोरे, मुजने उपजी एह न० ॥ ठोरुना
 संबंधथीरे, निश्चे किजे नेह ॥ न० २१॥ थारे पटराणी तणोरे, पुत पनोतो होय न ॥ मुऊ नारी कुमरी जणोरे, व्याह
 कोवो सोय ॥ न० २२ ॥ देव जोगे एहवो हुबेरे, मुऊ त्रिय जणो कुमार न०॥ तुम्ह नारीने पुत्रीकारे, तोपण व्याह
 विच्यार ॥ न० २३॥ हरी हरखी बोल्यो सहिरे, ए वारु विधी वात न०॥ दोय घरा वधामणारे, अानंदमे दिन जात
 ॥ न० २४ ॥ ए साठमी ढालमारे, श्रीहरीजी सुख राज न०॥ श्रीगुणसागर सुरजीरे सवही विधी सुन साज ॥ न०
 २५॥ ॥दोहा॥ डुगोदक सुर निपरे, विलसे जोग विलास; सुखमणी अरे उपजे, श्री परजुन कुमार ॥ १॥ नामाने
 मन नावतो, भानु नलो गुण जाण; एहनो पण संबंधवर, सांजवो धरी कान ॥ २ ॥ नामाने आरत घणी, नामा
 करे उपाव; अमरख आपणमें पढे, ए जग प्रगट कहेवाय ॥ ३॥ ढाल ६१ मी ॥ देशी हमीरानी ॥ माहराने
 ताहरा करेहला, चरता एकण शिम हमीरा ॥ ए देशी ॥ नामा ठल ताके घणा, रूपमणी नानी सविश हो ॥ नामा ॥
 बाल न वांको करी शके, जो सबलो जगदीश हो ॥ नामा १ ॥ छुयोधननी वातनो, नामा जेद लहाय हो नामा ॥

रुखमणी उख देवा नणी, जाण्यो एह उपाय हो ॥ प्रा० प्रा० १ ॥ जेहनो कुवर प्रणेशे, सोक्य तणा शिर केश हो
 प्रा० ॥ तेहना पग तले मांनवा, ए उख ठाम विशेष हो ॥ प्रा० प्रा० ३ ॥ वये करी तनु करी हुं वनी, माहरे
 होशे नंद हो प्रा० ॥ रुखमणीने होशे नहि, आनंदे आनंद हो ॥ प्रा० प्रा० ४ ॥ इम जाणी रुखमणी कन्ह, वेगे
 मोकली दास हो प्रा० ॥ वात जणावी रुखमणी, दीधी अति सावाश हो ॥ प्रा० प्रा० ५ ॥ मे अनुमाने विचारीयो,
 नामा नीली प्राहि हो प्रा० ॥ खल खावानो मोहलो, शाह सुंदर नाम हों ॥ प्रा० प्रा० ६ ॥ उंचा उंची वांठना,
 नीचा नीची जाण हो प्रा० ॥ उंचा नीची मति नजे, तो होइ उचिंति हाणहो ॥ प्रा० प्रा० ७ ॥ सुकना मांहि शीरोमणी,
 वाणी सुकन सोहाय हो प्रा० ॥ सुख उखना अनुसारी, वाणी उपजे आय हो ॥ प्रा० प्रा० ८ ॥ हाम अठे जो
 होमनी, कानवी पामे उर हो प्रा० ॥ कानन खेपिक स्वर नणी, आंवा केरो मोर हो ॥ प्रा० प्रा० ९ ॥ केहेशे ते
 सेहेशे सही, आपा अलगी एह हो प्रा० ॥ रुखमणी तो रस रंगमे, वचन वदे ससनेह हो ॥ प्रा० प्रा० १० ॥
 माहरे तो नामा वनी, नामा जेह सोहाय हो प्रा० ॥ सोमे करवो सहि करी, कहे नामा शुं जाय हो ॥ प्रा० प्रा०
 ११ ॥ हरी हलधर साखी दिया, सोकां पानी होम हो प्रा० ॥ दीन न पिठाण्यो आपणो, किहुं पोंचे मन कोम हो
 ॥ प्रा० प्रा० १२ ॥ कोमल सेजे सोवतां, रजनीने अवसान हो प्रा० ॥ रुखमणी सुपन विलोकीयो, पेहेले देव
 विमान हो ॥ प्रा० प्रा० १३ ॥ बिजे कुंजर इंद्रनो, देखी सुपन ए सार हो प्रा० ॥ आनंदी मन आपणे, विनवियो
 नरतार हो ॥ प्रा० प्रा० १४ ॥ क्रश्र कहे कामनी सुणो, सुपन तणे प्रमाण हो भा० ॥ होशे कुवर कुल तिलो,

कोटि कला गुण जाए हो ॥ जा० जा० १५ ॥ मुक्ताफल सुक्ता विश, आइ उपज जम हा ॥ १॥ मदेव माता
 उदरे, आणी उपनो तेह हो ॥ जा० जा० १६ ॥ मधु चुपतिनो जीव जे, जणिने सुखकार हो जा० ॥ स्वर्ग वारमां
 शीचवी आवी लीयो अवतार हो ॥ जा० जा० १७ ॥ जामाई सुपना जला, देख्या पुन्य प्रकार हो जा० ॥ चुपतिने
 जाइ कह्यो, चुपति कह्यो सुविचार हो ॥ जा० जा० १८ ॥ स्वर्ग धकी चवी आवीयो, ए पण जीव उदार हो जा० ॥
 होम जितवा कारणे, आशा धरे अपार हो ॥ जा० जा० १९ ॥ पुन्य प्रमाणे मोहला, गुरु वंदे पोशाल हो जा० ॥
 दान शीथल तप जावना, चवविह् धर्म रसाल हो ॥ जा० जा० २० ॥ श्री जीन सेवा साचवे, संवर साथे प्रित हो
 जा० ॥ आश्रवां अलगी रहे, एतो मोटी रीत हो ॥ जा० जा० २१ ॥ उदर वसंता गर्जाए, रुखमणी मन उल्हास
 हो जा० ॥ आरसा प्रतीबिंब जुं, पेट न पीमा तास हो ॥ जा० जा० २२ ॥ गर्जे वये दीन श प्रत्ये, उदर न वाधे
 रंच हो जा० ॥ त्रवलि पेटे विलोकतां, सोक जख्यो परपंच हो ॥ जा० जा० २३ ॥ एठे जुग पट पटा, नहि; गर्जे
 अहि नाण हो जा० ॥ पण तो मायो मुंमता, जास सयल सयाण हो ॥ जा० जा० २४ ॥ साचाने सोच नहि, जुवा
 सोच अनेक हो जा० ॥ साचा सरल सनावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ जा० जा० २५ ॥ विन पुरे सुत जनमीयो
 गुन वेला गुन वार हो जा० ॥ रुखमणी अती सुख पाइया, परीयण हरख अपार हो ॥ जा० जा० २६ ॥ पुरुष वधाउं
 आविया, चुपति पासे जाम हो जा० ॥ प्रजुजी पोढ्यो पेखियो, पग तले वेग ताम हो ॥ जा० जा० २७ ॥ जामाना पण
 आविया. मोटा पुरुष प्रधान हो जा० ॥ शीराणे ते जइ कीयो, वडसणनो मंमाण हो ॥ जा० जा० २८ ॥ जेहना ठाकुर

जेहवा, तेहवा चाकर होय हो जा० ॥ जेनपति जो मानवी, एतो परतद जोय हो ॥ जा० जा० १९ ॥ एटले जगपति जागयियो,
 उवि बेबो होय हो जा० ॥ चिरंजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सोय हो ॥ जा० जा० ३० ॥ देव वधाइ पाइये,
 रुखमणी जायो नंद हो जा० ॥ नंदन निरखण सारीखो, दरशण परमाणंद हो ॥ जा० जा० ३१ ॥ राज चिन्ह बांभी
 करी, अवर अनोपम वस्तु हो जा० ॥ पुत्र वधाउआं भ्राणी, आपी राय समस्तु हो ॥ जा० जा० ३२ ॥ जाणी संचल
 पाबले, वांकि श्रीवे जोय हो जा० ॥ नामा सुत जाया तणी, लीये वधाइ सोइ हो ॥ जा० जा० ३३ ॥ एतो एकसवमी,
 भ्रली ढाल जलेरी होय हो जा० ॥ कहे गुणसागर दोय घरां, आनंद वरत्यो जोय हो जा० ॥ जा० ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ कश्च
 नरेश इम भ्रणे, शेषक सुणो विचार; मंत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मलावो वार ॥ १ ॥ मंत्रीसर आया सहु, नरपति
 दिये आदेश; पुत्र महोबव पुर तणी, शोना करो सुंविशेष ॥ २ ॥ ढाल ६३ मी ॥ राजा इसर्थ दिपतो ॥
 एदेशी ॥ पुत्र महोबव किर्जीए, मलीयो सहु परीवारोरे; रुखमणी सतनामा तणे, मंदीर हर्ख अपारोरे ॥ पु० १ ॥
 याचक जन जुगतशुं, दिजे वंठीत दानोरे; करुणा जावे कलजी, सुक्या बंधीवानोरे ॥ पु० २ ॥ तोरणनी रचना
 नली, उपर कलस उदारोरे; लहशति ध्वज अति घणी; दिसे घर २ वारोरे ॥ पु० ३ ॥ टोमे रचना केलनी, नारी
 नणे गुण गाथोरे; आरण कारण साचवे, कुंकुमनां दिए हाथोरे ॥ पु० ४ ॥ गुहीर खरे तव गोरमी, गावे मंगल
 च्यारोरे; धवल दिए तस आंगणे, वरते जय ३ कारोरे ॥ पु० ५ ॥ सही सुहागण सामटी, नारी आख्याणो लावरे;
 दोय घरां अति पुरतो, ते तो आदर पावरे ॥ पु० ६ ॥ ढोल उदामा, दमवके, शरणाइ सुख कारोरे; बाजां वाजे

कोटि कजा गुण जाण हो ॥ जा० प्रा० १५ ॥ मुक्ताफल सुक्ता विशेष, आइ उपजे जेम हो जा० ॥ कामदेव माता
 उदरे, आणी उपनो तेह हो ॥ प्रा० प्रा० १६ ॥ मधु जुपतिनो जीव जे, जणणिने सुखकार हो जा० ॥ स्वर्ग वारमां
 धीचवी आबी लीयो अयत्तार हो ॥ जा० प्रा० १७ ॥ नामाई सुपना नज्जा, देख्या पुन्य प्रकार हो जा० ॥ जुपतिने
 जाइ कह्यो, जुपति कह्यो सुविब्यार हो ॥ प्रा० प्रा० १८ ॥ स्वर्ग धकी चवी आबीयो, ए पण जीव उदार हो जा० ॥
 होम जितवा कारखे, आशा धरे अपार हो ॥ प्रा० प्रा० १९ ॥ पुन्य प्रमाणे मोहला, गुरु वंदे पोशल हो जा० ॥
 दान शीयल तप जायना, चञ्चविह धर्म रसाल हो ॥ प्रा० प्रा० २० ॥ श्री जीन सेवा साचवे, संवर साथे प्रित हो
 जा० ॥ आश्रवां अलगी रहे, एतो मोटी रीत हो ॥ प्रा० प्रा० २१ ॥ उदर वसंता गर्जए, रुखमणी मन उल्हास
 हो प्रा० ॥ आरसा प्रतीविव ज्युं, पेट न पीमा तास हो ॥ प्रा० प्रा० २२ ॥ गर्न वधे दीन २ प्रत्ये, उदर न वाधे
 रंच हो जा० ॥ त्रवलि पेटे विलोकतां, सोक लल्यो परपंच हो ॥ प्रा० प्रा० २३ ॥ एठे जुग पट पटा, नहि; गर्न
 अहि नाण हो जा० ॥ एल तो माथो मुंमता, जास सयल सयाण हो ॥ प्रा० प्रा० २४ ॥ साचाने सोच नहि, जुग
 सोच अनेक हो जा० ॥ साचा सरल सनावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ प्रा० प्रा० २५ ॥ विन पुरे सुत जनमीयो
 गुन वेला गुन वार हो प्रा० ॥ रुखमणी अती सुख पाइया, परीयण हरख अपार हो ॥ प्रा० प्रा० २६ ॥ पुरुष वधाने
 आविया, जुपति पासे जाम हो जा० ॥ प्रजुजी पोढ्यो पेलियो, एग तले वेठा ताम हो ॥ प्रा० प्रा० २७ ॥ नामाना पण
 आविया. मोटा पुरुष प्रधान हो प्रा० ॥ शीराणे ते जइ कीयो, वइसणनो मंमाण हो ॥ प्रा० प्रा० २८ ॥ जेहना ठाकुर

जेहवा, तेहवा चाकर होय हो जाण॥ जेनपति जो मानवी, एतो परतद ज्योय हो॥ जाण० जाण० १७॥ एटले जगपति जागथियो,
 उठि बेगो होय हो जाण॥ चिरंजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सोय हो॥ जाण० जाण० ३०॥ देव वधाइ पाड्ये,
 रुखमणी जायो नंद हो जाण॥ नंदन निरखण सारीखो, दरशण परमाणंद हो॥ जाण० जाण० ३१॥ राज चिन्ह ठांभी
 करी, अवर अनोपम वस्तु हो जाण॥ पुत्र वधाउअं प्रणी, आपी राय समस्तु हो॥ जाण० जाण० ३२॥ जाणी संचल
 पाबले, वांकि ग्रीवे जोय हो जाण॥ जामा सुत जाया तणी, लीये वधाइ सोइ हो॥ जाण० जाण० ३३॥ एतो एकसठमी,
 मली ढाल नलेरी होय हो जाण॥ कहे गुणसागर दोय घरां, आनंद वरत्यो जोय हो जाण॥ जाण० जाण० ३४॥ दोहा॥ ऋश
 नरेशर इम नये, शेषक सुणो विचार; मंत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मलावो वार॥ १॥ मंत्रीसर आया सहु, नरपति
 द्विधे आदेश; पुत्र महोबव पुर तणी, शोना करो सुविशेष॥ १॥ ॥ ढाल ६१ मी ॥ राजा इसर्थ द्विपतो॥
 एदेशी॥ पुत्र महोबव किर्जाए, मलीयो सहु परीवारोरे; रुखमणी सतजामा तणे, मंदीर हर्ख अपारोरे॥ पुण० १॥
 याचक जन जुगतशुं, दिजे वंढति दानोरे; करुणा जावे ऋलजी, मुक्या बंधीवानोरे॥ पुण० २॥ तोरणनी रचना
 नली, उपर कलस उदारोरे; लहशति ध्वज अति घणी; दिसे घर २ वारोरे॥ पुण० ३॥ टोमे रचना केलनी, नारी
 जाणे गुण गाथोरे; आरण कारण साचवे, कुंकुमनां दिए हाथोरे॥ पुण० ४॥ गुहीर खरे तव गौरमी, गावे मंगल
 गाथोरे; मंगल दिए तस आंगणे, वरते जय ३ कारोरे॥ पुण० ५॥ सही सुहागण सामटी, नारी आख्याणो लावोरे;
 दोहा "... देहार " ... ते तो आदर पावोरे॥ पुण० ६॥ ढोल छदामा दमवमे, शरणाइ सुख कारोरे; वाजां वाजे

आत घणा, नाच पात्र अपारार ॥ पु० ७ ॥ दिजे सोना सावटुं, वा गावेस विशेसारे; दिजे ह्यंवर हाथीया, मां
 मांहि थदेखोरे ॥ पु० ८ ॥ जुया नतीजी जाणेजी, वेढीं यहुने बोलावोरे; रितीशुं जातशुं प्रितशुं, आप थाप
 पावोरे ॥ पु० ९ ॥ सजन सह संतोखीया, संतोख्या सह आइरे; यथा योग्य जे जाणीया, दिधी तास वधाइरे ॥ पु०
 १० ॥ पुज्य पुरुष ते पुजीया, सह गुरु शेवा साथीरे; साहमी साहामण मानीया, कुल देवी आराधीरे ॥ पु० ११ ॥
 हुं समनावी अति घली, खांति न राखे कोइरे; पण ती देवां उपहर्यां, कोण सके नर होइरे ॥ पु० १२ ॥ एये
 विनोदमां, करतां कोमी प्रकारोरे; पांच विहाम्ना वारीया, ठवीनो अधीकारोरे ॥ पु० १३ ॥ एतो वासवमी जली दः
 क्हावे सारोरे; गुणसागर कहे सांजलो, केम होवे अपहारोरे ॥ पु० १४ ॥ दोहा ॥ रुखमणी नवनअपहः
 महा वनो डख जाण; सुर आप आयमी गयो, पसरयो जगतम पाण ॥ १ ॥ जली रीत ए पारको, डख देरः
 नवी जाय; होइ ती जलपण करे, नहीतर अलंगो थाय ॥ २ ॥ ढाल द ३ मी ॥ कहीए मिलशेरे मुनि
 एहवा ॥ ए देशी ॥ करमां आगे वलीयो कोइ नही, राव रंक एक साथोरे; रुखमणी सुतशुं सुख निंजा जजे, वि
 करे जगनापोरे ॥ क० १ ॥ रमणी रीे राती जगावही, गावे गित उदारोरे; वाजे मावल धौधोकारशुं, नाचे पात्र छ
 रोरे ॥ क० २ ॥ सुजट घळां धर पासे मुक्क्या, रखवालीने काजोरे; विविध प्रकारे आयुध धारणां, सुर रखा स
 साजोरे ॥ क० ३ ॥ करी हुशीयारी कश्च नरेस्वरु, सुख निंजा वसेथाइरे; अन्य कयांतर एतजे वितीयो, रुखमण
 डख दाइरे ॥ क० ४ ॥ हेम रथ राजा आगे जे हुतो, इंड मजात सराणीरे; मधु राजाइ जोर करी घणुं, साराणी

आणीरे ॥ क० ५ ॥ मोह वसे सो हेमरथ राजीयो तापसना व्रत धारीरे; सुगति पदवी लाधी रुयमी, करणी तो
 फल कारीरे ॥ क० ६ ॥ वेशी विमाने सो सुर एकदा, निज लीलाइ जायोरे; रुखमणी मंदीर उपर आवीयो, एतले
 यांनख लायोरे ॥ क० ७ ॥ देव विशेषे चित्यातुर थयो, किम मुक्त गतीनो जंगोरे; कांकोहे ठेरे डुखीयो जीवअप्रे; केको
 शत्रु विरंगोरे ॥ क० ८ ॥ केको मित्रजु कष्टे पुरीयो, चरम शरीरी देहोरे; मोटा सुनीवर सुरगती जंगनो, कारण जांख्या
 एहोरे ॥ क० ९ ॥ ज्ञान करी तव देखे देवला, मधुराजानो जीवोरे; रुखमणी पासे बालक पेखीयो, जाग्यो धेख अति
 वोरे ॥ क० १० ॥ इण पापीमे मदमाते घणुं, मुफ्तुं किधो जोरोरे; एहने ते फल आज देखाम्शुं, किधा पाप अधो
 रोरे ॥ क० ११ ॥ तब तो ए नृप हुतो समर्थ, हुं असमर्थ ते वारोरे; अब तो हुं समर्थ अति घणुं, ए असमर्थ
 अपारोरे ॥ क० १२ ॥ एम जाणीने देते दोषणुं, लिधो बाल कुमारोरे; रुखमणीनी ठाती आगेथी; किए हिन जाणी
 सारोरे ॥ क० १३ ॥ किडं किजेरे साजन सुन्नटणुं, आमंवर उठाहोरे; सह तारायण अब देखतां, चंडग्रशी जे राहोरे ॥
 क० १४ ॥ आशा कोकेहनी मति करो, आशा प्रचुने हाथोरे; रुखमणी सुति कुण मनोरथे, जाग्या आथन साथोरे
 ॥ क० १५ ॥ सुर आकाशे जाइ चिंतवे, कुण २ जाणस्ये मारुंरे; चरम शरीरी पुरो आजखो, ए जीन वचने वारुंरे ॥
 क० १६ ॥ तदक पर्वत खदीरा अटवीसं, आयो ते ततकालोरे; बावन हथी मोटी शीला तले, सुर चांण्यो ते बालोरे
 ॥ क० १७ ॥ निज कृत कर्मनो फल चोगवे, एम कही गयो तेहोरे; पुन्य विशेषे नखशिख लगे सहि, आवन आवी
 देहोरे ॥ क० १८ ॥ एतो त्रेसवमी ढाले जाणी यो, मदन हरण अधीकारोरे; श्री गुणसागर ए उपदेश अप्रे, पुन्य वमो

ससारा ॥ क० १ ए ॥ ॥ दाहा ॥ पुन्य सखाइ जेहनो, तेहनो पुरो आय; बाल न वंकी करी शके, जइ रुसे
जमराय ॥ १ ॥ नावे कोनस पण ग्रहो, ग्रहो बुरापण कोय; सरजाना अनुसारी, जलो बुरो जग होय ॥ ३ ॥
जात मात जलवाहिया, कंस कर्ण नीज माय; पण ते शुन कर्मा थकी, हुवा बनेरा राय ॥ ३ ॥ जीवाने तो सिला
तले, मारे प्रचु ते जोय; मदन सगरना नंद ज्युं, करता करे सो होय ॥ ४ ॥ रुपाचल वदण विशेषे, मेघकुट पुर नाम
जम संवर राजा जलो, राज करे गुण धाम ॥ ५ ॥ तेहने घर जल प्रामनी, कनकमाला सुकमाल; बेसी विमाने
दंयपति, आय गया ततकाल ॥ ६ ॥ बालक मुखने वायरे, उंची नीची शाय; पौढि शिला ते परगनी, ताम विलोकी
राय ॥ ७ ॥ उपानी अलगी करी, दीगो देव कुमार; सब विध सुंदर मनोहरुं, करतो हास अपार ॥ ८ ॥ ढाल
६ ४ मी ॥ ॥ सियल सरुतरुवर वरसे विडुं, तथा पयनीयाकी ढाल ॥ ए देशी ॥ मोमन मोह्यो मोहना, मोहन
रुप रसाल हो; खेंचर खेंचरणीस्युं कहे, लाल सबे विधी लाल हो ॥ मो० १ ॥ कोमल कुतल वांकन, शाम महासु
कुमाल हो; आवमी कोसो चंदलो, जाल जलो सुविसाल हो ॥ मो० २ ॥ भुह नमरकी उपमा, कर्ण सुवर्णा कार
हो; नयन कमल बल पापनी, सुक नाशा सुविध्यार हो ॥ मो० ३ ॥ मुख जाणे पुरो शशी, आठे लाल कपोल
हो; दांत कुली दाम्म तणी, अथर प्रयाल अमोल हो ॥ मो० ४ ॥ ग्रीवा कंबु सारखी, उन्नत अंस उदार हो;
कमल नालाठि निहारने, बांह तणो विस्तार हो ॥ मो० ५ ॥ उदर अनोपम शोचतो, कटि केहरीको लंक हो; जंघा
गंयंर सुं मनी, तनमें फोन कलंक हो ॥ मो० ६ ॥ सोवन वान सोह्यामणो, चंचल पाणी सुं पाय हो; कामवेव ए

उपज्यो, शोभा कहि न जाय हो ॥ मो० ७ ॥ राता सात सुलक्षणा, कर पग लोचन अंत हो; अधर होठ नख तालुज
 जीहां एतो ए कंत हो ॥ मो० ८ ॥ उन्नत ए खट ठे सहि, कक्षा कुख ललाट हो; खांध नाक उंचो हियो, घमीयो
 देव सु घाट हो ॥ मो० ९ ॥ दिर्घ पंचे देखीइं, नयणा सरने बांह हो; नास्या थमाने हम्बची, लांवि न नमे बांह
 हो ॥ मो० १० ॥ सोक्ष्म पंच प्रशंसीइं, पर्वांतरने केश हो; नह देह दशन वली, सोक्ष्म मृड शुं विशेष हो ॥ मो
 ११ ॥ लघु ग्रीवा जंघा जलि, लघुहि पुरुपाकार हो; स्वर गंजी रस राहींइं, नाची सत्व सुखकार हो ॥ १२ ॥ जाल
 विशाल वखाणियो, पोहले माथे इश हो; पोहलि जाती ठे घणी, लक्षण ए वत्रिस हो ॥ मो० १३ ॥ सर्व गुणाकर
 साचलो, सर्वाहि शोभ नीध्यान हो; दैत्य महा रीपुजी तणो, दर्शण अमृत पान हो ॥ मो० १४ ॥ हेज घणे उवाइयो,
 लीयो कंठ लगाय हो; सुह अने शीर जुंवता, राजा अति सुख थाय हो ॥ मो० १५ ॥ राजा राणीसुं कहे, तुज तुवो
 कीरतार हो; सर्व सुलक्षण गुण निलो, दीयो एह कुमार हो ॥ मो० १६ ॥ राणी राजासुं कहे, थारे बहुला पुत हो;
 सधला में ए नान्हनो, किसो वधे घरसुत हो ॥ मो० १७ ॥ राजा मुख तंबोलशुं, तिलक कीयो शिर तास हो; युवराजा
 पद थापियो, राणी जाणी उलास हो ॥ मो० १८ ॥ उर्जन रुवो सुं करे, जेहना शुभ्र अंकुर हो; मङ्गल जीहां
 जीहां संचरे, तिहां ३ वाधे नुर हो ॥ मो० १९ ॥ राणी बालक जीलीयो, जाणी जाचो रथण हो; प्राण थकी, प्यारो
 खरो, पामी अधीको चयन हो ॥ मो० २० ॥ राजा मंदिर आवीयो, मलियो सहुं परीवार हो; राणी नंदन जाइयो,
 बरत्यो जयशकार हो ॥ मो० २१ ॥ महा महोत्सव मांणीयो, बाजे ढोल निसांण हो; मंगल गावे गोरमी, दीजे वंठित दान

हो ॥मो० ११॥ कीधी शोला पुर तणी, मिनीया सहु साज हो; वंदीखाना मोकलां, कीधां सीध्यां काज हो॥मो० १३॥
 वारसमे दीन थापियो, राजा नाम उदार हो; पर दमवाने कारणे, श्रीपरबू मन कुमार हो॥मो० १४॥ जीम शवाधे वये करी
 तिम १ वाधे उर हो; हयंवर गयंवर साहेवी, कण कंचन नरपुर हो ॥ मो० १५ ॥ कमल १ जीम संचरे, नमरो
 नोगी नाम हो; हाथोहाथे संचरे, तिम ए कुंवर काम हो ॥ मो० १६ ॥ स्वघर आवर पामीए, एतो सुधी वात हो;
 पण जेपर घर सादरो, ए अधीकी अखियांन हो ॥मो० १७॥ ढाल जली चोसतमी, खेचर घर उल्हास हो; गुणसा
 गर दिपक जीहां, तिहां १ करे प्रकाश हो ॥मो० १८॥ श्री परबुमन हरया पठे, वितक वित्यो जेह;
 संद्वेपे तुमे सांनजो, मुज कहेंतां नवि तेह ॥१॥ ततकण जागी रुखमणी, बाल न देखे पास; हइने जाल उठी
 घणी, आवी मुठो तास ॥ १ ॥ सचेतन किधी सति, फिरी १ मुरठाय कुमर न सोधयो पाइयो करुणापणो विल
 लाय ॥३॥ ॥ढाल ६५ मी॥ हरी विण राधा किम रहे ॥ए देशी॥ हाथाशुं हयमो हणे, कुरलेसा असराल
 दिन वचन नांखे घणां, किंधुं कस्युरे दयाल ॥ वि० १ ॥ विलवे राणी रुखमणी, रेशुं दरसु कमाल; किहां गयो
 मुजने तजी, ए डख जालकराल ॥वि० १॥ उठी उठे कुर करी, वेद न सहि न जाय; जाया तुज सम कोनही, जे दे-
 ख्यां सुख थाय ॥वि० ३॥ गुनधी मीठी खांम ए, खांमा साकर जोय; साकरधी अमृत नलो, पुत न पुगे कोइ ॥वि० ४
 पुत पनोतीमां गले, पुति सपुति नाम एमेरे अवतणी नुतणी; विण पुताए काम ॥वि० ५॥ दिश सुनी विण बांधवा,
 घर सुनो विण पुत; पुत पनोता बाहीरो, कुण राखे घर सुत ॥वि० ६॥ बहुले मिलीए साजने, होत घणां गुण ग्राम;

पुत पनोता बाहीरो, कुण लेवावे नाम ॥ वि० ७ ॥ जली सपुती पंखणी, इंदां पालणहार; चुगन लावे रत्नी चांचमी,
 उंलीए मुख पसार ॥ वि० ८ ॥ हुंकां सरजी मनुषणी, रे कुमा किरतार; गर्भ मांहि गली नही, आपी आरती
 अपार ॥ वि० ९ ॥ जन्म समे मुद्द नही, जेळी न पदी तुट; रोग तणो कारण लही, न मुद्द हड्डमा फूट ॥ वि०
 १० ॥ बाल रंगना ख्यालमें, पाती लेवा जात; हुं कानंमशी एह रुखें; मरी जाती विललात ॥ वि० ११ ॥ तो कांहुं
 आवी हरी घरे, कां पाम्यो बहु मान; सोक सालथी सहेजहि, बूटी जातां प्राण ॥ वि० १२ ॥ तो कां सुपना देखिया,
 कां जायो वरनंद; नंद तो आनंद करी गयो, किशुं करुं मतिमंद ॥ वि० १३ ॥ कांहुं अधीकी बजबजी, कामें पामी
 होम; मुज्ज डखियारीनां सखी, कोड न पुगी कोम ॥ वि० १४ ॥ चहूमी तो गीरवरां, नाखि तोरे पयाल आंबो वावि
 आंगणे, तबही लियो उलाल ॥ वि० १५ ॥ रे पापिष्ठ अनिष्टतुं, रे छष्टनिठोर; देव दया नहि तुज्जकने, रांक साथे शो
 जोर ॥ वि० १६ ॥ हुं जाणुंथी साहरे, सहु वातां सुविसाल; खार धरी ठेदी सही, देव मनोरथ माल ॥ वि० १७ ॥
 पुढवी ठेदन चेटनां, में किधी बहुवार; सर फोम्यां छह सोसव्यां, अणगल निर अपार ॥ वि० १८ ॥ आग्य उल्ला
 वी निरशुं, देव दीधां वनमांहि; वाय कराव्या विंजणे, मंदाव्या सढ प्रांही ॥ वि० १९ ॥ फूलण मसली पावशुं,
 चांभ्या नव अंकुर; फलमो लेवा कारणे, बेठी होइ सुर ॥ वि० २० ॥ बरंझीना वध किया, मारी जुने लिख किमी
 नगरां वाहियां, ते मुज्ज लागी शिख ॥ वि० २१ ॥ बाणे विंठी चांपीया, लोक वताया साप; माला तोम्या चरकलां,
 जाग्या मोटा पाप ॥ वि० २२ ॥ पशु पंखणी मनुष्यणी, बाल विठोहो दिध; उन्हो जलदर पुरीयां, प्रोढा पातिक

किथ ॥वि० २३॥ माढी जाल पसारीयां, हरण पाना पास; कम कसाइनां कियां, गोवाकरां वियास ॥ वि० २४ ॥
 मोसामर्म प्रकाशीयां, नांख्या कुम्हा अपराध; परने मोम्हा करकना, ते में एफललाध ॥ वि० २५ ॥ चोरी किधी
 परतणी, लीधा हिरालाल; लाल निरोपम निगम्यो, होइ रही वेहाल ॥ वि० २६ ॥ साच न राख्यो शिबशुं, जेहथी
 लहीए लील; जगमांहि अपजस लियो, शेवी २ कुशील ॥ वि० २७ ॥ द्विण लोटे उटेजइ, द्विणमें चढे चोधार;
 कहीए देसुं मुज नान्हमो, प्यारो प्राण आधार ॥ वि० २८ ॥ रुखमणीने डखे सहु डखी, ऋश्रे सुएयो तव सोर;
 धशी आब्यो उतायलो, ग्रहो२ सुत चोर ॥वि० २९॥ ऋश्र हिये डख संवरी, त्रियशुं कहेशुं विच्यार; नंदन मीलशे
 ताहरो, करशुं सोइ प्रकार ॥वि० ३०॥ जे पांखरीयां परगमा, शोधन काजे सोय; मोकलीया फीरी आवीया, काज
 न सरीयो कोइ ॥वि० ३१ ॥ सुसति किधी सुंदरी, वारु बचन कहां वाण; एतले चाली आवीयो, नारद पुन्य प्र
 मांण ॥वि० ३२॥ ढाल एतो पांसवमी, विजो गणी ए नाम; गुणसागर सुन्न कर्मथी, सरसे सधला कांम ॥ वि०
 ३३॥ ॥दोहा॥ नारद नांखे सुण सुता थरतीम कर लीगार; तेहने थरती शुं करे, जेहनो हरो जरतार ॥ १ ॥
 जे तुज कुखे उपज्यो, जेहनो माधव तात; न मरे उठे थावपे, ए निश्रे विधी यात ॥२॥ पुर्व जवंतर वैरीए, किथोडे
 अपहार; दिन थोमे शोधी करी, मेजुं थाणी कुमार ॥ ३ ॥ जो ए कारज नवी करुं, तोशुं माहरो नाम; नामानाम
 न जावतां, जाणे सस्थां सव काम ॥ ४ ॥ ज्ञान विन्या निश्रे नही, जलफलीयां शुं थाय; श्रो मंथीर स्वामी कने,
 चाली गयो रुपीराय ॥ ५ ॥ देइ प्रदक्षणा विधी करी, प्रजुना प्रणमी पाय; चीन जाणो मांणस तणी, रह्यो तखत

तेले जाय ॥६॥ लघु काया करमें करी, जाणीने आकार; चक्री चतुराङ्क करी, पुढे कसल विचार ॥७॥ ढाल ६६
मी॥
बेहनी जेहनो जेहशुं रंग ॥ए देशी ॥ श्रीमंथरि कहोने एह विचार, स्वामी कहे सुण राजीयारे; च
रित तणो नही पार ॥श्री १॥ शील शिरोमणी गुण निलोरे, नारद नाम उदार; भरत खेत्रथी आवीयोरे, कांडक
पुबण हार ॥श्री ३॥ द्वारामती नगरी चलीरे, कल्ल नरेशर तास; पटराणी वर रुखमणीरे, शील तणो सहवास ॥
श्री० ३॥ तेहनो नंदन अपहरयोरे, बवी रातीमोजार; बेरी बेर न विसरेरे, ए जगनो ववहार ॥श्री० ४॥ गाम नगर
गीरी कंदरारे, सोधाव्या ते राय; सुय न लाधी तेहनीरे, अति डख आपे माय ॥ श्री० ५॥ निश्चे करवा कारणोरे,
ए रुपी आव्यो जोड; पढ़ करे जे जेहनोरे, तेही डखे डखियो होड ॥ श्री ६ ॥ पट पंन नायक विनवेरे, स्वामी
प्रकासो एह; कुण बैरी जेह अप हरयोरे, बाल किहांठे तेह ॥श्री० ७ ॥ कालकेतले आवशरे, कुंवर कुल शीणगार
मात पित्या मन नावसेरे, निसुणे परखदावार ॥ श्री० ८ ॥ मात कन्हेशी बालुनोरे, देते लियो जाम; तदुक पर्वत
शीला तलेरे, पाम्यो खेचर ताम ॥ श्री० ९ ॥ दिनश वाधे वये करीरे, चंद कला जीम जोय; अरि त्रिय मित्रहि
ढातीयारे, साल सरीषो सोय ॥श्री० १०॥ पौमस लाच लही चलोरे, वारु विद्या दोड; मलशे मायवापनेरे, वरस
सोलमे सोय ॥श्री० ११ ॥ मलणतणी सहि नाणकारे, जणावीए सार; पान्हो चमशे पदमनीरे, उपजशे अति प्यार
॥श्री० १२॥ होस्ये सुकि वावनीरे, जलशुं नरीत अपार; विकशीत पंकज पांखनीरे, नमर करे गुंजार ॥ श्री० १३ ॥
सुका बृद्ध अज्ञोकजीरे. फलस्ये विवीध प्रकार; रतु विणं फलं फूले नस्थारे, तरुवर अवर अपार ॥ श्री० १४ ॥

कोइ लनाट हु रु मारे, मोरा केरा नाच; थारो विविध वयामणारे, सुंदर मेली साच ॥ श्री० १५ ॥ मुगा चवन ॥ १ ॥
 सपेरे, बांका सरला होय; अंधा लहेस्ये आंखमीरे, रुपकरुपा जोय ॥ श्री० १६ ॥ इण लक्षणे माजाणासरे, ॥ १ ॥
 आगम वात; सांजल सुष सुलक्षणारे, बपरीना अन्नदात ॥ श्री० १७ ॥ देशशु मग्य सोध्यामणारे, सालीसुः ॥ १ ॥
 प्रयान; सोमदत नामे जनेरे, ब्राह्मण गुणनो जाण ॥ श्री० १८ ॥ तसअग्नेली कामनीरे, नंदनवर अर्जीधान; ॥ १ ॥
 भुती गुण आगजारे, वायु जुती मुजाण ॥ श्री० १९ ॥ श्री नदी वर्धनगुरु जलारे, आया विपनमोक्षार; करवा ॥ १ ॥
 पयारीयारे, बंधव दोष ते वार ॥ श्री० २० ॥ विच मटयो मुनी सत्यकीरे, नांखे वचन विलास; विप्र किहां तुम् ॥ १ ॥
 लीयारे, करवा वाद छल्हास ॥ श्री० २१ ॥ होम किसी हारघा तणीरे, विप्र कहे ल्यु दिव्य; थाप्पो वाद विशेष ॥ १ ॥
 विप्र न माने शीख, ॥ श्री० २२ ॥ मुनी नांखे पुत्रो तुम्हरे, संशय होवे जेह; हमने संसय कोइनहीरे, तुम्हे ॥ १ ॥
 संदेह ॥ श्री० २३ ॥ तुम्हे किहांथी आवीधार, नांखो विप्र विव्यार; हम आया निज घर शकीरे ए स्यो प्रश्न ॥ १ ॥
 ॥ श्री० २४ ॥ ए आगम पुत्रुं नहीरे, पुत्रु परन्नव वात; परन्नव कुण कही सकेरे, होइ माणस मात ॥ श्री० २५ ॥
 विप्र सुणो परन्नव तणारे, नांखुं एह विव्यार; इणही आमि विप्र हुतारे, नामे प्रवर इदार ॥ श्री० २६ ॥ शो ॥ १ ॥
 करतो घणीरे, हल खेमवा जाय; आयो जलहर वमहिरे, शो घर मुखो थाप ॥ श्री० २७ ॥ सात विहाजा वरशो ॥ १ ॥
 जज्ञहज धार अखंरु; उवराम्बो दिन आगमेरे, व्यापी सुख प्रचंम ॥ श्री० २८ ॥ जंबुक युग तिहां ॥ १ ॥
 यारे, पाथो नामी तोरु; पेट आफरीनुं ढाल ज्युरे, चाल्या दशहि ठोम ॥ श्री० २९ ॥ सो जंबुक तुम्ह इजानं ॥ १ ॥

नहि संदेह लगार; प्रत्यय कारण सांज्ञल्योरे, आगेएह अर्थीकार ॥ श्री० ३० ॥ खेत धणी तिहां आवीयोरे, खीज्यो
 देखी जाम; जंबुकनी करी प्राथमीरे, मेली उपर वान ॥ श्री० ३१ ॥ जोनपति जो ब्राह्मणोरे, जाइ देखो सोय;
 लोक गया तिहां देखवारे, वीप्र खीसाणो होय ॥ श्री० ३२ ॥ ए बासवमी ढालमैरे, निर्धाटण मीथ्यात; गुणसागर
 आगे कहेरे, एतो वारु वात ॥ श्री० ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ सुनी प्रांखे नवियण सुणो, धरी परतीत अप्पार; प्रवर
 विप्रनी आगलें, चरित कहुं सुविच्चार ॥ १ ॥ हिंस्या कर्म समाचरी, काल कियो तिहि वार; मोह वशे आवी लियो,
 नंदन घर अवतार ॥ २ ॥ देखी मंदीर सालिया, जाति समर्ण लाध; पुत्र पिता जननि बहु, केम कहुं अप्पराध ॥ ३ ॥

एम जाणी सुन रह्यो, लोणा सुंगो नाम; सुनि नाषित सांचुं वदे, आगे बज्जो ताम ॥ ४ ॥ ढाल ६७ मी ॥

॥ सुग्रीव नगरी सोह्यामणीजी ॥ ए देशी ॥ चक्री नांखे देवशुंजी, तेह सुनीवर केम; बोलाव्यो प्रांज्या चलीजी,
 सुणवा लाग्यो प्रेम ॥ १ ॥ जिनेश्वर धन २ थारो ज्ञान, संशय तिमर निवारवाजी, जाणे उग्यो प्राण ॥ जी० १ ॥
 सुंगशु मुनिवर कहेजी, ए जगनो बवहार; माता थाये दीकरीजी, पुत्र पिता अवतार ॥ जी० ३ ॥ वहिन फीरी
 होय सोकनीजी, बंधव वैरी थाय; विद्ध लहे मुखपणोजी, मुख विद्ध कहाय ॥ जी० ४ ॥ ठाकर ते चाकर होवेजी,
 चाकर ठाकर होय; निर्धन ते धने आगलाजी, सधन निर्धन होय ॥ जी० ५ ॥ ए बवहारे वरततांजी, दोष न एक
 लगार; सुगो चापा बोलियोजी, लीधो संजम चार ॥ जी० ६ ॥ हारया वाद विशेषथीजी, होइ खीसाणां दोय; घर
 आव्या पिय मायजी, अति खीजाव्या सोइ ॥ जी० ७ ॥ साधु उपद्रव्य कारणोजी, राति आव्या चाल; यह

उपप्लव्य टालियोजी, धंभ्या ते तत्काल ॥जी०८॥ करुणा आणी अति घणीजी, गोमाव्या ते राय; दोइ बंधव माप
वापसुंजी, हृद्व्यां समकित पाय ॥ जी० ९ ॥ माय वाप ते मुलगेजी, माग लाव्या जाण; देश व्रति होइ बांधवाजी,
आराधन प्रमाण ॥जी०१०॥ पेहेले स्वर्ग सुनदणजी, पंच पत्यो पम थाच; दोइ बंधव देवताजी, विलसे पुल्य प्रजाच
॥ जी० ११ ॥ नाम अयोध्या ठे नलीजी, नगरी अति अन्निराम; सत्रुजय नामे नलोजी, राजा गुणनों धाम
॥जी० १२॥ शेर सहु मांहे वमोजी, सागर दत्त सुजाण; नारी नामे धारणीजी, पाले अरिहंत आण्य ॥जी० १३॥
देव चविने उपनाजी, शेर घरे संतान; माणिनच मनोहरुजी, पुराण भद्र प्रधान ॥ जी० १४ ॥ प्रज्ञा वले पढिया
घणाजी, जोवननि वय पाय; परणी सुंर सुंदरीजी, सुखमें दीन जाय ॥जी० १५॥ श्री महेच्छ मुनी स्वरुजी, वनमें
आया जाण; राजा सेठ सधावियाजी, सुणवा श्री गुरु वाण ॥ जी० १६ ॥ वाणी सुणी वैरागीयाजी, हुया संजम
धार; श्रावकना वत आदरेजी, तव ते शेर कुमार ॥जी०१७॥ काल केतले आवीयाजी, साधु दया प्रतीपाल; वंदन
जातां वाटमेंजी, मलियो एक चंमज ॥ जी० १८ ॥ तेहने साथे कुंबरीजी, दोइ साथे प्रेम; छट जाती शुं उपजी
जी, हेत जणाव्यो केम; ॥ जी० १९ ॥ श्रुनि अने चंमलनेजी, हेज हिंडं न समाय; नयण जणावे नेहलोजी,
अचरज कह्यो न जाय ॥जी०२०॥ ब्यारे आयां चालकेजी, श्री मुनिवरके पास; संशय हरवा मुनि कहेजी, पुर्व भवं
तर तास ॥ जी० २१ ॥ एह थकि नवति सरेजी, मात पिता तुम्ह जेह; समकित धर्म वागधीयोजी, तेहनो फल
ठे एह ॥जी०२२॥ ब्राह्मण नव पहिले हुवाजी, जित शत्रु राय उदार; ब्राह्मणी होइ रुखमणीजी, राजा कीधी प्यार

॥ जी० ३३ ॥ वरस सहस सुख भोगवीजी, नरगे पोहतो नृप; मृग हुइ मानस हुवोजी, थिउ गजराज अनूप ॥ जी०
 ३४ ॥ जाति समर्ण ज्ञानसुंजी, अणसण दिवस अढार; सुरगतिना सुख भोगवेजी, एह चंमाल विचार ॥ जी० ३५ ॥
 ब्राह्मणी नव भ्रमी खाननिजी, पामी गती विपरीत; पुरवला संबंधीजी, मांही मांहे प्रीत ॥ जी० ३६ ॥ समकीत धर्म
 ग्रहवियोजी, श्रावकना व्रत बार; अणसण मास जु एकनोजी, आराधी अती सार ॥ जी० ३७ ॥ पहिले सुरलोके
 गयोजी, ते चंमाल ते वार; पंच पत्योपम आउखोजी, नित्य जिहां जय कार ॥ जी० ३८ ॥ श्रुनि पण दिन सातनोजी,
 अणसण पाल्यो जोय; काल करी नृप कुंवरीजी, तिणहि नगरी होय ॥ जी० ३९ ॥ संववर मंनप मांमयोजी,
 आया राय अनेक; देव करे समजावणीजी, कुमरी लहे विवेक ॥ जी० ४० ॥ चारित्र पावी नीरमलोजी, पाम्या सुर
 अवतार; एह प्रसंगे नांखीयोजी, काम नणी विस्तार ॥ जी० ४१ ॥ ए जीव दोइ शायस्येजी, बटपुर केरा नाथ; कंचन
 रथने चंडाजाजी, राजा राणी साथ ॥ जी० ४२ ॥ अणसण आराधी खरोजी, बंधव दोइ सुजाण; स्वर्ग सुधमें
 देवताजी, पांच पत्योपम मान ॥ जी० ४३ ॥ ए सणसठमी ढालमेंजी, समकीत सुधी देख; गुणसागर आराधीयाजी,
 पामे फल शुं विशेष ॥ जी० ४४ ॥ दोहा ॥ कुशल घणोढे कोसला, नगरी अति मंदाण; पद्मनाच जगपर गनो;
 राज करे राजान ॥ १ ॥ नाम प्रणामें धारणि, तास धारणि नार; शिलवंति साची सती, सत्यवंति संसार ॥ २ ॥
 सुरलोके सुख भोगवी, बंधव दोइ उदार; राणी उरे उपना, युगलपणे अवतार ॥ ३ ॥ वना तणो मधु नाम वर,
 लघुनो कैटन नाम; थापियो महा मोहोबवे, कुमर दोइ सकाम ॥ ४ ॥ परणावि यौवन पणे, मधुने दीधो राज; युवराज

पदवि लघु न्रणि, नृप सास्या निज काज ॥ ५ ॥ ढाल ६० मी॥ ॥ शांति जिणंद सोजागी, हुंतो धयो िन .
 गुण रागी ॥ ए देशी ॥ राजा राज करंत, युवराजा जयवंत; सुरी चंदनी जोम, पुरे मन केरा कोम ॥१॥ सारे परःना
 काज, जगमांहि जस गाज, सत्रु कंद कुदाल, मोटा जेह चुपाल ॥२॥ एक दिन सुण्यो कोलाहल, नृप पुत्रो ए .
 कल १; प्रतिहारीयो नासे, स्वामी देश विणशो ॥३॥ न्रीमसुं नामे भुपाल, दुर्ग बले सुविसाल; पशु माणस .
 जाय, उजम देश ए थाय ॥ ४ ॥ नृपति लाग्यो जइ चाहे, दुर्ग तणो बल साहे; फोज फीरी तव थावे, पावो नेर
 मचावे ॥ ५ ॥ पुर बाहीरथी जे पावे, तेतो लेइ सिथावे, तेथी ए सहु लोक, पाढेठे प्रचु पोक ॥ ६ ॥ एम सुः
 ते राव, देइ दगमे घाय; हयंवर गयंवर गाजी, दलवल अति घणो साजी ॥७॥ चढीयो वार न लाइ, रेणु रही गंग
 ठाजी; वाटे सुर. वधाइ, कायर भुजशी धाए ॥ ८ ॥ आया वटपुर चाली, न्नावी सके कुण ठाली; हेम रथ सः
 आयो, राय तणे मन जायो ॥९॥ हेम रथ हाथगुं पोचे, आपे आप विगोचे; नृपने मंदिर लावे, जाणे नारी गः
 ॥१०॥ आइर अति घणा किया, जमवा वेसण दिया; इड प्रनापट नारी, साये कहे अविब्यारी ॥ ११ ॥ न्नाः
 नाजग फलीयो, आज विहामने ए बलीयो; आपुण पिरसणो ए किजे, राय तणो मन रिजे ॥१२ ॥ कामनी वः
 बोले, नृपतुं कां मममनेले नृप नुजंगम कालो, तेहथी दिजे टालो ॥ १३ ॥ नटकी बोलीयो इस, मन आणी .
 रीस; एवमने स्यो अनीमान, तुंतो दासा समान ॥१४॥ राणो पीरसवा आवी, रायतणे मन नावी; राजा रीः
 जाणी, उलखीयो मन राणी ॥ १५ ॥ राजा उठी सीयायो, ततकण मंत्री बोलायो; ए राणी घर लावो, हः

प्रेम मीलावो ॥ १६ ॥ मंत्री राय संकेत, चाढ्या कटक समेत; जुपती श्रीमशुं अनीयो, सुर महार्ण लनीयो
 ॥ १७ ॥ अगमो अति घणो लाग्यो, भुपती नीमजी चाग्यो; बांधिने जव लीयो, कारज रायनो सीधो ॥ १८ ॥
 राजा पावो ए वलीयो, मन मथ भुते ए ठलीयो; तन मन रागस्युं ए राब्यो, राणी शुं मन माब्यो ॥ १९ ॥ ठमा
 पयाणे ए आवे, वटपुर वाट जुलावे; मंत्री मंत्र उपायो, राय आयो ध्याये आयो ॥ २० ॥ ए अणसवमी ढाल जीती
 आयो जुपाल; श्रीगुणसागर राय, राजाजी वयर वसाय ॥ २१ ॥ दोहा ॥ राय अयोध्या आवीयो, मनमें अति उचाट
 खीजी कहे केम भुलीयो, वटपुर केशी वाट ॥ २२ ॥ वाचा पालतुं आपणी, अहो मोटा प्रधांन; सोवाताकी वात ए, जो
 चाहे मज्ज प्रांण ॥ २३ ॥ कलीमल अरती असुख अती, सुता निंदम जोय; अन्न पाणी चावही, सोक्यो जाइसोय ॥ २४ ॥
 रायकुमरी नवयौवनी, साथे नमन राजान; इंड प्रना राणीहीए, साले साल समान ॥ २५ ॥ सखेहांतो डखलहे निखेहां
 सुख होय; तिल सरसव जग पिलीए, रेतन पीले कोय ॥ २६ ॥ रागे वाह्यो उकले, वैरागी समनाय; चोल मजीवा
 रस लीए, बाकसन विमसलाय ॥ २७ ॥ ढाल ६ ए मी ॥ नेमस्त्र विनती मानीएजी ॥ २८ ॥ देशी ॥ राजेशर
 कहीयो मानीएजी, कहे मंत्री ससुजाण ॥ २९ ॥ ए टेक ॥ कुविसन केरो संग न किजे, कुविसन डख दातार;
 तिए मांही ए अति मोटो, परत्रीया केरो प्यार ॥ ३० ॥ १ ॥ विण दोरे ए बंधन कहीए, विण व्याधे असमाध; विण
 काजल ए कालीम कहावे, विण मांदिरा असमाध ॥ ३१ ॥ २ ॥ आंखुं निंदो निंद तणोदय, द्विण ३ दाजे देह;
 तेहने नित्य चंड बारमोरे, जेहनो परघर नेह ॥ ३२ ॥ ३ ॥ वरस सात साढानो आंख्यो, थावरनो अति लाग; जाव

जीव जगे ए श्रुति पीठे, पर रमणीना राग ॥ रा० ४ ॥ जगमहि अपजसनो पम्हो, आपदनोरे संकेत; शिवपुर धारक
 पाट क्हावे, पर रमणीनो हेत ॥ रा० ५ ॥ परनारी मुख जोतां पलटे, पलक २ जेतीचार; ते तोहि चर्य पचेवो, कुन्नी
 नरकमोजार ॥ रा० ६ ॥ पररामा शुं राग करंता, देवा छव्य चिणांस; साधृसा सातमो ठांफी अनेरो, वामन विसे
 तास ॥ रा० ७ ॥ राजा चांखे सुण मंत्रिस्वर, ए सव साची वात; पण माहरे मन तो रढ लागी, कंस सभा दिन
 जात ॥ रा० ८ ॥ पंखि पतिने दिवसे न सुजे, राते न सुजे काग; मुज्जे तो दिन रात न सुजे, केहेण तणे नहि लाग
 ॥ रा० ९ ॥ ढोल वजावे ढोलियारे, पण वाहरे नवि जाय; हेतवंता तो हेत वतावे, जोर न कोइ थाय ॥ रा० १० ॥
 एतले रतु राजा चलि आयो, नामे वसंत वसंत; वनराजी फल फूल वीराजी, लोक हसंत रमंत ॥ रा० ११ ॥ वामर
 ना राय बोलाया, खेलाण कोमीस गण; इंड प्रनागुं राजा तेम्यो, हेम रथ प्रीत प्रमाण ॥ रा० १२ ॥ रमणीइं राजा
 समजाव्यो, एं मुज उपर पेल; मधु नृप मांम्यो मुख प्रिउमा, मकर २ मन मेल ॥ रा० १३ ॥ रावण पर त्रिया
 दोष न जाण्यो, राम हेम मृग जेम; जुया छपण राय युधीटर, जाणी शक्यो नहि तेम ॥ रा० १४ ॥ वात अनेक
 कहि समजावे, राय न माने एक; होण द्वार साधे कुण बोलियो, ए नर थाण ववेक ॥ रा० १५ ॥ राणी लेइ आयो
 राजा, मधु राजा सुख पाय; खेलि वसंत ज्युं लोक विसर्ज्या, राणी राखी राय ॥ रा० १६ ॥ पटराणी करी थापी
 सुंदरी, मधु राजा मन रंग; सुख माने ते विविध प्रकारे, इंड इंद्राणी संग ॥ रा० १७ ॥ हेमरथ राजा वात सुणी जब,
 विव्दल थयो थपार; बोलिया साधे जोर न चाले, अइ थइ कर्म विचार ॥ रा० १८ ॥ खिया रांवे खिण जोवे इह दिश,

खिण आगण खिण सेज; खिण गोखे चव वारे देखे, फाटे हइमो हेज ॥ रा० १ ए ॥ बख विहुणो चिकल रूपे, धुले
 धुसरी अंग; प्रीया श मुप अथीक पोकारे, सबहि वात विरंग ॥ रा० २ ॥ पुरी अज्योध्या चालि आयो, नर्म पड्यो
 चुपाल; नारी निरखणनो अजीबापी, साथे फरे बहु बाल ॥ रा० ३ ॥ सोरे सुणतां गोखे चढिने, नारी निहाल्यो
 नाथ; ध्याय मोकली लीयो बोलाइ, डुर करी सब साथ ॥ रा० ४ ॥ कां तुं एहवो पुठे पदमनी, पुरव प्रेम प्रकार;
 नारी विठोहो महा डखवाइ, कवण अठे तुफ नार ॥ रा० ५ ॥ तुं प्यारी हुं प्रितम थारो, राखले माहरा प्राण;
 पहिलि शीख न मानी पापी जल वहि गयो मुलतान ॥ रा० ६ ॥ जारे जाके जाण लाहिने, राजा करशे नाम; नाम
 पुरुपनुं कोइ न थाशी, नाम अइ तुं राम ॥ रा० ७ ॥ कोहि रावने मांहि कंसारी, पमिया निपट निकाम; बैर
 जातिने बाहिर हींनि, न लहे एकहि दाम ॥ रा० ८ ॥ चितमा नींतर चिणगट लागी, साल सरिखो बोल; साचो
 शिल सलुणो जाण्यो, विपीया विप समतोल ॥ रा० ९ ॥ मधु राजा माननी शुं मोह्यो, माने मेरु समान; आपणा
 पोज एतले, आयो मोह तणो अचसान ॥ रा० १० ॥ परनारी लंपट दृढ बांध्यो, आय्यो राजा पास; राजा मांखे
 वेग वियास्यो, इहां नही अरदास ॥ रा० ११ ॥ राणी पुठे कामा रिजे, स्वामी ए नर आज; राजा बोले एणे किश्रो
 मोटो आज अकाज ॥ रा० १२ ॥ ए कामी ए सतरे पातिक, तांजुं वाली जोय; एकामी परनारी गमननो; पातिक
 नारी होय, ॥ रा० १३ ॥ परनारीना डखण ए तो, आप तुम्हे शुं किथ; हुं परनारी किश्रो प्यारी, जगमें अपजस
 लिथ ॥ रा० १४ ॥ कहेणी तो जगमांही बहुली, करणी विरजां जोइ; मोटा नामा ठोतन लागे, रांक हण्या शुं होइ

॥रा० ३३ ॥ एह वचने राजा वैराग्यो, मनमे करे विच्चार; कुलने एह कलक चढायो, धीग२ मुऊ अगतार ॥ रा०
 ३४ ॥ नवजोयनमें बाधो जे नर, नृप ठोमावे ताम; उंहरो तेम्नी शीखज आपी, ए हम् करजे काम ॥रा० ३५ ॥
 इण अयसर मुनीराज पधारया, वोहोरण केरे काज, नृप आहार सुजतो, दिधो सफल गयो विन आजा ॥रा० ३६ ॥ जेट
 पुत्र तव पदवी थाप्यो, मधु कैटन्न नृप सोइ; संजम लेइ स्वर्ग वारमे, देव हुया ते दोइ ॥रा० ३७ ॥ इंड प्रजा विद्वा
 व्रत पाली, राजा साथे सहाय; कनक माला ए आइ उपनी, नेह ठप्यो नरहाय ॥ रा० ३८ ॥ एगुणतेरमी ढाल
 नलेरी, पुर्व नयतर जेद, गुणसागर जीनवरने रचने, टलीयो सवलो खेद ॥रा० ३९ ॥ ॥दोहा ॥ मधु जुपतीनो
 जीय जे, चारीत्रने सकेत; स्वर्ग तणा सुख जोगी, सुखे पुन्यने हेत ॥१ ॥ श्री परजुन कुमारजी, सुखमणी उरउत्पन्न
 ऋश्र धरे हरी वशमें, सावो पुत्र रतन ॥२ ॥ कैटन सुर सुख जोगी, लेख्ये वर अवतार; जाबुचती उरे सही, होख्ये
 साव कुमार ॥३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अरति अपार; काल करी जयमें जमी, कोप तले प्रकार ॥ ४ ॥ धुम
 केतु नामे हुगो, असुरां केरो राय; जे ए बालक अघहस्यो, वयर विलय नवी जाय ॥५ ॥ ढाल ७० मी ॥ राया
 लोचनरगमो ए देशी ॥ जीनयाणी श्रवले सुणी, नवि पाय्या प्रतिबोध ललना; करे थापणमें खामणा, टाले रे
 रिरोध ललना ॥१ ॥ धन श्रीमधीर स्वांमीजी, जे नांजे सदेह ललना; धन चक्रीजीले पुढीयो पुर्वजवंतर एह
 ललना ॥४० ॥ नादर रुपी करकोसथी, नरुलीयो तेहीवार ल० ॥ अलजयो आतुर धयो, देखणबाल कुमार ल०
 ॥४० ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यम संवर धर जाय ल० ॥ कनक मालानी नक्कीथी, रुपी रलीआत थाय ॥ ल०

ध० ४॥ गुढ गन्नेणा तु सुणा जाया सुदर नद ल०॥ रुपीजी तुम्ह प्रसादधी, नदंन आनंद कंद ॥ ल० ध० ५ ॥
 देबु थारो नानमो, परखुं लक्ष्ण सार ल०॥ रुपी आगे लोटावीयो, दिए आशीश तेवार ॥ ल० ध० ६ ॥ चिरंजोवि
 चिरनंदजे, पुरे मातनी आश ल०॥ रुपी आवेशे उठाइल, हयमे धर्यो उल्हास ॥ ल० ध० ७ ॥ मात मुखो अरि सन
 मुखो, लक्ष्ण गुण गरीठ ल०॥ सब विथ सुंदर देखतां, लोचन अमीय पइठ ॥ ल० ध० ८ ॥ नारद आव्या द्वारीकां,
 हरी रुखमणीके पास ल०॥ जिनवर वचन सुणावीया, धुरे हाल गेतास ॥ ल० ध० ९ ॥ हीरा चुनी लालमा, मोती
 माणीक जोइ ल०॥ जिहां जाइ तिहां सादरा, तिम करमे नो होइ ॥ ल० ध० १० ॥ हरी रुखमणी आनंदीयां, सुणी
 सुतना अवदात ल०॥ परम महा सुख पामीयो, आनंदमें दिन जात ॥ ल० ध० ११ ॥ आशा सब जग बालही,
 आशा अमर अपार ल०॥ धर्मे कर्मे आशा नली, आसम ठामी लगार ॥ ल० ध० १२ ॥ आशाए धन संपजे,
 आशाए संतान ल०॥ आशाए रणजीतिइ, आशाए सनमान ॥ ल० ध० १३ ॥ एक न हुती पाधरी, नंदीयेणनी नार
 ल०॥ सहे सबहु तेरे परगटी, आशाने अधीकार ॥ ल० ध० १४ ॥ आशाए हरी चंइजी, उग्रसेन नृप देख ल० ॥
 आपद काढी आकरी, पुनरपी राय विशेष ॥ ल० ध० १५ ॥ रावण सिता अपहरी, पत्नीयो राम विगोह ल० ॥ साजी
 वि आशा थकी, फरी पामी अति सोह ॥ ल० ध० १६ ॥ पवनराय घरे अंजना, पतिनो अति अपमान ल० ॥
 आशाए देवावीयो, आदर मेरु समान ॥ ल० ध० १७ ॥ रामचंइ नल पांफवा, आशा तणे बल जोय ल०॥ फिरी
 बहोमावि आपणी, आश करे सोहोय ॥ ल० ध० १८ ॥ वरस जाइ आशा वमी, फलशे मननी आश ल०॥ आश बले

॥१००॥ ३३ ॥ एह वचने गज केशव ॥ ३० ॥ ध० १ ॥ मंवि र संवर कालने, बाधे बाल कुमार ल० ॥ हाथोहाथे संचरे,
 रुखमणी तणो, होशो लिल विलास ॥ ल० ध० १ ॥ मंवि र संवर कालने, बाधे बाल कुमार ल० ॥ हाथोहाथे संचरे,
 उपजावे अति प्यार ॥ ल० ध० २० ॥ जीमश् बाधे बए करी, तिमश् बाधे एह ल० ॥ रुशी रुशी सुख संपदा, अरु
 बाधे धन नेह ॥ ल० ध० २१ ॥ प्राण थकी प्यारो घणो, माताजीने सोई ल० ॥ पिता परम सुख दापकुं, परीअणा
 प्रितो जोई ॥ ल० ध० २२ ॥ पढांगुणो पंढित थयो, निर्मज बुधी उदार ल० ॥ शस्त्र शास्त्र आदि कला, बहु तेरना
 नएनार ॥ ल० ध० २३ ॥ बालपणे बोलो करी, योवननी वय पाय ल० ॥ थिर चिरने साहसिक सुर शीरे कहेवाय
 ॥ ल० ध० २४ ॥ हयगय रथ पायक तणी, सेना सजी अपार ल० ॥ सीमाना सहु साथीया, साध्या जेह झुजार
 ॥ ल० ध० २५ ॥ देश जीती घर आवीयो, लावीयो वर वस्तु ल० ॥ जुवर खेचर मानवी, माने आणसमस्तु ॥ ल०
 ध० २६ ॥ ए शीतेरमी ढालमं, अन मनमावण नाम ल० ॥ गुणसागर गुरु आपणे, प्रगट थयो जग काम ॥ ल० ध०
 २७ ॥ ॥ चोपाइ ॥ खंन खंन रसठे नवनवा, सुणतां भिगां साकर लवा; श्रीहरी वंश चरित्र जय जयो,
 त्रिजो खंन ए पुर्ण थयो ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥ ध ॥ १ ॥

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा तृतीयोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ खंम ४ थो ॥ ॥ दोहा ॥ कमं हणां कवल लह्यो, सुगति पहीता स्वांम; त्रिविध ३ त्रिहु कालनां, सिध
 नमुं शिर नाम ॥ १ ॥ अथ चोथा अधीकारनां, नविनी सुखो सुविच्यार; गुणवंतानां गुण ए, सांजलतां सुख थाय
 ॥२॥ मात पिता सुख पामियां, देखी कुमरतां काम; लोक प्रसियो आपियो, युवराज पद ताम ॥ ३ ॥ प्रचु रवि
 तनु व्यय करी, संतोख्यो संसार; याचक जन सुख उचरे, मदन शुं यज्ञ विस्तार ॥४॥ जुपतिने जल नामनी, पांच
 सयां परीवार; नंदन पण तस तेतला, महा कला गुण जांण ॥ ५ ॥ प्रभुता पेखी कामनी, हुमनी पनी हुमात;
 आप आपणा पुत्रशुं, एह जणावी वांत ॥ ६ ॥ सिंहणी एकज सुत जणी, निर्जय थाई अपार; खरी खरी दश
 पुत्रणी, बहे गारको नार ॥ ७ ॥ मदन बलि महिमा निलो, तुम्हतो सयला रंक; दिन थोनामां देखज्यो, राजा हुने
 निसंक ॥ ८ ॥ ढाल ७१ मी ॥ रसोयी ढाल, आज जोईइले घरमें हांमी ॥ तथा इण पुर कंवल कोइ नलेशी
 ॥ ए देशी ॥ वचन सुणी निज माता केरां, कोपे चम्यां ने पुत्र धयेरा; मारा मदनने वार न लाया, तो तुम्ह आगे
 हम फिरी आया ॥१॥ मदन शुं मांमे प्रिति अपार; माहरे तुं वाकोर आथार; कुम केलेवे कपटि केतां, सांजलजो
 मुज कहेतां तेतां ॥ २ ॥ भोजन आसन शयनमो जारी, खान पानमें दिई विप जारी; अमृत होइ प्रणमे सोइ,
 पहुंची शके उपावन कोइ ॥३॥ माकणी शाकणी न शके लागी, जुत पिसाचाणी जाए ज़ागी; वांको ते फरी सुयो
 थाय, दिन दिन महिमा अधीक दिवाया ॥४॥ गीरी बैताढ्य गयां एकवार, सहेस शीखरनो जवन उदार; सहुको आवी
 वेतां जाम, वात कहे आपसमें ताम ॥ ५ ॥ गीरी शिखरे एक गोपुर देखि, वज्र मुखे तव वात विशेषी; जो जाय

कोइ गोपुर मांहि, मन वंभित फल पावे प्रांहि ॥ ६ ॥ मदन गयो तिहां हावी चाली, जाग्यो देव वजावी ताली;
 मदन साथे कियो संग्राम, हारि दियो सिंघाशण ताम ॥ ७ ॥ मंत्र तणो गण दिधो वारु, अवर दीयो प्रंभार अपारु;
 मुकट दियो रत्ना कोनिको; आभ्रण सहित शुं दीधो टीको ॥ ८ ॥ गुफा दुसरी मांहि सीधावे, ठत्र जलो युग चामर
 पावे; खमग मनोहर वस्त्र विशाहु, कुसूम वाश न अधीक रसाहु ॥ ९ ॥ गुफा तिसरि मांहि आवे, नाग सेज वर
 वेण लहावे; पाय पिठ सिंघाशण कोमल, वस्त्र विभुषण पावे सोचल ॥ १० ॥ मंदिर कारी विद्या विधि, सेन तणी
 रखवाली सीधी; ए दोए विद्या आपी देवा, करजोनीने मागे सेवा ॥ ११ ॥ चडथी वारे सो अवगाहे, जल वावीने
 पनीयो हजावे; मकरध्वज वर वारु लाहियो, मकरकेतु सो नाम कहियो ॥ १२ ॥ अग्नीकुंभ मांहि पग ठावे, वार पंचमी
 सो शोना पावे, कनक वस्त्र अग्ने धोवाए, युग्म लह्यां ते पुन्य पसाए ॥ १३ ॥ मेपाकारे पर्वत दोइ, ठठिवार गयो तिहां
 सोइ; भिलतां कोपर साथे खंभे, कुंमल युग्म लहि अती तंभे ॥ १४ ॥ वार सातमीए सहकार, उपर चढियो मदन
 कुमार; ऊंजोनी फल पानी नांखे, वानर रूप तदा सुर नांखे ॥ १५ ॥ आप जणावी चरणे लागी, बोल्यो देव प्रजु
 वमजगी; गगन गतिनी पावनी विशाला, आपे मुकट सुधारस माला ॥ १६ ॥ वार आठमी कपीठ तणे वन, चाल्यो
 मदन महा निर्नय मन; तरु उपर चढियो ततकाल, गज रूपि सुर अती विकराल ॥ १७ ॥ युध करी प्रभु वश होइ,
 मनंगमतो वर आपे सोइ; गज रूपी सुर हुंभुं स्वामी, समे समरवो अथसर पामी ॥ १८ ॥ नवमी वारे परवत उपर,
 चाल्यो कामदेव साहस धर; जुजंगा सुरमे लात वजाइ, उठियो करी संग्राम सजाइ ॥ १९ ॥ जाती जणी दीधो ह्य

रल, काठो कवच जीवनी यल; मुंझीका मनमोहन आपी, चाल्यो तास तिहा धीर थापी ॥१०॥ वशमी वार सराव
 मुखे गीरी, हरी अंगज थायो जिम निज घरी, अंगद कंठीका वर लाधी, कंदोरो लायो सूर साधी ॥११॥ एकादशमी
 वार मनोनच, वराह तणेआकारी गयो तव; धनुष पुष्प नय पास्यो पुरो, जय नामां वर संख सनुरो ॥१२॥ वारसमी
 वारे बलवंतो, पंकज वनमें जाय रमंतो; विद्याधर बांध्यो वीमांचे, कन्या काम त्रिणि परणांचे ॥ १३ ॥ विद्या दोइ
 अनेरी विधी, इंद्र शंु जाल करी प्रसीधी; हार हरख शंु थाप्यो रुम्ने, मान्यो गुण नवि ए कुम्ने ॥ १४ ॥ तेराशमि
 वारे अति तंमन, काल वने आयो कुल मंमन; जीत्यो दैत न लागी वार, आप्यो कुसम धनुष उदार ॥१५॥ मदन
 मोहन ताय न सोपण कर, उन्मादन ए पांच वाण वर; जन मोहन युवति उन्मादन, मदन नाम तिहांधी हरीनंदन
 ॥ १६ ॥ चउदशमी वारे सो पचारे, नीम गुफा मांहे पाव धारे, वज्र पुष्पको फूलकि सेज, थापे असुर धरी अती
 हेज ॥ १७ ॥ चाइ मरवा कारण मेले, आपणमें चतुराइ खेजे; पुण्य वले रुखमणीको जायो, तिम तिम वथतो जाय
 सवायो ॥ १८ ॥ वने रणे अरीधे रणमांहे, अग्नी नीर सागरमें प्राही; सोवत जागत विच विचालो; पुन्य एक मोटो
 रखवालो ॥ १९ ॥ एकोतेरमी ढाल वखाणी, बळा श्रोताने मन मानी; श्री गुणसागर पुन्य करीजे, मदन कथा मन
 मांहे धरीजे ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ लान देखी नवश परे, थाणे रीस अपार; जोर न चाले जवरशुं, पण न तजे
 अविचार ॥ १ ॥ खेदि काढे नित्यको, सुरज जग हेतकार; तिमर न व्याप्या विण रहे, ए डर्जन अविचार ॥ १ ॥
 ॥ढाल ७२ मी ॥ निमजी नान वरसानी ॥ ए देशी ॥ वर्जमुखो कहे चाइजी मन मोहना; तुम्हसम अवर न कोइ

लाल मन मोहना, जीहां ३ जाइ संचरे मण॥ लात्र घणोरो होय ॥ला० १॥ पनरसमी वारे हवे म० ॥ विपुल वन
 पाउधार ला॥० गज जीम आयो गजतो मण॥ तव ते विपनमोऊर ॥ला० ३॥ नाग जयंतकळे तिहां मण॥ वाहनी
 एक विसाल ला०॥ तेहने कठि तरु तले मण॥ पद्म शिला सुर्वीशाल ॥ ला० ३॥ रुपशुं योवन गुणवंती म० ॥
 पद्मासन आकार ला०॥ स्फाटीक तणी जप मालीका मण॥ ध्यावे ध्यान अपार ॥ला० ४॥ स्वेत वसन विराजतां
 मण॥ मस्तक बुटां केस ला०॥ शोभा पोखे सुंदरी मण॥ वणें गौर विशेष ॥ला० ५॥ चंडमुखी मृगालोचनी मण॥
 वांकात्रमुहक माण ला०॥ तिन लोकनी नारीनो मण॥ बेठीले इ गुमान ला०॥ ६॥ सर्व अवेवां सोहनी म० ॥
 रमणी रुप रसाल ला०॥ मदन तणे मनमोहनी मण॥ लागीए ततकाल ॥ला० ७॥ पांच बाण लाग्यां खरां म०॥
 मदन थयो बेफोम ला०॥ हस न जावा पावही मण॥ जेसुजीनकीरहम ॥ ला० ८ ॥ विबुधवतं शक आर्वीयो
 मण॥ उजो करीय जुहार ला०॥ कुंवर पुढे देवशुं मण॥ कुमरीनो शु विचार ॥ ला० ९ ॥ देव न्रणे कुमर सुणो
 मण॥ खेचर प्रभजन नाम ला०॥ वाग देवि दीपती चली मण॥ जाइ कुमरी सकाम ॥ ला० १० ॥ रती नामे
 गुण आगली मण॥ नवयोवनमें एह ला॥० कुंड्रर कहे कष्टे करी मण॥ कांखीजावे देह ॥ला० ११ ॥ रायतणे घर
 आर्वीयो मण॥ योगी लेणने आहार ला०॥ कुमरी वर पुढीयो मण॥ न्नांख्यो मदन कुमार ॥ला० १२ ॥ योग मिले
 तेहनो किहां मण॥ इणही वन अन्नीराम ला०॥ ते माटे तप ध्यानशुं मण॥ ए वंढे वरकाम ॥ला० १३ ॥ लक्ष्ण
 गुण आकारशुं मण॥ सो प्रभु तुही सकाज ला०॥ क्रीपा करी कन्या तणा मण॥ पुरो मनोरथ आज ॥ला० १४॥

पाणी ग्रहण करावीयो म०॥ पुग्या मनना कोम ला०॥ कामदेव रती कामनी म०॥ ए दोड अर्घीहम जोम ॥ ला०
 १५ ॥ लाज सोलमो तीणेवने म०॥ सकटा सुरथी होड ला० ॥ कामधेनु पांमी जती म० ॥ पुष्प तणो रथ जोड
 ॥ ला० १६ ॥ एंवसोलह लान्गुं म०॥ मदन महा मयमंत ला०॥ पामी शोना पुन्यथी म०॥ पुन्य बन्ने एकंत
 ॥ ला० १७ ॥ जोतरी रथ पुष्प तणो म०॥ काम अने रतीनार ला०॥ वेशी आवे लिलगुं म०॥ माथे ठत्र सुधार
 ॥ ला० १८ ॥ चामर ढोले खेचरी म० ॥ आगे बहु परीवार ला० ॥ दिनमुखा जाड सहु म०॥ शेवकरुपी अपार
 ॥ ला० १९ ॥ सोले लाने शोन्नतो म०॥ आवे कामकुमार ला० ॥ नगरी तणी शोना करी म० ॥ मुख३ जय जय
 कार ॥ ला० २० ॥ कामनी कौतकने मिली म०॥ तरुणी बुढी बालला०॥ रती३ पतीने देखवा म० ॥ करे कतुहल
 ख्याल ॥ ला० २१ ॥ खबर नही अंबर तणी म० ॥ धानवीपर्यय थाय ला०॥ तुढ्यो हार न जाणही म० ॥ मोती
 खीर खीर जाय ॥ ला० २२ ॥ कंकण काने पहेरीयो म०॥ गले कटी सुत्र उदार ला० ॥ माथे पहेरी मेखला म० ॥
 कटी पेहेरयो वरहार ॥ ला० २३ ॥ आंखे कुंकुम आंजीयो म०॥ काजल लायो गाल ला० ॥ आम्भरी अलते करी
 म०॥ आड तमासे चाल ॥ ला० २४ ॥ एक जणे भल नामनी म० ॥ ए कमें तो कंत ला० ॥ पामी परतक पद्मनी
 म०॥ रती राणी गुणवंत ॥ ला० २५ ॥ एक वदे वनीतावली म० ॥ ए धन नारी उदार ला० ॥ सर्व सुलक्षण गुण
 निलो म०॥ पामी जल जरतार ॥ ला० २६ ॥ हयंवर गयंवर वाहनी म०॥ लोक तणो नही पार ला०॥ दानेजलहल
 वरसतो म०॥ आया राजडवार ॥ ला० २७ ॥ राय तणे पाय प्रणमीयो म० ॥ राय दियो बहु मान ला० ॥ प्रजुता

पेखी पुत्रनी मण॥ जाण्यो जन्म प्रमाण ॥ ला० ३७ ॥ मामलवाने अलजीयो म० ॥ आवी लाग्यो पाय ला०॥
 उवाइ उंचो वीयो म०॥ हुंब्यो कंठ लगाय ॥ ला० ३८ ॥ विनय करी विधीशुं तदा म० ॥ अगि बेवो काम ला० ॥
 वारंवार अवलो कही मण॥ रुप अनोपम ताम ॥ ला० ३९ ॥ क्रश्च स्वतेने रातमा म०॥ लोयण निजा धाम ला० ॥
 कंबु कंठ शुं कोमलुं म० ॥ चंड वदन अजीराम ॥ ला० ३१ ॥ दंत पंक्ति मुक्कामणि म० राति जीहां जास ला० ॥
 नाक शिखा दिवा तणी म० ॥ अधर प्रवाला तास ॥ ला० ३३ ॥ कोमल कुंतल शामला म० जामी जंघा जाण
 ला० ॥ जुजा ललित लांबि घणी म० ॥ पोहला पाव वखाण ॥ ला० ३३ ॥ वद्ध स्बल बनतो महा म० ॥ मेरु
 नीत आकार ला० ॥ मृगपतिनी कटि उपमा म० वर्ये सुवर्ण अपार ॥ ला० ३४ ॥ माता देखी मनोहरुं म० ॥
 सुतनी सुंदर शोच ला० ॥ रमण हसण संनोगनो म० ॥ लाग्यो मनमें लोच ॥ ला० ३५ ॥ भेदी मनमथ बाणशुं
 म० ॥ दीन मुखी ततकाल ला० ॥ पाले मारी पोयणी म० ॥ तेहवी थइ शा बाल ॥ ला० ३६ ॥ हाथ कपोला
 श्यापियो म० ॥ आतुर अधीक उदाश ला० ॥ नसकश रोवे खरी म ॥ लांबा लिये निसास ॥ ला० ३७ ॥ एह
 विधी देखी खेचरी म० ॥ उठि चल्यो मयण ला० ॥ अभाव्यो मंदिर आपणे म० ॥ मनमांहे सुख चयन ॥ ला० ३७ ॥
 ए बोतेरमी ढालमें म० ॥ रति साथे घरवास ला० ॥ गुणसागर कही को शके म० ॥ कोरु पवामा तास ॥ ला० ॥
 ३८ ॥ दोहा ॥ मदन गयो मंदीर चली, माननी मनहि मोजार; अरति हिलुर वाधी महा, सो जाणे किरतार
 ॥ १ ॥ रुप नहि ए पासठे, हिए विमासी जोइ; दिवे पमे पतंगीयो, शोच करे नहि कोइ ॥ ३ ॥ ढाल ७३ मी ॥

चंद्र जुफेई घर आवे हो ॥ तथा आज अर्थात् वधामणा, विवा रूपन जिणंद; एकवार घर आवे हो मोहना ॥ ७ ॥
 देशी ॥ मोहन नावे जब लगे, तब लग चयन न होय; उन्हालाकी वेलुं जुं हो, सुकी जाये सोइ ॥ मो० १ ॥
 न आवे नीदमी, लेता सास उसास; वियस न लागे चुलमी हो, नां पाणीकी प्यास ॥ मो० २ ॥ 'सुणि न
 यातमी, आपणये न कढाय; उंची नजरे आलोकयो हो, माये सोर न थाय ॥ मो० ३ ॥ ए असहणी वेदनः ॥
 किम सहेणी जाय; सर्व शरीरे साल जुं हो, आज घणो अकुलाय ॥ मो० ४ ॥ लाज गइ निर्लज थइ, विविध प्रचरे
 यिकार; वर वक्षोज विलोकहि हो, नहि जंभाइ पार ॥ मो० ५ ॥ आभुपण उत्तारीया, उचाटे न सोहाय;
 अहरु काटणा हो, सो डख मांहि गणाय ॥ मो० ६ ॥ कां सरजी हुं कामनी, कां सरज्यो वर रूप; रूप
 हमारमो हो, विण रति कंत अनुप ॥ मो० ७ ॥ मदन ताप तपें खरी, कदली केरो वाय; वावन चंदन लेरने
 हो, शितलता न लहाय ॥ ८ ॥ चंद्र तणे कीरणो करी, हार अने घन सार; तनकी तपति मिटे नहि
 विण श्री काम कुमार ॥ ९ ॥ वेद विचिक्कण आवियो, देखे नामी जाम; हाथ न आवे रोगहि
 नृप चिंता तुर ताम ॥ मो० १० ॥ एक दिवस कुंवर जणि, बोले खंचर राय; माय छहेलि ताहरी हो, रान
 ठ मासी जाय ॥ मो० ११ ॥ तुं सुखमें रमतो फिरे, न लहे मानि सार; वोरुनि होवे घणी हो, माने आश
 ॥ मो० १२ ॥ कुमर कहे सुण तातजी, हुं नचि जाणुं एह; रोग हुआध्य जे उपनो हो, माताजीने देह ॥ न
 १३ ॥ माता तीरथ सारखी, माता मोठी होय; गर्न धरे वे पोखवे हो, मा सरखी नहि कोय ॥ मो० १४ ॥ अ

तीर्थ जे किया, तेतीसे सुर कोरु; सहस अठ्ठासी मानिया हो, मा मान्या करजोरु ॥ सो० १ ५ ॥ आयो मदन उतावलो,
 माताजीनी पास; देखी माजीम सांचली हो, आरती सांही उदास ॥ सो० १ ६ ॥ उपर पमीयो अमवनी, मायं माय
 पोकार; देवैवां उलंचमी हो, करे किशुं किरतार ॥ सो० १ ७ ॥ महारे एदो आंखनी, महारे अवर न कोइ; एम
 जाणी विधीसो करे हो, माय समाधी होइ ॥ सो० १ ७ ॥ माहापणे नामी ग्रहे, वैदक सहुनो जाण; विविध प्रकारे
 विचारही हो, रोग तणो प्रमाण ॥ सो० १ ८ ॥ ताव नही सिसको नही, नही त्रिदोषो दोष; काटी नही श कुरु करी
 हो, कवण रोगनो पोख ॥ सो० १ ९ ॥ रोग न जाण्यो जाय ए, वेद न तो असराज; माय छवे छखीयो महा हो,
 कामदेव नुपाल ॥ सो० १ १ ॥ एतो तिहुंतेरमी कही, ढाले सधन सनेह; गुणसागर सुरी जोयज्यो हो, विषय विम्वन
 एह ॥ सो० १ १ ॥ ॥ दोहा ॥ लोण सहु अलगं कियां, अलगं कियां गुलाम; बंदी ठोकरी ठांफके; अलगं राख्यां
 ताम ॥ १ ॥ लाज खोली लालच नणी, विकला शनि वात; करवा लागी कामनी, नाम धरावी मात ॥ १ ॥ फिट
 फीट फीटकार तुं, फिटकारो सो वार; विधिया साथे ताहरे, ए तुज चरीत्र अपार ॥ ३ ॥ ढाल ७४ मी ॥ ॥ नाथ
 तेरे साथ चडुंगीरे ॥ ए देशी ॥ लालन लिल करुंगीरे; तेरे संग रुंगीरे ॥ ला० १ ॥ पूर्व न्रवंतर
 केरो प्यारो, नयणे नेह जणायो; योवन मद मदिरा मतवाली, मन हाथी विफरायो ॥ ला० १ ॥ न आले देवाले
 माले, लारे चित लगायो; रोम रोमथी जाली सलगी, युहिम तरु न रहायो ॥ ला० ३ ॥ कांइ सुधी न बुधी विबुजे,
 आंधाहिथी आंधी; जुह कमान गुमान धणोरे, रहि नयण सर सांधी ॥ ला० ४ ॥ वाप न जांइ बेदो जाणे, विरह

करालि बालि; आप विगुति जुंमणी, चहुटे चमी चंमालि ॥ ला० ५ ॥ नकं टाले आले मुकं, पास पड्या ज
 पावे; वनिता वेलि वलगी आवे, वेगे वार न लावे ॥ ला० ६ ॥ निर तणी गति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी;
 काम अकाम करंत न लाजे, आदि जगे अविच्यारी ॥ ला० ७ ॥ पंकजणी नारी दो सरखी, अंतर नहिय जगार;
 हंस नमरने सम करी जाणे, नाणे किंपि विच्यार ॥ ला० ८ ॥ अवर रमे अवरसुं नासे, अवरा साहसुं जेवे; चिंते
 अवर अवर शीर छपण, देदु आप विगोवे ॥ ला० ९ ॥ दिने मर आपे दोरे दिवे, राति अहि फण मोमे; उंवर
 अमवमती अणीअले, मंगर चढवो लोमे ॥ ला० १० ॥ उंदरथी मर माने अधीको, केसरी काने साहे; नारी
 चरीत्र लिखे ब्रह्मजो नांखे घणेंड साहे ॥ ला० ११ ॥ जुलनि स्तनि कुविस न वाटे, सुरि कंता साची; उतो सुत
 उतो पति हणोवा, परतदु थड पे साचि ॥ ला० १२ ॥ काम कटकमें नारी नायका, ए बल पुंठे लाग्या; मारी लीया
 जे साहमा आया, बुड्या जे नर जाग्या ॥ ला० १३ ॥ हुंतो सुंदरी सामा साची, तुं योवन मदमातो; वय विलसि
 जे जाहो लिजे, फीरी नावे दीन जातो ॥ ला० १४ ॥ बुढो वयल ने बुढो घोमो, बुढो हाथी हासो, बुढो मानव
 मान न पावे, तरुणी साथे तमासो ॥ ला० १५ ॥ माथो धुणे कर कंपावे, मोहेढे लाल खरंति; अति असोहावो
 नाह अचावो, नारी नेह धरंती ॥ ला० १६ ॥ विण सर दहण वखाण करवो, देवि हाथ गहेवि; बुढापणे तरुणी
 परणवी, ए पर काज कहावे ॥ ला० १७ ॥ मो मन हाथी इडा चारि, फीरे महा मतवालो; होइ महावत जोग अंकुसे,
 बहतो पाठो वालो ॥ ला० १८ ॥ मुंदि कान मिचि युग लोचन, मोहने धीगश् नाशे; रे पापणी शुं पाप प्रकाशे, तुज

पापे जग नासे ॥ ला० १ ए॥ हुं तुज नंद तुं मुज माता, इम किम कहेता आवे; यद्यपि मांस त्रखे नर लंपट, हारु
गले नर हावे ॥ ला० ३० ॥ खेचरी जांखे तुं नहि नंदन, हुं नहि थारी माता; पत्नीयो पाम्यो लेइ उठेश्यो, हम
तुम्ह विचे विध्याता ॥ ला० ३१ ॥ आपण वावियो ब्रह्म विशेषि, को फल तास न खाय; राखी निवाण आपे जल
पितां, कहो शुं उषण थाय ॥ ला० ३२ ॥ ठोमी विच्यार शिरोमणी, कथनी दीसे कोमी; मान बोल मुजके तुज
माथे, जास्युं काया ठोमी ॥ ला० ३३ ॥ वात विरुध सो सुध विहुणी, एतो परवश जांखे; पुरुष पनोता काज
अकारज, जाणी आपुं राखे ॥ ला० ३४ ॥ उत्तर आपे मात मयाकर, इम मुजथी किम बुजे; निद्यकथी अति निद्यक
काम ए, कुलवंतां नवी सुजे ॥ ला० ३५ ॥ हाथी बारो वाटे फिरतो, अंकुशथी फिरी आवे; पीहर सासरा केरी
लाजे, नारी आपरराखे ॥ ला० ३६ ॥ वारु वार विच्यार विशेषे, माताजी समजावी; वात न माने मयणाराय तव,
वनमें बेवो आवी ॥ ला० ३७ ॥ ढाल चमोतेरमांही खरी ए, खेचरणी खलखाती; श्रीगुणसागर मदन उवारी, विण पाणी
बही जाती ॥ ला० ३८ ॥ दोहा ॥ डोमी एकाकी आवीयो, साथे शील सुलतान; कुमर कदर्थन देखीने; मन
धरतो सुन्न ध्यान ॥ १ ॥ बाग नगरने बाहीरे, सुतो धरी मन धरि; कनक माताए शुं कहुं, चित चिते वरुवरि ॥ १ ॥
॥ ढाल ७५ मी ॥ मुनीश्वर माहरे व्रतशुं काम ॥ ए देशी ॥ एकाकी उदाशीयोजी, मदन नरेश्वर जाम; दिवा
मुनीवर पांख तीजी, जाइ करे परणाम ॥ १ ॥ मुनीवर जांखे एह विच्यार, माताने केम उपजीजी; सुतशुं काम
विकार ॥ सु० ३ ॥ चरीत्र सुणावी पाबलाजी, ज्ञान तणे बल जोय; इंद्र प्रज्ञानो जीवमोजी, कनक मालाए होय

करालि वालिन; आप १५ गति चुंमणी, चहुटे यमी चंमालि ॥ ला० ५ ॥ नकं टाले आले मुके, पासे पळ्यो जे
 पावे; यनिता वैलि बलगी आवे, वेगे वार न आवे ॥ ला० ६ ॥ निर तणी गति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी;
 काम आनाम संत ३ ॥ १ ॥

॥ मु० ३ ॥ काम रागनी व्यापनाजी पोसाणीची भूर; तेही अभ्यासे उपर्नजी, ए तुज साथे चुर ॥ मु० ४ ॥ काम
 कडे करुणा करोनी, गुण मणीना संदोह; जणणीए किम पामीपोजी, मुऊगुं एह विठोह ॥ मु० ५ ॥ जंघुधीए जा
 पीएजी, खंत भरत गुण धाम; मगधंश मांहे नजोनी, लक्ष्मीपुर अनीराम ॥ मु० ६ ॥ सोम शर्मा नामे वसेजी,
 ब्राह्मण विद्या पात्र; कमला २ सारखीजी, नारी मनोहर गात्र ॥ मु० ७ ॥ पुत्री तो लक्ष्मी यतीजी, सायबंकारणी
 सोड; एक विवस रुयी आधीयाजी, बोहोरण काजे जोय ॥ मु० ८ ॥ रुप निहले आपणोजी, आरी सामे जाम;
 पाडो रुयी उनी हुचोनी, किधी निद्याताम ॥ मु० ९ ॥ मुनी निंवांना बोपथीजी, लही कोढनो रोग; पामी साधीन सातमे
 जी, मरण तणे संजोग ॥ मु० १० ॥ सरी २ डखणी शइजी, मरीशुं करी होय; कोटवाले वाणे हणीजी, समी
 कुंफरी जोय ॥ मु० ११ ॥ अमी जालमहि बलीजी, तकधी वरणी थाय; पुर्वे पाप प्रनावथीजी, वेही वणुं गंथाम ॥ मु०
 १२ ॥ गंगा पासे कुटीकाजी, रहे खजनथी डर; वनफल नखी नरिंर पिएजी, करे वदर नरपुर ॥ मु० १३ ॥ शित
 काले फरतो पकोजी, सोड रुधीसर जाण; ध्यान योग्यने ध्यावतोजी, दिवो पुन्य प्रमांण ॥ मु० १४ ॥ साअर्तीवो
 वासावेंजी, सुन कर्मने योग; पुरव नव सुजावीयोजी, ज्ञान तणे उपयोग ॥ मु० १५ ॥ पथाताप करे घणोजी,
 मुनी निद्याना पाप; आलोड सुन नावगुंजी, सुध किमो घट थाप ॥ मु० १६ ॥ समकीत धर्म समाचर्येजी, श्रावकना
 व्रतधार; आवी नगसे कौसलाजी, आतमने हेतकार ॥ मु० १७ ॥ साधवीयां पासे रहेजी, तप नाना विध किध;
 राज गही श्रावथा वहीजी, उत्तम संगतिदीय ॥ मु० १८ ॥ गफा मांही साधवीजी, वार रही सावाल; विबुरी वाचे

घण्टुंजी, प्रांण तजा ततकाल ॥ सु० १ ए ॥ पहीले सुर लोक उच्यते, ...
राय घरे पट नार ॥ सु० १ ० ॥ रामत भिसे हाथे लियांजी, मोरजी इना जोय; घनी सोलने आंतरजा, आ० ६ १ ५ ॥
सोय ॥ सु० १ १ ॥ विमल मती गुरुणी कन्हेंजो, राणी संजम लीध; अणसण उचम मासनोजी, विणआलोयण किध
॥ सु० १ २ ॥ स्वर्ग बारमे सासतीजी, सुरपदना सुख पाय; हुइ राणी रुखमणीजी, कामदेव तुम्ह माय ॥ सु० १ ३ ॥
किधा कर्म न बुटीएजी, वरस सोल लगी देख; विरह तुम्हारी पामीयोजी, माताएशुं विसेप ॥ सु० १ ४ ॥ माता पास
जाइनेजी, लहु विद्या दोइ; प्रज्ञापतीने रोहीणीजी, अती वरदाइ सोइ ॥ सु० १ ५ ॥ सीषरुपी पंथोतेरमीजी, ढाल
नली कहेवाय; गुणसागर रुखमणी तणोजी, चरीत्र महा सुखदाय ॥ सु० १ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ मदन कुमार फीरी
आवीयो, खेचरणीने संग; विण प्रणाम बेठो सही, साची ते मन रंग ॥ १ ॥ रुप नाथने नाथीयो, ए आयो हम पास;
वचन विशेषे मानशे, दिसेठे उल्हास ॥ २ ॥ ढाल ७ ६ मी ॥ ॥ मन नमरानी देशी ॥ तव बोले शा सुंदरी,
सुण नोग पुरंदर; मान वचन मुज आज, सुण २ नोग पुरंदर; विविध प्रकारे ताहरा सु० ॥ सारुं वंठित काज ॥ सु०
१ ॥ प्रज्ञापतिने रोहिणी सु० ॥ मोटी विद्या एह सु० ॥ प्रित रीतशुं रिजवी सु० ॥ आपुं आणी सनेह ॥ सु०
२ ॥ धुतो धुतेवा नणी सु० ॥ बोले मीठा बोल सु० ॥ आज लगी लोप्या नहि सु० ॥ थारा बोल अमोल ॥ सु० ३ ॥
हुं बुं किंकर ताहरो सु० ॥ आझाकारी जोय सु० ॥ ये विद्या परमेश्वरी सु० ॥ जेते जांखी दोय ॥ सु० ४ ॥ विषिया
वश आतुर थइ सु० ॥ धोलो जाण्यो छथ सु० ॥ दीधी विद्या वीधी कही सु० ॥ होइ गइ अति शुध ॥ सु० ५ ॥

मतवालीथी अती घणी सु० ॥ मतवाली ए जोय सु० ॥ उतो धन नवि दाखवे सु० ॥ ए रही विद्या खोय ॥ सु० ६ ॥
 विद्या साथी सज करी सु० ॥ पायो बहु संतोप सु० ॥ खेचरणी शुं खरखरा सु० ॥ बोले वचन सरोप ॥ सु० ७ ॥
 मे नवि दीवो तातजी सु० ॥ नवि दिठि निज मात सु० ॥ तात मात तुहि सहि सु० ॥ म कहे बीजी चात ॥ सु० ८ ॥
 वाचा पाली विशेषी सु० ॥ जगमें वाचा सार सु० ॥ वाचा विवली जेहनी सु० ॥ वादी गयो अबतार ॥ सु० ९ ॥
 कहे रामजी नरत शुं सु० ॥ बोल न बोलं आण सु० ॥ हिन प्रतिज्ञानो धणी सु० ॥ तजवो जेम मसाण ॥ सु० १० ॥
 किंवा को निया करे सु० ॥ कोइ करे गुण ग्यान सु० ॥ लक्ष्मी जातु फीरो आत सु० ॥ न तज्यु न्याय नियाण ॥ सु०
 ११ ॥ पहिलि तो तुं मायजी सु० ॥ पालवानेकाज सु० ॥ विद्या दान तणि वाता सु० ॥ गुरुण्यि हुइ आज ॥ सु०
 १२ ॥ वज्रपात समानमा सु० ॥ सांनलि वचन विचार सु० ॥ उठिवायणी बलगवा सु० ॥ चाल्यो करीय जुहार ॥
 सु० १३ ॥ हाथ घसे कुटे हियो सु० ॥ शोच करंत अपार सु० ॥ ठग न ठग्यो ठगे हुं ठगी सु० ॥ विद्या पोइ सार ॥
 सु० १४ ॥ कोइ उपाय केलवि सु० ॥ लाजं शिख जे वार सु० ॥ डख ज्वाला शिलि करुं सु० ॥ पामुं चयन ते वार
 ॥ सु० १५ ॥ आप विलुरि तन घषुं सु० ॥ मांने अति तोफान सु० ॥ रोति न रहे राखतां सु० ॥ पुढे तव राजांन
 ॥ सु० १६ ॥ विजचिवा घणी बलबले सु० ॥ ए तुम्ह सुतना काम सु० ॥ होय वटाउ आपणा सु० ॥ तो घरनो स्थो
 नांम ॥ सु० १७ ॥ जे निज ते निज जाणीए सु० ॥ जे पर ते पर होइ सु० ॥ मंदिर वसे न प्राहुणे सु० ॥ एम ज्राखे
 सहु कोइ सु० १८ ॥ प्रजुजी तुम्ह प्रसादधी सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय सु० ॥ शील न चांग्यो मुजथी सु० ॥ पण न

रह्यो तनुमें कांइ ॥ सु० १९॥ श्रीगंजुन कुलवंतने सु० ॥ जो परन्तव पोचावं सु० ॥ तो तो जिववो सहि सु० ॥ नाहतर
 काठ थखाव ॥ सु० २० ॥ आत तपे अति आकरी सु० ॥ अति विन्या न तपाय सु० ॥ सोक्यांना उगना विषे सु० ॥ मारो
 माता जुवी थाय ॥ सु० २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो सु० ॥ न लह्यो मर्म दगार सु० ॥ पुत्राने तेनी कहे सु० ॥ दाव
 मदन कुमार ॥ सु० २२ ॥ जन अपवाद निवारवा सु० ॥ गुप्त पणे ए काज सु० ॥ विद्या त्रेद जणावियो
 लह्यो हम आज ॥ सु० २३ ॥ मदन कुमर आगे करी सु० ॥ स्नान करवा जाय सु० ॥ विद्या त्रेद जणावियो
 सु० ॥ बीजो रुप धराय ॥ सु० २४ ॥ आपणा अलगो जइ रह्यो सु० ॥ पोते करे सुकुमार सु० ॥ ब्रह्म चमि माकी
 पने सु० ॥ फूले वाविमोजार ॥ सु० २५ ॥ शिवाविभुविमोटकी सु० ॥ राजा पासे पोकार सु० ॥ साहए
 अधोमुषे ॥ सु० ॥ दाव्या तेहि अयाण ॥ सु० २६ ॥ एक न खिल्यो ते गयो सु० ॥ राजा पासे पोकार सु० ॥ साहमो काम कुमार सु० ॥
 वाहए सामटे सु० ॥ राय चढ्यो तेहिवार ॥ सु० २७ ॥ चतुरंगी सेन्या सजी सु० ॥ साहमो काम कुमार सु० ॥ विद्या मागे राय
 आयो आमंवर धणे सु० ॥ नाग्यो नरम अपार ॥ सु० २८ ॥ इर्जय मदन विचारीयो सु० ॥ विद्या मागे राय
 सु० ॥ नारि कहे लेइ गयो सु० ॥ राजा तव पिठताय ॥ सु० २९ ॥ ए नारी विनीचारीण सु० ॥ चरीत करे लख
 कोन सु० ॥ फिरी आयो रण भोमीका सु० ॥ पुत्र नम्यो करजोम ॥ सु० ३० ॥ जनक जीति जस वंढीइ सु० ॥
 सो अपजस अवधार सु० ॥ तिर्थ मांहे मानीयो सु० ॥ जनक वनो संसार ॥ सु० ३१ ॥ ब्रह्म विशेषे वाधीयो, सु० ॥
 गवो भेदे आकाश सु० ॥ यद्यपी डंची नारीका म० ॥ तोही पण शोर तले वास ॥ सु० ३२ ॥ एह विवेक विच्यारवे

सु० ॥ कामे तज्यो अर्जीमान सु० ॥ तावेता कंचन तणो सु० ॥ वेवे वधे घनवांन ॥ सु० ३३ ॥ ज्वार सालने तरु
 फट्यो सु० ॥ चउथो साजन देख सु० ॥ सहजे हिनमणा हुया सु० ॥ मदन तो जाण विशेष ॥ सु० ३४ ॥ बंधव बंधन
 ठोर्नाया सु० ॥ मलीयो बहु परीवार सु० ॥ घर घर रंग बधामणा सु० ॥ वरत्यो जय जयकार ॥ सु० ३५ ॥ विनय करीने
 विनये सु० ॥ तात करो शुविच्यार सु० ॥ तेग फिरे किम तेहनी सु० ॥ जेहनो ह्मिण आचार ॥ सु० ३६ ॥ साव अने वजी
 सोलमी सु० ॥ ढाले शिल चखाण सु० ॥ गुणसुगार उपदेशीयो सु० ॥ शिल शुधर्म प्रधान ॥ सु० ३७ ॥ दोहा ॥ नारदरूपी
 अवलो कियो, पुत्र प्राक्रम कोरु; चाली आयो आशनो, मदन नभ्यो करजोम ॥ १ ॥ मदन कहे सुण वापजी, माहरे
 जग नही कोइ; माय वाप वैयरी थया, कहो किशी गती होइ ॥ २ ॥ लुजसम अवर सोनागीयो, को नही जगतमोऊार;
 वाप क्रम मा सखमणी, यादवनो परीवार ॥ ३ ॥ हुं आयो तुज तेमवा, चाल मलावीश वार, अक्सरनो आगम
 नलो, जीम जगमें जलधार ॥ ४ ॥ अक्सर आयो पवनसुत, सत्य वंती उबरंग; वैसला पण अक्सरे, फरसे लक्ष्मण
 अंग ॥ ५ ॥ अक्सरथी सुधीवनां, रामें समारथा कांस; रावण बंधव पामीयो, लंक पतीनो नाम ॥ ६ ॥ अक्सर
 पांमु पथरीया, कुंतीका पण फंद; अक्सर पांनव प्रगटीया, करवा कौरव मंद ॥ ७ ॥ अक्सर यादव देखीए, नलो
 क्रियो उपगार; अक्सर बुक्क्य मानवी, सोच करे अक्षर ॥ ८ ॥ धलु न पाणी पाइयो, जीवतमाने जोय; धमा सो
 रेम्या उपरे, सुआ पठी शुं होय ॥ ९ ॥ नामा श्रुतना व्याहमें, तुफ माता शिर केस; लियासा जीवे नही, तुज मन
 पाय कलेश ॥ १० ॥ ढाल ७७ मी ॥ आठे जाल ए देशी ॥ बोले मदन कुमार, सुण नारदशुं विच्यार ॥

आढे०॥ माय बापने बुजी इं, ते तो गसन कराय; अणुपुढ्या न जवाय आ० ॥ आगल पाबल सुजीइ ॥ १ ॥
 मात पित्याना पाय, प्रणमे बहु लेनाय आ०॥ कोमल वचन प्रकासतो ए, तातखमो अवरारह; में दिवो डख दाह
 आ०॥ दिनपणो अति नासतो ए ॥ २ ॥ माता सुण अरदास, हुंठुं थारो दास आ०॥ आश हमारी पुरवी ए,
 पमीयो पथर मांही; उवायो उवाही आ०॥ आरती चिंताचुरवी ए ॥३॥ वैरी केरे वास, तुम्ह पसाइ आश आ०॥
 पुगी माहरा मन तणी ए, नाइ नाया यान; करता हरता प्रांण आ०॥ पहुंची न शक्यो तुम्ह नणी ए ॥ ४ ॥
 हुंतो दिन अनाथ म्हारो कोइ न नाथ आ०॥ गगन पमतो जिलीयो ए, थारा किधा काज; ए सघला शुन साज
 आ०॥ पाप पराजव पिलीयो ए ॥५॥ जेहने पोढा पाप, प्रगटे आवीयो आप आ०॥ माय विबोहो तेहमें ए, जुमा
 मांही एह; नलपण केरी रेह आ०॥ तुम्हशी जणणी जेहने ए ॥६॥ विसारे मती मोय, माय विनवुं तोय आ०॥
 हइमा नींतर राखवो ए, मुजने बालक जाण; चुंबी सुह शीर पाण आ०॥ प्रेम अमीरस चाखवो ए ॥ ७ ॥ बाती
 फाटे माय, पिता पण इम थाय आ०॥ चउधारा अंसु वहे ए, विसाख्यो नवीजाय; राख्यो पण न र्हाय आ०॥
 जेह लेहणो सोइ लहे ए ॥८॥ अवर माताने शीश, नामी लेइ आशीश आ० ॥ कोमी वरस चिरंनंदजे ए, नाइ
 तणो परीवार स्वाम मदन कुमार आ०॥ नाइ नणे आनंद जे ए, ॥ ९ ॥ सुण मोटा मंत्रीश, खासुविशवावीश ॥
 आ०॥ जे मेरो सधरावीयो ए, सुनट सहु करजोम; आपनमे मन मोम आ०॥ खमज्यो जोर करावीयो ए ॥१०॥
 चिंतावान गुलाम, तेहने पण सलाम आ०॥ डरण हुइने हालीयो ए, नान्हा मोटा साथ; घाली गलामां वाथ आ०॥

चिंत चोरीने चालीयो ए ॥ ११ ॥ मस्तक षण जम देह, नाक विना मुख एह आ० ॥ तारा विण जीम
 लोयणा ए, पान विना जीम बेल; जल विण सरोवर मेळ आ० ॥ जुण विण जीम जोयणा ए ॥ १२ ॥ विद्या विण
 जीम देवि, हरी विण दरिचे कहेवी आ० ॥ देवा विण जीम देहरो ए, विण श्री काम कुमार; सुना घर दरवार आ० ॥
 लालन घर शिर सेहरो ए ॥ १३ ॥ वेसी षमाने ताम, नारदशुं अन्नराम आ० ॥ सुनो जीम उम्नी गयो ए, हेज
 हशए न समाय; हिंसे जीम वठ गाय आ० ॥ मा मिलवाने अलजीयो ए ॥ १४ ॥ नारद कृत शुं विमान, तोमे जात
 प्रमाण आ० ॥ हाश हिए न समावही ए, वावाजीशुं ताम; बोले कुमर काम आ० ॥ कामे शुं न सोहावहि ए
 ॥ १५ ॥ हुंतो बुढो देख, तुं तरुणो शुं विशेष आ० किंउं न करे मन नावतो ए, रचे विमान रसाल; सवहि विधी
 सु विशाल आ० रविमंजल जीम आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोम्नी चाल, कहे नारद ततकाल आ० ॥ किंउं न चले
 वेगो वहि ए, नारद वदन नुरंत; तूटयो परदंत आ० ॥ वेगे चलायो तिम सहि ए ॥ १७ ॥ रुपाचल गीरि सोड, उलंघीया
 ते दोड आ० ॥ प्रयवी उपरे आवीया ए, खदिरा अटवि जेह; तदक परवत तेह आ० ॥ शिला थान देखाविया ए
 ॥ १८ ॥ जुमंजलना ख्याल, गीरी सरीता सुविशाल आ० ॥ विविध प्रकारे देखतां ए, मध्य देशमें देव; झाड गया
 ततखेव आ० ॥ वारु वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो ढाल रसाल आ० ॥ प्रांकी सत्योत्तरीमी
 ए, श्री गुणसागर एम; बोले बोल सप्रेम आ० ॥ मदन कथा मुज मन रमी ए ॥ २० ॥ ॥ दोहा ॥ सेना विवि
 सामटी, हय गयनो नहि पार; राज कुमार राजा घणा, वाजे वाजां सार ॥ १ ॥ मदन कहे रुपि ए किंहां, जाड दल

बल पुर; खंचरामें नाव पखाया, एहवा लोग सनुर ॥१॥ रुपी भ्रांखे गजपुर धणी, डुर्योधन चुपाल; चतुरंगी सेन्या
 नली, तेहनिए सुविशाल ॥३॥ होम पमी जीही कारणे, रुखमणी नामा माहि; उदधी नामे शा कुञ्जरी, परणवा
 चालि उग्राह ॥ ४ ॥ नामा घरे दिन बारमे; सुतनो श्राप्यो नाम; प्रानु विशेषे जानुने, तेह स्युं व्याहण काम ॥
 ॥ ५ ॥ ढाल ७८ मी ॥ ॥ नणदलनी देशी ॥ कुंवर कहे सुण तातजी, नारद ए मुफ वात ॥ कुंमर ॥
 कौतुक करतो नहि रहुं, राखे शुं अखियात ॥ कुं कौं १ ॥ रुप धरयो तव भिलनों, विरलो वदन विशाल कुं ॥
 मोटा दांत बिहामणा, प्रौढ बणायो जाल ॥ कुं कौं २ ॥ उंन कुञ्जा सारिखा, गाल मरावण हार कुं ॥ मिले
 बली अति लीलहरी, पिला केश अपार ॥ कुं कौं ३ ॥ लोचन दिसे रातमां, दिसे मोटी काय कुं ॥ ठोटा कर
 अति छबला, मोटो पेट कह य ॥ कुं कौं ४ ॥ जानी जांघ सल घणा, रुपे रुप करुप कुं ॥ वेवि चिपटी नाशिका
 कान विराजे सुप ॥ कुं कौं ५ ॥ अंकुश अति आकरां, चांगी केम देखाय कुं ॥ भृगुटी जाले नम्रनमे, नीलां केरो
 राय ॥ कुं कौं ६ ॥ हाथे तरिनो कामठी, शोथां बाण वेव्यार कुं ॥ गाति वालि श्रवसुं, वचन वदे अविच्यार ॥
 कुं कौं ७ ॥ मारग रोकीने रह्यो, फोडि न सके जाय कुं ॥ कौरव केलवणी करे, आगे उजा आय ॥ कुं कौं ८ ॥
 रे भाइ तुं स्युं कहे, कोरे कीजे माग कुं ॥ सो भ्रांखे तुम्ह सांजलो, दाण तणो मज लाग ॥ कुं कौं ९ ॥ कौरव बोले
 नीलमा, बोल विमासी बोल कुं ॥ स्युं हम जाला वाणीयां, आपे इमना खोल ॥ कुं कौं १० ॥ क्रस कह्यो ठे
 मुफ नणी; म्हारा देशमोजार कुं ॥ वस्तु नलि ते ताहरी, हुं तुं क्रस कुंमार ॥ कुं कौं ११ ॥ तुम्ह सरीखा ठे केटला,

क्रम तले घर नंद कुं० ॥ मुज सरखी तो हुंज हुं, क्रम तले कुज चंद ॥ कुं० १२ ॥ तुं साचारे तुं साचो, माता
 जायो रल कुं० ॥ रल अहुं चिंतामणी, क्युं न करो तम्ह यल ॥ कुं० कौ० १३ ॥ यल करे सा अति वषुं, पुजे स्या तुज
 पाय कुं० ॥ ए आची हाथ विहयमें, जीन किया स्युं धाय ॥ कुं० कौ० १४ ॥ तो हुं जायो क्रमनो, मरुं थारो मान कुं० ॥ वाकुर
 करना चाहीए, ए गोएह मेदान ॥ कुं० कौ० १५ ॥ तां लगे तेमनी व्यापना, ज्यां लगे न उगे सुर कुं० ॥ नाचे कुदे रहण
 लो, नायो सिंध हजुर ॥ कुं० कौ० १६ ॥ कौरव तुम्ह कपटी पणा, कपटतणे बल जोड कुं० ॥ तुमी ठंमवी पाम्बा, रीस
 घणी मुज सोड ॥ कुं० कौ० १७ ॥ उयीनपोधी नथाहरी, जुवो करो गुमान कुं० ॥ वरुमाता विनचारणी, थारा एह व
 खाण ॥ कुं० कौ० १८ ॥ अंधि जाया आंधला, होड फिरो तुम्ह आप कुं० ॥ नीरुदीवते घणा, मिल्योन कालो साप ॥ कुं० कौ०
 १९ ॥ यद्यपी वादल ढांकीयो, तेज जणावे ज्ञाण कुं० ॥ विणसी जाणी गोवनी, विच करे प्रधान ॥ कुं० २० ॥ लियोमो
 ले हाथीयो, जे थारे मन जाय कुं० ॥ जेहनी जेहने सुपतां, रोस किसो तुम्ह राय ॥ कुं० २१ ॥ घोमा हाथी शुं करुं
 लेशुं आठी वस्तु कुं० ॥ माहरा मनमें जावती, देखी वस्तु समस्त ॥ कुं० २२ ॥ आठीमें आठी घणी, आठी कुमरी
 जोय कुं० ॥ सोड आपो मुज ज्ञणी, हरी रलीयायत होय ॥ कुं० २३ ॥ थारे तो ए हासते, पण माहरे ए सात्र
 कुं० ॥ तो हुं जायो वापनो, पालुं बोली वाच ॥ कुं० २४ ॥ जीम २ हठ पोखीयो, पातसाहकेपास कुं० ॥ तिम हठ
 पावुं हुं घणो, तो देख्यो सावाश ॥ कुं० २५ ॥ ढाल जली अगतेरमी, कौरव शुं संवाद कुं० ॥ गुणसागर जस पावशे,
 पुरव पुन्य प्रसाद ॥ कुं० २६ ॥ ॥ दोहा ॥ २ रे निर्दल झीवतुं, नांवे किंसुं गेमार; सोम देखी धुर आपणी,

किजे पाउपसार ॥१॥ नान्हे मुहने मोटीका, बोले बोल न कोइ; गाल चपेटा सोइ ॥२॥ हुश
 करी जे तेतली, जे तो पुन्य प्रकाश; आंबो अंबर जइ रह्यो, वामन शिफल आश ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ७ए
 मी॥ नेम आयो सावन मास हो ॥ ए देशी ॥ वामन शीफल आश हो; कौरव प्रांखे तास हो; तास नहो
 प्रांखे कौरव राजवी ए, नैरव ऊंपापात हो; करी निज आत्मघात हो, घात नहो पावे नारी अची नवी ए ॥ ३ ॥
 एशुं स्थो ऊखवाद हो, वाद सहु निस्वाद हो; स्वाद न हो स्वाद न लागे कोचलो ए, साही नाखो डुर हो, चालो ए
 हने चुर हो; चुरनहो चुरी चलयो कोम तिठलो ए ॥२॥ एकथो दरवेस हो, मनोरथ शुं विशेष हो; सोसनहो लाते
 फूढ्यो खापरो ए, हुवे जागो गेह हो; तेहवो दिसे एह हो, एह नहो मारी किजे पाधरो ए ॥३॥ दल चाव्यां अची
 राम हो, दल रोकीयां ताम हो; तामनहो ताम रोक्यां ए दल सहु ए, सुन्नट मारण काज हो; धाइया सजी साज
 हो, साजन हो साज सजे ते बहु ए॥४॥ कुकुज सुणी कान हो, सबर मलीया आण हो; आणनहो शबर मिलीया
 अति घणां ए, विविध आयुधवंत हो; युद्धमें बलवंत हो, वंतनहो मान मोफे परतणा ए ॥ ५ ॥ जुमीने गीरी श्रुंग
 हो, वृद्ध उपरी रंगीन हो रंगीन हो रंगी रमतों देखीए ए; कृश अंगज कोमी हो, नम शरिमणी जोमी हो, जोमीनहो
 होम को न विशेषीए ए ॥ ६ ॥ सुन्नट नावा जाइ हो, को न साहसा थाइ हो; थायनहो सिंध साहसां हर्णला ए,
 उदधी कुमरी लिध हो; नीला कारज शिध हो, सिधनहो काज अती वाधी कला ए ॥७॥ देखीयो रुषी राय हो,
 ए न लीथो जाय हो; जायनहो ए न लीथो सुरनरां ए, लारीयो ततकाल हो; साधु पासे बाल हो, बाल नहो

किधो रूप पुरंदरु ए ॥ ८ ॥ दुस्थी देखंत हो, पृथही गुणवंत हो; वंतनहो कवण ए सुख कारीका ए, कहे नारद
 ताम हो; सुणही कुंवर काम हो, कामनहो एवर नगरी द्वारीकां ए ॥९॥ स्वर्ग खंन समान हो, उपमानो थान हो;
 थाननहो एहवो विजो को नही ए, कश्राय निवास हो, महा साल आवास हो, वासनहो वास रुनेठे सही ए
 ॥१०॥ हेम में पागर हो, तुगन हाथ अठार हो; ठारनहो रल मणीमें कांगुरा ए, देव निर्मित काम हो; स्वर्गपुरी
 समगाम हो, ठामनहो पुरीयो वनवना नरा ए ॥ ११ ॥ वावी को विस्तार हो, नीर पुरीत सार हो; सारनहो नारी
 मंजन कारणे ए; वना श्री गजराज हो, मद ऊरंत सकाज हो; काजनहो मदजले रज वारणे ए ॥१२ ॥ महोल
 तणी वरज्जडी हो, बणती२ पोली हो; पोलीनहो पोली तो उंची कही ए, सकल कांती अपार हो; उगंतो दिनकार
 हो, कारनहो कांति किरणे मीज्जी रही ए ॥ १३ ॥ हाट घर वरसोह हो, सोहनो संदोह हो; दोहनहो सोह गुणे
 धन जाणीयो ए, स्वर्ग मर्त पाताल हो; तिन लोक रसाल हो, सालनहो सार शोधीने आणीयो ए ॥१४॥ पुरी
 देखण जाय हो, साथु थामो थाय हो; थायनहो थाए थामो सादरो ए, यादयनो अति जोर हो; थारो चित्त चकोर
 हो; कोरनहो सोर माचे सोपरो ए ॥ १५ ॥ शंहेर मांहि जाय हो, मिलसुं तुम्हने आय हो; आयनहो आवे जुं
 उतावलो ए, पुरीसुं शंकेत हो, माय मिलवाने हेत हो; हेतनहो चितमें उमाहलो ए ॥१६॥ जाति कौरव काल हो,
 आवीयो सुकुमाल हो; मालनहो ढाल ए एगुणएशीमी ए, मदन महिमा माल हो; सुरनीने सुविशाल हो, सालन
 हो गुणसागर मन सारमी ए ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ मदन कुमार मन रंगशुं, थंजी गगन विमान; आवे नगरी

द्वारिकां, गुप्तपणे गुण जाण ॥१॥ धुर आयी चोजगानमें, बंधव नयणे दिव; सुंदरता अविलोकतां, लोयण अमीय
 पडव ॥२॥ पुढे विद्या सो कहे, ज्ञानुं २ सम देख; ज्ञामा सुत आनंदमें, पुन्य प्रताप विशेष ॥३॥ घोना खेलावे
 घणां, घोना शुं अति प्रेम; आप जणावुं एहने, मासुख पामे जेम ॥४॥ ढाल ७० मी ॥ मेरे परम सजुणो
 आतमा, तथा विबियानी देशी ॥ कौतुक केलवे घणुं, तव श्री काम कुमाररे जाइ; चरित तणो नहिं पार ए, कोइ
 न जाणे साररे ॥ जाइ कौं १ ॥ लंबोदर काया बनी, चंचल गति विस्ताररे जाइ; सर्व अवेवां शोजतो, सर्व सु
 लक्षण धाररे जा० ॥ कौं २ ॥ ते उंचेस्वर सारिखो, अथ अनोपम वानरें जा० ॥ विविध प्रकारे शृंगारीयो, सोना
 केरो पलाणरे जा० कौं ३ ॥ एहवो घोमो कर धरी, सो सोदागर थायरे जा० ॥ पाणि पाव शिर कंपणी, जाकी
 बुढि कायरे जा० ॥ कौं ४ ॥ थल २ करतो आवीयो, ज्ञानुं कुमरनी पासरे जा० ॥ अथ रत्न अविलोकतां, पायो
 अति उल्हासरे जा० ॥ कौं ५ ॥ पुढे पंथी कुण तुं, हुं परवेशी स्वामीरे जा० ॥ हय वर आपण्यो हिंसतो; देव तुम्हारे
 कामरे जा० ॥ कौं ६ ॥ कहे मोल मतिवंत तुं, कंचन केरी कोमरे जा० ॥ परखी आपे आपजो, को नवी जाणो
 खोमरे जा० ॥ कौं ७ ॥ आप कुदि घोमे चड्यो, चावप लीधो हाथरे जा० ॥ वाहे घोमो वेगशुं, अचरज सधले
 साथरे जा० ॥ कौं ८ ॥ सुरज रथ थंजी रह्यो, करे विचारण प्रांहिरे जा० ॥ के एहनो के माहरो, जलो किस्यो दोइ
 मांहिरे जा० ॥ कौं ९ ॥ वक्र अने सम जावशुं, नाचे कुदे सोइरे जा० ॥ कुमर न संवाह्यो पमे, ताम विमासण होइरे
 जा० ॥ कौं १० ॥ उपरणीने पाघमी, ठटकी पनी ए दोइरे जा० ॥ पाठे पम्पियो आपहि, लोगा हांसो होइरे जा०

कियो रूप पुरंदरु ए ॥ ७ ॥ छुरथी देखंत हो, पढही गुणवंत हो; वंतनहो कवण ए सख कारीका ए कटे न
 ॥ का० ११ ॥ उवाइ उना कया, सादागर त्रासतर जा० ॥ थोर जाया ठकरा; वावा किम नासंतरे जा० ॥
 १२ ॥ क्रश तले धर जाणीइ, तुं पाटोधर पुतरे जा० ॥ जानु जारे एहि लक्षणे, किम रहेस्ये घरसुतरे जा० ॥ कौ०
 घोमो राखी नवी शक्यो, तो किम राखीश राजरे जा० ॥ तुम्ह स्या पत्रा क्रशने, कुलनी न रहि लाजरे जा०
 १४ ॥ बुढा बांवा वाउजा, जीच कर्या स्यो काजरे जा० ॥ चढि घोमे इखुं सहि, चतुरपणुं तुज आजरे जा० ॥ कौ०
 घोमे चढीयो जाय जो, वेचणनो स्यो कामरे जा० ॥ कोइ चढावे जोरस्युं, देखाउं गति तामरे जा० ॥ कौ० १६ ॥
 पांच नर आवीया, उपाढ्यो आकाशरे जा० ॥ पढ्यो अपुवो उपरे, खोपर दंत विणासरे जा० ॥ कौ० १७ ॥ वी
 इम सही, दाब्या गुनट अपाररे जा० ॥ तजिवार चढावतां, चांष्यो जानुं कुमाररे जा० ॥ कौ० १८ ॥ जान्
 पग देखने, आपहि चढियो जामने जा० ॥ लाग्यो अस् खेलाववा, तरुण तणी परे तामरे जा० ॥ कौ० १९ ॥
 कुदण चालणे, राग वागु अनुमानरे जा० ॥ राजपुत्र अति रंजिया, रंज्यो कुंवर जानुरे जा० ॥ कौ० २० ॥ छ
 उंचो जइ, सुगमाइतो संचरे जा० ॥ देखाधि आधो गयो, कुमर लीख्यो परपंचरे जा० ॥ कौ० २१ ॥
 एशीमी कही, ढाल अनोपम नामरे जा० ॥ गुणसागर कामे कियो, नामां सुतग तमाये जा० ॥ कौ० २२ ॥
 ॥ दोहा ॥ आगे जातां अति जलो, दिवो वन सुख वाम; पुठि कर्ण पिसाचिका, नामा वन अजीराम ॥ १ ॥
 घोमना रूपे चारीया, घास अने तरुपान; विंइसंधिनवेलमी, कीधो अर्थीको जान ॥ २ ॥ आगे अपर
 विलोकियो, नामां केरो वाग; जगमें तरुवर जेतजा, तेतानो तिहां लाग ॥ ३ ॥ वानर रूप रतिपति, रिस

विशेषे जोय; पान फूल फल तोम्नीयां, तुंठ कियो वन सोइ ॥ ४ ॥ नगरी मांही आवतां, दिठो रथ वर एक;
 आवे चाल्यो सनमुखे, दिसे शोच अनेक ॥ ५ ॥ ढाल ७१ मी ॥ रामचंद्रके बाग चंपो मोरी रघोरी ए
 देशी ॥ दिसे शोच अनेक, सोधन रल विराजे; मंगल कुंच विवेक, वारु वाजां वाजे ॥१॥ आरीसाकी सोह, सोहे
 ध्वज अजीराम; नारीजण संदोह, गावे गीत सकाम ॥२॥ पुढी विद्या काम, नांखे शयल विच्यारो; कुंजा राघरनु
 नाम, परणे हरख अपारो ॥३॥ कुंजाराघर जाय, लावे कुंज उदारु; तुज माता डखदाय, नामा शाअहंकारु ॥ ४ ॥
 कियो रूप विकार, उंठ अने खर केरो; जोतरीया रथ नार, खेमे आप घणोरो ॥५॥ हांशी करे ते नार, हाको हाक
 मचावे; नांजे रीसमोजार, सोरथ आपपुमांवे ॥६॥ खंभीत किर्धां कान, पाड्या दांत जीवारो; आयो कोपर जान,
 फाड्या वख तेवारे ॥७॥ गीतथाने विलाप, करती नारी नावी; किम राखेवो आप, हरशी हरणी त्राठी ॥ ७ ॥
 शोरी शोरी सोइ, हिंमे आप सोहायो; कामणगारो होइ, सबके मन न्नायो ॥ ८ ॥ किनर सुर अवतार, खेचर भुचर
 राजा; लोक कहे शुं विच्यार, एहना अधीक दवाजा ॥१०॥ के कोइ असुर कुमार, के इंड्र जाल कहावे; यादवनो
 परीवार, मांहे जयन विपावे ॥११॥ कोइ होज्यो एह, तुम्हने शिकणवार; बुढा आणी सनेह, वरजे वारंवार ॥१२॥
 मोकरने नृप सार, पुढी कांइ करेवो; योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो ॥१३॥ मदन करे ए काज, किधो रूप
 अनेरो; मा मिलवाने आज, आणे हरख घणोरो ॥१४॥ त्रिस एक अने पंचास, ए ढाल कहाणी; श्रीगुणसुरी जगी
 श, श्रीहरीनंद वखाणी ॥१५॥ ॥ दोहा ॥ रूप अनेरो धारिके, चाल्यो जाइ जाम; दृष्टे आवी वावनी, संवही

विधी अन्नरीराम ॥१॥ कंचन केरो कामठे, पयमीनो मंनण; पंच वरण रला तणो, तेहनो कियो वखाण ॥ ३ ॥ साधु
 रखावली नारी रहे, निर न लीयो जाय; पण जाणी नामा तणी, मदन करे छपाय ॥३॥ ढाल ८२ मी
 संगती नित किजीए ॥ए देशी॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, सेत जनोइ किधी साररे हो; वंनणा; धोली धोती पहेरणेरे
 फँटानो भति विस्तार हो ॥वं० रु० १॥ मस्तके बांध्यो फालीयोरे, पवात्री पावन पहरायरे हो वं० ॥ पगे गुजराती
 खासमारे, वर्ण गुरुनो विरद धरायरे हो ॥वं० रु० ३॥ मातोने अरु फांदशुरे, पिली आंख्या जोति अणारे
 यांवर मुडमीरे, माथे कियो तिलक उदाररे हो ॥वं० रु० ४॥ ठापा दिसे द्वारकरे, गंगा केरो माथे
 हो वं० ॥ हाथे कमंमल लाकमीरे, देव धुनीनो करे उचाररे हो ॥वं० रु० ५॥ करमें रातो टिपणेरे, वांचे
 मंमरे हो वं० ॥ मथुरा माल विराजीतारे, किरिया कांने करी प्रचंमरे हो ॥वं० रु० ६॥ आशीर्विद प्रकाशी
 नद्वत्र चार विच्यारे हो वं० ॥ जोशी जोतिस पुरीयोरे, लग्न तणी लहेवेलावाररे हो ॥वं० रु० ७॥ ए जल
 योरे, दाशी दोमी लागी पायरे हो वं० ॥ देसे शीथो सामटोरे, तुम्हने पुन्य घणोरो होइरे हो ॥वं० रु० ८॥ चेन्नी
 मंत्री आपीशुरे, मन रलायात सोइरे हो वं० ॥ वांचण मांचण आचीयोरे, खेसोधोती मलायो वाररे ॥वं० रु०
 चंचल जातीनीरे, लाज नही निर्लज अपार हो वं० ॥ वांचण मांचण आचीयोरे, खेसोधोती मलायो वाररे ॥वं० रु०
 ९॥ आची वन्नगी वांनरिरे, सोपुठेए कुण विच्यारे हो वं० ॥ गुन्हेगार हमारमारे, किउनलही नामाकीसाररे हो ॥वं०
 रु० १० ॥ नामाडे कोचुतणीरे, केनेदेवीने अचताररे हो वं० ॥ उरसथकीतं उतरयोरे, नामां कश्च तणी पटनाररे हो ॥वं०

रु० ११ ॥ माता जानुकुमारनीरे, तेहनीवावी विशेषधारे हो बं० ॥ हमरखवालीआ करीरे, लेण न पावे कोइ वारे हो
 ॥ बं० रु० ११ ॥ नामां साथे चुपतीरे, ए जलमाहि जीले सोइरेहो बं॥ केनामां सुत जानुजीरे, अवर नजीलण पावे कोइरे
 हो ॥ बं० रु० १३ ॥ तुज सरिखा निखुं चालीरे, रावन राणीनो पइसारे हो बं० ॥ विप्र पथारो वेगस्थुरे नहीतर जाण
 स्यो तुम्हे सारे हो ॥ बं० रु० १४ ॥ एह वचन सुणी खीजीयोरे, रे तुं दासी कोलाणि कोइरे हो बं० ॥ ब्राह्मण पग
 रज खेरवेरे, सब जग पावन होइरे हो ॥ बं० रु० १५ ॥ हलवेश चालीयोरे, पोहतो वाव तणा जल पास हो बं० ॥
 दासमथियां मजी साहीयोरे, कर फरस्यां गुण उपज्यो तासरे हो ॥ बं० रु० १६ ॥ गीरी हुइ सामलीरे, सोना
 पामी सधली दासरे हो बं० ॥ करेहि प्रशंसा सादरीरे, पात्र वनो मुखदेसावासरे हो ॥ बं० रु० १७ ॥ वहिर आवी
 गोरमीरे, आपणुमाहिनिहाले रुपरे हो बं० ॥ ए मोटो उपगारीयोरे, एह पसाइं रुप अनुपरे हो बं० रु० १८ ॥ चरी
 कमंमल नीरसुरे, निसरीयो विप्र जे वारे हो बं० ॥ खाली दीठी वावमीरे, दासी सधली लागी लाररे हो ॥ बं० रु०
 १९ ॥ जल सोसन एसी दोयमीरे, ढाल वारु विशेषे एहरे हो बं० ॥ श्री गुणसागर सुरजीरे, मदन चरीत्रनो नावे ठेह
 हो ॥ बं० रु० २० ॥ ॥ दोहा ॥ रिस वसे ते दासनी, प्राखे वचन सरोस; अति अटूट अगाह जल, कां किथो ते
 सोस ॥ १ ॥ के माकि के सोहरो, विप्र नहि चंमल; एहवो काम न कोकरे, जीव दया प्रतीपाल ॥ १ ॥ ढाल ८३ मी ॥
 जो गनाने राखेरे विल वाय तथा हुं वारी धना ॥ ए देशी ॥ बंनणारे कांजल लिधो जाय, बंनणारे हम लागा तुम्ह
 पाय; बंनणारे जंगम थावर जीव, बंनणारे जल विण करशे रीवा ॥ बंनणारे काणए टेका ॥ जल राजा जलदेवतारे, जल

सम अर न कोय; जस जगने जीवामणोरे, जल विण तृपति न होइ ॥ वं० का० ३ ॥ अन्न विनां आद्युत्तरे, जल
विण एक क्षण; सरे नहि तिह कारणेरे, जल मोटो संसार ॥ वं० का० ४ ॥ अमृत पंच वखाणियारे, जल सब
आदि सार; पाणुं कियुं विस्तार्युरे, जलधी जग वयहार ॥ वं० का० ५ ॥ हम वलिहारी ताहीरे, वावा सुण अर
दास; पाप तणी ठे पावलीरे, धरी स्वामीनीको त्रास ॥ वं० का० ६ ॥ जुस्यां करो नगी ना रहिरे, जाय जीम गजराज;
शंक न माने कोइनिरे, गजे जीम घन गज ॥ वं० का० ७ ॥ विविध प्रकारे चेटारे, करतो जाय उदार; एटले अग्रे
आयियोरे, नामाने वेजारे ॥ वं० का० ८ ॥ हाटानि शेजा हरेरे, मणि मोतीने रयण; हरे करे अति आकरोरे,
लोका साथे कुंचयनरे ॥ वं० का० ९ ॥ अन्न लुण कपुरस्युरे, सुधा विविध प्रकार; सख वख थादि करीरे, डब्यतणो
अपहार ॥ वं० का० १० ॥ घोमा हाथी याहिणीरे, जामां जानु नाम; जे देखे ते अपहरेरे, सोर मचायो स्वांम ॥
वं० का० ११ ॥ सात पांच मिलि सामटिरे, वेगे ३ सोइ; चोर हमारो चोतरेरे, चोहने वोए होइ ॥ वं० का० १२ ॥
वड्यां साथे बोखियोरे, पुरुषां जोर न कोइ; कमंमल फोमी दियोरे, जल वहि चाल्यो सोइ ॥ वं० का० १३ ॥ कांइक
जसतो याबिनोरे, कांइक विद्या जोर; चोहटो वाह्यो वेगस्युरे, मांचि रह्यो अति सोर ॥ वं० का० १४ ॥ कोमी कीराणा
कापनारे, कोइ न लहे पार; वस्तु अमोलिक वाह्येरे, पाम्यो हर्ष अपार ॥ वं० का० १५ ॥ पाणीपुर पंमूरधीरे, वासी गइ ते
नास; आपुण दृष्टी अगोचरुरे, माने मन सावाश ॥ वं० का० १६ ॥ एतो त्रासीमी कहीरे, ढाल विशाल विशेष; गुणसागर
त्रयी सांचजेरे, न करे कांइ अदेख ॥ वं० का० १७ ॥ बोहा ॥ तदनंतर किधो जलो, योवन रूप रसाल; ब्राह्मण गुणको

आगलो, गले तुलसीकी माल ॥१॥ चर्म सरीरी प्राणीयो, कांठे बेठो आय; मोह वसे मदमस्तना, विजानुं शुं जाय ॥१॥
 ॥ ढाल ०४ मी ॥ देशी जुमखमानी ॥ रंगे रमतो राजीयो १, पेखे पुष्प पंमुर; रामा सुत मोहना, पुठे विद्या सो
 कहे १, ए सब फूल सनुर ॥ रा० १ ॥ जानुं कुमर विवाहनो, गुंथे माल अपार रा० ॥ मालि पासे मागतो आपो फूल
 वे ब्यार ॥ रा० १ ॥ नापे तव ते खीजीयो, फरसे हाथ लगाय रा० ॥ विविध जातना फूलमां, आक तथा कहेवाय
 ॥ रा० ३ ॥ गांधी साले आवीयो, मागे वास सुवास रा० ॥ नापे ते तव वासनी, किधी वास कुवास रा० ४ ॥
 गजथाने नेंइ साकरे, नेंइसाने गजराज रा० ह्यथाने खर बांधीया, खरथाने ह्यसाज ॥ रा० ५ ॥ उंट शानके बोकमा,
 बोकमा थानके उंट रा० ॥ खरही खुटने साधुजी, साधु करे खरखुट ॥ रा० ६ ॥ धान जातीने फेरवे, चावल कुरी
 थाय रा० कुरीने चावल करे, इम सब नाज फिराय ॥ रा० ७ ॥ जुण करे धन सारजी, धनसारानो खार रा० ॥ रत्न
 करे ते कांकरा, कांकरा रत्न अपार ॥ रा० ८ ॥ हिंग करे कस्तुरीका, कस्तुरी फिरी सोइ रा० ॥ सोनाने पितल करे,
 पितल सोना जोय ॥ रा० ९ ॥ धीनो तेल समाचरे, तेल तणो घृत धार रा० ॥ ज्वारी करे मोती तणी, मोती करे
 ज्वार ॥ रा० १० ॥ पाटु वस्त्र विराजतां, सोतो किया टाट रा० ॥ टाट सरीखा जे हुता, ते फिर किया पाट ॥ रा०
 ११ ॥ धोले दिन बजारमें, एतो पामे वाट रा० ॥ बुंब न वारह तेहनी, साह करे उचाट ॥ रा० १२ ॥ वेपारी घांघा
 हुवा, वावी वस्तु न पाय रा० ॥ गाहक आया फीर गया, वेपारी पिठताय ॥ रा० १३ ॥ लाज सरीखो व्यय करे, वेपारी
 आचार रा० ॥ लाज विना धन ज्जोज्जे नेंइ दंम विच्यार ॥ रा० १४ ॥ चाक फिरंते निपजे, मोठो ज्ञानो जोय रा० ॥

सम अवर न कोय; जल जगने जीवामणोरे, जल विण तृपति न होइ ॥ वं० का० १ ॥ अन्न विनां अणुघसेने जल ।
अण फीरते करवो नही, साह विमोक्षण सोय ॥ रा० १ ५ ॥ कौतुक करतो चालीयो, आयो राजडवार रा० ॥ बाबा
जीनो देखीयो, मंदिर सब विधी सार ॥ रा० १ ६ ॥ मैखकरीने लावीयो, जाणी बाबा प्यार रा० ॥ बाबो वेवो देखीयो,
इंइ तणें अयत्तार ॥ रा० १ ७ ॥ दाता जुगता अरुगुणी, सायर जेम मंजीर रा० ॥ मात सुनडा जाइयो, मेरु तशी
पेरे धीर ॥ रा० १ ८ ॥ स्वदेशे स्वजातीमें, मान वहे सहु कोय रा० ॥ एपरजुमी पंचाडण, नाग्यवली अति होइ ॥ रा०
१ ९ ॥ राय तणे गोमे लने, मेपमहा मयमंत रा० ॥ पहीली दोमे गिर पमे, क्रश्र पिता वलवंत ॥ रा० २० ॥ कमें तो
नवी गुदरे, बाबाही शुं सोइ रा० ॥ सिंहासगान साडकां, ए चखाणो जोइ ॥ रा० २१ ॥ श्रीवसुदेव नरीदशुं, जुचर
खंचर राय रा० ॥ आगे कोइ न जितीयो, पोते जीत्यो जाय ॥ रा० २२ ॥ ए चोराशीमी ढालमे, पोते बाबा वित
रा० ॥ श्रीगुणसागर सुरजी, नयणे धर्मीय पड्ड ॥ रा० २३ ॥ ॥ दोहा ॥ आगे दिवो अति जलो, नामां जवन
उदार; इज तोरण माला नली, पोखे शीन अपार ॥ १ ॥ विद्या नांखे स्वामी सुणो, जोतुं ड्यन साल; करबुं ते
करजे इहां, विजो सहु जंजाल ॥ २ ॥ लान कियो सरोवर जले, अरु शीर बुटा केस; माथे टिको चिरनो, विप्र
तणो वरवेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदसनो सही, ब्राह्मण बाल कुमार; नाम धरावे वेदीयो, गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥ ढाल
८५ मी ॥ इम जीन पुंजीए ॥ ए देशी ॥ श्रीहरी राज कुमारजीरे, राचे केली मोजार; पेखी पमारापर तणारे,
धमरखवंत अपारोरे ॥ १ ॥ आठो वेदवो, दरसण मोहन बेलोरे; सुरगुरु जेहवो ॥ ए आंकणी ॥ नोजन अथें आ
वियोरे, नामा नामनी पास; स्वस्ती कही उजो रद्योरे, सावोले उल्हा सोहो ॥ आ० २ ॥ विप्रं कहे चाहो किशुरे,

माता भोजन आप; कृधा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवुं थापहो ॥आ० ३॥ पहीला ब्राह्मण तेमीयारे, भोजन
 अर्थे उदार; आप्ती मील्याळे एकवारे, अगणीत केड हजारहो ॥आ० ४॥ भोजननुं शुं मागवोरे, क्रम चलचासंग;
 हयगय धन कंचन मणीरे, माग३ मनरंगहो ॥ आ० ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन विचार; तुम्ह तो
 विद्या वेचणारे, न लहे पुन्य प्रकार हो ॥आ० ६॥ दान तणा फलळे घणारे, अन समो नहीं कोड; अवरं त्रपति
 न उपजेरे, त्रपती अनथी होइहो ॥आ० ७ ॥ अन याचना तेहथीरे, पहीली किधी एह; मुजतुशी जग तुं सडरे;
 इहां नहीं संदेहहो ॥आ० ८॥ नामा चांखे परीयणोरे, चंज भोजन शुं आज; विप्र जमावो वेगशुरे, मुख्या भोजन
 काजहो ॥आ० ९॥ पुनरपी नांखे नामनीरे, सधलामांही जाय; मनगमतो भोजन करोरे, त्रपति घणोरी थाय हो
 ॥आ० १०॥ विप्र मांहे नवी जसुरे, एतो विधी वाताहीण; ब्रह्म क्रिया पाले नहीरे, पापा चार प्रविणहो ॥ आ०
 ११॥ सर्व सुलक्षण वंतहुरे, विद्यानो चंमार; मुज भोजनदे सादरोरे, लचपच मकर लगारहो ॥आ० १२॥ गौब्राह्मण
 ने तिर्थ जेरे, मुज तृप ते तृपताय; पात्र न मुज सो डसरोरे, मात विमासे कांडरे हो ॥आ० १३॥ क्रिया हिए लक्ष
 कोमीनेरे, भोजन दिधो वादी; क्रियावंत एकही नलोरे, सुणी जे आदी अनादीहो ॥ आ० १४ ॥ बेवो सधला
 आगलेरे, पग धोवाने काज; विप्र कहे रोसे नरबोरे, आवेळे शिर खाजहो ॥ आ० १५ ॥ ज्ञान ब्रध वय ब्रधजेरे,
 समजावे परीवार; कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आचारहो ॥ आ० १६ ॥ बडतो पहीले आशणोरे,
 ब्राह्मण आव्या वाजी; चाल्या थानक डसरेरे, जाण्यो बुटा जाजीहो ॥ आ० १७ ॥ तिहां पण अग्नीमन्त्रासणोरे,

जाइ वेगो सोइ; तवते र्हण कलकल्पारे, अजव तमासो होइहो ॥ आ० १० ॥ वदशास्त्रना जाणथरे, न लहो वेद
 विचार; हिस्वादिक पातिक करोरे, न तजो क्रोध लीगर हो ॥ आ० १९ ॥ गर्व करो जाति तणारे, जाति नतारयो
 कोइ; तारे तो करणी करारे, रीस कीया खुं होइ हो ॥ आ० २० ॥ पंच्याशीमी ढानमेरे, विप्रां कीधो क्रोध; श्री
 गुणसागर सुरजीरे, धन तेजे अविरोध हो ॥ आ० २१ ॥ ॥ दोहा ॥ सुधी वात न सरद हे, सुधी गुं नहि राग;
 मुखने उपदेश ते, टाडि उपय लाग ॥ १ ॥ सहज न फीटे कोइनो, ब्राह्मण जाति विशेष; उठ्या मारवा जणी,
 विप्र कहे मां देख ॥२॥ माय कहे हुं शुं करुं, विप्रा साथे न जोर; तुं पण निचलो नचि रहे, ए चपाणी कोर ॥३॥
 हलकारी विद्या घणुं, हल १ थइ अपार; आपुण मांहि आंधला, लाग करण प्रहार ॥४॥ ढाल ८६ मी ॥ देशी
 वनमालानी ॥ लाग्या ते करण प्रहार, नचि जाणे कोइ विचार; आपुण मांहि अपार, बसगे ते गहेलगेमार
 ॥१॥ पहिली तो जीन जमाइ, बीजी तो ठिक बजाइ; तीजी तो लात लगाइ, चवथी तो दांता खाइ ॥२॥ पंचमी
 वार सुनटाइ, लोटिनी मार मचाइ; ठरे लाकमी उवाइ, ते साहमां आवे लाइ ॥ ३ ॥ वावाने वेदो नाइ, लोपाणी
 सयन सगाइ; अंधे आंधो पेलाइ, नचि जाणे आप पराइ ॥ ४ ॥ आचाराज उजा थाइ, हलकार करे आगे आइ;
 उपाध्या आप वमाइ, नरखाणी लघुता पाइ ॥ ५ ॥ जोशी जोतिप वरताइ, न सक्या ए जाणी बुराइ; जानि
 अनीमांनी जाइ, चडवे छेवे अर्थकाइ ॥ ६ ॥ तिरवानी आवे धाइ, पर्वतावे केस गहाइ; नट मिश्रा एह बताइ,
 माहिमा तो आप ॥ ७ ॥ पढा तन्नी म्म बजाइ कठ्या विण जाड न कांड- मारंता जत नमाड- नदजीए

कथा सुणाइ ॥ ७ ॥ करताने साथे कीजे, तो पुन्य न पाप गणजे; होथाका लाहो विजे, उजागर होइ फिरीजे ॥
 ॥ ८ ॥ नवलीनी सुंड कहावे, आपुण हि आपु बंधावे; मंकोमो खीज्यो आवे, तो मांस आपणो चावे ॥ १० ॥ ते
 विप्र लथावथ होवे, तब लोक तमासो जेवे; ते लाज निकामी खेवे, ते आपे आप विगेवे ॥ ११ ॥ ते धरति साथर
 सोवे, माख्या लाता ना रोवे, विण वेक्षण पोलि पोवे, विण लोटि मुहने धोवे ॥ १२ ॥ ते लमता माथा फूटे, ते बोमाव्या
 नवि बुटे; ते आप आपमें कुटे, ते मांहोमांहि कुटे ॥ १३ ॥ ते तमफ्रता अति त्राग, नम्रता साहे जाग; ते थोथे
 थावे थाग, लमथमिया जाइ नाग ॥ १४ ॥ ते गाढा होइ लाग, जब लात धबुका वाग; तेतो उयामा नाग,
 गहेवरीया जाइ नाग ॥ १५ ॥ जे लुंदपणाथी लमीयां, जे जुमपणे नम्रमियां; ते पौरष पोखे पमीयां,
 ते अलगथी अम्वमीयां ॥ १६ ॥ जेथामुढालामाठी, ते पीता ऊपथ वाठी; बल हेते खाता काठी, थर
 हरीयां लाग साठी ॥ १७ ॥ मोकरमानि कमी जागी, ते खिर न मिठि लागी; जब चोट पराइ वागी, लामूनि
 लालच तागी ॥ १८ ॥ नोजन तो बहुजा देख्यां, ए नोजन आज विसेख्यां; अवराने लामू खायां, नामाने
 गमथा लाथा ॥ १९ ॥ ए नारथ हुड नारी, ते दिगे हरि पटनारी; ठोमवि अलग किधां, लघु विप्र समिपे
 लीयां ॥ २० ॥ ए बाशीमी ढाल रसाळी, ए विप्र विनोद विसाळी; श्री गुणसागरजी प्रांखी, परजुन चरित्र ठे
 साखी ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ परथियण गुं नामां कहे, बालिक ब्राह्मण एह; जीमावो हम आगले, आणी घणोरो
 नेह ॥ १ ॥ मांमो उंचि मांमणि, उपर थाल विशाल; विविध प्रकारे पीरसणा, पीरसावो ततकाल ॥ २ ॥

॥ दाल ८३ मी ॥ टोना किमेहेदिमे ठोइहो ॥ तथा गौतमने मेल दियो महाविर ॥ ए देशी ॥ नामानो जांज्यो
 करे, आझाकारी सोइ; जगति जलेरी साचवे, राचवे रागण होइ ॥१॥ ए विप्र हमारे मन वस्यो, ए विप्र करामतवार;
 ए विप्र तथा गुणसार, ए ठाणे दांस्यो रयत; ए विप्र वेपत हम चयत ॥२॥ ए० ॥ विप्र जणे सुण स्वामनी, पुरो
 पन्तो जाए; वेसावे जमवा जणी, नहंतर जाउं परथान ॥ ए० ३ ॥ जोजनने विवहारनो, धावो नाचे वाम, पहीसि
 चोकसी किजीइं, इम कहे त्रिजोवन स्वाम ॥ ए० ४ ॥ नामा जांपे स्युं कहि, एहवि उठि वात; ए घर द्वीपे हाथीया,
 माणसनी शिमात ॥ ए० ५ ॥ पहेला मेवा पिरशीया, पिस्ता द्याख ववाम; चारोली चतुराइशुं, खांमतली अजीराम
 ॥ ए० ६ ॥ खाजां ठाजां सारीया, लासुनी बहु जात; घेवरफ़ीणी लापसी पिरसे मननी खांत ॥ ए० ७ ॥ खीर खांम घृत
 सामदां मांड्यो मोटे मान; यमा विशेषे पिरशीया, विप्र तणो हित जाए ॥ ए० ८ ॥ घोळवमाने धारवनी, पुरीपरी
 घल जाव; सालदाल ने सालणां, पिरसे चितने चाव ॥ ए० ९ ॥ धींभी धार न खेंचइ, ड्य दहीने घोळ; दाखतुहारी
 रायता, ए अति वस्तु अमोल ॥ ए० १० ॥ नामां जांखे सादरी, अमृत करे आहार; कोइ काणी न राखवी; ए सहु
 तुज परीवार ॥ ए० ११ ॥ पिरसतां वेला थइ, जमत वार न कोइ; वैस्वानर मुख मेळतां, घास तणी पेरे जोइ
 ॥ ए० १२ ॥ लावोरे लावो२ वली, एरुज लागी तास; ताम अनेरा पिरसणो, पिरसे आणी उल्हास ॥ ए० १३ ॥
 केइ हजारा कारणे, अत अने पकवान; किधुं थुं ते वावस्थुं, अर्चीरज ए अतमान ॥ ए० १४ ॥ पाकाने काचा करी
 धाल नरीने वेली; पाठे कांइ न वेपइ, आम घमे जल मेळी ॥ ए० १५ ॥ मुगमव माखां घणा, चावलने जव जेह;

गिहुं चएया आदी करी, खाइ गयो तव तेह ॥ ए० १६ ॥ हयगय उंट तणो सहु, दाणो पण तेह खाध; आणी
 उधारो पिरशीयो, तृपतीतोहिन लाध ॥ ए० १७ ॥ अग्नी जालमें वालीए, लाकम गामा लाख; तोपण ते छापे
 नही, तिम एहनी अग्नीलाख ॥ ए० १८ ॥ यादवनी नारी मली, करे कतुहल कोम; निजश घरथी आणके, पिरसे
 होमहोम ॥ ए० १९ ॥ कोलाहल मांच्यो घणो, मिलीयां लोक तिवार; तृपती न पावे खायवे, देव तणो अवतार
 ॥ ए० २० ॥ विप्र जणो सुए जामनी, आपुण बोल्यो पाल्य; कांथाइ अति सुबमी, अवर किशी दिज गाल्य ॥ ए०
 २१ ॥ जानु तणी माता चली, नारायणनी नार; अग्नेन कुमरी कही, अवसर सहु तुजजार ॥ ए० २२ ॥ ऋणपणपणो
 नवी बुजीए, तुज सरखीने देख; लघुनोजी हुं बालुमो, नुख्यो राख्यो विशेष ॥ ए० २३ ॥ नाहुवो आहारजी, नाहुवो
 अपवास; अधवीचो होइ रह्यो, कारे कियो विस्वास ॥ ए० २४ ॥ निका मंदीर नान्हमा, पावे सघली लाज; मोटा
 घरमर नुखनां, साच मलीए आज ॥ ए० २५ ॥ पाय पसारण तेतलो, जें तो सोम पसार; ओटी सोमे सोवतां,
 लागे टाढी अपार ॥ ए० २६ ॥ पुरो न पमे एकनो, तो एस्यो वित्तार; पेट न छवे थोखरो, घर सारु विवहार
 ॥ ए० २७ ॥ आमंवर मांहे घणो, न लहे घरनी सार; ते तो माणस बावलां, लोक हसावण हार ॥ ए० २८ ॥
 ब्राह्मण सायर अग्नीनो, पुरो पमवो डर; अन अने जल इघणां, जो दिजे नरपुर ॥ ए० २९ ॥ यद्यपि में कियो
 घणो, आगे नाथो सोय; नुख्यो तो अति नमजमे, इसण एह न कोइ ॥ ए० ३० ॥ सत्याशीमी ढालमें; आयो
 जाम्यां गेहः श्रीगणेशागर सरजी साजपती आणे नेह ॥ ए० ३१ ॥ ॥ दीहा ॥ कृबजा दाशी ए वली, सरली किधी

निशदिन लागुं झूरणुरे, शातानों नहिं अंस ॥ जा० ११ ॥ हरी वश आवे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम जा० ॥
 दोरो मांनो दांखवेरे, दउ मनगमता दाम ॥ जा० १२ ॥ डुध नलावणी उतनेरे, वानरने फल जेम जा० ॥ सिल
 नलावण बंपटारे, एह नलावण तेम ॥ जा० १३ ॥ तगां तगोरी नामिकारे, आरती मांही एम जा० ॥ आप उगावे
 तग कनेरे, अवर न तगइ केम ॥ जा० १४ ॥ विप्र जणे नामां सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय जा० ॥ सहस गुणो
 आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठेलाय ॥ जा० १५ ॥ जेहि कहो सोइ करेरे, न करुं शोच लिंगार जा० ॥ लाज हमारी
 तुम्ह जणिरे, तुं गति मति दातार ॥ जा० १६ ॥ मुंन मुंनइ मोहमोरे, कालो करिय अपार जा० ॥ फाटा चुंया
 पहेरीनेरे, मौन तणो आचार ॥ जा० १७ ॥ ॐ कीं अरुन वरुन रुंढ मुंनशुरे, अवयोतेर सो वार जा० ॥ जाप जपंता
 पामस्थोरे, रुप अनोपम सार ॥ जा० १८ ॥ इंड्राणी अलगी थकीरे, थोशे सहिय उदाश जा० ॥ एवो रुप न माहरो
 रे, जेहवो नामां पास ॥ जा० १९ ॥ देव डुर्नजा थायस्थोरे, ऋश तणी शी वात जा० ॥ रुखमणी तो पासंगमरे, नहि
 आवे सुण मात ॥ जा० २० ॥ जो डख तो सुख जगतमरे, डख विण सुख नवि होय जा० ॥ कान सहे विंयावणोरे,
 कुंमल परे सोइ ॥ जा० २१ ॥ जो तरुवर धुरी ऊर्मी पमेरे, तो नव कुंपलि बाल जा० ॥ विन थोमामें थायस्थेरे, शोत्र
 निक शुं विशाल ॥ जा० २२ ॥ मरु २ मरुतां रहेरे, उद्यम नहिय लगार जा० ॥ आंखी सरीखा मानवीरे, काजलनो
 शिंगार ॥ जा० २३ ॥ इमनी सुंणी शा नामनीरे, आतुर अइ अपार जा० ॥ विप्र वचन वाट्हां करिरे, हुइ विपरीत
 ते वार ॥ जा० २४ ॥ परने चिते जेहबुरे, तेहबुं पावे आप जा० ॥ एतो परतक देखजोरे, नामा लागुं पाप ॥ जा०

२५ ॥ बले आपणी आगशुर, परशु दूपा होइ जा० ॥ शिर मुंभावे आपणोरे, नामनि परे जोइ ॥ जा० २६ ॥
 कधीथी ठाकुर नशिरे, अवर परे अरदास जा० ॥ घोणे फिरी उपर चढ्योरे ते परे हुइ तास ॥ जा० २७ ॥ फीरी आंभु
 आगे जइते, जापजपे मन सुथ ॥ जा० इम कही आगे चलयोरे, कारज करीय विरुध ॥ जा० २८ ॥ अठ्यासीमी
 ढाजमोरे, नामाने नरमाय जा० ॥ श्री गुणसागर गुरु कहोरे, मा मलवाने जाय ॥ जा० २९ ॥ ॥ दोहा ॥ माता
 सुखनो आसनो, काम कुमर मन रग; चाल्यो अति उठरंगसुं, आणी हेत अचंग ॥ १ ॥ काम कुमर आठ्या
 तणी, बेलाने अर्धीकार; माय मनोरथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥ ढाल ८९ मी ॥ ॥ मेरी
 सहियां गरिधर आवेगो ॥ ए देशी ॥ मेरी सहियां जालन आवेगो, प्यारो प्राण आधार; मेरो मदन
 कुमर; घादव कुल शणगार ॥ मे० ए० था० ॥ एह वासर जे गया, माहरे जावे वादी; पेट नरती दिन प्रति, न
 जस्यो अन सवादी; जन मन जीवी तणोरे, आजहीथी आदी ॥ मे० १ ॥ चामरूपी होइ रहींयां, मिमका जग जोइ;
 मेह बुते देव बुते, सुवा जीचे सोइ; जीव जीवन आवीयाए, एह परे हम होइ ॥ मे० २ ॥ सुनचीती सदा रहती
 चेतना सुतनी पास; गाय वनमे जाय हांकी, चरती फिरत उदास; हिंसति आवे घणुं, चातुरीया घर जास ॥
 मे० ३ ॥ चक्र वाकी जीम चाहे, उगंतो दिनकार; चंदने चाहे चकोरी, वपैयो जलधार; आंवनोवन कोकिला, बिर
 हणी नरतार ॥ मे० ४ ॥ क्षुधावंतो अन चाहे, तृपावंतो वारी; स्थैरणी स्वगारमेरे, सेगीयो उपचारी; तेम एम न
 माहरों, पुत्रने प्रधीकारी ॥ मे० ५ ॥ स्वामी श्रीमंधर वत्तवी, सोइ बेला आज; जलदनीपरी वाट जोतां, मिल्यो ए

सुन साज; देवगुरु प्रसादथी, सरथा वंठीत काज ॥ मे० ६ ॥ द्यो बुहारो वाट जागो, जली रज बेसावी; पंचवर्णा
कुसुमकरो, फूल पगर रचावी; ताम तामे धुपणा, करो चितने चावी ॥ मे० ७ ॥ गेह धोलो आज सोलो, देवनी
विवहार; भ्रांती फेरो पात्र तेज्यो, पेखवा परीवार; वाजां विविध प्रकारनां, वाजा वोदणी वार ॥ मे० ८ ॥ नारी
आवो गित गावो, करो मंगल ब्यार; करी वधावो कलस लावो, सात पांच उदार; दोब अदकतने दहीं, सउण मेल्यो
सार ॥ मे० ९ ॥ चोक पुरो मती अधुरो, रहे एक लिगार; अलग बुरो असुन्न सघला, सजो सुन्न आचार; वेगे हुवो
उतावजी, कांइ लगावो वार ॥ मे० १० ॥ शालरोलां जरी कचोलां, कुंकुमा घन सार; रल रुना नही कुमां, हेम
रजत अपार; वधावाने कारणे, घणा मोतीना हार ॥ मे० ११ ॥ यल करणा असुन्न हरणा, वाटमे न रहाय; रांम नेसो
अंध तेसो, कुंकुते न कराथ; नाक चिवो चिपमो, बुर मुहोटली जाय ॥ मे० १२ ॥ नारी परणी अने अपरणी,
साजी उज्वल वेस; गौसव ठिकल सपुर्ण, दधी मधु सुवीशेस; अग्नी ज्वाला दिपती, अपरस उण अशेष ॥ मे०
१३ ॥ रथ सजोमो पाट घामो, हाथीयो सणगार; पंथे राखो सरस झांखो, पिच वरणी गार; मांढलां मिलीयां न
लां, साधु रोजी धार ॥ मे० १४ ॥ हंसनीपरे हालतारे, चालतो सुंदर इंद्र; नयणे नीरखीहिए हरखी, जणी तेज
जिएंद्र; साहमो जोशुं घणुं, जेम छतीया चंद्र ॥ मे० १५ ॥ गोदी करी शुंहीद्वरशिशुं, चुंबीशुं सोवार; मुह माथो दिन
सनाथो, जाणीशुं सुविच्यार; विलसशुं मन मोकले, अरथना भंमार ॥ मे० १६ ॥ हाथे फरशी हिए उरशी, राखी
शुं नांखी ताम; देइ मुखमें कवो सुखमें, जिमो कुंवर काम; पाननी बीनी करी, आपीशुं अनीराम ॥ मे० १७ ॥

यात सुणशुं कुवर करा, व्हं धरी लगी जेह; आपणा वितक वच्यारा, भास्वीशुं धरी नेह; मनोरथनी माला जली,
 गुंथी राखी एह ॥ मो० १८ ॥ ए नेवाशीमी जनी, ढाज तो सुख कार; कहे श्रीगुणसुरी सखली, ढालमें शिरदार; सां
 नऱ्यां आवी मिले, सकल वंठीत फल सार; ॥ मो० १९ ॥ ॥ दोहा ॥ अग्ने जातां आवीयो, सुंदर मंदिर एक;
 हयथट गयथट नरथटां, पुरीत शोच अनेक ॥ १ ॥ बली विशेषे नुबतां, विद्या ज्ञांखे झा; ए घर तुम्ह माता तणो,
 जणणी पुरी जगीश ॥ २ ॥ नित्य महोठव नवनवा, दिजे, पौली प्रवाय; याचक जय १ उंचरे, जुरी जणे गुण गाय
 ॥ ३ ॥ ढाल ९० मी ॥ परम सजुणो साधुजी ॥ ए देशी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराड् दिसेरे; मिठो नीमीत ज्ञाखणो, बोले
 मणी, मजवाने मन हिसेरे ॥ मो० १ ॥ रूप धरयो रत्नीयामणो, रूखी वालीक रुम्नरे; मिठो नीमीत ज्ञाखणो, बोले
 जीम सुनरे ॥ मो० २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोठोरे; पुज्य पठे वनी पांगुरी, चलोटो पण
 ठोटोरे ॥ मो० ३ ॥ खांधे लटके लोवनी, लटकंतो चालेरे; जयणनो गुण राखतो, हजुए हजुए हालेरे ॥ मो० ४ ॥
 देह प्रमाणे दिपतो, करमे दंम धरावेरे; मन मथनावे डुकनो, दरसणने दोवेरे ॥ मो० ५ ॥ मोहने दिधी मुहुपति,
 मुनी मय लेगात्रेरे; गुण आचारे उजलो, अति चारीत्र पात्रेरे ॥ मो० ६ ॥ आठो उठो बांहमे, पुजवाने काजरे;
 यल करेवे जीवनी, संजम गुण गाजरे ॥ मो० ७ ॥ रंग रंगीला पातरा, पत्नी लेहि लिजेरे; एखणा सुधी आहारनी,
 गवेखणा काजरे ॥ मो० ८ ॥ सुमते सुमतो ठे खरो, गुपतिए करी गाठोरे; दर्शण दिठे जेहने, चित होवे टाठोरे ॥
 मो० ९ ॥ पीहरीयो ठकायनो, वत तो चोखा पालेरे; निग्रह ईंछि पांचनो, छुपण सहु टालेरे ॥ मो० १० ॥ शिल

धरे नव वामसुं, तस क्राधे न कीदरे, समता रसनो सागरु, निरगोत्री अति होदरे ॥ मो० ११ ॥ सनमुख दीवो
 अवातो, शा साहमी अयोरे; देद प्रदक्षणा वंदनां, करती मन सुख पावरे ॥ मो० १२ ॥ देवा चाङ्गी पादवो, हरी
 आसणे वेठोरे; स्वमणीना मन नीतिरे, अति अचरज पेठोरे ॥ मो० १३ ॥ विनय करीने विनवे, रुषी उरहा अयोरे;
 वेसो बीजे आसणे, जीम साता पावरे ॥ मो० १४ ॥ ते धन धानक जाणीए, जीहां रुषो ते विश्रामोरे; उवाबुं
 कारणे, तुम्ह मति डव पामोरे ॥ मो० १५ ॥ देवा धीष्टित एह अवे, हरी केहरीको जायोरे; वेठो सुख पाव
 सहि, अचरा नेअ सोहायोरे ॥ मो० १६ ॥ सपि जांखे सुण आविका, ए केहि चिंत्यारे; साप खेलावे मानवी,
 जाणी अहिमंतरे ॥ मो० १७ ॥ जदि प्रसादे देवता, हम शुं नवि बोदरे; ताजु धाजी मुंगरा, कर साथे तोदरे ॥
 मो० १८ ॥ मेरु तणो दांभो करे, धरती ठजांकोरे; राखे हाथा उपरे, सायर जलनी धोरे ॥ मो० १९ ॥ तो तुम्ह
 साचा स्वामीजी, खमवो ए अपराधोरे; दिसोठो तो नान्हना, संयम किम जाधोरे ॥ मो० २० ॥ भुमंजल पर जनमीया,
 प्रथवीपति तातोरे, माता तो महि मंथणी, वैरागे वातोरे ॥ मो० २१ ॥ आज जगी गुरु नेटणा, हमने नवि हुदरे;
 आपहि आपे जागीया, गति मति जुदरे ॥ मो० २२ ॥ तिरथवाशी हुं सहि, दहां आयो आजोरे; वरस सोजना,
 पारणो, करवाने काजोरे ॥ मो० २३ ॥ जांखे राणी स्वमणी, ए अधीको केहेवायोरे; उलकपी अचगाहना, वरसी
 तणो तप थयोरे ॥ मो० २४ ॥ अवंताडं उपवासीयो, माता धान हरामोरे; वात वनासुं कीजिए वोहरावणना
 कामोरे ॥ मो० २५ ॥ खट चोरसीमी जगी, ए ढाल कहावीरे; श्री गुणसागर सब लह्यो, मा दरशाण पावीरे ॥

सो० २६ ॥ दोहा ॥ दरशण पार्मि माता तणो, मान्यो सुख मनमांहि; तेतो जाणे केवलि, के जाणे चित

प्रांहि ॥ १ ॥ मनहि मील्यो नयणा मील्या, झने मलियो वयणां कांय; च्यार भिजणमां एकहि, भिजण मलि नहि
माय ॥ २ ॥ टाल ९१ मी ॥

॥ साहिव बाहु जखेसर विनतुं ए देशी ॥ रखमणी तुंतो साथी श्रायिका धारो
अति शोजाग हो रु० ॥ परदेशामें सांजल्यो, देव गुरु भुं राग हो ॥ रु० तुं० १ ॥ क्षुब्द नहि रुपे जलि, सोम महा
सुखदाय हो रु० ॥ सत्य वदे मर पापनो, सरलपणे सुचि काय हो ॥ रु० तुं० २ ॥ खेद पणो लज्या पणी, दया
पर्णा विल मांहि हो रु० ॥ सम जायी भुज दृष्टणी, गुणनि रागणी प्रांहि हो ॥ रु० तुं० ३ ॥ धर्म कथक धर्मात्मा
कुल तो उजय विसुय हो रु० ॥ दिख दृष्टिए देखणी, अर्थ लहे अविरुप हो ॥ रु० तुं० ४ ॥ विनयवंति गुण
जाखती, पर हित करत जगीस हो ॥ रु० ॥ ललिय सखी गुण धारणी, एवं ए एकविस हो ॥ रु० तुं० ५ ॥ समकति
गुणने पालवे, धारो निश्चल नाम हो रु० ॥ देव न देवी चालवे, धर्मिसुं धर्म प्रणाम हो ॥ रु० तुं० ६ ॥ पर्य तणी
धारोधना, करती मन उजमाल हो रु० ॥ पोसा पनीकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु० तुं० ७ ॥
झिलवंति सीता जेसी, जाग्यवंति संसार हो रु० ॥ पंचाक्षिनी जपमा, सत्यवंति वरनार हो ॥ रु० तुं० ८ ॥ साहर्मा
साहामणी साचवे, धर्म धानक पोसाल हो रु० ॥ साधु साथवियां तणी, वोरु जीम संजाल हो ॥ रु० तुं०
प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणो अधीकार हो रु० ॥ आण वोहोराव्या आरवनी, जीमवा नेम अपार हो ॥ रु० तुं०
१० ॥ इम सुणी गुण डरधी, वोपंतो गुणगेह हो रु० ॥ हुं आप्यो तुम्ह आंगणे, आणी धर्म सनेह हो ॥ रु० तुं०

११॥ सार न पुढी एतली, वोहोरो स्वामी आहार हो रु०॥ अंतराद्र कोड माहरे, केथद्र चित विसार हो ॥ रु० तुं० १२॥
 कहे रखमणी रुपीजी सुणा, आरति वांति आज हो रु०॥ रांधण सींधण वीसरी, वीसरीयो सब काज हो ॥ रु० तुं० १३॥
 एवनीयो आरती अठे, चांखे सयल विचार हो रु० ॥ पुत्र आणम वेजा हवे, ए जिन चांखीत सार हो ॥ रु० तुं०
 १४॥ सही नाणी सयली मली, सुके बद्ध अशोक हो रु०॥ फूल फले करी गह गह्यो, देखे सयला लोक हो ॥ रु०
 तुं० १५॥ मुंगा जाग्था वोडवा, विरुया अति रुप हो रु०॥ कुवज फरी सर जाथीयां, आधा नयण अनुपही ॥ रु० तुं०
 १६॥ निर नराणी वावनी, कमदे शोच उदार हो रु०॥ कोयल बोल सोह्यामणा, मोर करे किंगार हो ॥ रु० तुं० १७॥
 विण रतु२ राजीयो, आणी विराज्यो आज हो रु०॥ नमरा गुंजारव करे, फुल फुल्यां तर साज हो ॥ रु० तुं० १८॥
 माहरो मन पण उजस्यो, पान्हो चढीयो पुर हो रु०॥ पण नायो मुद्र नान्हनी, ए मन चिंत्या नुर हो ॥ रु० तुं०
 १९॥ जतावली एतिकीशी, जे चांख्यो जिनराय हो रु०॥ प्रोहर धनीने आंतरे, सो तो रहस्ये आष हो ॥ रु० तुं०
 २०॥ सान्नांखे रखी राजीया, धनी धरुयल होय हो रु०॥ नामा सुत नाव्या हमे, शिर रुना तो जोय हो ॥ रु० तुं०
 २१॥ बाल तजी तव बोलीयो, किसी विमासण एह हो रु०॥ बाल गया फरी आवस्ये, साजी चाहीए देह हो ॥ रु०
 तुं० २२॥ में जाण्यो तो मोटको, एठे उपड्व्य कोड हो रु०॥ तव लगे नय नवी नांखवो, प्राण कुशल जब होइ
 हो ॥ रु० तुं० २३॥ प्राण तजुं ततखीण सही, पामीए अपमान हो रु०॥ मान गया जग जीवणो, ते तो जहीर समान
 हो ॥ रु० तुं० २४ ॥ मांडो पाणी जतर्यां, तजपी२ मरी जाय हो रु० ॥ सहिरूपि ते माणसे अमरखतो न सहाय

- ॐ "रु० तुं० २५॥ पुठेवो युग तो नहीं, रूपीने गृह व्यापार हो रु०॥ पण आरती वे आंधली, नांखो कांड विच्यार । रु० तुं० २६ ॥ रिते हाथे न पुठियां, नवि फल दाइक थाय हो रु० ॥ तोशुं आपुं देवजी, खीर खरीह सोहाय । रु० तुं० २७ ॥ झिली आगन सालगे, फूंकेश जोड हो रु० ॥ घांभी थाती जाणके, फिरी नांखे खुली सोड हो तुं० २८॥ झिधा मोदक मोटिका, सिधाहि पकवान हो रु०॥ मिठाइ मेवा घणं, फासुक वस्तु प्रधान हो ॥ रु० २९॥ हाजर सहजे जे हुवे, सोआणी वाहिराव हो रु०॥ नरीयां मोटां माटजां, विद्याने प्रभाव हो ॥रु० तुं० ३०॥ रीया हरी केसरी, हरी आरोगण हेत हो रु० ॥ लानु लिधा नवि गया, लिधा सुन संकेत हो ॥ रु० तुं० ३१ ॥ एक छपानीयो, तव बोले रूपीराय हो रु० ॥ एक किस्युं पुन्यातमा, कर कावो देखाय हो ॥ रु० तुं० ३२ ॥ नडे जरस्ये नहि, हरी एकेको खाय हो रु०॥ चौथा ए तुम बुद्ध, नहि, नही रूपी हत्या थाय हो ॥रु० तुं० ३३॥ कोइ मति मानजो, तप निल बधी प्रमाण हो रु०॥ नरम होवे हम जोगव्यां जे वेते सहु आण हो ॥ ० तुं० । वहाराव्या सवला साहि, खाय गयो रुखि बाल हो रु०॥ चक्री खिर तणी परे, तस जरयो ततकाल हो ॥रु० तुं० । धर्म तणी वर गोवनी, करतां वरते जाम हो रु०॥ सांनजवा सरखा हुइ, अवर कथा अर्नाराम हो ॥रु० तुं० ॥ एकाणुंभी ढालमें, जोजन माता हाथ हो रु० ॥ श्रीगुणसागर सुरजी, उलट सवली साथ हो ॥रु० तुं० । ॥दोहा॥ नामां नाव विसुथशुं, जाप जप्यो परिपुर; रूप न रचवी राजीयो, ठतो गमार्यो नुर ॥ १ ॥ द्युत । गु धन वांजना, दाशो शु परवास, रूप आशा शिर सुं गिना. नेने निजाम निराडा ॥२॥ ठश्ना वाह्यो वाणीयो,

जलवट वणज कराय; कोइ बाय ऊबुकुम्हे, आयो मुलग गमाय ॥३॥ जलहि जलने साचवे, ताल न तृपतो होय;
जल३ करतां जल गयो, रातो पमीयो सोय ॥४॥ अरे किहां ए विप्रते, वादी विगोयां जाय; हाथ वसे शिर धुणवे
फीरी३ पिठताय ॥५॥ ढाल ए३ मी॥ पुन्य तणारे फल मिवारे जाणो ॥ए देशी॥ फिरी३ पिठतावा करति,
वरते नामा जामरे माइ; सात पोकार अजावी आवी साडख पावि तांमरे माइ ॥ फि० १ ॥ तन संनाली पहिरे
फाली, वाली जाक ऊमालीरे माइ; उवारी मेरे जानुं कुमरपर, पुठे कुमर रसाळीरे माइ ॥फि० ३॥ तन मन प्यारो
नंद हमारो, सारो राखे इसरे माइ; उर न चाहुं तुज आराहुं, ए सुको जगिशरे माइ ॥ फि० ३ ॥ अवरसहुवा
तानो सुयो, पण फिरी नावे केसरे माइ धुरती धृति खरी विगुती, होशेहाश विशेषरे माइ ॥फि० ४॥ अमरख आणी
नामांराणी ठाणीए अन्नीमानरे माइ;रूखमणी जुंझीनेअति जुंझी, करशुं आपसमानरे माइ ॥फि० ५॥ एमविमाशी बहुजी
दासी, नावी लीधो वाररे माइ; माथे सुंमण करवा जुंमण, पोखी द्वेप अपाररे माइ ॥ फि० ६ ॥ मणीनो नाजन
साथे साजन, वाजानो विस्ताररे माइ; गावत गीत विशेषे आब्या, रुखमणीने दरवाररे माइ ॥ फि० ७ ॥ आवत
निरख्यो मन सुं परख्यो, ए नामा परीवाररे माइ; आंसु ढलियां रुपी अटकलियां, पुंछे ताम विच्याररे माइ ॥ फि०
८ ॥ धुरबे हांसुं अतिनें हांसुं, नांख्यो सहु विर तंतरे माइ; नायो जायो लोक सोहायो, गिरुवोने गुणवंतरे माइ ॥
फि० ९ ॥ नामां केरां लोक घणेरं, के सांकेरे काजरे माइ; आनी मीलियां अति उठलियां, बोले ठोमी लाजरे
माइ ॥ फि० १० ॥ ए डख तो जाण्योथो आगे, नारद वचन विच्याररे माइ; ए दिन लीधां काज न सिधां, दिन

नंदे हरि नाररे माइ ॥ फि० ११ ॥ बोले चेलो पानी हेलो, माता मकरे अंबेहेरे माइ; वेढो करतो सोसे
 माणिश मन संदेहेरे माइ ॥ फि० १२ ॥ रुखमणी ठांनी राखी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ; आपण
 वदन सरोजो, हाथां आलीसो लीधरे माइ ॥ फि० १३ ॥ नारी सुरंगी भुखीत अंगी, हस्त मुखी हुंशीयारं
 आधर देती लोकां सेते, वचन बंदे सुविच्याररे माइ ॥ फि० १४ ॥ लोक प्रवीणा जाले दीणा, माताहमनहि
 माइ; तुम्ह हम ठाकुर हम तुम्ह चाकर, उसन प्ररीय कोसरे माइ ॥ फि० १५ ॥ स्वामनि कारज करयो
 हम आव्या तुम वाररे माइ; जिन गले एह वचन कहेतां, साचो देवि विच्याररे माइ ॥ फि० १६ ॥ रुखमण
 रोसन राखे, स्वामीनी केरो कामरे माइ; वेगे किजे जग अस झिजे, ए सीर बोढ्यो रामरे माइ ॥ फि० १७ ॥
 विच्यारी हरखी नारी, सारी नारी आवरे माइ; नाजन आगे धरती रागे, चित्तनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०
 अद्भुत बोव बहि सु मंगल, किजे विविध प्रकारे माइ; अथम तणी अहि नाणी जाणी, ए खाता वपर खाररे
 फि० १८ ॥ नाचि आची आप जणाची, कापे केस जे वाररे माइ; कान नाक बेणी आंगुलिया, वे दाइ ते
 माइ ॥ फि० १९ ॥ नाचीने नारी जन केरी, एह अथखा होइरे माइ; आप न देखे हरख विशेषे, चाली जा
 माइ ॥ फि० २० ॥ रुखमणी केरी यणुं घणेरी, करती जाइ प्रयांसरे माइ; एहवी मीठी अवर न बीठी, धन
 कुल वंसरे माइ ॥ फि० २१ ॥ वेह विपर्यय जाणी हसंता, दिवा लोक ते वाररे माइ; हम सुंदरता वे मन
 तेहपी हाश प्रकारे माइ ॥ फि० २२ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत, आवत नामा पासरे माइ; एक

छखीं रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० ३४ ॥ नमके तमके नामा नामनी, केश न देखे एकरे माइ;
 रेरे झेहणी दासनीयो तुम्हे, खाथी लांच अनेकरे माइ ॥ फि० ३५ ॥ लांच तगुं पुठेहुं पावे, वेणि नाकने कानरे
 माइ; आंगुलिया उतरीयां दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ फि० ३६ ॥ चमकी चित नीतर अती चतुरां, व्यापि
 वेदना जामरे माइ; ढांकी काया चोर तणि येरे, निज ३ घर गइ तामरे माइ ॥ फि० ३७ ॥ सु सति करिने स्वामनी
 पुवे; कियो किये आ कामरे माइ; रुखमणी रंच न दोश न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥ फि० ३८ ॥ सेवक
 छखीए स्वामी वहे डख, सुधी ए सुखीयो होइरे माइ; तेनी प्रधाना आगे चांखे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि०
 ३९ ॥ वेणी दंनजनायो आप्यो, ए न वयो विपरीतरे माइ; फिर शस्ता रूप अनेका, मुफने वितक वितरे माइ ॥
 फि० ३० ॥ होमे हाम न पुगी कोइ, होमे आया हेठरे माइ; हाणी वणनि लोका हांसो, होमे हारी नेठरे माइ ॥
 फि० ३१ ॥ परपदा माहे पधारो प्रजुजी, देखावो ए कामरे माइ; शिरे नाणा नवि जाय श्याया, त्याणि जुंमो नामरे
 माइ ॥ फि० ३२ ॥ हरी हांसो नमावे हयमे, आप वजावे हाथरे माइ; कोइ पलेयो करण न गावे, स्वामीनि सरिखो
 साथरे माइ ॥ फि० ३३ ॥ कल कतुहल करतो जाणी, आवी नामा आपरे माइ; केश अपावो कपटी कंता, के
 थाये संतापरे माइ ॥ फि० ३४ ॥ थारेही आपे नवि सरीयुं, बलदेवा अं वातरे माइ; तुम्ह पुरुषोत्तम साखी राखी,
 इस करे कुण मातरे माइ ॥ फि० ३५ ॥ हरिस्तुं हलथर वेइ उअंचो, माथे चहोमी नाथरे माइ; सुधी वाते रुठि
 करतां, लहिशे नाम गीमाररे माइ ॥ फि० ३६ ॥ कल कहे शा आप एकेवी, ए बहुलो परिवाररे माइ; किम सुंनइ

दादा देखो, ए स्योकां विवहाररे माइ ॥ फि० ३७ ॥ श्री बलदेव दिलासा कीया, नामाने नरपुररे माइ; रुखमणी
 घर जुंटेवा कारण, मोकलिया न्नर नुररे माइ ॥ फि० ३८ ॥ ए वाणुमी ढाल नलेरी, मुंमणको अधीकाररे माइ; श्री
 गुणसागर सुरी वखाणे, हरी सुत चरीत उदाररे माइ ॥ फि० ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ तेहज रूप तजी फीर थयो,
 चेलो पेहेल प्रमाण; चमकी राणी रुखमणी, ए वन गुणनो जाण ॥ १ ॥ विद्याधर मांहे वस्यो, विद्या तेह विशेष;
 रूप करेठे नव नवा, पण ए काम नरेश ॥२॥ एहयो अवर न जगतमें, एहयो अवर न राय; एहयो अवर न जाइयो,
 एहयो अवर न थाय ॥३॥ ए जायो माहरो सहि, ए सम अवर न कोइ; तारा दिश सयली जणे, रवि पुरव दिश
 होइ ॥४॥ केलवतो अति हि कला, खिसीन जाये स्वाप; माय मनोर्थ पुरवा, पुत्र प्रगट कर आप ॥५॥ कामदेवनी
 उपमा, रूप अनोपम सार; अत्र पद्मलथी निकल्यो, सहेस किरण दिनकार ॥६॥ सर्व अवेवां शोचतो, सर्व आमुक्षण
 धार; सर्व कला गुण आगलो, दिवो काम कुमार ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ९३ मी ॥ मेकजलाकोपणलयो ॥ तथा
 क्युं जाणुं क्युं बनी आवसि ॥ ए देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उवाय हो लाल; आलंग्यो अलजे
 घणुं, हेज हिए न समाय हो लाल ॥ १ ॥ आज नलो दिन माहरो, उधे युग मेह हो ला० ॥ दर्शण दिवो ताहरो,
 जाग्यो तनमें नेह हो ॥ ला० आ० ३ ॥ ठाती आधी गह्वरी, थांसु वरसे नयण हो ला० ॥ माता पुत्र मिली रहां,
 उपज्यो अधीकी चयन हो ॥ ला० आ० ३ ॥ मुह अने माथो घणुं, चुंवे वारंवार हो ला० ॥ हुं वारी तुज उपरे,
 तुं मेरो प्राण आधार हो ॥ ला० आ० ४ ॥ बलहारी सुरति तणी, सुरती मोटी सोह हो ला० ॥ अणियाले लोयणे,

भाता पनात भाह हा ॥ ला० आ० ५ ॥ आवा मिलो साहेलनां, देखो मोरो लाल हो ला० ॥ इंड चली घर आवियो,
 सब विध रूप रसाल हो ॥ ला० आ० ६ ॥ प्रेम गहेली गोरमी, चिगन करे लखकोरु हो ला० ॥ घन बुठा जीम
 मोरली, नृत्य करे नर जोरु हो ॥ ला० आ० ७ ॥ दाखा पाहे देवनी, मीवी अति कहाइ हो ला० ॥ पाणी पांपण हेठलो,
 निरखत निठे नांहि हो ॥ ला० आ० ८ ॥ लहेरी खारा जल तणी, वरस्यां पाठे वाय हो ला० ॥ परदेशी प्यारो मिले,
 शिलक कहि न जाय हो ॥ ला० आ० ९ ॥ चंदन तो शितल कह्यो, तेहथी चंद सुचंग हो ला० ॥ चंदन चंद विचारता,
 शितल नंदन संग हो ॥ ला० आ० १० ॥ मिश्री तो मीवी सहि, तेहथी अमृत जोइ हो ला० ॥ मिश्री अमृत दोय मे,
 मीतो नंदन होइ हो ॥ ला० आ० ११ ॥ सोनो तो सुखदायकुं, सोनाहिथी रयण हो ला० ॥ रयण अने सोना
 थकी, नंदन तो सुख दयन हो ॥ ला० आ० १२ ॥ प्याराथी प्यारो खरो, सरसाथी अति सस हो ला० ॥ निकाथी
 नीको घणुं, निको नंदन दर्श हो ॥ ला० आ० १३ ॥ हियो सरोवर सांकनो, उलट जलनो जोर हो ला० ॥ लहिर न
 जाइ जालवी, रहीयो होइ सोर हो ॥ ला० आ० १४ ॥ सुख मांहि छुख उपनो, माजीना मनमांही हो ला० ॥
 बालपणो नवी देखीयो, ए छुख साले प्रांही हो ॥ ला० आ० १५ ॥ गर्न तणी विधी साचवी, उदर बह्यो नव मास
 हो ला० ॥ कष्टी महा छुखे जनमीयो, कियो परघर वास हो ॥ ला० आ० १६ ॥ दोश न देणो कोइने, कर्माकरो दोश
 हो ला० ॥ नाग्य लख्यो फल पाइए, करवो रागने रोसहो ॥ ला० आ० १७ ॥ मदन कहे माजी सुणो, ए छुख माणे
 कोइ हो ला० ॥ बालकरुप सोह्यामणुं, करी देखावुं सोइ हो ॥ ला० आ० १८ ॥ उंधो सुतो आगले, चिंतवे साहसुह

मोह तो । मुवी बांधी सोहतो; मोह तो ।
 मांही हो लाण ॥ चपल पणे पाठ धारतो, उठावे धरी बांधी हो ॥ लाण आण १९ ॥ मुवी बांधी सोहतो; मोह तो ।
 परिवार हो लाण ॥ हांशी करे अति कलकली, माताने हर्षे अपार हो ॥ लाण आण २० ॥ खोलि लिथो खांतशुं,
 उवरावे पयपान हो लाण ॥ आंखे काजल घालतां, विचर मेलतानहो ॥ लाण आण २१ ॥ आपेही लाग्यो उठ्या
 जानुनी गति कारहो लाण ॥ पाव नरे गिरर पने, माता मोले लार हो ॥ लाण आण २२ ॥ जाइ लोटे आंगणे.
 हंस वचाकी चाल्य हो लाण ॥ बोले नापा तोतली, माता पुठे वाल हो ॥ लाण आण २३ ॥ माता आपे सुखनी, आपः
 पुले धुसर गात हो लाण ॥ मुवी बांधी धुनगुं, कंठे लगावे मात हो ॥ लाण आण २४ ॥ माता आपे सुखनी, आपः
 नाखे छर हो लाण ॥ ए नहीश ए नही; उंतुं लाव्य हजुर हो ॥ लाण आण २५ ॥ आम्ने मांमी आकरो, रोवा लागः
 जाम हो लाण ॥ बोले माता रूखमणी, ए रहि वाद्ये काम हो ॥ लाण आण २६ ॥ तय वय लिथी मुलगी, माय नमः
 शीश हो लाण ॥ चिंजीवे चिर नंदजे, माता दिए आशीश हो ॥ लाण आण २७ ॥ माय मनोरथ गुंयती; सपः
 वरते माय हो लाण ॥ वरस सोलनो संचियो, डुव देशांतर जाय हो ॥ लाण आण २८ ॥ एतो त्राणुमी कही; टः
 थइ ते आज हो लाण ॥ पुरव पुन्य प्रसादथी; मिलीयां ए सुन साज हो ॥ लाण आण २९ ॥ ॥ दोहा ॥
 महा अनीराम हो लाण ॥ श्रीगुणसागर सुरजी, सरीयां वंठीत काम हो ॥ लाण आण ३० ॥ ॥
 लनछ तणा बली, सुनट महा अजार; आवी हुआ एका, रूखमणीने दरवार ॥ १ ॥ मदन कहे माता कही.
 क्वण विचार; जेंतें तरुवर वावीया, ते ए ऊन विस्तार ॥२॥ ॥ ट ॥ वनमालानी देशी ॥ ते ॥

५। वास्तराधारं, ए नम आवां परवरीयां; दाशीनी वेणी वाढीरे, ते नकटी किधी काढी ॥१॥ ते होमे मात्रा प्राखीरे,
 हरी हलधर दिधा साखी; सतनामां जाइ पोकारीरे, तिहांथी नम आया नारी ॥२॥ मा चिंता नवी धरणीरे तुं देखे
 हमारी करणी; विद्या ब्राह्मण किजेरे, लाकलनी हाथ ग्रही जे ॥३॥ पेट वमो तसु हालेरे तेहलुंइ१ चाले; ते खीली
 राख्यां सधलारे, ते सुन्नट हुञ्जा अति निबलां ॥४॥ तव एक मोकलो किधोरे, प्रनु पासे गयो ते शिधो; सुणी बोले।
 श्रीबलदेवारे, ए मंत्र तणा बल लेवा ॥५॥ ए बहुतो मोहन गरीरे, ए बहुतो आप ठगरी; ए बहुतो कामण जाणरे,
 ए नाथे पियु वश आणे ॥६॥ शिलो दहिं दांतज्युं, तोमरे; शिलो जल पर्वत फोमे; ए मोर चवे मुखे मीठोरे, पण
 साप गलंतो दिवो ॥७॥ वाणी एह वमकीरे, सापीणथी पण वांकी; अखरनो अधीको आधोरे, उरहो नवी आवे
 वाधो ॥८॥ जे काम करे नही पांखेरे, ते काम समारे आंखे; जे कालो क्रोधी विशेषेरे, ते मंत्र बले निनुं देखे ॥९॥
 नरखोमे दिधा खुटेरे, नर बंधन बांध्या बुटे; मंत्र बले बांधी आण्योरे, नवी बुटे ते नर ताण्यो ॥१०॥ ए मर्म महा
 में लाधोरे, मंत्र बले माएस गाधो; ते साहमो होइने जुंकरे; ते जोर नजाइ मुके ॥११॥ एतो हुं जाइने देखुरे, ए
 मंत्र तणो बल पेलुं; ए सुतने किरती देवारे, चली आया प्रनु ततखेवा ॥ १२ ॥ तव ते ब्राह्मण सोवोरे, दरवाजे
 आमो होवे; उर कहे हलधारीरे, दिए वाट विशेषे विच्यारी ॥१३॥ विप्र कहे सुण स्वामीरे, तुंए अंतरजामी; नामा
 नो जोजन खाधोरे, अति होमे ते फल लाधो ॥१४॥ प्रनुजी पाठा वलीएरे, गुरू बुधी विच्यारी टलीए; रिस वसे
 सोचांखेरे, मर्जादा न तेहनी राखे ॥ १५ ॥ अलगोथा घणां खाणारे, मुज मंदिर मांहि जाणां; विप्र वाणी एम

दाखीरे, न खयाइ जीवती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग साहीने तसथीसे; पडुता पोले जाइरे ॥
 काया अधीकी थाइ ॥ १७ ॥ फिरी पुठे जब दिगोरे, ते ब्राह्मण थानक वेगो; मर्म न लियो कोइरे, अति कालो पिः ॥
 होइ ॥ १८ ॥ मुफ सुइणीपरे मंन्नेरे, अवराने ए किम ठंन्ने; ए माकणी साकणी साचीरे, लही मान महा मदमा ॥
 ॥ १९ ॥ पुनरपी चाली आवेरे, ते धसमस करतो धावे; विसे रिस अपाररे, तव पुठो माय कुमार ॥ २० ॥ मायः ॥
 सुण लालनरे, ए मोटा नाम दगानुण; ए यादव केरो नायकरे एह तुम्ह पित्या सुखदाइका ॥ २१ ॥ श्रीहरीवंदी एहः ॥
 कोहुन एठे जेहवो; श्रीबलदेव सोहायोरे, ए तुज उपर अब आयो ॥ २२ ॥ तुम्ह जाइने पंगेलागोरे, तुम्ह पावाही मः ॥
 जागोरे; जाणी मीडू साधेरे, मति घालो मोहोने हाथे ॥ २३ ॥ मदन कहे मा सुणिएरे, तेतो परमार्थ ए गुणीए, कालो नः ॥
 खेलाधेरे, तेतो वादी राय कहावे ॥ २४ ॥ युध किस्युं प्रजुने जावेरे, मृगपतिनो अधीके दावे; रण चढियो रोलांगः ॥
 हल सुसल मार मचावे ॥ २५ ॥ विप्र वेश न ठंन्नेरे, ते सींग थइ अति मंन्ने; बाल ससि सम दाढोरे, गीरि मंन्ने ॥
 सरिखो गाढी ॥ २६ ॥ कुंकुम केसर ठाजेरे, तव मस्तक पुंठ विराजे, सिंघ नादने करतोरे, ते मंदिरथी निसरते ॥
 २७ ॥ हलधर देखी वीमासेरे, ज्ञानी मरी ए इणे हासे; ए नारी नहि धर सरखीरे, में धुर ठे हां लगे परखी ॥ २८ ॥
 उपरणी शुं हाथोरे, वामो विटे नर नाथो; आगे धरीने हुंक्योरे, ते चोट करंत न चुक्यो ॥ २९ ॥ ते मांहोमांः ॥
 बलगारे, जण जोवे उजा अलग; तामण ताजण करेवेरे, उल्हास घणे अनुसरवे ॥ ३० ॥ ते हारथो हरीने आयः ॥
 हलधरजी धरते लागे; मदन गयो मा पासेरे, आलंग्यो अति उल्हासे ॥ ३१ ॥ पुत्र प्राक्रम दिगोरे, मा लोः ॥

अग्रमीय पड़वा, हलधर निज घर आथोरे, सुतने जस कलस चढायो ॥३१॥ ढाल चोराणुमी वारूरे, मकरध्वज बल
 विस्तारु, श्री गुणसागर नासैरे; एतो पुरव पुन्य प्रकाशे ॥३३॥ ॥ दोहा ॥ ॥ माता पुढे कुमरने, किंहां अढे
 रुधी राय; उदधी कुमरी निपावति, कुमरी कवण कहाय ॥१॥ कुमरी हरण आदे करी, नामा जुंमण अंत; दसहि
 बोल सुणाविया, अचरजकारी संत ॥ १ ॥ कहण सुणण सरीखा नहि, सुतना चरीत्र अनेक; सुर गुरु तो बल
 वरणवे, में मुख रसना एक ॥ ३ ॥ अवर सकल विधी साचवी, सुख डखदाइ दोइ; अब मल्यो जइ तातने, तांत
 पर्मे सुख होइ ॥ ४ ॥ ढाल ए५ मी ॥ हो नएदल थांको विरो चारीत्र लइ ॥ ए देशी ॥ हो कुमर जाइ मलो
 तुम्ह तातने, तात वमो संसार हो० कु० ॥ बोले माता रुखमणी, आणी हेत अपार हो कु० जा० १ ॥ जीम सुख
 दिधो मा नणी, तीम सुख दो नीज तात हो कु० ॥ तात तुम्हारा दर्शणे, तर सेथो दिन रात हो ॥ कु० जा० २ ॥
 स्वर्ग थकी सुख स्वर्गिना, जेहनो स्वामी तात हो कु० ॥ पंतीतजननी गोवनी, तिजो दक्षण वात हो कु० जा० ३ ॥
 कुमर कहे किंहां मजुं, परखदा मांहि जाय हो कु० ॥ तात तुम्हारो पुत्र हुं, इम तो में न कहाय हो ॥ कु० जा० ४ ॥
 राजा राणा पुबशे, ए कुण३ एह हो कु० ॥ ए रुखमणी सुत आइयो, थो परदेशां जेह हो ॥ कु० जा० ५ ॥ जले
 पधारथो बापमो, मावित्रां सुख काम हो कु० ॥ रमवमतीथो पर घरा, जीम तिम आयो वाम हो ॥ कु० जा० ६ ॥
 नान्हा मोटांना कियां, में न खमाइं बोल हो कु० ॥ हुं निशांण वजावते, मिलसुं घुमाइं ढोल हो ॥ कु० जा० ७ ॥
 वरु बाबा वरु बंधवा, हरी हलधर गुं सोर हो कु० ॥ मचाउ अति आकरो, जोउं जादव जोर हो ॥ कु० जा० ८ ॥

दाखीरे, न खवाइ जीवती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रितेरे, पग साहीने तसर्थासे; पहुंता पोले जाइरे ते ।
 नेमीनाथ उंभी करी, ठेमीस सहु परीवार हो कु० ॥ आप जणावी तातने, कछुं थाइ जुहार हो ॥ कु० जा० ए ॥
 वाचा मागुं तुज कने, चाल हमारी लार हो कु० ॥ अण पुत्र्यां थावुं नहि, पतिव्रता आचार हो ॥ कु० जा० १० ॥
 जाणुं मति पावो बले, मति समरे उदेश हो कु० ॥ क्रश् तणी ठे पाथरी, मानी वात अशेष हो ॥ कु० जा० ११ ॥
 बांहे साहि रुखमणी, परखया उपर आय हो कु० ॥ कीधी पुरुषा पचारणी, सांजल यादव राय हो ॥ कु० जा० १२ ॥ जो
 जो नोग पांनवो, अवरजीको फूजार हो कु० ॥ आबी मलियो उतावला, लागे हमारी लार हो ॥ कु० जा० १३ ॥ चंदेरी
 पती मारीयो, कीधो अती संग्राम हो कु० ॥ आणी राणी रुखमणी, सो अब जाइ निकाम हो ॥ कु० जा० १४ ॥ विद्याधर
 पति नंदन, हुं एकाकी बाल हो कु० ॥ लीधा जाव रुखमणी, जेहनो हरी रखवाल हो ॥ कु० जा० १५ ॥ चोर नहि लंपट
 नहि, नहि नटवीटमें नाम हो कु० ॥ साहि रह्योतुं सुंदरी, किउ न थसेनृप शामहो ॥ कु० जा० १६ ॥ दया तुम्ह राणा राजीया,
 स्यो जीव्यो जग तमामहो कु० ॥ जेहनी लीजे नामनी, अवर कियुं करे काम हो ॥ कु० जा० १७ ॥ युध विना जावं नहि,
 सांजलज्यो जे सुर हो कु० ॥ पावी हि जव दोमस्ये, तेका कीजे असुर हो ॥ कु० जा० १८ ॥ इम सुणी यादव सजा, हलधर
 हुइ अपार हो कु० ॥ संवाह्या नम सामवा, गाढा झुजण हार हो ॥ कु० जा० १९ ॥ मोरठाणो हलधर महा, सुणी
 रुखमणी अपहार हो कु० ॥ उवाइ उन्नो कियो, रातो थयो अपार हो ॥ कु० जा० २० ॥ भ्रगुटी जाली जमानतो,
 करतो कंप शरीर हो कु० ॥ उठ्यो अच्युत उतावलो मेरु तणी परे धीर हो ॥ कु० जा० २१ ॥ पांमुनंदन परवमा,
 अर्जुन जीन कुमार हो कु० ॥ कवण२ करी कलकले, न लहे निज परवार हो ॥ कु० जा० २२ ॥ आप आपणे

पारखे, गजंता नुषाल हो कु०॥ उग्रसेन आदे करी, अरी कुल केरा काल हो ॥ कु० जा० १३ ॥ ए पंचाणुमी ढालमें आप
 जणावण हेत हो कु०॥ श्रीगुणसागर सुरजी, मदन कियो संकत हो ॥ कु० जा० १४ ॥ सिंधु रागे; दोहा ॥ बाती फरसे
 केइ नम, केइ अधर रुसंत; केइ हाथ पढामतां, जाणे पामे तंत ॥ १ ॥ कंपावे काया घणी, क्रोध तणे वश जोय; अंध
 हुवा आगे धसे, समज पमे नही कोइ ॥ १ ॥ अंच उखाली नाखतां, मोमता निज अंग; सुन्नट वहे उतावला, देख
 वारण रंग ॥ ३ ॥ ढाल ए६ मी ॥ कागल लखी दीधोरे ॥ ए देशी ॥ एण रंगे रातारे, नम मोटा मातारे; खाताहो अमल
 अलवेसररे, रणजेरी दिधीरे; कांइ ढील न किधीरे, लीधोहो नेम ए सुंदररे ॥ १ ॥ कारीज अणसरीयारे, प्रोजन प
 रहरीयारे; सरयांहो कारीज जल पियारे, बगतरने अंगेरे; शिर टोपशुं वंगेरे, चंगाहो खमग हाथे लीयारे ॥ १ ॥ बरढा
 जलहलतारे, पेमा खल शतारे; ढालताहो नेजा अति नलारे, तीरासुं तरकसरे; नरी लीधां करकसरे, बरकसहो राखी
 राखण कवारे ॥ ३ ॥ हाथां कोनारे, कावा परचंमारे; दंमहो वज्र गदा अहीरे, जम धमसुं जोइरे; बतसि होइरे, साहेहो
 साधन जस नणीरे ॥ ४ ॥ तुटंता कसाणारे, सुरा तणां रसणारे; असणाहो परदल बल बहुरे धोमाने हाथीरे; सदन
 सहु साथीरे, आरुढहो हुआ ते नम सहुरे ॥ ५ ॥ तव बोले मातारे, सांनल सुत वातारे विरनीहो माय कही वाम जेरे;
 त्रीय नांखे कंतारे, मोमे गज दंतारे; सुरनोहो नाम लही वामजेरे ॥ ६ ॥ कुसम कीसेजारे, सोवंत सहेजारे; विंटीएहो
 उहवीयो तुं घणारे, सहेणढे सेजारे; खांमा नाखेजारे, खेल खरो असोहामणारे ॥ ७ ॥ मुज लोचन तीरोरे लागंत
 अधीरोरे; कीमहो खमसे मालाकी अणीरे, मुज हाकन हमीथोरे; तुं पाए पमीथोरे, कीम सहस्ये दल कारणीरे ॥ ८ ॥

श्रीमन्तोर नगरोरे, ए मोटो टोरोरे; मोरोहो मरण विच्यारजेरे, सखीयामें वासोरे; नसह्या यहां सोरे; स्वामीनी काम
 समारीजेरे ॥९॥ रायागण आयारे, शोचंत सवायारे; पायाहो सुजस प्रगट पणारे, कोइ ठत्र धरावेरे; कोइ चामग
 ढलावेरे, नावेहो चित राजा तणेरे ॥१०॥ गुण लक्षणवंतारे, सोहंता वंतारे; वरसेहो साठे विराजतारे मदशुं ध्या
 वेहेतारे; कांइ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजंतारे ॥११॥ उंचा अति चढीयारे, पर्वतशुं भ्रमीयारे जुर्मीया
 हेमजंजीरशुरे, ढलकंती ढालेरे; मलपंता चालेरे, हालेहो आप सरीसशुरे ॥१२॥ योना हणहणतारे, ते सथला व
 तारे; खणताहो धरती खुरतालशुरे, लंबोदर रुमारे; चालंता नही कुमारे, सुमहो वरण विलासशुरे ॥१३॥ र
 राजे वारुते, चालंता चारुते; सास्हो तुरंगम जोतरारे, सस्त्रासु नरीयारे; रण आगे धरियारे, पायाहो धरणीनि पोते
 ॥१४॥ नरपायकपालारे, हुशीयार हवालारे; आगेहो होइने हालणारे विसे ऊजहलतारे, रीसे कलशतारे; चलताहो
 नवालणारे ॥ १५ ॥ रणचुमी आयारे, यडपती रायारे; मंड्याहो लोग लनावणीरे, माता मुनी संगेरे; मे
 मनरंगेरे, रगेहो जग उन्नावणीरे ॥ १६ ॥ हरी साग्र सरीखेरे, ए सयल परीखेरे; किधाहो विविध प्रकारशुरे. न
 रहय वर हाधीरे; साथाशुं साथीरे, झुंजेहो धर्म विच्यारशुरे ॥१७॥ ननढोल उदामारे, काहला अन्नारामारे; न
 नीरुपम जुजुंरे, जुजा उवाजेरे; शरणाइ साजेरे, रागहो जर्मासो सिधुंरे ॥१८॥ गोखे चढीयो गोरीरे, देखे
 चोरीरे; आगे हो सोहे मारो नाहलारे, कुलदेवी मनावेरे, प्रीउमो जस पावेरे, आज हो एह उमाहलारे ॥ १९
 सुरा अति फूजेरे, नर कापर धुजेरे; दीन वचन मुखे जपतारे, जांवे देव तमासोरे; आकाशे वासोरे; वा संगीहो

हर कंपतारे ॥ १० ॥ अतिपैं हां आमंवरै, आठा धो अंवरै; हाथही हाथ सुजे नहिरे, नहि वैरविरोधारे, हासा
कृत क्रोधारे, मदन विनोदाहो जाणे सहिरे ॥ ११ ॥ नम नम नांगरे, हरी दलने आंगरे; काम करे उठावणीरे, दल
देखी खीसंतारे; धाया धसमस्तारे, हलधर पांमवपर जणीरे ॥ १२ ॥ ते चोंपे चमीयारे, अति गाढा लमीयारे; नमीया
हो मदन माया करीरे, हरी आपण आयोरे, सब जोर देखायोरे; कांड न चाले चिंता खरीरे ॥ १३ ॥ पग आधा
ठावैरे, हरी साहसो आवैरे; पावे हो सुख हरी देखवैरे, हरी लोयण दक्करै; वर वाह सुलक्षणैरे, फूरकें हो ते नर
पेखवैरे ॥ १४ ॥ हरी न्राखे नाइरे, ते रोस जगाइरे; तोहि तुफ साथे नेहलोरे, हसी बोलै नीकैरे; जायो हरीजीकोरे,
कुण समो नेहनो जलोरे ॥ १५ ॥ जो जोर न चालेरे, कां न्राखन घालेरे; आरपी हो त्रिया रुपी न्रीखनीरे, एह वचने
कोप्योरे; अती गाढो रोप्योरे, नापु हो न्रीमी जीउं चिचनीरे ॥ १६ ॥ जेहनो बल आपोरे, ते ठेढो चापोरे; ए बलि
नाम महा बलिरे, धर वेगा जाउरे; हरी सुखीया आयोरे, नारी हुइ न हुइ नालिरे ॥ १७ ॥ अंगुठाथी लागीरे, जाइ
माथे जागीरे; रोमे हो रोम साली घणीरे, तव कोमी उपायोरे; किधा हरी रायारे, एक न लागो नंदन जणीरे ॥ १८ ॥
शस्त्र बल नांगोरे, हरी बाधा लागोरे; काल रुपी हो थयो कान्हनोरे, माताजी देखेरे; चिंत्यापु विशेषेरे, मतरे दमे
माहरो नान्हनोरे ॥ १९ ॥ बेसे मुफ आमारे, ए दोइ पवामारे, हाणी होवे धर माहरेरे; रुपिरोप विचालोरे, जइ किजे
टालोरे, हाथे हो वात ठे ताहरेरे ॥ २० ॥ रुपि विच करावैरे, रुपी रोस हरावैरे; क्रथ करो किस्सुं नंदस्युरे, नंदन
समजायोरे; धसी सामो आयोरे, लाग्यो हो पाय आणंदस्युरे ॥ २१ ॥ आलंगी लीधोरे, जाणे अमृत पिधोरे, कीधा

श्रीमत्तोर जगोरारे, ए मोटो दोरारे; मोरोहो मरण विच्यारजेरे, सखीयामें नासोरे; नसहा यहां सोरे; स्वामीनो काम
 समारीजेरे ॥९॥ रायागण आयारे, शोचंत सवायारे; पायाहो सुजस प्रगट पणारे, कोइ ठत्र धरावरे; कोइ चामर
 ढलायेरे, जावेहो चित राजा तणारे ॥१०॥ गुण लक्षणयंतारे, सांहता दंतारे; वरसेहो सावे यिराजतारे मदशुं अति
 बहेतारे; कांइ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजंतारे ॥११॥ उंचा अति चढीयारे, पर्वतशुं भ्रमीयारे जुमीयाहो
 हेमजंजीरशुरे, ढलकंती ढालेरे; मलपंता चालेरे, हालेहो आप सरीसशुरे ॥१२॥ घोना हणहणतारे, ते सयला वण
 तारे; खणताहो धरती खुरतानशुरे, लंबोदर रुमारे; चालंता नही कुमारे, सुनाहो वरण विज्ञासशुरे ॥१३॥ रथ
 राजे बारुते, चालंता चारुते; सास्हो तुरंगम जोतरारे, सख्खांसु नरीयारे; रण आगे धरीयारे, पायाहो धरणनि पोतरेरे;
 ॥१४॥ नरपायकपालारे, दुशीयार हवालारे; आगेहो होइने हालणारे विसे जलहलतारे, रीसे कलशतारे; बलताहो पुवे
 नवालणारे ॥ १५ ॥ रणचुमी आयारे, यडपती रायारे; मांड्याहो लोग लमावणारे, माता मुनी संगरे; मेली
 मनरंगरे, रंगेहो जंग उमावणीरे ॥ १६ ॥ हरी साथ सरीखोरे, ए सयल परीखोरे; कियाहो विविध प्रकारशुरे, न
 रहय वर हार्थीरे; साथशुं सार्थीरे, झुजेहो धर्म विच्यारशुरे ॥१७॥ ननढोल उदामारे, काहला अर्नारामारे; नाद
 नीरुपम जुजुनेरे, अजा बयाजेरे; शरणाइ साजेरे, रागहो जमरीो सिंधुनेरे ॥१८॥ गोखे चढीयो गोरीरे, देखे चित्त
 चोरीरे; आगे हो सांहे मारो नाहलारे, कुलदेवी मनावरे, प्रीठमो जस पायेरे, आज हो एह वमाहलारे ॥ १९ ॥
 सुरा अति फूजेरे, नर कांयूर धुजेरे; दीन वचन मुखे जपतारे, जावे देव तमासोरे; आकाशे वासोरे; वा संगीहो थर

सुत आगमनी वात ॥ पु० ७ ॥ हरी निरखे सुख रुखमणी हरी सुख जोय; हरी रुखमणी सुख पुत्रनोरे
पुत्र पित्या मा जोइ ॥ पु० ८ ॥ अमृत वरसे लोययेरे, परम महा सुख होइ; ते सुख झानी वाहीरोरे, अवर न
जाणे कोइ ॥ पु० ९ ॥ नामां ठे वरुजागणीरे; कहि तिथी अनीवार; अरु जाग केहनो वनोरे, कुण वनी संसार ॥ पु०
१० ॥ सें पण बालपणा थकीरे, काम कियां अचीराम; सुजही सुं संन्या जाणीरे, अथीको कुमर काम ॥ पु० ११ ॥
नगरीनी शोजा घणीरे, कचरो काढेरे डर; फूज विपेरे सेरंमीरे, अग्र देवे अति चुर ॥ पु० १२ ॥ वाजां विवीथ
प्रकारनांरे, गुहरगेनिशान; नाडे अंवर गाजीयोरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० १३ ॥ घर २ गुनी उठवीरे, घर २
मंगल ब्यार; घर २ होवे वधामणारे, घर २ उठव सार ॥ पु० १४ ॥ पुत्र पित्याहथी चढीरे, रुखमणी मोलेलार
इस इसारने हलधरूरे, लोकानो नही पार ॥ पु० १५ ॥ गोखे वेनी गोरमीरे, बहुलीवे आशीश; मात पित्यानी
पुरज्योरे, आस्या अधीक जगीश ॥ पु० १६ ॥ धन तुं माता रुखमणीरे, शारे एवो पुत; घणा किर्युं करे जाइयारे,
कारण कोनीक सुत ॥ पु० १७ ॥ सांचलतां मारग विपेरे, विवध प्रकारे बोल; आया रुखमणी मंदिरेरे, वाग्या
जंगी ढोल ॥ पु० १८ ॥ मदन महोठव किजतारे, हरखे सधला लोक; नामाने जानु तलोरे, चितमो धाय ससोक
॥ पु० १९ ॥ हरी हलधर निज नंदेशुरे, अवर अनेरा राय; रुखमणी घरे आरोगीयारे, दिन केता एम थाय ॥ पु० २० ॥
डुयोधन नृप आवीयोरे, हरीशुं करे पुकार; सुज पुत्री बहु तुम्ह तणीरे, किडं न करो प्रनु सार ॥ पु० २१ ॥ हरी
चित चित्या आकररे, जाणी मदन जेवार; कुमरी आणी आपतारे, हरी हरखत तेवार ॥ पु० २२ ॥ डुयोधनने

हो विविध वधामणारे, हरी हरख न मावरे; सुत दर्शण सोहावरे, पावे हो आनंद अति घणारे ॥ ३१ ॥ ए ढाल
 प्रसीधीरे, पटनेत्रमी कीधीरे; कीधी हो आप जणावणारे, कहे गुणसागरे; हरी नंद उजागरे, नागर नवल लीला
 घणीरे ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ काम कुमार मलवे करी, ए अधविच विचाल; हर्ष यने विखवाव अति, हरी पाम्यो
 समकाल ॥ १ ॥ नंद मिल्यो आनंदमें, ए हरी हरख अपार; बंधव ज्ञान धरणी पढ्या, ए विखवाव अपार ॥ ३ ॥
 संकलि माया सहु, जे जीम या तिम कीध; जयशकार जगतमें, मदन महा जस लीध ॥ ३ ॥ मार २ कर उठिया,
 सत्युं कहे नृप स्वांम; एक ए पुत्र हमारने, सकल कियां गतमाम ॥ ४ ॥ माता एसा पुत जणो, जेसा काम
 कुमार; जिहां जोठं तिहां तेहयो, आप जणावण हार ॥ ५ ॥ ढाल ए४ मी ॥ सुधारस मोरली वाजे ॥ ए देशी ॥
 आप जणायो जगतमेंजी, श्री श्री काम कुमार; यादव पांमव जोजगारे, मार्यो मान अपार; पुत्र पथारीयो ॥ १ ॥
 ए आंकणी ॥ हरख्यो क्रम नरेश, हरखी मा सु विशेष; हरख्या लोक अशेष, पु० ॥ उदधी विजय आदे करीरे,
 प्रणम्यां दशेहि दसार; आलिंगो हृदने धरेरे, श्री बलनरु उदार ॥ पु० ३ ॥ राजा अरजुन जीमस्युरे, भिखवानो
 अर्थीकार; राणा राजा प्रणम्यारे, पगे लाग्यो परीवाररे ॥ पु० ३ ॥ जानुं कुमार नासी गयोरे, माता जामा पास;
 वात जणावी विस्तीरे, जामां हुइ उदाशरे ॥ पु० ४ ॥ जोली जामां जामनीरे, आरति वंति होइ; जे किरतार
 वना कियारे, ते स्युं जोर न कोय ॥ पु० ५ ॥ गगन थकि उतारीयोरे, विद्या रूपे विमान; कुमरी राखी उलवेरे,
 थकीत हुवा राजान ॥ पु० ६ ॥ रुखमणी प्रभु पगे लागतारे, हरीहांसो न समात; किठं न जणावीयो मुऊ जणीरे,

॥खंड ५ मो॥ ॥ दोहा ॥ आचार्य इंद्रि दमे, आचार्य ब्रह्मच्यार; आचार्य गुणसार ॥ १ ॥ आचार्य आरा-
 आचार्य व्रत आचारे, आचार्य आचार; सुमती गुप्ती व्रत पालतां, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आरा-
 धतां, आपे वाणी विलास; अत्र पंचम अर्थीकारनो, पन्नगुं पुन्य प्रकाश ॥ ३ ॥ ऋश्र कहे सचीवा प्रत्ये, मदन
 कुमारको व्याह; मांड्यो आनंवर घणो, कयों घणो उठाह ॥ ४ ॥ खेचर पतीने खेचरी, बोलाव्यो तेहीवार;
 साथ घणी कन्या तणे, रतीने वीधी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीकां, हरीवल अने कुमार; साहमा जाइ साचवे,
 विनय तणो आचार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मली, मांहोमांहे आनंद; वहीनी प्रसाद तुम्हारुने, ए मुज घर आ
 णंद ॥ ७ ॥ जुचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार; सरखी वए पंचासवर, कन्या भेली उदार ॥ ८ ॥ सगासणीजा
 सामटा, वहीन जुया नाणेज; विंटी मीलीया एकठा, सहु परीवार सहेज ॥ ९ ॥ ढाल एण मी ॥ सहेरानी
 तथा सुगत नगर साहरुं सासरुं ॥ ए देशी ॥ गुंथी माअणी जडो सेहरो, रचना रची साररे; काम कुंवर
 शिर सोहतो, सोहे शोन्न अपार हो ॥ गुं १ ॥ पांच पिरोजा हिरनां, मुक्ताफल बरलादरे; माएक जुनी
 लसणीया, नलां रतन रसालरे ॥ गुं २ ॥ विविध अकरे कारीगरी, करी खांती अनेकरे; देखण आवे देवता,
 मन आणी विवेकरे ॥ गुं ३ ॥ मोहन मस्तक उपतां, काने कुंफल दोइरे; चंदने सुर्य एकठा, मलियां
 तिहां जोइरे ॥ गुं ४ ॥ नखशिख लगी वणतां जीके, नलां जुयण होइरे; पेहेरया परम पावन पणे, सोहे
 इंद्र सम सोइरे ॥ गुं ५ ॥ पंच स्वर शब्द सोहामणा, वाजंता निशाणरे; नाचे पात्र मन जावती, दिजे वंभित दानरे

हरी कहेरे, परणो एही कुमार; पुत्री सरखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० २३ ॥ साजन मेलानी नखीरे, नः॥
पुमीरे ढाल; श्रीगुणसागरजी कहेरे, नमीए पुन्य त्रिकाल ॥ पु० २४ ॥ चोपाइ ॥ खंम खंम रसठे नवानवा, सुपःना
मिठा साकरलवा; श्रीहरीवंश चरित्र जयजयो, चोथो खंम ए पुरण थयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ॥

देव विमाने मा० ॥ एकदिन आवे हो सी मंधर पासे मा० ॥ विधी युत्त बंदे हो मन उलासे ॥ मा० ३ ॥ पुर्व भ्रवतो
 हो सयल विचारो मा० ॥ पुढ्या जांखे हो जीनवर सारो मा० ॥ पुनरपि पुढे हो बंधव माहरो ॥ मा० ॥ तेहनो किहां
 ठे हो शुच अवतारो ॥ मा० १ ॥ तव जिन जांखे हो हरी घर सोहे मा० ॥ सुखमे हो जन मन मोहे मा० ॥ मुजने
 भेलो हो जाइशुं होशे मा० ॥ के नहीं जांखे हो जिनवर जोशे ॥ मा० ३ ॥ सुण तुं सुरवर हो तुही पण त्यांही
 मा० ॥ हरी घर नंदन हो थारो उवांही मा० ॥ तव प्रणमीने हो जिनपद जावे मा० ॥ हरी समीपे हो सुरवर आवे
 ॥ मा० ४ ॥ वात जणावी हो सयली हरीने मा० ॥ हरीए सांजली हो हरख धरीने मा० ॥ हार सजुणो हो हरीने
 दिधो मा० ॥ तेमणी जासुर हो नामे प्रसीधो ॥ मा० ५ ॥ विधीतव दाखी हो सुरवर जावे मा० ॥ हरी मन एहेवो
 हो वितक थावे मा० ॥ जो ज्ञामाने हो ए सुत आवे मा० ॥ मदन संघाते हो द्वेष मिटावे ॥ मा० ६ ॥ ए मर्म हरी
 नो हो मदन लहीयो मा० ॥ हार व्रतांतज हो माशुं कहीयो मा० ॥ अवर नचाहु हो नंद अनरो मा० ॥ क्रोध
 सरखो हो तुही जलेरो ॥ मा० ७ ॥ बाहु बलने हो राम सरखो मा० ॥ लक्ष्मण नषिम हो एह परीखो मा० ॥ एही
 माता ए हो एकज जाया मा० ॥ सिंह सरखा हो तेज सवाया ॥ मा० ८ ॥ जंबूवती गेहे हो कामकुमारो मा० ॥ जइने
 दाखे हो हार विचारो मा० ॥ हरी जो आपे हो हार सनुरो मा० ॥ तो तुम पामो हो कुमरसुरो ॥ मा० ९ ॥ सत्यप्रामानो
 हो रूप करीने मा० ॥ आवी जंबूवती हो पास हरीने मा० ॥ वसंत रमवा हो वनमे आया मा० ॥ हार देखेने हो बहु सुख
 ॥ मा० १० ॥ शिख लेइराणी हो निज घर आइ मा० ॥ वेरी केरो हो वास छवदाइ मा० ॥ गाफील खावे हो मारए जावो

॥ गुं० ६ ॥ गयंवर शिर सिंङ्खनो, धणो कीधलो पुरे; हयंवर सार समारियां, चाले दधीहि लुरे ॥ गुं० ७ ॥ साजन
 मिल्यां सामटा, मली सामटी बालरे; धवल मंगल घणां गावती, त्रिय जाक ज्मालरे ॥ गुं० ८ ॥ कुमर घोने
 चढ्यो मोटके, आया वाग मोजाररे; काल संघर हरी उठव, करे विविध प्रकारे ॥ गुं० ९ ॥ खेचरणी खरी खांति
 सुं, गांचे नवनया धोलरे; चुचरणी नरमावचा, करे अति घणा टोलरे ॥ गुं० १० ॥ पहिलि परणी रति रंगसुं, पवी
 पंचासने वाठरे; एक लग्ने तव ब्याहनो, जणे ब्राह्मण पाठरे ॥ गुं० ११ ॥ परणी पथारीया मंवीरे, पोहोती मन
 तणी कोन्हेरे; इंड इंडाणी सारखी, मली काम रति जोन्हेरे ॥ गुं० १२ ॥ खेचर खेचरणी गयां, तव थापणे ठामरे;
 पुन्य तणा फल जोगवे, नली जामनी पामरे ॥ गुं० १३ ॥ उदधी कुमरी थावे करी, नृप कुमरी शुं विलासरे; जानुं
 कुमर परणावियो, पुगी मायनि थाडरे ॥ गुं० १४ ॥ काम कीरती अती विस्तरी, घर २ वार वजाररे; देश पुर नगर
 घणुं, जग मांहे जयकारे ॥ गुं० १५ ॥ वदन विराजत नारति, करी लठिनी वेसरे; अमरख आर्णनि किरती, लियो
 थापे परदेशरे ॥ गुं० १६ ॥ कमलि रमलि करे रंगसुं, जोगी जमरलो जेमरे; नागर नवल रस रामती, रमे रातविन
 तेमरे ॥ गुं० १७ ॥ ए अठाणुमी ढालमें, हुवो कुमर परणेतरे; श्री गुणसागर सुरजी, रुखमणी सुख हेतरे ॥ गुं० १८ ॥
 ॥ दोहा ॥ श्री कुंवर नर सांवनो, चरित्र सुणो नचि लोय; चरम शरिरी आतमा, नाम लिया सुख होय ॥ १ ॥
 पुर्व नवंतरनो नजो, नाइ काम कुमार; थावी मले किम एकजो, त्रिति तणो चियहार ॥ २ ॥ ढाल एण मी ॥ जो
 केशर वरणो हो काढ कसुंवो मोरा लाल ॥ ए देशी ॥ केटन जीवजे हो सुख बहु माने मारा लाल, वारमे स्वर्गे हो

नवाणुंसी ही वचने थुणजो ॥ मा० ११ ॥ ॥ दोहा ॥ रूप कला गुण आगला, चंद्र वर्ष शुभ्र नयन; कुमर दोह
देखता, लोक लहे अति चयन ॥१॥ यादव नारी कर कमल, कुंवर अरम सुजाण; केलि करे मन जावती, प्यारा
प्राण समान ॥ १ ॥ वारु वसन विराजता, वारु जुषण धार; वारु चाल मरालनी, वारु सुख दातार ॥ ३ ॥ सांब
पढायो रतिपति, तिमहि जान सुभ्रानु; परम मनोहर गुण नीला, लालन लीला श्रानु ॥ ४ ॥ ॥ ढाल १०० मी ॥
पांचमी वामे परमेसरु, वखाणी वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान बोले आढे वयन; माननी मन मोहवा,
मोहनी तो अयन ॥१॥ हमारे लालनां, लिलावंत कुमार; जांबुवति जामा जणे, प्यारे प्राण आधार ॥२॥ खेवंता
अती खांतसुं, मित्राके परीवार; परषदा मांहि आविया, करण तात जुहार ॥३॥ सांम बेवो कामपे, जानुपे सुभ्रानुं,
रुपे रंजे राजवी, सोहाके निधानुं ॥ ४ ॥ युवा ख्याल हो वही, पांढवा बलदेव; कुंवर दोष खेलाववा, मांमिया तंत
खेव ॥५॥ कोमी कंचन हारीयो, ताम सुभ्रानु कुमार; पहीली जीत सांवकी, मदन करे उपगार ॥ ६ ॥ कुकम युधे
जितीयो, कंचन कोमी दोह; जाकी पुंते कामढे, जाती क्यु नवी होइ ॥ ७ ॥ सुवर्ण सर्व तामही, काम दियो वाढी;
युवा मीवी हारहे, आपे लुटे आवी ॥ ८ ॥ अ्यार कोमी हेमनी, जीतीयो फल हीम; वार नाही देतही, काम १
कोमी ॥९॥ आठ कोमी वस्तरे, हारे हारी सोल; तिस दोह कुंकुमले, तोही नावे बोल ॥१०॥ अ्यार सावीको स्तुत्रे,
कोमी छणी जोह; अस्ववदे वादही, हेमहारे सोइ ॥११॥ ठपनकोमी दोइसैं, युध होमे जोम; लालच जान दोम्रवे, लिउ
रिजीउ वहोम ॥१२॥ बेरन विच्यारीहीए, चहतमांन समांन; मनभानंशुं गमे, होमी करतहे आन ॥१३॥ सांब कहे मायजी,

मा० ॥ नामानी पेरे हो लहे पवतावो ॥ मा० ११ ॥ पद् प्रतापे हो इम सुख थावे मा० ॥ सपल्यो वायस हो फल
 उंच पावे मा० ॥ निपल्यो माणस हो धणुं शीदाय मा० ॥ सिंव सरीखो हो फल नहीं पाय ॥ मा० १२ ॥ आश धरीने
 हो ह्ये सतनामा मा० ॥ हरी समीपे हो आवी शामा मा० ॥ पिण अणण रज्यो हो पामे किहांशुं मा० ॥ ऊल
 फज किजे हो पुन्य विनाशुं ॥ मा० १३ ॥ दुणी(लेइ गइ हो प्रथम नारी मा० ॥ पेटर पिवो हो तकज सारी
 मा० ॥ देव संघाते हो जोर न चले मा० ॥ एह व्रतांतज हो हरी मन साले ॥ मा० १४ ॥ हार अनेरोहो हरीए आणी
 मा० ॥ दिए नामाने हो हरखो राणी मा० ॥ जंबुवती उरे हो सो देव आयो मा० ॥ नामाराणी हो अन्य ते पायो
 ॥ मा० १५ ॥ गुन रिखवारे हो कुमर जायो मा० ॥ जंबुवतीने हो हरख सवायो मा० ॥ रुपे दिपे हो जोगपुरंदर मा० ॥
 लक्षणे शेने हो सर्व सुहंकर ॥ मा० १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे मा० ॥ सारथीने घरे हो पदम नामे मा० ॥
 मंत्रिनी नारी हो तेणे पण जायो मा० ॥ बुध्री सेननामे हो सुत सुहायो ॥ मा० १७ ॥ सेनापती हरीनो हो तसयर
 पुतर मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उत्तर मा० ॥ ए ब्यारे कुमर हो निका कहीए मा० ॥ एक समाना हो जनम्या
 लहीए ॥ मा० १८ ॥ यथाउ थावे हो हरीने अगने मा० ॥ दानज आपे हो तेहने रागे मा० ॥ धरश मंगल हो सोहव
 गावे मा० ॥ सांन कुमरजी हो नामसुं हावे ॥ मा० १९ ॥ नामा जायो हो कुमर जीरु मा० ॥ नामे सुनानुं हो अथि
 क अर्थीरु मा० ॥ दोइ धर थावे हो महोठवहेजे मा० ॥ दिनश चंदज्युं हो चमता तेजे ॥ मा० २० ॥ सांवंशुं नानुं
 हो जनम वखाण्यां मा० ॥ नाइश गुं हो प्रेम प्रमाण्या मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो मा० ॥ ढाल

नरखे नयणा; नयणेहि नीरख्या पडे, कहेणा नहि कुयेण ॥ ६ ॥ अणजाण्यां अण देखीयां, कह्यो पर शीर थोक;
 अणसहतां ना शिखण्या, जुठ कहेठे लोक ॥ ७ ॥ ढाल १०१ मी ॥ सियल सलुणि भयण महा सतिरे ॥ ए
 देशी ॥ साम कहे सुण सुंदरीरे, जुठ कहे नहि लोयरे; पंचमे परमेसहरे, पंच करे तिम होयरे ॥ सा० १ ॥ अंगुठार्थी
 वुंठियारे, धुंठीयी तो जानुरे; जानुथी कटी जइ अमेरे, नाणे कोइ गुमानरे ॥ सा० २ ॥ केमि थकी हइमे चढिरे,
 हइमाथी गले जामरे; परम महा छब आवहीरे, अकुलाइ जन तामरे ॥ सा० ३ ॥ मुलाजा मोटा तणारे, तोहि
 न तोम्या जातरे; नाके चढो छब छःसमोरे, लोक तदा विल लातरे ॥ सा० ४ ॥ वाम नखे जो काकनीरे, वोलावा
 लुंठतरे; कुण आगे पोकारीएरे, माता ठोरु कुंठतरे ॥ सा० ५ ॥ पीहरीयो परजा तणारे, राजाजीनो नामोरे; आप
 अन्याव जो आचरेरे, केम वसे ते गामोरे ॥ सा० ६ ॥ प्रचुजी तो नांखी थणीरे, सान पति जे एकरे; वालिक बाला
 वाडवारे, एक सरीखी टेकरे ॥ सा० ७ ॥ सुंदरीने समजाववारे, साम करे उपावरे; पुर बलि मन सांचजिरे, धावक
 जाणे वावरे ॥ सा० ८ ॥ जांबुवति आहिरणीरे, आपुण हरी आहिररे; दहि वेचणने आवीयारे, खेले ज्यां कुंवर
 थोररे ॥ सा० ९ ॥ सामा वरसां सोजनिरे, सामी वरस सो दाखरे; सामा रुपे रुपनीरे, देखी करे अचीलापरे ॥ सा०
 १० ॥ मंसाहारा लंपटारे, सरीखो होइ सनावरे; उमासे उरु पसुरे, राखे चितनो चावरे ॥ सा० ११ ॥ सांच कहे
 आहिरणीरे, आपुण उरहि आवरे; वेचाउ महि ताहरोरे, अर्थको लाम अणारे ॥ सा० १२ ॥ कंत कहे कुंवर सुणोरे,
 प्राणे कोइ न कामरे; लाने धाया वापजीरे, आज रहे जो मामरे ॥ सा० १३ ॥ जाते मास्थो तव मेकरोरे, साहि बाला

धरयोटांक्ष्यो आणः फेरीउ सार नावही, कबुरु जीती जाण ॥ १४ ॥ चित्त मोकले, देता शकनाही; सर्व सांब
 होइ, रह्यो जगमाही ॥ १५ ॥ दान ते देया करे, बालही गोपाल; देव शेवा साचवे, मानही जुपाल ॥ १६
 एक जोजन, मेह जोजन वार; सर्व लोकमें सुणिए, दान सबद सार ॥ १७ ॥ दान देता शंकहि, करत सुजस्त
 पुत्र पोधी वाठना, बाजीको खिलास ॥ १८ ॥ देखी पेखी सुविशेषी, त्याग तेग तास; धर्म नंद हलधरु,
 उल्हास ॥ १९ ॥ ऋश्र साथे विनंति करत धरता हेत; सांब कुंनि वाजनी, होत कबुरु कदेत ॥ २० ॥ देव
 करो, कुमरजी करे काज; दायक पायक मोहिस्यो, रिजहि तो राज ॥ २१ ॥ हाथी घोमाकि कबुरु, नांहिहे
 आप कुल किज ते, पामे हे उठाह ॥ २२ ॥ मास एक राज दियो, हलधरादिक आय; काम जानुं कुमार
 सकल राय ॥ २३ ॥ निति वांभी अर्नतिता, तेणे कीयो दोर; माचियो मना धणो, शिल जंगनो सोर ॥
 मदन बंधु गुणही सींधु, नंद नंद नंद; नव विना कुचाले चाले, मोहनि तो मसंद ॥ २५ ॥ एतो सोमी
 सांबको वखाण; सुरी गुणसागरु, पुन्यको प्रमाण ॥ २६ ॥ दोहा ॥ जांबुवती शुं हरी कहे, धारो सांब
 नगारी मांहि नारीनो, लोपे सीयल अघार ॥ २७ ॥ शा जाले स्वामी सुणो, माहरो साधु शुं लोग; बालक
 जाणहि, किस्यो अन्याइ जोग ॥ २८ ॥ कटका मांहि माहरो, उंट कहविले जेम; कांड करो हरी रायजी, लोग
 एम ॥ २९ ॥ चाम धणो मुह लागणो, उवसकनो राय; होवे तो घर तेहनो, आटा विकर थाय ॥ ३० ॥ पेट
 सारीखो, शंकरको सो सोच; किया कुंटवो निर वहे, अवर सकलहि पोच ॥ ३१ ॥ कहि सुणी चित नाणिए,

॥दोहा॥ नामा आवी बागमें, देखी कन्या रूप; मोही मनमें माननी, पुढे सकल सरूप ॥१॥ ए वन मांहे एकली,
 कांइ फरे सुकुमाल; देखाती सुंदर महा, बलतो उत्तर वाज ॥२॥ ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लाग्यो ॥ ए
 देखी॥ नामा तग लाग्यो, तग लाग्यो गठवा जणी; तोहि प्ररम न जांगोहो ॥जा० १॥ साधु केवल वाटझी, तगने
 वाट पंचास हो जा०॥ उरोकावे शेरमी, उफाने आकाश हो ॥जा० २॥ उधामो तनु साधुनो, तग सुलतानी तीर
 हो जा०॥ जालवी सकीए केटलां, नाखे विंधी शरीर हो ॥जा० ३॥ तगउ देहि आकरी, साधु कहावे काठ हो जा०॥
 मांही रही फोले घणुं, ए जग अगत्यो पाठ हो ॥जा० ४॥ विंधुनो विष पुंढने, अहि विष दाढे जोय हो जा०॥ तगनो
 विष हैमे वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥जा० ५॥ तग मुखे मीठा सही, मांहि अधीक कठोर हो जा०॥ पंमीतजननो
 पारीखो, जेहवो पाको बोर हो ॥जा० ६॥ कोटी प्रकारे तग तणी, न मीटे सहज सनावहो जा०॥ आंवा जांबु उपरे,
 राता मांहि कसाव हो ॥जा० ७॥ कुमरी जणे नामा जणी, वारु वचन विशाल हो जा० ॥ हुं पुत्री राजा तणी,
 वाधी जइ मोसाल हो ॥जा० ८॥ व्याह जोग जाणी करी, बाप हमारो आय हो जा०॥ बेसारी सुखपालमें, लइ
 चाल्या माय हो ॥ जा० ९ ॥ आवी वस्थो ए बागमें, सुता सथला लोक हो जा० ॥ मुफने नावे निंदमी, मामी
 तणो वियोग हो ॥जा० १० ॥ हुं तव हेवी उत्तरी, डर रथो सुखपाल हो जा० ॥ प्रोहर पाढे सोवती, बोमी गयो
 चुपाल हो ॥जा० ११॥ जागी जोशुं दहदसे, चाली गयो ते साथ हो जा० ॥ युथ भ्रष्टजीम हरणाली, फिरती फरुं
 अनाथ हो ॥जा० १२॥ जो तुं पुत्र शुं जानुशुं, पुत्री वंढे व्याह हो जा०॥ धर पधरावुं साहरे, आणी अति उढाह

हाथरे; खांचि चाल्यो नौतरे, प्रगट थयो जग नाथरे ॥ सा० १४ ॥ पापी टल्य माता थकिरे, एम कहीं हरा रापर;
 जांबुवति प्रगट करीरे, नाजी गयो धरी लाजरे ॥ सा० १५ ॥ हरीणाक्षीसुं हरी कहेरे, विवा सुतनां कामरे; माता मयंगल
 मारणारे, हरी शामीनी अन्निरामरे ॥ सा० १६ ॥ जे न टले संबंधथीरे, अकरां केम टलंतरे; अन्नख जखे जे मानथिरे,
 ते क्युं नखन नखंतरे ॥ सा० १७ ॥ हाथ ठरीने लाकनीरे, बुटी घमंतो आपरे, आयो परखवामे चलिरे, पुठे
 श्रीहरी वापरे ॥ सा० १८ ॥ कुंवर एशुं किजीएरे, प्रनु ए खुटी थायरे; वात कहेजे कालनीरे, एत समुहमें वेवायरे
 ॥ सा० १९ ॥ रे रे धीठ शिरोमणीरे, रे रे कर्म कुपातरे; करणी कहेणी ताहरीरे, सारस्वी देखांतरे ॥ सा० २० ॥ वेश
 निकालो कियोरे, जाजे अजगो अपाररे; ऋधे पुरथो फन्हजी, न करे सोच लगार रे ॥ सा० २१ ॥ राजा एहवा
 चाहीएरे, न्याय धर्म प्रतिपालरे; बंटा उपर वाहणीरे, खेनवे भुपालरे ॥ सा० २२ ॥ काम कहे सुएय तातजीरे, ए
 मुऊ वाहलो विररे; कहिए आंबे पगे लागवारे, साहसवंत सथाररे ॥ सा० २३ ॥ केशव कोपवडो कहेरे, प्रानु कुमरनी
 माररे; वेसानी नज हाथणीरे, लावे तवही अवायरे ॥ सा० २४ ॥ चमते पाणी पसवारे, ताम समे अरदासरे; उखथ
 आदी तारनेरे, ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० २५ ॥ विन्नेही तय पाननारे, लेइ चाल्यो सोइरे; अति ताण्यो चुटे सहीरे,
 अति मथ्यो विल होइरे ॥ सा० २६ ॥ पग प्रणमी जणणी तणारे, नामा वनमां जायरे; विद्याने वले वाहलारे, कन्या
 रुप करायरे ॥ सा० २७ ॥ वारु वेश विराजतिरे, जोवनवंति नाररे; रुप कला गुण आगलिरे, विसंती जाक जमालरे
 ॥ सा० २८ ॥ एकोतर सोमी ढालमेरे, सांब कुंवर शुं रोसरे; श्री गुणसागर सुरजीरे, उसन जरिए कोसरे ॥ सा० २९ ॥

॥दोहा॥ नामा आवी बागमें, देखी कन्या रुप; मोही मनमें माननी, पुढे सकल सरुप ॥१॥ ए वन मांहे एकली,
 कांइ फरे सुकुमाल; देखाती सुंदर महा, बलतो उत्तर बाल ॥२॥ ढाल १०३ मी ॥ हरीयामन लाग्यो ॥ ए
 देशी॥ नामा तग लाग्यो, तग लाग्यो गववा जणी; तोहि प्ररम न चांगोहो ॥जा० १॥ साधु केवल वाटकी, तगने
 वाट पंचास हो जा०॥ बरोकावे शेरमी, उफामे आकाश हो ॥जा० २॥ उधामो तनु साधुनो, तग सुलतानी तीर
 हो जा०॥ जालवी सर्कीए केटलां, नांखे विंधी शरीर हो ॥जा० ३॥ तगउ देहि आकरी, साधु कहावे काठ हो जा०॥
 मांही रही फोले घणुं, ए जग प्रगट्यो पाठ हो ॥जा० ४॥ विंदुनो विप पुंढमे, अहि विप दाढे जोय हो जा०॥ तगनो
 विप हैमे वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥जा० ५॥ तग मुखे मीग सही, मांहि अधीक कठोर हो जा०॥ पंमीतजननो
 पारीखो, जेहवो पाको बोर हो ॥जा० ६॥ कोटी प्रकारे तग तणी, न मीटे सहज सजावहो जा०॥ आंवा जांबु उपरे,
 राता मांहि कसाव हो ॥जा० ७॥ कुमरी जणे नामा जणी, वारु वचन विशाल हो जा० ॥ हुं पुत्री राजा तणी,
 बाधी जइ सोसाल हो ॥जा० ८॥ व्याह जोग जाणी करी, वाप हमारो आय हो जा०॥ बेसारी सुखपालमें, लइ
 चाल्या माय हो ॥ जा० ९ ॥ आवी वस्थो ए बागमें, सुता सधला लोक हो जा० ॥ सुफने नावे निंदनी, मामी
 तणो वियोग हो ॥जा० १० ॥ हुं तव हेठी उत्तरी, डुर रथ्यो सुखपाल हो जा० ॥ प्रोहर पाढे सोवती, बोमी गयो
 चुपाल हो ॥जा० ११॥ जागी जोशुं दहदसे, चाली गयो ते साथ हो जा० ॥ युथ भट्टजीम हरणली, फिरती फरुं
 अनथ हो ॥जा० १२॥ जो तुं पुत्र शुं जानुशुं, पुत्री बंढे व्याह हो जा०॥ धर पधरावुं साहरे, आणी अति उबाह

हो ॥ जा० १३ ॥ सान्नाखे सुण स्वामीनी, उखाणो जगमांही जा० ॥ सुरांमां मिवा नही, जापशी यांथी प्रांही हो
 ॥ जा० १४ ॥ हरी सुत जायो ताहरो, थाए मुऊ नरथार हो जा० ॥ तो तो त्रुबो जाणीए, आपणये किस्तार हो
 ॥ जा० १५ ॥ वरणवीचारयो उधनो, सखलो धोलो होय हो जा० ॥ आफ अने सुरनी तणो, अंतर न कियो कोयहो
 ॥ जा० १६ ॥ न करी एह विचारणा, नही घर जोगी जात हो जा० ॥ सुसो पाल्या पाल्येमें, हंसनी पखो यात हो
 ॥ जा० १७ ॥ सिंघ प्रते जगुरु कहे, कानहयो होइ हो जा० ॥ केम फिरी खर आवही, तेम ए नामा जोइ हो ॥ जा०
 १८ ॥ आप चढी वर हाथणी, आगे सांत्र वेसार हो जा० ॥ लेइ द्यावी निज घरे, माटीपणो अयथार हो ॥ जा० १९ ॥
 न्हावण धोवण नोजने, आसन शयन विचार हो जा० ॥ ससुखा अति साचवे, स्वार्थियो संसार हो ॥ जा० २० ॥
 समथ विच्यारे आपणो, सयण सयाणा जेह हो जा० ॥ श्री हरीचंद्र नरोड ज्युं, मख कह्यावे तेह हो ॥ जा० २१ ॥
 विमोतेर सोमी ढालमें, नामा सांव कुमार हो जा० ॥ श्री गुणसागर सुरजी, करे विनोद अपार हो ॥ जा० २२ ॥
 ॥ दोहा ॥ श्री वसंत रतु राजीयो, आयो करीय मंमाण; कामदेवनो मीत्र ए, वरतावे जग आण ॥ १ ॥ मौरा
 द्यांवा अति चला, केशु कुसम सम वान; मधुकर गुंजारव करे, कोइल शब्द प्रधान ॥ २ ॥ मलियाचलना यायरा
 वाजे अति सुखार; इखियाने इखवायकु, सुखिया सुख दातार ॥ ३ ॥ ढाल १०३ मी ॥ ॥ कंत तमाकु
 परहरो ए देशी ॥ कुमार सुनानुं जाणीए, खेलेण काज वसंत मोरा जाल; साथे मित्र मनोहर, वनमें जाइ रमंत ॥
 मो० १ ॥ कुमार सुनानुं जाणीए ॥ ए द्यांकणी ॥ हिंमोले अति हिंचती, गाती गीत सुचंग मो० ॥ नारी नीरोपम

निरखतां, उपज्यो अंग अंग ॥ मो० कु० १ ॥ जुहक माने संधीया, तिखां लोचन वाण मो० ॥ नारी आहिने
नीकली, नांखे विधी प्राण ॥ मो० कु० ३ ॥ महिलारूपे मांमीयो, मोहनी मोटो फंद मो० ॥ कामी मृग आवी पने,
थाइ गति मतिमंद ॥ मो० कु० ४ ॥ दाढ गळावे आंबली, लाख गळावं आग्य मो० ॥ शिज गळावे सुंदरी, रागी राचे
राग ॥ मो० कु० ५ ॥ मुरठाणो धरणीए पज्यो, मंत्रा करी उपचार मो० ॥ उठाइ घर आणीयो, माता ते जाणी
विच्यार ॥ मो० कु० ६ ॥ कन्या भेली निनाणुंए, सोमीए धुर आण मो० ॥ नामां कुमर सुजानुनी, व्याह तणी विधी
वाण ॥ मो० कु० ७ ॥ नांखे कुमरी मुलगी, नामां शुं आणंद मो० ॥ करशुं कर ३ उपरै, तो वरशुं तुजनंद ॥ मो० कु०
८ ॥ बाला वात विशेषधी, नांखे नामा साथ मो० ॥ मूऊ परएये परणी सहु, परणे विनही नाथ ॥ मो० कु० ए ॥
नामां मान्या बोलमा, स्यो बहुलो विस्तार मो० ॥ नारी कही पग पानही, पुरुष कह्या शिरदार ॥ मो० कु० १० ॥
चोरी सांही साहीयो, वरनो दक्षण हाथ मो० ॥ वामां करशुं दावीयो, देखे सधलो साथ ॥ मो० कु० ११ ॥ कन्या
निनाणुं तणी, धक्षण करशुं खाण मो० ॥ साहिने विधी साचवी, ते सधली वश आण ॥ मो० कु० १२ ॥ सयन धरे
श्री सांबजी, भृगुटी चोहमी कपाल मो० ॥ बिहाव्यो कुंवर खरो, नाशी गयो ततकाल ॥ मो० कु० १३ ॥ सासन्नरथो
आयो सहि, नामां जननी पास मो० ॥ कंत लगायो पुढीयो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० कु० १४ ॥ मुऊने मारे
मायजी, नाइ सांवसनुर मो० ॥ सांवकी हारे मरपणो, आवी जाली हजुर ॥ मो० कु० १५ ॥ पगे लागी उचो रथो,
कडुयाणा अति नयण मो० ॥ अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० कु० १६ ॥ धरत धीठ शिरोमणी,

जिहां तिहां इसवाप मो॥ क्युं आयो अण तेनीयो, जामा भुरक खाथ ॥मो० कु० १७॥ सांव कहे ते आणाया,
 सकल लोकनी सारव्य मो० ॥ वेसारी वन हाथणी, माता झुव मर्जाख ॥ मो० कु० १८ ॥ चणे सुनामां जामनी,
 होई खीसाणी आप मो०॥ हाथ कमाया कामनो, सोचनको संताप ॥मो० कु० १९॥गग माता तग तातजी, जाइएण
 तग जास मो०॥आप ठगारो जगतनो, दुकीम पडुचुं तास ॥मो० कु० २०॥ हे मागव पुत्री जनी, सूहीरणी तस नाम
 मो०॥एवं सांव कुमार घरे, रमणीसत अनीराम ॥मो० कु० २१॥ चरणकमल निजतातनां, प्रणमीत्रांखे यातमो०॥ कामक
 जा गुं विच्यारतां, हरीहांसोन समात ॥मो० कु० २२॥ कन्यासोही सुजानुंने, परणाची सुखकार मो०॥मनमान्या सुख जो
 गवे, सांवसुजानु कुमार ॥ मो० कु० २३ ॥ सांव कहे वसुदेवशुं, वावाजी अयथारमो० ॥ धें परदेशां आपनी,
 पामी नार सुनार ॥ मो० कु० २४ ॥ सब विध सुंदर सुदरी, घर वेठाही देख मो० ॥ तात प्रसाद तुम्हारमे
 मे पामीसु विशेष ॥ मो० कु० २५ ॥ वेटाजी तुम्ह तो यमा, जोता सब परिचार मो० ॥ तुम सम अवर न उपनो,
 म्हारा वंश मोजार ॥ मो० कु० २६ ॥ तिम्रतर सोमी ढालमें, जांजुवति ठगह मो० ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे
 मदन विदरनी व्याह ॥ मो० कु० २७ ॥ ॥ दोहा ॥ एक विवस चित्या वसी, स्वयमर्णने मन एह; विदरनी
 कुमरी नती, रुप कला गुण रेह ॥१॥ जो घर थावे कामने, तो पुणे मन आश; सहि करी जाणुं सखीं, पुरो पुन्य
 प्रकाश ॥ २ ॥ ढाल १०४ ॥ आज नलो दिन माहरो ॥ ए देशो ॥ विदरनी सुं मन वरथो, जुया जसेरो जाव
 हो लाल; वहु करवाने कारणे. चितने लाग्यो चाव हो जा० ॥ वि० १ ॥ इत अनोपम मोकल्यो, रुकमीया राजा

पास हो ला० ॥ पुत्री दे मुँह पुत्रने, धुर आशीप प्रकाश हो ला० ॥ वि० ३ ॥ रुकसीयो रीसे रातमो, बोले अति
अविब्यार हो ला० ॥ आगे अमरख अति घणो, सारो ठे हरी लार हो ला० ॥ वि० ३ ॥ ए कुसरी उतम खरी, बहि
न कुमर घटि बंस हो ला० ॥ जो वर ३ बहेशे नहीं, अण परण्यां परशंस हो ला० ॥ वि० ४ ॥ हरी घरथी
चंमलने, घरे दिधां अति सोहे हो ला० ॥ नाते घागं जेहने, उपावे अंदोह हो ला० ॥ वि० ५ ॥ इत तणे मुख
सांचली, ए अविब्यारी वात हो ला० ॥ पिठतावो करती घणो, छिंती रुखसणी मात हो ला० ॥ वि० ६ ॥ मर्म
लाहि माता तणो, कामने सांब कुमार हो ला० ॥ रुप करी चंमलनो, कुंमनपुर आवंत हो ला० ॥ वि० ७ ॥ रुप
कजा करी सोहतो, गावे गीत रसाल हो ला० ॥ विणर वाब उपांगसु, वाजे मादल ताल हो ला० ॥ वि० ८ ॥ सुर
गायननी उपमा, नेद संगीतनो जाण हो ला० ॥ स्वर मंमलसुं साचवे, राग तणा मंमाण हो ला० ॥ वि० ९ ॥ ग्राम
तिन स्वर सातसुं, मुर्बना एकविस हो ला० ॥ गुण पंचासा तानसुं, जाणपणाना इश हो ला० ॥ वि० १० ॥ रुप
तिहां गुण नवि होवे, सुगुण तिहां नहि रुप हो ला० ॥ रुप अने गुण एकठां; पुरव पुन्य अनुप हो ला० ॥ वि०
११ ॥ मोह्यां राणा राजीया, मोह्या बाल गोपाल हो ला० ॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सुविसाल
लो ला० ॥ वि० १२ ॥ गगन गति सुर मानवी, थंन्नी आप विमान हो ला० ॥ नाद सुणेवा कारणे, मोहि रघ्यां
धरी ध्यान हो ला० ॥ वि० १३ ॥ नादे मोह्या हरणजा प्राण तजे ततकाल हो ला० ॥ साप ढिढर मांहि पमे, सहिरो
बाबु लाल हो ला० ॥ वि० १४ ॥ नादेइ स्वर बाइयो, स्वांग विरुप धरंत हो ला० ॥ नारी आणे नाचियो, थेइ थेइ

धेइ करंत हो ला० ॥ वि० १५ ॥ राधावलन राचियो, ए जग मांहि अचंन हो ला० ॥ राणी रुखमणी आग
 कीधो नाटारंन हो ला० ॥ वि० १६ ॥ नादे ब्रह्मा चउमुहो, रस मोखरनो मुहहो ला० ॥ ठेदि नांख्यो नारदे;
 तिखा नुह हो ला० ॥ वि० १७ ॥ वेद थकी ए पंचमो, नाद कह्यो उपवेद हो ला० ॥ प्रिती उपावण साद-
 नाद रहे सर्व देख हो ला० ॥ वि० १८ ॥ छलीयाना डल पत्रहरे, सुखीयाने सुखकार हो ला० ॥ श्रवण रू-
 हारी खरो, मनमथ डत उदार हो ला० ॥ वि० १९ ॥ नारी जननो बाल हो, नाद निरोपम नाम हो ला०
 चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अजीराम हो ला० ॥ वि० २० ॥ विदरनी नृप कुमरी, वेणी राजा गोद हो ला
 गबराब्यां ते मुंयमा, मोहि गीत चिनोद हो ला० ॥ वि० २१ ॥ सुंदरताइ देहिनी, सुयमाइ अर्थीकार हो ला०
 जीमश जेवे सनमुखे, तीमश उपजे प्यार हो ला० ॥ वि० २२ ॥ किहां थकी तुम्ह आविया, पुठे राज कुमार
 ला० ॥ स्वर्ग थकी पाव धारीया, माणस लोक मोगार हो ॥ ला० वि० २३ ॥ देखी नगरी द्वारिकां इहां आया जोइ
 ला० ॥ मदन कुमार सोनागीयो, पुठे कुमरी सोइ हो ला० ॥ वि० २४ ॥ सांव कहे सुण सुंदरी, मदन महा दातार
 ला० ॥ नोग पुरंदर सुंदरु, आप कियो किरतार होला० ॥ वि० २५ ॥ माननीयां मन मोहया, मोहन सुरति आप
 ला० ॥ गीत घणा रति पती तणां, गावे करी ब्यालाप हो ला० ॥ वि० २६ ॥ अवर अनेरा मानवी, पामे उपम ज
 हो लां० ॥ सोतो प्रनु आपण अठे, खुं वरणिण तास हो ला० ॥ वि० २७ ॥ अयरावतिनी उपमा, अवर गजा देव
 हो ला० ॥ पण अयरापति हाथीयो; कहे ऋिण सम कहेवाय हो ला० ॥ वि० २८ ॥ इंड तौण उपमा दिया, अवर

राय धिकार हो ला०॥ पण तो उपमा इंद्रने, अबरा ए अविब्यार हो ला० ॥ वि० ३९ ॥ इस३ सर्व जगतको, इस
 इस नही होइ हो ला०॥ राय मदन राया तणो, पण तसराय न कोय हो ला० ॥वि० ३०॥ प्रचुत्ताइ तो इंद्रनी,
 धनइ देवको कोस हो ला०॥ तेज जलण को जागतो, काकतणो तो रोस हो ला० ॥वि० ३१॥ सख रामके राज
 तो, हरीनी थितनी थोन्न हो ला०॥ सुरथी नर थकी खग थकी, पामी अधीकी शोच हो ला०॥ ॥वि० ३२॥ रुमा
 मे रुमो धणो, गुरुयोने गुणवंत हो ला०॥ पुन्ये प्रापती पामीए, काम सरीखी कंत हो ला० ॥ वि० ३३॥ कुमरी
 हुइ अनुरागणी, सजस सुणत प्रमाण हो ला०॥ परपुं कुमर कामने, नहीतर ठोमुं प्राण हो ला० ॥ वि० ३४ ॥
 एतले बुब्यो हाथीयो, किमही बसनावंत हो ला०॥ राय कहे गज वश करे, ते वंभीत पावंत हो ला० ॥वि० ३५॥
 नाइ बले वश आणीयो, ते मोहोढो गजराज हो ला०॥ मागण हारो मागीयो, सारु वंभीत काज हो ला०॥ ॥वि०
 ३६॥ बाप प्रसादे ठे सहु, रोटापोवण हार हो ला०॥ नवींठे तेह थकी दिइ, ए तुं कारज सार हो ला ॥वि० ३७ ॥
 इ ए विदरणी कुमरी, कन्यादान प्रधान हो ला०॥ मुजस्थो वर नवी पामस्थो, तुज्यो श्री किरतार हो ला ॥वि० ३८॥
 खिज्यो राजा रुकमीयो, रे रे कहि दे गल हो ला०॥ अंगी जंगीबो सही, बोलो बोल संभाल हो ला० ॥वि० ३९॥
 किथां नगरी बाहीरां, गाम अपावन थाय हो ला०॥ मामो सारेवो नहि, मारथा मायरी साय हो ला० ॥वि० ४०॥
 चिनोतेर सोमी ढालमें, वैदरजीनो प्रेम हो ला०॥ गुणसागर प्रजुनशुं, नंग जमाणो हेस हो ला० ॥ वि० ४१ ॥
 ॥ दोहा ॥ मदन गयो मांदिर चली, निशचर सोवे सोय; निंद गइ प्रभु निरखतां, मन रलीयायत होय ॥१॥ लेख

लखी सुविशेषी, दिव्यो कुमरे जाम; रुखमणा नाम वाचता, पामा अचरज ताम ॥ २ ॥ पुते पदमनी प्रेमशुं, दव
 प्रकाशो नाम; थारा मननो ज्ञावतो, हुठं कुमर काम ॥ ३ ॥ ढाल १०५ मी ॥ हंसलानी देशी ॥ ज्ञाग्य वनो
 प्रभु पाइयो, ए वरहे श्री काम कुमारके; पुरंदरहे केरो अचतारके; हुंठुं हे वरुवखती नारके, प्रसंशा हेलेशुं संसारके
 ॥ ज्ञा० १ ॥ जे मन माने आपणो, करयोहे सोइ चरतारके; नारीज मारो नाहशुं; नरयोहे ए जग ववहारके ॥ ज्ञा० २ ॥
 पितंबर पहिरयो जलो, कंकणहे वांध्यो वर हाथके; वेला साथी वेगशुं, कुंवर रहे कुंवरनि साथके ॥ ज्ञा० ३ ॥
 आरण कारण साचवी, तव कियो हे विवाह उल्हासके; रात वशो उठी गयो, आयो हे बंधवनी पासके ॥ ज्ञा० ४ ॥
 पश्चम रात्रे सोधती, कुमरी हे निंदावडा थायके; दिन उग्यां आवे सही, दातण हे लेइने थायके ॥ ज्ञा० ५ ॥ दिवी
 कुमरी निदमें, कंकण हे वांध्यो सुवीशेषके; कोरी सान्नी परणो, एनीको हे परणो तरवसके ॥ ज्ञा० ६ ॥ सास नरी
 पाठी वनी, लावी हे राखीने रायके; परतक चरीत्र देखावतां, आपुणपेहे उर्शीगण थायके ॥ ज्ञा० ७ ॥ रायजणे
 राणी सुणो, एकारीज हे विपरीत जोयके; कुलने लंठन लावीयो, ए घंटी हे नही वेरण होयके ॥ ज्ञा० ८ ॥ जलहर
 जग जीवानलो जाइ हे विद्युत गुण साणके, वंशदेव तस मांही ए; उपजी हे विपवेली आणके ॥ ज्ञा० ९ ॥ हुं चुम्बो
 वाचा सही, पापणी हे पुत्रिने हेतके; हये उरण थायसुं, एहने हो मुनमाने देतके ॥ ज्ञा० १० ॥ फाटो, उध न राख
 णो, विणग हे माणसनो त्यागके; करवोठे सुण सुंदरी, सगण हे करयो नहि लागके ॥ ज्ञा० ११ ॥ अंगुवो सापे
 नस्यो, ठेदे हे स्याणा नर जेहके; राख्यो खोवे देहने, तेहवी हे कुमरी ठेहके ॥ ज्ञा० १२ ॥ राजा तेनी मागणा,

दिधी हे कुमरी तेहि वारके, पाले वाचा आपणी, न कीयो हे नृप सोच लीगार के ॥ जा० १३ ॥ खरी ए अपी
 रीस वसे, जे शीर हे आवंत कलंकके; सतवंति सीता सती, रघुपती हे सात जीय निशंकके ॥ जा० १४ ॥ मुंब कहे
 हुं स्युं करुं, भरवि हे हमहिने नेठके; राजसुता सुक मालिका, करवी हे एहनी अती वेठके ॥ जा० १५ ॥ लोकुमें
 अबहेलणा, मनमे हे तस हरख अपारके मन मान्यो पति पाइयो, लोटे हो लाने संसारके ॥ जा० १६ ॥ सांब कहे
 सुरा नाइजी, आपुणपुहे देखावा आजके; देव जुवन समरावियो, निंधा हे सारे सब काजके ॥ जा० १७ ॥ धोधो
 माइल वाजहि, नाचे हे तिहां पात्र अनेकके; मंगल गावे गोरमी वरते हे 'विवाह अनेकके ॥ जा० १८ ॥ रोस गयो
 राजा तणो, किजे हे पठतावो एस के; ढाढीने गाढी करी, दिजे हे विदरजी केमके ॥ जा० १९ ॥ अंत तपे अती
 आकरी, गाढो हे मनमांही कुचयनके; अमी तणा संजोगथी, भागी हे जीम चुवे नयनके ॥ जा० २० ॥ सावीता
 बारु तणा, अवगुण हे सासेवा प्रांहिके; कुमारी सुत जाइयो, कुंति हे नृप काढी नांहिके ॥ जा० २१ ॥ काठ जल
 बोले नहि, आपण हे उपायो जाएके; वज्रवा नर जल बालणो, सायर हो न उल्हावे प्राणके ॥ जा० २२ ॥ क्रोध
 वसे मुज आंधले, किधो हे कार्य विपरीत के, न कुच वातने कारणे, तोमी हे पुत्रि स्युं प्रीतके ॥ जा० २३ ॥ सोइ
 दान भवणे सुणी, चमकियो हे रुकमीयो रायके; खबर करी जणाधिया, एतो कोइ हे हरी सुत कहिवाय के ॥ जा०
 २४ ॥ बूटी चाले अपावियो, मलिया हे भाणेजां धायके; हेज हिए न समावहिं, लीधो हे कंठ लगायके ॥ जा० २५ ॥
 काम सांब कुमर जला, आएया हे निज घर उढाह के; आनंद रंग वधामणां, सासु हे मन उपज्यो उठाहके ॥ जा०

२६ ॥ दिपो अर्थीकी दायजी, दिधां हो साथे परीवारके; देइ ददामां जीतनां, चाल्यो हे श्री काम तिवाके ॥ जा०
 २७ ॥ आर्यां नगरी द्वारिकां, हरख्यो हे श्री ऋश्र नोशके; हरखी माता रुकमणी, हरख्यो हे परीवार अशेषके ॥
 जा० २८ ॥ लेजे चिंत्या बोलना, ते ते हे चनीया परीमाणके; बहुअर सासु प्रीतनी, माने हे सुख मेरु समानके ॥ जा०
 २९ ॥ सांघने परजुनजी, तनसु हे जुहा मन एकके; जोमी नल कुबेर तणी, राखे हे हठ न तजे टेकके ॥ जा०
 ३० ॥ अनिरुथाधिक कामने, नंदन हे गुणवंता सोइके; तस संख्या सुत संवने, साखा हे विस्तरती जोयके ॥ जा०
 ३१ ॥ पचफोतर सोमी ढालमें, वैदरनी हे केरो विवाहके; श्री गुणसागर सुरजी, लिले हे गुन कर्मा लाहके ॥ जा०
 ३२ ॥ ॥ चौपाइ ॥ खंन खंन रसठे नव नवा, सुणतां मीवा साकर लवा; श्री हरीवंश चरित्र जय जयो,
 पंचमो खंन ए पुराण अयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा पंचमोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ खंम ६ ठो ॥ ॥ दोहा ॥ गुण पण विसे पुरीया, सुंदरने सुकमाल; एहवा उपधाया तया, प्रणमी चरण त्रिकाल ।
 ॥ १ ॥ वर ठवा अधीकारनो, विस्तारिये विस्तार; पंचालि प्रगटि खरी, सती शिरोमथी सार ॥ २ ॥ ठवो ज्ञाता
 थंग ठे, तिहां ठे बहु विस्तार; चांख्यो विर जलंदजी, गणधर सना भोजार ॥ ३ ॥ नाग सीरी हुति भ्रामणी,
 कनवो तुंयो दिध; मास खमणने पारये, मुनीवर हत्या लीध ॥ ४ ॥ करतां करमज सोहिलां, नांगयता जंजाल;
 नाग सीरी जीम मति करो, फोगट पातिक जाल ॥ ५ ॥ नमती नुर नवंतरे, चंपा नगरी तेह; नडा चरे उपनी.
 सागरदत शुं गेह ॥ ६ ॥ ढाल १०६ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देखी ॥ जीहो नरगाविक डुखः
 नोगवि लाला ॥ परवस करशरीव; जीहो नडा घर थायी अवतरयो ला ॥ नागसीरीनो जीव ॥ १ ॥ चतुर नर जेः
 ज्यो कर्म दीपाक, जीहो करम करे विण राजवि ला ॥ करम करे सो संक च ॥ ए थांकणी ॥ जीहो थनुक्रमे जाः
 दारीका ला ॥ सुंदर रुप रसाल; जीहो नणी गणी चोसठ कला ला ॥ चाले राज मराल ॥ च ० जो ० २ ॥ जीः
 वेपारी विजो वसे ला ॥ तिहां वली अिण दत शेव, जिहो धनपती सपलाठे धणां ला ० सपला जेहनं हेव ॥ च ० जोः
 ३ ॥ जिहो तस घर घरणी नली ला ॥ सागर नामे पुत, जिहो रुपवंत सहुने गमे ला ॥ राखे घरनो सुत ॥ चः
 जो ० ४ ॥ जीहो एक दिवस सागर फरे ला ॥ नगर कतुहल काज, जीहोरमलीकरे सुकमान्नीका ला ॥ १
 इंदर कुल साज ॥ च ० जो ० ५ ॥ जीहो सागर रुपे मोहीयो ला ॥ घर आव्यो दलगीर, जिहो मातापित्या
 तिहां ला ॥ नंन जोद थाधिर ॥ च ० जो ० ६ ॥ जीहो पुत्र कहे तमे सांजलो ला ॥ जो मुफ वांठो खेम, इः

सागर इतनी नंदनी लाण॥ प्रणावो मुफ़ प्रेम ॥ च० जा० ७ ॥ जीहो वात सुणी शेत हरखीयो ला० ॥ साजन लीधा
साथ, जीहो सागर दत्त धरे आवीयो लाण॥ वेच मलीया देइ हाथ ॥ च० जो० ८ ॥ जिहो शेत कहे किए कारणे
लाण॥ आया मुफ़ घरबार, जीहो निज पुत्री मुफ़ पुत्रने लाण॥ दिजे एह विच्यार ॥ च० जो० ९ ॥ जिहो शेत कहे
मुफ़ अंगजाला, जिवन प्राण समान, जिहो गेह जमाइ जोरहे लाण॥ तो आवो करी जान ॥ च० जो० १० ॥
जीहो एम सांजली विलखो थयो लाण॥ शेत गयो निज ठाम, जीहो सागर पुढे वापने लाण॥ वात कही तिणे ताम
॥ च० जो० ११ ॥ जीहो सागर आदर करी कहे लाण॥ जीहो गेह जमाइ जोरहुं लाण॥ वंढित
भोग रसाल ॥ च० जो० १२ ॥ जीहो जिनदत सागरने कहे ला० ॥ चिंताम करो चित, जीहो जान सजी तिहां
आवीया लाण॥ जिम तिम राखे प्रित ॥ च० जो० १४ ॥ जीहो हथीमेळो सागर ग्रहे लाण॥ शेत सुतानो हाथ,
जीहो जोन्नर सरीखो आकरो लाण॥ चिंते न जुम्यो साथ ॥ च० जो० १५ ॥ जीहो अन्नक्रमे परयो प्रेमशुं लाण॥
सागर करत विच्यार, जीहो नामे ए सुक मालीका लाण॥ परणामे अशीधार ॥ च० जो० १६ ॥ जीहो सांज समे
एक मेहेलमां ला० ॥ सुता स्त्री जरतार, जीहो अंग लगावे अंगस्युं लाण॥ जेह विषय अंगार ॥ च० जो० १७ ॥
जीहो कर्मनीकाचीत जेहने लाण॥ ते केम पामे भोग, जीहो छिमेतेरसोढाले गुणसागर कहे ला० ॥ तोही न समजे
भोग ॥ च० जो० १८ ॥ दोहा॥ जिमतिम करम न किजीए, किजीए चित विच्यार, धर्म करो निज हितनणी
शुभ पामो नवपार ॥ १ ॥ मन जंग देखी वालम तणो, चमकी नारी ते वार; असमंजस ए स्युं करे, कोइक खरो

मुफ्फथा एह अवशष हा ॥ का० १३ ॥ महाल कहील करी द्रुष्या सा० ॥ टहील निकरण हार हो, तोपण मन माने
नहीं सा० ॥ अहो योवन शणगर हो ॥ का० १३ ॥ हुं तुम पगनी पानही सा० ॥ तमे मुफ्फ शीरना मोम हो, गोद
बिठाइ पाए पदुं सा० ॥ किम रह्या मोह मचकोम हो ॥ का० १४ ॥ तुम ससरे नवी डहव्या सा० ॥ लहेणे देणे
लगार हो, लालच हुवे कोइ बातनी सा० ॥ कहो सुखे न करो विच्यार हो ॥ का० १५ ॥ होवे जमाइ लामको सा० ॥
जीमरुशे तिम रंग हो, पण विए स्वार्थ रुशणुं सा० ॥ ते तो बालीकठंग हो ॥ का० १६ ॥ इम कही खीए विसमी
सा० ॥ चतुरान न चीतचाव हो, निञ्जवश हुइजके सा० ॥ सागर लीधो दाव हो ॥ का० १७ ॥ बार उधामी नाशी
गीयो सा० ॥ सुती सुही नार हो, एहवी में जाणी नहीं सा० ॥ धीग एहनो अवतार हो ॥ का० १८ ॥ सत उतसोमी
ढालमें सा० ॥ कीजे क्रोम विशेष हो, गुणसागर ए नवी सीटे सा० ॥ जे विधी लखीया लेख हो ॥ का० १९ ॥
॥ दोहा ॥ जागी तव सुकमालीका, पती न विदेखे पास; गदश कंठ रुदन करे, नाह कीहां गयो नाश ॥ १ ॥ ऊारी
जेइ दाशी तिहां, आवे सनने रंग; विलखी शेर सुता धणी, दाशी देखी विरंग ॥ २ ॥ दाशी चांखे शामनी, आमण
डमणी कांइ; पहीले दिन खटपट कशी, गुण अवगुण न जयाइ ॥ ३ ॥ सुती ठोमीने गयो, सागरदत धर आप; दाशी
शेवाणनि कहे, एह जमाइ पाप ॥ ४ ॥ सागर दत्त रीसे भरयो, जीनदतने धर जाय; उलंभादे शेवने, निज अंगज तुम
नाथ ॥ ५ ॥ तेमी सुतने हम्कयीयो, तें कीयो ए अकाज; शेर सुता परणी करी, ठोमी कीम निरलाज ॥ ६ ॥ पुत्र कहे
सुण तातजी, जाउ नहीं तस पास; जोगी जंगम ब्रत ग्रहु, मत कर अवर विखास ॥ ७ ॥ शेर सुणी ए वातमी, ठोमी

मुनीवर दृढणा ॥ ए दशा ॥ अत्र

॥ क १ ॥

ढाल १०८ मा ॥

॥ १ ॥

आपण कान; आची वेंटीने कहे, पुव करम नीदान ॥ १ ॥

विचस घरतो धणीरे हां, सागरदत्त सुजाण; कर्म विटवणा, उंचो वड्डो महीलमारे हां; देखे नगर मंगण ॥ क १ ॥ निण निणाः

नुखे जागो डवळारे हां, शेठे दीवो रंक क ॥ हाये जांगो विकरोरे हां, मागे नखि नशिंक ॥ क २ ॥ शेठे तेमावी तेहनेरे हां.

मांखी करेरे हां, जे लाने ते खाय क ॥ फाटां त्रुटां लूगमारे हां, केने नावे दाय ॥ क ३ ॥ शेठे आंमंत्र करीरे हां, परः

दीधुं आवरमान क ॥ मोदक दीधां मोकळारे हां, उपर अनुयांन ॥ क ४ ॥ नाइ तेमी मरदन कीयारे हां, खः

कराव्यो तास क ॥ आनरण पहीराव्यां नळारे हां, तन हुवो तेज प्रकाश ॥ क ५ ॥ शेठे आंमंत्र करीरे हां, जाः

वी निज धीय क ॥ सखरा वाधा घर दियारे हां, सुख जोगवे चिंजीय ॥ क ६ ॥ हरख्यो नीखारी घणुरे हां, सासु ससरा

जाग अचंग क ॥ कीहां शेठ घर पामीयोरे हां, जीहां सुख नवरंग ॥ क ७ ॥ मीठा नोजन जमवारे हां, सासु ससरा

क ॥ शेठ सुता सुकमाडीकारे हां, लाधु रुप निधान ॥ क ८ ॥ रात समे देहु जणारे, सुवा मंदीर जाय क ॥ निज समुदाय

वेला कर फरशीउरे हां, अग्रन समो छशदाय ॥ क ९ ॥ नाठो डमक तिहां थकीरे हां लेइ निज समुदाय

साप कांचली जीम तजीरे हां, टलीय अजाय वजाया ॥ क १० ॥ शेठानी नीज नंदनारे हां दिठी वदन विलाय

माता पुठे शुं थयोरे हां, रुदन करे मसकाया ॥ क ११ ॥ जननी जांखे सुण सुतारे हां, मतमन आणे शोक क ॥ सुगः

लखीयां नवीटलेरे हां, हससे डुर्जन लोका ॥ क १२ ॥ चिंता तजीत्रजी धीरमारे हां घरवेठी देवान क ॥ अंतराय मोटः

रेहां, सुख पामीश अ

॥ क १३ ॥ शेठसुणी आची कहेरे हां वेंटीमकरथं देह क ॥ पुर्व कर्म उदय थकीरे हां, पतंः

थाय वीलोह ॥ क० १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हां, जाचक आशकरेह क० ॥ तेहने मोमाग्यो दीएरे हां, नाकारो न करेह
 ॥ क० १५ ॥ वोहोरण आवे सांघवीरे हां, गइ गुराणी पास क० ॥ वशीकरण विधी पुढतारे हां, बोले सा उल्हास
 ॥ क० १६ ॥ मंत्र तंत्रने जंत्रमारे हां, उपध मुली तेम क० ॥ कामण मोहण जीन मतिरे हां, करण करावण नेम
 ॥ क० १७ ॥ लीधो चारीत्र सादरेरे हां, करती तप अपवास क० ॥ मारगथी वाहिर पम्परे हां, सेवति वनवास
 ॥ क० १८ ॥ कांइकरे व्रत आदर्योरे हां, जो न तजे संकल्प क० ॥ पग३ सिदाये घणुरे हां, वदे डख अनल्प ॥
 क० १९ ॥ आलो गोलो नीतसुरे हां, लागे अपर खीरंत क० ॥ रागीनो मन राचणोरे हां, वैरागी वीर चंत ॥ क०
 २० ॥ वनवासे डखण घणारे हां, रागी नरने होय क० ॥ घरवासे वैरागीयारे हां, दोप न लागे कोय ॥ क० २१ ॥
 वस्तु अपुरव ठे घणीरे हां, आंवा दाम्म डाख क० ॥ खातां मन पाठो पम्परे हां, अणखाया अनीलाख ॥ क० २२ ॥
 मोहपे साची मोटकीरे हां, वसुधामें विख्यात क० ॥ हाथी उमे वायरेरे हां, मांस मांस कुण मात ॥ क० २३ ॥
 अगोतेर सोमी ढालमरे हां, किंउं न करे कर्म क० ॥ लुट्यो नहि जीवनेरे हां, एक विन्या जिन धर्म ॥ क० २४ ॥
 ॥ दोहा ॥ ललितादिक गोविल वसे, पांच परुष धनवंत; राजा माने अती घणुं, भोगी नमर रमंत ॥ १ ॥ रथ
 वेशी वेशा सहित, आया वन पंभूर; वेश्या रथथी उतरी, वेठी आसन पुर ॥ २ ॥ पांचे गोविल सेवकां, मिल दियो
 आदेश; नोजन करज्यो नातिगुं, जीम खुशी हुवे वेश ॥ ३ ॥ ढाल १० ए मी ॥ ॥ मोरा साहिव हो श्री
 सितलनाथके हुंहुं सेवक ताहरो ॥ ए देशी ॥ एक गोवींज हो घणुं चतुरसुजाणके, वेश्या आगल आइउ; रंगे राती हो

मंहदी लेइ हाथके, पग मंमण मन चाइयो ॥१॥ धन्य वेदया हो सुहागण नारके, स्युं कीथे डण नातरे; पांच गोविंज
 हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चातरे ॥२॥ तिणे मांड्यो हो पग रुमी नातके, बेल फूल मन लाडने; कर
 कोमल हो रया बेउ रंगके, मथुर सर गुण गाइने ॥३॥ एक लायक हो सुंदर नर आयके, माथे ठत्र धरे तसे;
 आपे उनो हो करी सेवा सारके, वेदया मुख देखी हसे ॥४॥ जांयन नर हो एरु मोहन बेलके, तेज सुगंध शीशी
 लिए; वेदया शिर हो घाले तेल फूलके, चोटो गुंथे छट्ट हिए ॥५॥ नवरंगी हो सारंगी पागके, एरु गणिका खोजे
 लिए; एरु किंजे हो चामर चित लायके, कर सेती वीमी दीए ॥६॥ जो नरके हो तमके दे गजके, फिर जगज
 नको करे; जे मागे हो हासे करी लायके, ते हजर श्याणी धरे ॥७॥ ए पांचे हों नर भिगा बोलके, गणिकासुं मुसके
 हसे; घर घरणी हो ठोनी ते मुढके, निश वेदया मंदिर बसे ॥८॥ ह्ये साथी हो देखी ते इमके, चिते चित धन ए
 सहि, हुतो परणी हो कोइ पाप सजोग के, मुने पतिये मानी नहीं ॥९॥ एक ए पण हो श्रुतीमानणी नारके,
 सिंहासन उपर चढी; पांचे नर हो करे जीजीकारके, देइ जयाप नहव चढी ॥१०॥ जीम लीनु हो देखी गले दाढके,
 तिम अजा मन टलबले; जोगवता हो भिगा नर पांचके, संजम वतथी खलजने ॥११॥ जो तपनो हो कोड फल
 ठे साचके, तो पण हुं पुरव जये; एहनी पर हो जो नरतारके, तप संजम जला हुये ॥१२॥ आतापना हो कीधी
 बहु जातिके, आइ गुराणी पाये नमे; व्रत पात्री हो सुयो आचार के, जिम तिम दिन निगमे ॥१३॥ ह्ये चेन्नी हो
 गुरुणी स्युं रीसके, गुरुणीसुं नधि मीले; मन माने हो जीहां तिहां जाडके. ज्ञोनी जणि न्नि म्मं छिजे ॥१४॥

हाथ धोवे हो सुख धोवे पायके, माथो धोवे मन रली; अग धाव हा दनमें दस वारके, धोवे सामी निरमली ॥ १५ ॥
 निसवासरही गुरुणी स्युं धेखके, खटपट निपट निलज वली; शेर बेटी हो जाण्यो स्वाद न कोइके, गुरणीथी
 अलगी टली ॥ १६ ॥ पामी हारक हो मोठी धर्म सालके, बेठा तिहां सुकमालिका; आप बांढे हो रहि
 अटक न कांइके, जाप जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पामोशण हो आवे कोइ नारके, तिण आगल सुख
 डख कहे; बिजो कोइ नहीं हो आल जंजालके, आप वसे सुखणी रहे ॥ १८ ॥ पमीकमणो हो जो आवे
 दायके, तो किय वेला आदरे; किय वेला हो विकथा करे ब्यारके, हारे वस परमादमे ॥ १९ ॥ वत पाल्या
 हो तिणे वरस अनेकके, ठेहमे आलोया नहीं; कर्म बांध्या हो लुटे नहीं जीवके, कोम जतन करे कोसही ॥ २० ॥
 हवे साधवी हो आडखो पालके, विजे सुर लोके अवतरी; पल्योपम हो नव आड प्रमाणके, सुरगणीका थइ सुख
 वरी ॥ २१ ॥ हवे तिहांथी हो चवी साधवी जीवके, सुन करमें किहां अवतरी; ते सुणजो हो संबंध विचारके
 सुणतां मन आणंद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नवसोमी हो तप कीथां जाणके, ते तो निश्चे सुख लहे: जीनशासन हो माहे
 भर्म असुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ देश मांहि ठे दिपतो, सजल देश पंचाल; कपीलपुर
 नामे नगर, न पमे कदिय डकाल ॥ २४ ॥ नुंचो कोट त्रिकोट जीम, परदल चंजणहार; दरवाजा ब्यारे जजा, जाग्या,
 माल अपार ॥ २५ ॥ लखमीधर ब्यवहारीयां, वसे सदा सुख वास; शेर सेनापती मंत्रवि, घर घर लील विलास ॥ २६ ॥
 ॥ ढाल १२० मी ॥ नमो नमो अरणक महा मुनि ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहां, छुपद नामे राजानरे;

१ लेइ हाथके, पग मंगण मन न्राइयो ॥१॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, सुं कांधे इण नातरे; पाच गावळ
 २ चित लायके, पग एक कोड न चातरे ॥३॥ तिले मांड्यो हो पग मन्नि पावळे ते
 ३ प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने साजनरे ॥ १ ॥ पुन्य थकी सुख संप जे, पुन्य यमो संसारोरे; पुन्य करो तुमे
 ४ जीम पामो नच पारोरे ॥ पु० २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चुलणी तस पटराणीरे; ह्ये रंजा सारखी, माता
 ५ कुले आवी अयतरी, सुन वेला अथ रातोरे; जोग सखर नजो चंडमा, माता
 ६ तस मासे दिन नले, राणीए जाइ वेठिरे; रुप अनोपम मनोहर, गुणमणी मारुणिक पेठिरे
 ७ पुरे मासे दिन नले, राणीए जाइ वेठिरे; रुप अनोपम मनोहर, गुणमणी मारुणिक पेठिरे
 ८ मात पीत्या हरखीत थया, दुपदी वीधुं नामरे; दिन ३ वाधे नृप सुता, चंपक जिम गीरी ठामरे ॥ पु० ६ ॥
 ९ दिपे अर्थके वानरे; गंगा गोरी अयतरी, रंजाने अनुमानरे ॥ पु० ७ ॥ चंडमुखी मृगलोचनी,
 १० राज हंस गति चालेरे; राजकुमर दुलामी रमे, मातपिता जन पालेरे ॥ पु० ८ ॥ चोसठ महिलानी कला, नणी गणी
 ११ तप किधां जनमंतरे, तिण नखशीख अर्धकाइरे ॥ पु० ९ ॥ एक दिन राणी मनरली, कुमरीने शणगरीरे
 १२ जनमन मोहन गरीरे ॥ पु० १० ॥ सखीय साहेली परवरी, रमजम करती रंगेरे; करी जु
 १३ वेठी जाइ उठंगरे ॥ पु० ११ ॥ नृप दिवी नीज अंगना, ह्ये रती गुणखाणीरे; नणे ते जाणी
 १४ राजा मनमांही चिंतवे, केहने ए परणावुरे; सरीखे सरीखो जो मीले,
 १५ कुल आचार सुघर नलो, सासु सतरो साररे; घर लखमी किती वणी, सुलक्षण
 १६ एतला गुण जोइ करी, वेठि दिजे वापरे; पाठल नाग्य लिख्यो लहे, लोकनको संतापरे
 १७ चिंतुं में जस पावुरे ॥ पु० १३ ॥ कुल आचार सुघर नलो, सासु सतरो साररे; घर लखमी किती वणी, सुलक्षण
 १८ एतला गुण जोइ करी, वेठि दिजे वापरे; पाठल नाग्य लिख्यो लहे, लोकनको संतापरे
 १९ चिंतुं में जस पावुरे ॥ पु० १४ ॥ एतला गुण जोइ करी, वेठि दिजे वापरे; पाठल नाग्य लिख्यो लहे, लोकनको संतापरे
 २० चिंतुं में जस पावुरे ॥ पु० १५ ॥ एतला गुण जोइ करी, वेठि दिजे वापरे; पाठल नाग्य लिख्यो लहे, लोकनको संतापरे

दसोतेर सोमी ढालमें, पुठया जाण सुजाणरे; गुणसागर कहे पुन्यथी, चढशे वात प्रमाणरे ॥ पु० १ ७ ॥ ॥ दोहा ॥
 बलि पुठया वरु जागीया, गढ गंजणहि चाल; एहवा जसु पासे रहे, कोइ न करे टंकाल ॥ १ ॥ सयंवरा मंमप रंगसुं,
 मांम्यो अधिक मंमाण; कुमरी लामकी झुपडी, वांढा चढे प्रमाण ॥ १ ॥ चौकस वात वणाइने, जोशी तुरत तेमाय;
 मास लगन शुच दिन धमी, जोवो जोतिप राय ॥ ३ ॥ जोशी जोयो जुगतिसुं, पोष मास श्रुदि त्रीज; गोधुलिकक
 चोखो अढे, वरस मांहि एहिज ॥ ४ ॥ सुणी राजा मन रंजीयो, जोशीने धे दान; कुसम माला धाली गले, दिंधो
 आदरसाम ॥ ५ ॥ आप जुप परधान गुं, बेठा करे विचार; सत्ता विच सिंहासने, पासे सहु परिवार ॥ ६ ॥ ढाल
 १ १ १ मी ॥ न्नीदण वात विच्यारो एह ॥ ए देशी ॥ सोनांनी ठीमका जलारे, कागल रंग रंगेल; मंत्रिसर
 लखजो जलोरे, रखे करो कांइ ढिलारे; मानव मानो जुपत आण ॥ १ ॥ साम न्रगती सुख पामशारे, लहस्यो कोम
 कल्याणरे मा० ॥ ए आंकणी ॥ मंत्रिसर कागल लख्यारे, बहु धम न्रंज उपमान; अक्षर लखिया परवकारे, वांचत
 हुइ आसानरे ॥ मा० १ ॥ इत तेमावी राजवीरे, कागद दिंधो हाथ; प्रथम तुं जावे द्वारकारे, जीहां राजा हरी नाथरे
 ॥ मा० ३ ॥ पग जाटकी पगे लागजेरे, श्री पतिने केजे जुहार; कागल देइ विनवरे, हरखीत होय मोराररे ॥ मा०
 ४ ॥ समुच्चविजे नृप सारीखारे, नमी जे दसे दसार; अतुलि बल बलनछजीरे, केहेजे तास जुहाररे ॥ मा० ५ ॥
 राज पधारो हित धरीरे, मकरो ढिल लिगार; जुपद सुता ठे झुपदारे, विवाहनो अधीकाररे ॥ मा० ६ ॥ इम कही
 इत चाखियारे. हय गय रथ नर वृंद; अन्रक्रमें आयो द्वारीकारे, जीहां ठे जुप सुकंदरे ॥ मा० ७ ॥ बाग विचे मेरो

रमो संसरोरे. पन्ना ३३
 तेज प्रताप ।दवस मणी, साचा जहन साजनरे ॥ १ ॥ पुन्य थकीं सुख स५ ७, ३ ॥ लायक पायक परीवर्योरे
 प्राणीया, जीम पामो चव पारोरे ॥ ७० ॥ सुंदर तनु शोनातरे ॥ मा ७ ॥ फगे लागी कागद दियोरे, मुख वचन
 दियोरे, नोजन करी बहु जात; वागो सरर वणाइयोरे, वेवा नर रजपुतरे ॥ मा० ९ ॥ मधुसुदन मन हरखियोरे, वांची कागल तेह;
 आंभर करी छत, राजसना ते आवियोरे, राजेसर कल्याणरे ॥ मा० १० ॥ सुणजो सहुको यादवार, सुणजो दसे वसार; सोल
 गुन वाण; कुशखेम पुठी बलारे, जाग्यो अर्थक सनेह ॥ मा० ११ ॥ मान्यो वचन सहु मलारे, श्री पतिनो हेतकार; आदर शं
 कंपिनपुर जावा जणीरे, करज्यो एक विच्यारे मा० १२ ॥ किशन सीख ले चालियोरे, छत प्रमोद अपार; वाग मांहि जीहां
 सहस जुपति सुणोरे, उतने क्रश्र मोरारे ॥ मा० १३ ॥ किशन सीख ले चालियोरे, चाल्यो तिहांथी छत; मारग आवे जोवतोर.
 नोजन दियोरे, उतने क्रश्र मोरारे ॥ मा० १४ ॥ कटक शुभट साथे घणारे, आनंद सेति आवियोरे; जीहां
 उतर्योरे, करी सजाइ साररे ॥ मा० १५ ॥ गाम नगरपुर लांघतोर, करतो विचे मुकाम; आनंद सेति आवियोरे, कियो जुग्रां
 जीहां अचरज अदमुतरे ॥ मा० १६ ॥ सुरज जगे आवियोरे, छत ते राजडवार; सना मिलि सहुको जुम्यार, होसे जयशकारे ॥ मा०
 कंपिलपुर गामरे ॥ मा० १७ ॥ छत कहे करजोमनेरे, मानी वात मोरार; नाग्य वमो ठे रावलोर, होसे कोम कल्याणरे ॥ मा० १८ ॥
 जुहाररे ॥ मा० १९ ॥ छत कहे करजोमनेरे, मानी वात मोरार; नाग्य वमो ठे रावलोर, होसे कोम कल्याणरे ॥ मा० १९ ॥
 १० ॥ सहुको रलियाइत थयारे, चढो वात प्रमाण; इण करजथी माहरोरे, होसे जस प्रधान ॥ १ ॥
 ॥ दोहा ॥ निसुणी छत वचनथी, अति हरख्यो राजान; इण करजथी माहरोरे, होसे जस प्रधान ॥ १ ॥
 सनमान्यो ते छतने, राजा अर्थिक सनेह; आपी पाठो आशा, छत गयो निज गेह ॥ १ ॥ डाल १ १ १ मी ॥
 दे मात मलार ॥ ए देशी ॥ हवे छुपद नामे राय, छजो छत बोलाय; आज हो वात प्रकाशे निज ३ मन तर्णः

हथीणापुर तुं जाय, जीहां वसे पंढुराय; आज हो पांच पुत्र शुं सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ शुद्धिष्टर जेष्टी जाएण,
प्रीमसेन बीजो वखाण; आज हो अरजुन त्रीजो नंदन तेहनेजी, नकुल चौथो सोय; सहदेव पांचमो जोय, आज
हो मांहोमांहे प्रीती अधिकी जेहनेजी ॥१॥ वली तस राजमोजार, डुर्योधन हेतकार; आज हो गंगेव विडर आदी
ते सवेजी, सकल वना वन वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो क्रश परे जइ सहुने विनवेजी ॥३॥ उत हथीणापुर
आय, मिलि विनवीया राय; आज हो वेगे पधारो तेमो तुम न्नीजी; उत प्रत्ये देइ मान, वना सरव राजान आण ॥
केसरीये वाधे करी शोभा घणीजी ॥४॥ तदनंतर वलि राय, त्रीजो उत बोलाय; आज हो चंपापुर नगरी जाजे तुं
सहीजी, करण तिहां राजान; इपे करण समान, आण ॥ अंग नरार्थीप नणी केहेजे वहीजी ॥ ५ ॥ सत्य अने नंदी
राय, आदे सहु समुदाय; आण ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी, ते पण सांजलि वाय; देइ निशाले घाय आण ॥ कर्पीलपुर
जावा उठरंग मन धरीजी ॥६॥ हवे चौथो उत चलाय, हइमे हरख न माय आण ॥ वेगे मनावो सोयंपुर पतिजी,
दमगोप सुत शीसुपाल; पांचसें चाइ रसाल, आज हो शिस नमावी कीधी विनतीजी ॥ ७ ॥ पांचमो उत पताय,
हथी शिस नगरे आय; आज हो दमदत राजाजी राज करे जीहांजी, विनवीयो जइ राय; डुपइ वचन सुणाय आण
॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहांजी ॥८॥ हवे ठवो उत तेमाय, डुपदराय बोलाय; आज हो मथुरानगरी नणी सोतो
मोकलेजी, श्रीधर नामे राय; बेठोठे सुखदाय, आज हो लेख वांचीने कहे आव्या चलेजी ॥९॥ सातमो उत सुण
वाण, करे हुकम प्रमाण आण ॥ आणंदे राजग्रह पुर आवीयोजी, सहदेव नामे राय; प्रणमी तेहना पाय, आण ॥

स्वामी वचन सह संनदावीची ॥१०॥ तो ते राय बोलाय, आत्मो छत चलाय; आण॥ कुंभणपुर नगरी राय,
 रुपी प्रतेजी; बोले मधुरी वाण, करजे जडने जाण आण॥ वेलो तुं वलजे करजे मुज फतेजी ॥ ११ ॥ नवमा छत
 शुं वात, जातुं नगर वैराट आण॥ राय वैराटने जइ एम चांखजेजी, सत नाइशुं आज; विनती करी महाराज आण
 ॥ राय कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥१२॥ राय पुत्री गुण गेह, परणे अधिक सनेह आण॥ वेग पयारो जुपती एम
 कह्योजी; तेणे निमज किथ, आगन्या पाठी विथ आण॥ सांचनी राय सुख अधिको लह्योजी ॥ १३ ॥ नव देश
 नोतरथा राय, दसमो छत चलाय आण ॥ बुपद राजानी निज खांते करीजी, जाजे देसादेश; लसु वना नरेश
 आण॥ वात प्रभाते शिग्र हेत धरीजी ॥१४॥ हवे सकल राजान, सांचनी बुपद वाण आण ॥ कंपीलपूर आचण
 अति ठमहाजी, ढाल वारोतेरसोमि एह; सुणता यामे नेह आण ॥ सुरी गुणसागर साजन सुख लहाजी ॥१५॥
 ॥ दोहा ॥ सजा सुधरमी कलजी, वेठा वलनछ पास; कोष्टिक जोशी तेनीने, पुवे मुद्रुत तास ॥ १ ॥ तिण
 वान तिथी अटकली, जोग जुगती गुण जाण; सनमुख सारी चंछमा, राजन शाख प्रमाण ॥ २ ॥ यादवं नाडव
 मेह जिम, जुमाया ठपनही कोम; वात सुणी विवाहनी, हरल्या होमा होम ॥३॥ क्रम कहे सह सांचजो, मकरो
 कोइ विलंब; करी सजाइ आवज्यो, यर्जुन कुमर अरुसंब ॥ ४ ॥ वात थापी ते उठिया, पोहता निज गेह; घर
 जाइ मंजन करे, जीणथी विपे देह ॥५॥ ढाल १ १३ मी॥ वरीने वाने ठेल ठवीलो ॥ए देशी॥ कीथा सोल
 श्रृंगार, राजंदा हारावति नगरी धणीए; आया रुखमणी पास राण॥ जिणस्युं प्रित अठे घणी ए ॥ १ ॥ रुपम

णी अधिक सनेह रा०॥ राज्य मया करो मोन्नणी ए, बेसो आसन एह रा० ॥ हुं दाशी प्रभु तुम तणी ए ॥ ३ ॥
 रुखमणी क्रश् नरींद्र रा०॥ आसन वेठा एकठां ए, रमत करवा रंग रा०॥ रतन जनीत नलां सोगठां ए ॥ ३ ॥
 लेइ अारी सो हाथ रा०॥ सुख छति देखे कानजी ए, रुखमणी राणी हेज रा० ॥ द्विपे छति अन्नरीरामजी ए ॥ ४ ॥
 श्रीपती सामल मेह रा०॥ रुखमणी बनी चुन्नामणी ए, आचरण रतन जमाव रा०॥ इंड्र धनुष डती निरजणी ए ॥ ५ ॥
 रुख मणी पुढे वात रा०॥ राज चढाउ सांनल्या ए, नुपती मलीया जोर रा०॥ हय गय पायक खलनल्या ए ॥ ६ ॥ कृष्
 कहे सुण नार रा०॥ कंपीलपुर असे जाइसां ए, डुपद सुता विवाह रा०॥ देखी तमाशो आइसां ए ॥ ७ ॥ रुखमणि
 बोले बोल रा० ॥ प्रीतम गमन मति करो ए, तुम विण धर्मिय ठ मास रा०॥ वालेसर कुरुणा करो ए ॥ ८ ॥ वासर
 वरस विहाय रा०॥ तुम विण साहीब किम रहूं ए, शोक तणो जंजाल रा० ॥ सुख डख किए आगल कहूं ए ॥ ९ ॥
 क्रश् कहे मे बोल रा०॥ बोल्यो ते सही पालवो ए, उत्तम अविचल वाच रा०॥ अपजस डरे टालवो ए ॥ १० ॥ रुख
 मणी जांखे एम रा० ॥ बलम वेला पधारजो ए, मत मुको विसार रा० ॥ मुने नाह संनारजो ए ॥ ११ ॥ रुखमणी
 दिधी शिख रा०॥ क्रश् सचामाहि आवीया ए, जुन्नीया यड राजान रा०॥ बंदीजन जस गाइया ए ॥ १२ ॥ शणगारथा
 गजराज रा०॥ मुख मल फुल शोह्यामणी ए, घंटा घुघरमाल रा०॥ गले कंचन मणी मेखला ए ॥ १३ ॥ शिष शिंडर
 बणाय रा० ॥ काने वेड चमर ठले ए, एरावण अवतार रा० ॥ ढलकति ढाल नली बनी ए ॥ १४ ॥ क्रश् चम्या
 गजराज रा०॥ मस्तक बत्र रतने जम्यां ए, चामर विंजे ब्यार रा०॥ नगर लोक जोवा चम्या ए ॥ १५ ॥ चंचल चप

ल तुरंग रा०॥ निना पिला हंसजा ए, शिणगारा बहु सुन्न रा० ॥ आपनी न सके बांसजा ए ॥१६॥ रातारथ चो
साल रा०॥ नवल तुरंगम जोतरथा ए, चिहु दिश घंटा च्यार रा०॥ जाले गगनधी उतरथा ए॥१७॥ लायक पायक कोम
रा०॥ हरखित साथ उचा घणा ए, सुंदर वेश वणाव रा०॥ चाकर चतुर सोहामणा ए॥१८॥ चतुरंगी सेन्या साथ रा०॥
द्वारामतिथी चालिया ए, वाग्या नवल नीशाण रा० ॥ अस्वारे असी जालीया ए ॥१९॥ वज्रजड क्रश जोम रा०॥
दसे दत्तार पासे रह्या ए, सोल सहस राजान रा० ॥ सहको आव्यां गहगह्या ए ॥२०॥ संज परजुन कुमार रा०॥ के
सरीए बाधे जला ए, मोटा मोती कांति रा०॥ रूप कजा गुण अगला ए ॥२१॥ गणिका रूप रसाज रा०॥ अर्नगेसना
ए, मेरा हुवा नजीक रा० ॥ नारी चतुराई रूपे वनी ए ॥२२॥ दस वादल मंमण रा०॥ तंतु तांल्या वागमे
शिरवार रा०॥ तेरोतरसो ढाले गुणसागर कहे ए ॥२३॥ रूपयंत जसवंत रा०॥ रावनीदार अगल वहे ए, शोभागी
पनीयालो वाजे घनी, खजकखनी मन खांत॥१॥ मुजरो करे दरवारधी, सहु कोइ नरराय, शिव लेई केसव तणी,
नेज २ धानक जाय ॥२॥ क्रश पयारा महीलमे, नवरंग जीहां चिच वाम; सुख सेजा वेठा सुखे, पासे वेठा राम॥२॥
त करे दरवारनी, मारग कुच मुगाम; वार कोस बांधी मजज, पग २ जज तृण वाम ॥४॥ सुधो मारग अटकल्यो,
ंकी टाली वाट; कोनी सुन्नट इण कटकमें, घोटक कुंजर वाट ॥५॥ दारामति नगरी धकी, आया सवजा लोक;
ट बज्रद वेसरचरी, नार सचीक धोक ॥६॥ वासर पांचमुं कामठे, सुणोलोक धरी राग; पान फज मत तोमज्यो,

ए मुफ मोहन बाग ॥७॥ ढाल १ १४ मी॥ छुमखमानी देशी ॥ जांबु लिंग आंबली, आंबा दामम झाख; रंगीला मोहना, जवीरा रायण मजी, नवरंगी नवलखा ॥२० १॥ विजोरानि करमडा, नालेरी तरजुज रं०॥ सुफ सखर खा- रेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥२० २॥ उवर पिपर विलमां; लुंखुंब वम्बोर रं०॥ पान विनी वारी नली, वेवा मोर चकोर ॥ २० ३ ॥ साली मालनी मनरली, पान फूज फल सार रं०॥ वेचण आवे मोलमें, लेज्यो वचन विब्यार ॥२० ४॥ कुण आपणो कुण पारको, गुनही ने येसार रं० ॥ किशन आणठे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ २० ५ ॥ धान मुल वेपारमें, मत को करो अन्याय रं० ॥ निती रिती पंथ चालतां, सहुको लागे पाय ॥२० ६॥ कौतिक जीवण कौतकी, कुणश आव्या लोक ॥२० ७॥ सुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥२० ८॥ मेरां तिहांथी उपड्यां, गुनीयां गुहिर निशाण रं०॥ कटक विरुट चिहुं दिश वहे, धुल चढी असमान ॥२० ९ ॥ आगल कियां हाथीयां, मदमाता फुजार रं०॥ घोमा जोड्या जोरमें, हिंसे सहस प्रकार ॥२० १० ॥ नवरंग नेजा फरहरे, विचश तुंब अवाज रं०॥ धुधु धोसवद सुणी, चोर चरम जाय जाज ॥२० १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे सुकाम रं० ॥ मोटा ठोटा राजवी, शंभ करे शिरनाम ॥२० ११॥ दहिं उध वृत जरी घमा, पान फूज फत्र जेद रं०॥ धोरी धोला जोमले, आगल जेटे नेट ॥२० १२॥ जलयल वन गीरी लंघतां, आया देश पंचाल रं० ॥ जिणी दिशे गंगा वहे, जाणे बाल गोपाल ॥२० १३॥ साल चला गडं घणां, उम्दम सुर अपार रं०॥ गुंदरी घणी शेलनी, मणीका झाख अपार ॥२० १४॥ वामश मेवा घणा, धरती जोवा लाग रं०॥ पगश पाणी मोकला, वन वामीना वाग ॥ २० १५ ॥ देश शिम

सरशी सही, देसी क्रश नरेश रं० ॥ ए मोटोते राजर्वा, जेहने एहवां दश ॥ २० १ २ ॥ हरी ज्रांखे जुती सुणो, विवा
 देश अनेक रं० ॥ पण ए देश समो तुमे, दिवो तुमे कोइ एक ॥ रं० १ ७ ॥ हवे कपिलपुरनो धणी, हुपद नामे जुप
 रं० ॥ क्रश सामागम सांज्जी, करे सजाइ अनुप ॥ रं० १ ७ ॥ तेम्या मोटा वागीया, जारो मोटो ज्ञाग्य रं० ॥ वागा
 पहिरा नव नया, शिर सारंगी पाग ॥ रं० १ ९ ॥ सुंदर कुंजर सज किया, घोमा कंचन साज रं० ॥ घोमो वहिल रथ
 जोतरथा, मिलिया शुनट समाज ॥ रं० २ ० ॥ चउदोतर सोमी ढालमें, गुणसागर सुखकार रं० ॥ सुखिया जिहां
 तिहां सुख लहे, आदरमान अपार ॥ रं० २ १ ॥ दोहा ॥ धुर्या डुवामा ततदणो, बली वागी करताल; नवरंग
 नेजा फरहरे, चतुरंग सेन्य विसाल ॥ २ ॥ सुहव नारी कलस नरी, करे सोल शिणगार; दरवाजे उनी रही, जान
 हुये पेतार ॥ २ ॥ सबज सजाइ सज करी, चनीयो नगरी राय; बंदिजन जय२ करे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥
 गजथी राजा उतरी, लागे श्री पति पाय; आदर देइ क्रशजी, मलिया बंड उवाय ॥ ४ ॥ हरी पुठे राजा सुणो, कुशल
 खेम आणंद; राजपाट चमती कला, देश न केइ बंद ॥ ५ ॥ राय प्रशाद सवा कुशल, बली विशेषे आज; क्रिया करी
 पथारीया, राज वधारी लाज ॥ ६ ॥ ढाल १ १ ५ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सयन सेति कहे, श्रीपति
 कटक मुकाम हो सुंदर ॥ राजा वे मलिया तिहां, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सुं० १ ॥ जुपति नेट जशी करे, ध्रुपत
 नाम सुजाण हो सुं० ॥ साजन सगण राखवा, कोनी करे कुखाण हो ॥ सुं० भु० २ ॥ गजवाजी रथ पालवी,
 नेट करी मन कोम हो सुं० ॥ पगे लागी विनती करे, तेनां कोड न खोम हो ॥ सुं० भु० ३ ॥ श्रीपति

अवसर तिहां पुरी सरे, मिलिया नगरीना लोग हो सुं० ॥ आवे क्रश् नरेसरु; अचरज जोवा जोग हो ॥ सुं० जु० ५ ॥
 साथे कुण३ वागीया, कुण३ सिरदार हो सुं० ॥ जोमी नमर कुमर तिहां, कुण३ दसे दसार हो ॥ सुं० जु० ६ ॥
 मयमंता हाथीनी घटा, हयवर पार न कोइहो सुं० ॥ रथ पायक वर पालखी, दिवा आणंद होय हो ॥ सुं० जु० ७ ॥
 नगर मोडव नृप करे, आमंवर असमान हो सुं० ॥ जादव जोवे जग घटा, गणिका गावे गान हो ॥ सुं० भु० ८ ॥
 पुरण कलस शिर पदमनी, शनमुख आवे तेह हो सुं० ॥ पइसारी नृप मांमीडि, नकी जुकी धरी नेह हो ॥ सुं०
 भु० ९ ॥ दरवार बार बणाइइ, सबल कियो ठटकाव हो सुं० ॥ पंच वर्ण फूल विखेरिया, बहु परीमल महकाव हो
 सुं० भु० १० ॥ विविध विनोद नीहालता, जोता अचरज कोम हो सुं० ॥ उंचे नव लखा मालियां, आवी रहां
 मन कोम हो ॥ सुं० जु० ११ ॥ हवे कंपीलपुरनो धणी, नलि३ नेट अणाय हो सुं० ॥ कमलापति आगल धरे, जिए
 दिवे सुख थाय हो ॥ सुं० भु० १२ ॥ मेवा देश प्रदेशना, साकर काजु सार हो सुं० ॥ कला कुंद अति उजला, कोला
 पाक अपार हो ॥ सुं० भु० १३ ॥ साकर बाणी जतनस्युं, पाणी जरी३ कुंन हो सुं० ॥ कुसमपुर फणस नलि, सितल
 नधुर सुंन हो ॥ सुं० भु० १४ ॥ एवा शितल जल पीए, मधुर मीठाइ खाय हो सुं० ॥ नोजन सरस कियां पबी,
 मारग भ्रम मीटजाइ हो ॥ सुं० भु० १५ ॥ पंहु राजा पण आवियो, पांच पंमव वली साथ हो सुं० ॥ विडर करण
 गंगेशुं, ड्योधन नर नाथ हो ॥ सुं० भु० १६ ॥ राज ग्रहीं नगरी धणी, श्री सहदेव नरंद हो सुं० ॥ आमंवर करी

आरिया, मयमंत साथ गयं व हो ॥ सुं० भु० १० ॥ चंपा नगरीनो धणी, क्रश्र महिपति सींह हो सुं० ॥ सल्प भुप
 वलमन सहित, आयो अकल अरीह हो ॥ सुं० जु० १० ॥ गंधाराधि भुपती, मुकनी नामे अति सुर हो सुं० ॥
 कपीलपुर आयो तुरत, गज घट घणे पंमुर हो ॥ सुं० जु० ११ ॥ दमघोप सुत दलपती, जाणे बाल गोपाल हो सुं० ॥
 नगरी चंदेरीनो धणी, आयो वृष सिशुपाल हो ॥ सुं० जु० १२ ॥ कुंमन नगरीनो राजीयो, रुपी वृष कुज चंवहो सुं० ॥
 वार न लाइ आयता, साथे शेचक ब्रं व हो ॥ सुं० भु० १३ ॥ वयराट नगरनो धणी, किचक नाम नरेश हो सुं० ॥
 सो जाइ शुं आनीयो, कियो नगर प्रवेश हो ॥ सुं० भु० १४ ॥ मथुरा नगरी अर्धीपती, श्रीधर नाम नरंद हो सुं० ॥
 आयो मृग पती साहसी, मन धरतो आणंद हो ॥ सुं० भु० १५ ॥ मालव देश तणो धणी, वयरीसाल नरेश हो सुं० ॥
 आयो धायो धसमशी, जीहांठे डुपद देश हो ॥ सुं० भु० १६ ॥ एमगामागर नगरथी, आया मोटा चुप हो सुं० ॥
 कपील पुर मेरा दिया, दिपे तेज अत्रुप हो ॥ सुं० भु० १७ ॥ डुपद महीपति आणीया, करी उठव पुरमांहीहो सुं० ॥
 सट्टने सरखा राखीया, जस धयो नगर अगाह हो ॥ सुं० भु० १८ ॥ मोटा मंदिर मानीयां, धवल उंचा आयास हो
 सुं० ॥ नामांकित हुता जीके, सहुने विध विमास हो ॥ सुं० जु० १९ ॥ जुर्नीया भुपती नलनला, हुता जे चउसाल हो
 सुं० ॥ डुपद ते संतोर्षीया, जमाड्या सुविशाज हो ॥ सुं० जु० २० ॥ निज २ आयासे रह्या, सचता राजा जाण हो
 सुं० गित ज्ञान करे रंगशं, पामे कोम कल्याण हो ॥ सुं० जु० २१ ॥ रामत राता राजवी, नाटक गित विनोद हो
 सुं० ॥ सुख शेती वेठा स , मन धरता प्रमांद हो ॥ सुं० जु० २२ ॥ दाज पनमोतर सोमी नली, मिलिया राय सुजाण हो

सुं०॥ गुणसागर हवे सांझलो, विवाहनो मंझाण हो॥सुं० सु० ३१॥ ॥दांहा॥ झूपद राजा आपणा, तज्या शक्क
कोम; सयंवरा मंझप सांझीयो, मनथी आजस ठोम ॥१॥ गंगा जल निरमल वहे, ठाम मोकली जाण; तास तिर
घर तिसमी, करी तिहां सखर मंझाण ॥३॥ मंझप ठायो मोकलो, कंचन मुक्ता फल रयण; शोचा विवीध प्रकारनी,
देखत आजंद नयन ॥३॥ फूल पगर सोह्यामणां, धुप घटीमंहे कंत; तोरणनी रचना रची, देखी जन हरखंत ॥४॥
लगन तणो दिन आवीयो, हेम सिंहासन राय; बेठा सधला आयने, विविध शोजा लाय ॥५॥ सधला सांही शोचतो
राजा पंदु जोय; पुत्र पांच महा बली, गंजी न सके कोय ॥६॥ हवे मंजन करी झुपदी, देव जुहारण जाय; केसर
चंदन कुसमले, धुपदीप समुदाय ॥७॥ करी पुजा कामदेवनी, ज्रांखे झुपदी नार; देव दया करी मुजने, जलो देजो
जरथार ॥७॥ ढाल १ ६ सी ॥ ॥अलबेलानी देशी ॥ नवयोवन रुपे रुयमीरे लाल, हरखीत वदन जमाय;
रायजादरे; करी जलग पाठी वलीरे लाल, आवी जीहां नीज माय ॥ रा० १ ॥ सीलवती जली झुपदीरे लाल ॥
ए आंकणी ॥ आभुषण अंग जुहणारे लाल, अरगजो अंग लगाय रा० ॥ कोरज मल पहिरावीयोरे लाल, केसर
रंगी पाय ॥ रा० सी० ३ ॥ वेणी मंझ जमावनोरे ला० ॥ सोहे सुल अमुल रा० ॥ शिसे सोहे राखमीरे ला० ॥ रतन
जमीत शीश फूल ॥ रा० सी० ३ ॥ काने कुंमल जलकंतारे ला० ॥ चंद्र सुरज अनुकार रा० ॥ कर कंकण वर विठियारे
ला० ॥ नक वेसर शणगर ॥ रा० सी० ४ ॥ नयन कमल दल सारिखारे ला० ॥ अंजन रेख बणाय रा० ॥ दस
अंगुलिये मुंझमीरे ला० ॥ निलवट तिलक सोहाय ॥ रा० सी० ५ ॥ रंग रंगीला सोहतारे ला० ॥ उढण जीणा

चिर रा० ॥ कर पग मांढ्यां मांढ्यारे ला०॥ कान राखी नकशिर ॥ रा० सी० ६॥ जंय कमल वताजीसारे ला ॥
 सोहे राजकुमार रा० ॥ गंगा गोरी सारखीरे ला० ॥ रति रंजा अबतार ॥ रा० सी० ७ ॥ घोम वहिल आणी प्रलिः
 ला० घुबर माल वणाय रा० ॥ सखी साहेली फुजरीरे ला०॥ लागी जननी पाय ॥ रा० सी० ८ ॥ मन मान्यो ॥
 तुं लहिरे ला०॥ जननी दिये आशिप रा०॥ रथ वेवी आणंदसुरे ला० ॥ तुगे मुऊ जगदिश ॥ रा० सी० ९ ॥ ॥ ॥
 साथे सारथीरे ला०॥ शुचट लिया शिरदार रा०॥ रथ रखवाली ते करेरे ला० ॥ रतन जतन अर्थीकार ॥ रा० सी०
 १०॥ सावध्यान जोतां थकारे ला०॥ कर जाली तरवार रा०॥ कुशलखेम शुं आवीयारे ला०॥ हरखी राजकुमान ॥
 रा० सी० ११ ॥ मंढ्य मांढि पेसतारे ला० ॥ दिवा श्रीपति राम रा० ॥ विजा पण दिवा घणारे ला० ॥ सहुने ॥
 प्रणाम ॥ रा० सी० १२ ॥ चंपक पांमल मालतीरे ला० ॥ फूल दनो लेट हाथरे रा० ॥ परीमल बहु लोम हम हेलेः
 सकल साहेली साथ ॥ रा० सी० १३ ॥ हाथे दरपण जालीयारे ला०॥ निर्मल दिसे रुपरे रा० ॥ मणी माणीक ॥
 जम्योरे ला०॥ तिए मंही देखे भुप ॥ रा० सी० १४ ॥ नाम ठाम कुल जातशुरे ला०॥ सुर्विर उदार रा०॥ मातला
 बांधव सहीरे ला० ॥ राजकृथी चंमार ॥ रा० सी० १५ ॥ नाया जाणे जुजुड़े ला० दाशी चतुरसुजाण रा०॥ कुंगा
 साथे संचेरे ला०॥ देखामे राय राणा ॥ रा० सी० १६ ॥ चित्रधारणी शीखेरे ला० गती मती मंदाचार ॥
 गुणसागर सुरीए कहीरे ला०॥ ढाल सोजोतर सोमी सार ॥ रा० सी० १७ ॥ ॥ दोहा ॥ सशीचयणी मृगालोचनी
 रुदय कोमल गात; कोकिल कंठी हंसगती, अमृत वचन सोहात ॥ १ ॥ राजकुमरी राजी घणुं, दिवा बहु राजगः

मंमप विच आणी हवे, हाथणी जेम आलान ॥१॥ धणीयाणी मन उवाखे, रुचंता बोले बोल; एहवी साथेअठे,
 विनती करे नीटोल ॥३॥ एक नारी भुपती घणां, सन्नको देखणहार; हिमकर देखी सरोवरे, विकस्ये कुमुद हजार
 ॥४॥ ढाल ११७ मी॥ निंदरमी नाहो निवारीए ए देशी ॥ जीहां वेवाठे ऋभजी, तिहां आवीहे सखी राज
 कुमारके; आरीसो आगे धरी, देखाके हे जला राज कुमारके ॥१॥ सखीय कहे सुण स्वामनी, मन थीर करीहे निज
 नयन निहालके; जे मन माने ताहरे, तेहने कंठहे नाखे फूलनी मालके ॥ स० १ ॥ ए अवसर पाम्यो जलो, मत
 चुकेहे सखीहीए विच्यारके; धारामती नगरी धणी, एतो सनमुखहो वेवा ऋभ मोरारके ॥स० ३॥ सोलसहेस नृपदिन
 प्रते, जसुशेवाहे सारे करजोमके; सोलसहस राणी घरे, मन मोहनहे सुंदर नही खोमके ॥ स ४ ॥ तिन खंमनो
 राजीयो, नर सधलाहे मानेजसुआणके; देशेदसार जादवा जुम्या, तिणमांहीहे दिपेज्युं जाणके ॥ स० ५ ॥ एवो
 बिजो राजवी, नही कोइहे सखी शिरदारके; जो मन माने ताहरे, तो वरजेहे सखी जल नरथारके ॥स० ६॥ तिहां
 थी आगल संचरी, जिहां वेवाहे सखी बलनछ विरके; दाशी कहे ए गुण नरथो, साह सामेहे सखी साहसधीरके
 ॥स० ७॥ तिहांथी पण आगे गइ, जिहां वेवाहे सखी दसे दसारके; समुच्चवजे राजा वमो, जेहनो सुतहे सखी नेम
 कुमारके ॥स० ८ ॥ तिहांथी आगे आवतां, तिणे दिवाहे वसुदेव निरंदके; बहुतेर सहस अंते उरी, एहवोहे पती
 धाहीए आणंदके ॥स० ९ ॥ राजसुता मन चिंतवे, घणी राणीहे घणो पाप जंजालके; पगे नमता दिन आथमे,
 निणस्युहे माहरे कृण पंपालके ॥स० १०॥ जो सुख चाहेहे सखी, तो एहहे सहदेव नरेशके; सुर साहशीक गढपति

जिणही मन हेनही कुम कबेशके ॥ स० १ ॥ राजग्रही नगरी जली, तनुनायकहे सखी देव स्वरूपके; जरासंधनो पाटवी
 एण पुढेहे चमत्ता यद्ग १२ जुपके ॥ स० १२ ॥ ठाफुरथी चाकुर हुयो, तेहनोहे सखी नही शोनायके; इम चिंतवी
 आगे गइ, कोइ देवु हो सखी मोटे जागके ॥ स० १३ ॥ इणीपरे सयला राजवी, तिणे दिवाहे सखी नयन
 निहांके; कुमरी कहे दासी प्रते, सोहगणहे तुं आगल चालके ॥ स० १४ ॥ हुंस गमनी एम संचर, हवे ति
 हांथीहे आणी उमंग संबके; बजट घट मांही घणो, हठ राणीहे देखी पांमव पंचके ॥ स० १५ ॥ देशवास दाशी
 कहे, रूप जोगन हे पांचे जो धारके; वरमाला घाली गले, मं बरीपाहे पंच पांमव नरधारके ॥ स० १६ ॥ जय
 जय शब्द हुयो तिहां, हरि हरख्यो हे जादव राजानके; डुपद नृप मन रंजीयो, जस शोना हे मुक होशो जीहांनके
 ॥ स० १७ ॥ मंगल नाद सोह्यामणा, शंख बजे हो घणां डोल निशाणके; सवरा मंमपथी चल्यां, कमलापति हे
 जुपति राय राणके ॥ स० १८ ॥ डाल सतर सोमी प्रली, गुणसागर हे अंधीक रसालके; पुन्ये सहु वंजित फले,
 जग मांहि हे होस्पे जस विस्तालके ॥ स० १९ ॥ ॥ दोहा ॥ पांचे पांमव डुपदी, रथ वेशी तिणवार; जाइ साथे
 वागोया, थावो निज दरवार ॥ १ ॥ आरीम कारीम सहु किया, मंजन करी मन रंग; चउरि विच वेग चतुर, पांचे
 पांमव चंग ॥ २ ॥ राजकुमरी शणगार करे, आणि सहिपर साहि; अमीय सलुणे लोयणे, येति चोरी माहि ॥ ३ ॥
 ॥ डाल ११८ मो ॥ ॥ देशा सोहलानी ॥ सुहव सुहव गावे सखरो सहलोजो, सुणता अणता सुहाय; सरखी
 सरखी जोमी जुमी एहनीजो, रोहिणो जोम दिजराज ॥ स० १ ॥ कमर २ अमर रूपे मयमाली पांचे फंम कमरः

सरखी डुपदीजी, परणी प्रेम अपार ॥ सु० ३ ॥ याचक३ दिधी दद्वणाजी, सुजस थयो संसार; अवसर३
 दान सोह्यामणोजी, तुवो जीम जलधार ॥ सु० ३ ॥ कींचित३ कामणि तिए समेजी, हरखाणी हरी हास; सहियर३
 दिवो न सांनल्योजी, पांच पुरुषनो वास ॥ सु० ४ ॥ माननी३ हवे मन मोकलेजी, वरसे वर दस बार; डुपदी३
 जोए आदर्याजी, वर केण नीवारण हार ॥ सु० ५ ॥ उतर३ आपे महिला माननीजी, गरव मकरे हे गेमार;
 सुनिवर३ चारण गुण कद्याजी, सतियामें शीरदार ॥ सु० ६ ॥ उतम३ पात्र संतोखीयाजी, दिथां अढलक दान;
 सुक्रत३ कीधा इण कुमारीजी, तिए पामी जग मान ॥ सु० ७ ॥ डुपद३ नृपति कनकनाजी, कर सुकावण कोरु;
 माणीक३ मणि मोति घणांजी, हय गय रथ अठ जोरु ॥ सु० ८ ॥ दासी३ जुजूआ देशनीजी, सखरो वेश बणाय;
 कोकिल३ सरखी बोलणीजी, जाणे मनरो नाव ॥ सु० ९ ॥ आत्रण३ सुगट जनावराजी, कुंमल मोती माल;
 वाटक३ नव३ घाटकीजी, हाटकना पण थाल ॥ सु० १० ॥ दिविय३ पाटण निपनीजी, जारी सखरे घाट; चामर३
 बत्र सोह्यामणाजी, नझासन जल माट ॥ सु० ११ ॥ पंच रंग३ ढाल्या ढोलियाजी, पगे पुतली जाण; कोमल३
 मांखण सारखी सेजनीजी, रेशम वंणियो वाण ॥ सु० १२ ॥ पटकुल३ गाल मसुरीयाजी, उशीसां अनीराम; नल
 नला३ वागा अपापीयाजी, दिधा वली आव गाम ॥ सु० १३ ॥ आप्या३ हय रथ हाथीयाजी, संतोष्या सहु तेम;
 एकसो३ अढारमी ढालजी, गुणसागर कहे एम ॥ सु० १४ ॥ ॥ दोहा ॥ हवे डुपदी पंचालीपती, धरणीधरने
 नेट; आपे गजवाजी प्रमुख, दिधे जस होय नेट ॥ १ ॥ जे पण विजा राजवी, आप्या हता साथ: तेने सह संतोषिया

मोकल करी निज हाथ ॥१॥ कमलापति सेना सजी, दिव दवामां चोट; राजा सहुको चाक्षिया, कोइ नहि मन
 खोट ॥ ३ ॥ तिण चेला आनो फरी, आयो बहु परिवार; पांढू महिपति विनये, सुणजो क्रश मोरार ॥ ४ ॥ क्रया
 करो मुज उपरे, मानो वचन विमास; हर्षणपुर पावन करो, मुज मन पुरो आस ॥५॥ संवलि मानी ऋशजी, प्रिती
 नणी ते वात; विजे पण मलि करी, कीथो हरी संयात ॥ ६ ॥ ढाल ११९ मी ॥ ॥ देवी रसियानी ॥ कटक
 ते कंधीलपुरधी बालियो, मेरा बाहिर दीध सलुणी; धरस दवामा हो वाजा अति नजा, दुपद नृप जस लीध
 ॥ स० १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी नणी कहे, वेटी सुण एक शीख स० ॥ सासु ससरानो माने कह्यो, विण
 कहे मजरे शिख ॥ स० चु० २ ॥ प्रिय पहिली मांचाथी ठरजे, आजस नाणे अंग स० ॥ धणीय जमानी : :
 हो तुं जमजे पटी, मकरे निच प्रसंग ॥ स० चु० ३ ॥ आख्य विहुमां जीम अंतर कियो, तिम पांचे : :
 नरथार स० ॥ सराखा गणजे मत अंतर करे, गुज सरल्या फिरतार ॥ स० चु० ४ ॥ अरीहंत देवगु गुरु बोवा करे,
 जिन धर्म धरजे चित स० ॥ मुखथी म चांखे वचन अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० चु० ५ ॥ निवाम करे : :
 हो वेटी पारकी, मकरे मन अजीमान स० ॥ अयगुण ढांकी गुण प्रगट करे, तप करी मकरे निर्धान ॥ स० चु० ६ ॥
 समकीत सुथो मनमांही धरे, जिम पामीश विगवास स० ॥ निज परीजन शेती मिलती रहे, बोले वचन विमास
 ॥ स० चु० ७ ॥ सुधा साथ नणी आदर करे, देजे अढलक वान स० ॥ अशन पान खावमत्सादिम नजा, सुख पामी
 अस्मान ॥ स० च० ८ ॥ कोह्यो कांचो कर्मयो आकरो. निरसलखो अन स० ॥ परस्पर रमणं वसुंधरी बालीयो.

मत देजे कोइ वन ॥स० चु० ९॥ रात उघामो रद्या जं सुखमो, थिणवो नावे काम स०॥ स्वादहिन मत देजो
 साधुने, जोजे ठाम कुठाम ॥स० चु० १०॥ पांती नेद मकरजे जमण समे, मरमम बोले मुल स० ॥ अंतराय मत
 करजे धर्मनी, राजम देखे भूल ॥स० चु० ११॥ मात तात निज भ्रात संचारजे, मकरे चित अंद्रोह स० ॥ कुशल
 खेसरो कागल सोकले, धरज्यो प्रिय सुमोह ॥स० चु० १२॥ रुदन करे नृप कुमरी; चालंता, आंसु लुहे मात स० ॥
 वेढी गुण पेढी तुं साहरी, संभारीसदीन रात ॥स० चु० १३॥ मिलणो सुख विठमणो दोहिलो, मात पितां करे
 विजाप स०॥ फिर मिलणो जो पुन्य घणो हुवे, तो हुणो सुख थाय ॥स० चु० १४॥ जिम तिम शिख करीमाता
 कहे, वेढी थाय असुर स० ॥ न्राइ साथे आवे ताहरे, हथीणा पुरखे डर ॥ स० चु० १५ ॥ माताने पगे लागी
 डुपदी, रथे वेढी तिणवार स०॥ तिहांथी राणी आमण डमणी, आवे महील सोजार ॥स० चु० १६॥ नयन ऊरे
 जिम जल धर उमीयो, पामे रती न लगार स०॥ खिण ३ मांही बेढी सांनरे, विरह बुरो संसार ॥स० चु० १७ ॥
 दाशी दास मलीने विनवे, राणी शोगनी वार स०॥ कुमरी वेगे तुम्ह घर आवशे, दिन दस जिम तिम सार ॥स०
 चु० १८॥ राणी ठाम करी मन आपणो, बडवी पण दलगरि स० ॥ शामाजी माजी कहती मुज डुपती, मात कहे
 कुण फिर ॥स० चु० १९॥ हथीणापुर जणी सहु राजवी, चाल्या सन्या लेय स० ॥ पाय लागी डुपद हवे क्रशने
 कुमरीने शिख देय ॥स० चु० २०॥ पांडु महीपती सेती हली मली, सगपण राखण संच स०॥ डुपद राजा निज
 पुर आवीयो, मलीने पांभव पंच ॥स० चु० २१॥ रजपुर नगर सिंगारखो चिहुं दिशे, मलीया लोक अपार स० ॥

मोकल करी निज हाथ ॥३॥ कमलापति सेना सजी, विय ददामां चोट; राजा सहुको चाखिया, कोइ नहि मन
 खोट ॥ ३ ॥ तिण बेला आमो फरी, आयो बहु परीवार; पांढू महिपति विनवे, सुएजो क्रुत्र मोरार ॥ ४ ॥ क्रपा
 करी मुज उपरे, मानो बचन विमास; हर्षाणापुर पावन करो, मुज मन पुरो आश ॥५॥ संघलि मानी क्रुत्रजी, त्रिती
 जणी ते वात; विजे पण मलि करी, कीयो हरी संघात ॥ ६ ॥ ढाल ११९ मी ॥ ॥ देशी रतियानी ॥ कटक
 ते कंपीलपुरथी चालियो, मेरा नाहिर दीध सलुणी; धउस ददामा हो वाजा अति जला, दुपद नृप जल लीध
 ॥ स० १ ॥ चुजणी राणी हो कुमरी जणी कहे, वेदी सुण एक शील्य स० ॥ सासु ससरानो माने कह्यो, विण
 कहे मनरे शिख ॥ स० चु० १ ॥ प्रिय पहिली मांचांशी ठवजे, आजस नाणे अंग स० ॥ धणीय जमानी
 हो तुं जमजे पठी, मकरे निच प्रसंग ॥ स० चु० २ ॥ आंख्य विहुमां जीम अंतर किस्यो, तिम पांचे
 नरथार स० ॥ सरीखा गणजे मत अंतर करे, तुज सरज्या किरतार ॥ स० चु० ४ ॥ अरीहंत देवशु गुरु शेवा करे,
 जिन धर्म धरजे चित स० ॥ मुखथी म नाखे वचन अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० चु० ५ ॥ निंदांम करे
 हो वेदो पारकी, मकरे मन अजीमान स० ॥ अयगुण ढांकी गुण प्रगट करे, तप करी मकरे निंदांन ॥ स० चु० ६ ॥
 समकृत सुयो मनमांही धरे, जिम पामीदा शिववास स० ॥ निज परीजन शेती मिलती रहे, बोले बचन विमास
 ॥ स० चु० ७ ॥ सुया साध जणी आदर करे, देजे अटलक दान स० ॥ अग्रन पान खावमसादिम जला, सुख पामी
 अस्मान ॥ स० चु० ८ ॥ ॥ कोह्यो कांचो कहुयो आकरो, निरसजुलो अत स० ॥ ॥ पच्छो रम्यो पसुपंखी काखीको,

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा षष्ठोऽधिकारः समाप्तः ॥

उन्नी टोले २ गोरनी, गावे मंगल च्यार ॥ स० चु० २१ ॥ उढव मोढव चिक्थि प्रकारुं, जोतां अचरज कोम स० ॥
 अनुक्रमे आया निज महीलमां, पंदू सुतनी जोम ॥ स० चु० २३ ॥ पंदू नुपती सह राजा जणी, संतोखी सुखदाय
 स० ॥ करी चिक्थि प्रकारे पेरामणी, निज कुल शोच चमाय ॥ स० चु० २४ ॥ विनय करी पगे लागी नुपवी, सहने
 विधी शील स० ॥ नृपति पोता निज २ स्यानके, मारग खाता इख ॥ स० चु० २५ ॥ कुंति मत्त हरखीत हुइ घणी,
 लागी बहुयर पाय स० ॥ पुत्रवंति होजे तुं बहु, ए आशीप सोहाय ॥ स० चु० २६ ॥ नीत नीत नवलारंग
 यथामणां, नव नव मंगल माल स० ॥ गुणसागर सुरी पुन्ये लख्यो, ए गुण विस सोमी ढाल ॥ स० चु० २७ ॥
 ॥ चोपाइ ॥ खंम खंम रस ठे नव नवा, सुणतां मीठां साकर लवा; श्री हरी वंश चरित्र जय जयो, ठवो
 खंम ए पुरण शयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ खंम ७ मो ॥ ॥ दोहा ॥ साधु नमुं सुर तरु समा, वंठित फल दातार; अथ सप्तम अर्थीकारनो, नाविक
 सुणो विलार ॥१॥ नम्री श्री मण्डिचुमनि, खेचर कियो अपहार; अर्युन हुवो वाहरु, बहुमानवि तिएवार ॥१॥ अरुवीर
 गुण आगजो, पारथ प्रवल प्रताप; देखी पांमूं प्रथविपति, विस्वय पास्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नंद धरमातमा, नृप
 पदनि थापंत; सरुल धरानि साहिबी, आपण पे पामंत ॥ ४ ॥ अंवर जिन दिनकर करी, ध्वज करी देवल जेम;
 बुद्धिष्टिर राजा करी, प्रथवी शोनी तेम ॥ ५ ॥ ढाल १२० मी ॥ ॥ देशी हमीरानी ॥ प्रथवी रसवंती खरी,
 तरुवर अर्थीक फजंतोरे; उध धणो सुरजी तणो, माग्या धन वरसंतोरे ॥१॥ धरम राजा जग जाण ए ॥ ए अंकाणी ॥
 लान धणो व्यापारमें, चारु बहुजा रासोरे; नीक्षुक्ने नीक्षा घणी, न रद्दे कोइ निरासोरे ॥ ४० १ ॥ पुत्रवंती तो
 कामनी डहागण शोनागोरे; जोर प्रलाइ आदरे, धर २ दिजे तागोरे ॥ ४० ३ ॥ घेटा माने वापने, पुजे मायना
 पायोरे; गुरुने माने चेजणा, वरते निर तो न्यायोरे ॥ ४० ४ ॥ इति अनिति नको तिहां, अवर न कोवि परितोरे;
 बहु जगती साधु तणी, सोम्या मांहि प्रीतोरे ॥ ४० ५ ॥ पाप हणये हंसका, जठ शिलने जंगेरे; चितह हरवे चोरटा,
 परीग्रह पुन्य प्रसंगेरे ॥ ४० ६ ॥ सोधी कापण कर्मने, मानी मोमण मोहोरे; माया शीवने साधये, लोनी गुण
 संदोहोरे ॥ ४० ७ ॥ वृथी करया देवले, के मुनीवर के हाथेरे; दंम देखाइ ठे सहि, दंम न लोगा साथोरे ॥ ४० ८ ॥
 तात्र पात्र तामणो, अवर न तामन जीमोरे; बंधन वेणी कंचुकी, अवर न बंधन पिमोरे ॥ ४० ९ ॥ थाक चमे करतो
 क्रिया, अवर न थाक प्रकारोरे; कलह तो करणी तणो, अवर नहि कलिकारोरे ॥ ४० १० ॥ सुकतनो लंपट पणो,

अवर न लंपट कोड़े; अशुभ तणो अणजाणवो, अवर अजाणस जोड़े ॥ ध० ११ ॥ पासो तो दिसे धरु, अवर
 न कोइ पासरे; सुसमअरो आवियो, सर्व विधी सुखवासरे ॥ ध० १२ ॥ जीस आदे चारे चढ्या, हयंवर गयंवर
 गाजोरे; पायक परिग्रह सामटो, डुर्जन पाया लाजोरे ॥ ध० १३ ॥ आण मनावी आपणी, अनमन मावण नामोरे;
 प्रथवी पांमव रायनी, दिन३ प्रते अनीरामोरे ॥ ध० १४ ॥ धन कण कंचन कोसजी, हिरा लाल प्रवालारे; मणी
 माणीक मोती घणा, भेल्यो माल रसालोरे ॥ ध० १५ ॥ हरि हेते विचारवे, वहिन सुनछा नामोरे; परणावी अती
 नेहथी, अर्युनने अनीरामोरे ॥ ध० १६ ॥ बंधु समा पुत्र समा, पायक समास काजोरे; मित्र समा न्नाइ समा, सुखमे
 पाले राजोरे ॥ ध० १७ ॥ विद्याधर मणीचुम्बजी, पाले भिन्नाचारोरे; सजा सुधर्मी सारखी, सजा समरावे सारोरे ॥
 ध० १८ ॥ मणी थंन सोह्यामण, सोवन जाति सुचंगोरे; चंडोदय चतुराइए, दिसे सोह सुचंगोरे ॥ ध० १९ ॥ विविध
 प्रकारे पुतली, विविध जातीको कामोरे; विविध प्रकारे कोरणी, विविध जाति चित्रामोरे ॥ ध० २० ॥ सिंघाशण
 मांभ्यो जलो, बेसामी तिहां राधोरे; पुजी प्रणमी नावशुं, खेचर उरण थयोरे ॥ ध० २१ ॥ हरी हलधर बोलाविया,
 मोटा दसहि दसरोरे; डुपद प्रमुख वना राजीया, आया जुप उदारोरे ॥ ध० २२ ॥ वेठा उंचे आसणे, राजा
 राजकुमारोरे; रुप अने प्रतीरुपशुं, पामे शोचा अपारोरे ॥ ध० २३ ॥ एतटे तेमो आवीयो, डुर्योधन जुपालोरे;
 जादव पांमव पेखीयोरे, वेठा जाक जमालोरे ॥ ध० २४ ॥ आवे वसन संबा हतो, मणी आंगणे जल जाणोरे;
 डुधो स्फाटिक उपरे, अंबरनि मति आणोरे ॥ ध० २५ ॥ नटक मारयो जीतस्युं, प्रति रुपामे जायोरे; करे

जुहार पुक्त्यु, ६।१॥ हिये न समायोरे ॥ ध० २६ ॥ ड्योधन खिज्यो घणुं, पामव कटक विचारिरे, रीस
 नीसारी सट्टु जणि, मलिया बांह पसारीरे ॥ ध० २७ ॥ उठग कीधो अति घणो, विलस्यां बहुलां वितोरे;
 रंग वण्यो राजा जणी, धन विन एह पवितोरे ॥ ध० २८ ॥ हरि हलधर आवे करी, साजन मांहि सनेहोरे;
 ड्योधन सनमानीयो, पोहता निजश गेहोरे ॥ ध० २९ ॥ नीसोतर सोमी ढालमें, प्रिती तणो अधीकारोरे; श्री
 गुणसागर सुरजी, धर्म सदा जयकारोरे ॥ ध० ३० ॥ ॥बोहा ॥ ड्योधन कहे तातशुं, मुख भिठा चित कुन;
 पांमव कपटी परगना, रण कायर परसुर ॥१॥ यादव जोर विचारवे, मनसे आणी गुमान; मुफसुह शिया हासते,
 साले साल समान ॥२॥ जिणशुं तेण प्रकारशुं, कोकरी दाय उपाय; जोमी उंमालुं पांमवा, तो हुं रायराय ॥३ ॥
 इम विचार करतां थका, जाइ सघडा ताम; एहवे तिहाः कण आचीयो, मामो शकुनी नाम ॥४॥ ढाल १२१ मी ॥
 हुं तुम साथे न बोलुं रुपनजी ते मुजने विसारीजी ॥ ए वेशी ॥ ताम ड्योधन राय बोलावे, मामाने हेत आणीजी
 मुख नीसासां मुकी जाले, वैरी तणो बल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मेलो अधिक कुशेसो, कौरव कपटी पुरोजी;
 धन जन वाह तले बलीयो, बलबल करवा सुरोजी ॥ म० २ ॥ पांमव सजानी शोना वेली, मुफ हुवे डल
 अपारोजी; वली पांमवने पंचाली हशीया, कियो अंध तणो कुमारोजी ॥ म० २ ॥ शकुनी कहे पहेलुं नवी किधुं,
 यथी वैरी नेलजी; मुन धकी जो वेदत एहने, तो पामत जस केलजी ॥ म० ४ ॥ हवे पांमव साथे नवी चाले, एहना
 सबलो साथजी; जाइ पं मांहोमांही संचे, हेत घणो हरी नाथजी ॥ म० ५ ॥ एक उपाय अठे मुफ आगल, वेव

पासा सुख दायजी; देश ठंमावुं जीति पकट, जुवा खलावा रायजा ॥म० ६॥ इम विच्यार करी पिताने, हरख्यो मन
राजानोजी; सुकुनी जेद पासानो जाणे, साने माहरं मानोजी ॥म० ७॥ पांनवने तुमे आंही तेमावो, विडर मोकली
तातजी; सना रचीने छत रमाहुं, चाले बन विख्यातजी ॥ म० ८ ॥ सना करावी डव्य लंगावी, शोचानो नही
पारजी, पथरावी सिंघासण मांनयो लेबव विविध प्रकारजी ॥म० ९॥ तेमी हरी हलधरने पांनव, तेमा दशे इसारजी;
बहु सनमानी पांनव साथे, पोखे प्रेम अपारजी ॥ म० १० ॥ हुवो प्रात सनामां आयो, ड्योधन भुपालजी; सत
भ्रात सुजट संघाते, आयुध्य सेन्या संचालजी ॥ म० ११ ॥ पायक पोताना सधला मेल्या, योध तये त्यां द्वारजी;
आयुध कवच टोपतनु रुजीया, आया सनामोजारजी ॥म० १२॥ गाम गामथी तुरंगम आवे, मदगल तामा तंगजी;
जमीत पाखर ऊचके झंग भांही, नामे शिश मन रंगजी ॥म० १३॥ निषम झोण कर्ण इशाशन, शकुनी सबल सुत
एहजी; कपाचार्यने अश्वस्थामा, बाहीक अति बल देहजी ॥म० १४ ॥ सना मध्य नम रद्यां तरवारी, युध जाणी
तिहां मुढजी; गने निशाण गंचरि स्वर बाजे, जोइ विडर थयो दग मुढजी ॥म० १५॥ धतराष्ट्र सना मध्य बेग, पाबल
सहु राय राणाजी; तिणे समे पांनव पथास्या, जिम निशा प्रगटीत चाणजी ॥म० १६॥ पांनवने सर्व सना देखाडी
जोइ थया रलीयातजी; प्रिती करी ड्योधने काढी, युत क्रिफानी वातजी ॥म० १७॥ आपणे रमीए इहां बेहु चाइ,
रमत सनामांहि बेगजी; जिम अर्जुनने सहदेव तिहां, नकुल चिंत्या मांही येगजी ॥म० १८॥ युधीष्टर कहे सुणो
ड्योधन, ठेड राजवी कर्मजी; परनारी संग पशु वध करवो, ए महंत तणो नही धर्मजी ॥म० १९ ॥ हशी बोल्यो

राय ड्योँधन, सत्य कहुं धर्मरायजी; दुनी तणो धम द्युत आखटक, करतां सुखे दिन जायजी ॥ म० २० ॥ वसतु
 वचन कहुं ननुं रमशुं, कुणे न राख्या वारीजी; अर्जुननुं अजिमान न राखुं, थइ वेठा जुहारीजी ॥ म० २१ ॥
 ड्योँधन डशासन, शकुनी, मली कर्ण कुमती एहजी; पानव प्रते वायक चांखे, सजा सुणतां तेहजी ॥ म० २२ ॥
 कांइक होम वदीने रमीए, तो ते जलट थायजी, जे कांइ होम करो ते आलुं, इम चांखे युधीछर रायजी ॥ म० २३ ॥
 प्रथम दावे शुं आपुं, कहो युधीछर रायजी; सरक पलाण सहित ए घोमा, आपुं मुख केहेवायजी ॥ म० २४ ॥
 अरिने दावे जुयो खेलावे, विडर तणे नही सारेजी; जित्यो ए ड्योँधन राणो, पांनु तणा सुत हारयाजी ॥ म० २५ ॥
 राज सयज्ञो करी अशेवस्य, पंचाली तेमावेजी; हयंवर गयंवर रहवर पुरवर, राज अने त्रिय हारेजी ॥ म० २६ ॥
 परपुरुष दिवा आवतां, घरमां पेवो नारीजी; निरचय थइ जम चाल्या वेगे, पंचाली मंदिर आवेजी ॥ म० २७ ॥
 पाठा आया सुनट, स्वामी अबजा नावेजी; दाशीए तिहां राख्या वारी, नवी लोपी जेकारजी ॥ म० २८ ॥ फिरी
 डतासन जातुं वेगे, लाव्य नारी मुज पासेजी; चांखे ड्योँधन मडर धरतो, ए परोहितधी गुं थावेजी ॥ म० २९ ॥ उठ
 रोस नरयो डशासन राणो, आवे करत आवाजजी; देखी डुपदी आंसु ढाले, सि रहेशे मुज लाजजी ॥ म० ३० ॥
 नणे दाशी मोटा तुम राणा, अबजाशुं स्यो प्राणजी; मेरु किमतजे मरजादा, मानो वचन राजानजी ॥ म० ३१ ॥
 चरण प्रहार हणी दाशीने, आयो मंदिर मांहाजी; नारी नाशी त्रितर जाइ, डुर्बुद्धी केमे थाइजी ॥ म० ३२ ॥
 रीस

करीने मारी ते नारी, लोंधी जाली कसजां; ध्याय पोकार करे विलपंती, अबला बाले व्रेसजी ॥ म० ३४ ॥ जाइ
 मारे नथी अयसर, किम आव सचामोकारजी; राजा सहु मुने देखशे अंगे, किम रहेशे मुज आचारजी ॥ म०
 ३५ ॥ नारी चिंत्ये हवे किम होस्ये, हारखे मुफ कंतजी; कुण जिवता मुफने ताणे, सही थयो कलपंतजी ॥ म० ३६ ॥
 गंगेवने गुरु झोणाचारज, बेठा सहु राजानजी; सजा विच ड्योधन आगे, उजी राखी आणजी ॥ म० ३७ ॥ कहे
 डशासन बेसो खोले, नितकरी भेलाजीजी; शारी ते गम फरीयो पापी, खीजवशे कहे नानीजी ॥ म० ३८ ॥ रिसा
 णो डशासन राणो, खंचे चिर अआणजी; गुणसागर सो एकवीसमी ढाले, होशे सत परमाणजी ॥ म० ३९ ॥
 ॥ दोहा ॥ भेलो पालव कहे प्रेमदा, तव बोले इम गाज; बांभो पटराणी पाणो, पढी करजो लाज ॥ १ ॥ तुं हशीती
 मुफने, आज थइ अधीन; लाज न राखुं ताहरी; इम नांखे मती हिन ॥ २ ॥ कुबुधी वचन इम सांचली, कंत सामु
 जोवे नार; नीस थयो तव रातमो, वारे धर्म कुमार ॥ ३ ॥ आज जो होइ पुन्य आपणां, तो किम हारीए विर, ते
 माटे नवी बोलवो, राखो समता धरी धिर ॥ ४ ॥ अबला हुइ अनाथणी, जलठ्यो डख अगाह; बांकी अंग तनु
 कंपती, नयणे निर प्रवाह ॥ ५ ॥ ढाल १ २३ ॥ मी शियल सरु तरुवर शेवीए ॥ ए देशी ॥ कुणपत राखे माहरी
 कोष्यो छरीजन काल हो; आवो ध्यावो उतावलां, सियल तणा रखवाल हो ॥ कु० १ ॥ परसेष्टी मन ध्यावती,
 जीन शासन शीर ताज हो; उष्ट तणे हाथेपनी, बोभावो मुफ आज हो ॥ कु० २ ॥ गंगेवने गुरु देखतां, आणी
 महि जीम चेरि हो; डरमती आइ ए सहुने, किण हिन पाठि फेरी हो ॥ कु० ३ ॥ पांच पति शीर माहरे, पण नवि

उठ्या कोइ हो; मानी मान महा बलि, बेवा निचुं जोइ हो ॥ कु० ४ ॥ हाक वागी पुर शेहरमां, करे किछुं चिर...
 हो; पांनव केरी प्रेमदा, लुंटे सन्नामो जार हो ॥ कु० ५ ॥ डुष्ट डसासन खंचियो, डुपति चिर चतुर हो; आवी नान
 उना रह्या, सानिधकारी सुर हो ॥ कु० ६ ॥ चिर अमुअख डसरो, ढांक्यो सती शरीर हो; ते पण खंच्यो तिसरो, र...
 नवरंग चिर हो ॥ कु० ७ ॥ देखो रांग कपटणी, पहिस्थां जाळां चिर हो; ल्यो उतारी वेगसुं, कहे डसासन ...
 हो ॥ कु० ८ ॥ इम अनुक्रमे पुरीयां, अठ्योतेर सो परम हो; शील प्रनावे राखांयो, सना मांदि शर्म हो ॥ कु० ...
 स्वत निजां रातमां, नारी कुंजरवान हो; एक२ पे रंग आगला, पुस्थां श्री नगवान हो ॥ कु० १० ॥ जेजेकार ...
 कियो, सतिय तणो सत जाण हो; डुष्ट डसासन जांखो पड्यो, हुवो अर्थिक खिसाण हो ॥ कु० ११ ॥ नीसम ...
 चुपति, नीम अरयुन बलवंत हो; आण न लोपे राजा तणी, नहि तो आणे तुम अंत हो ॥ कु० १२ ॥ सती घ...
 वेनीए, एहने सीयल समर्थ हो; नारी पांनव कने मोकलो, नहितर धाशे अर्थ हो ॥ कु० १३ ॥ विडर कहे में पेले...
 आचरतां परपंच हो; आगले अर्थ नीपजे, जो ज्यो एहना संच हो ॥ कु० १४ ॥ कौरव कामनी रमवने, र...
 वनमो जार हो; तो माहरुं किछुं मानजो, जो सत होय संसार हो ॥ कु० १५ ॥ धृष्टासर सुण आंधला, हयमूं...
 आज हो; सती वीटवी शुं कियो, खोइ सन्नामं लाज हो ॥ कु० १६ ॥ होइ जांखो राजीयो, ठोमी डुपदी नार...
 पंचाली जग प्रगटी, सतिय सिरोमणी सार हो ॥ कु० १७ ॥ ॥ दोहा ॥ वरस बार वनमां वसे, नष्ट...
 एक; डजोधन कहे पांमुं, सुत, बली कहुं वात विवेक ॥ १ ॥ ठलां पमे जो वरसमां, तो फरीने वनवात; बार...

लगे जोगेवे, एठे साहरी जाप ॥३॥ आज्ञा ते अंगी करी, झोपडी बांधव लेह; युद्धीष्टीर गजपूरे आवीयां, गुरु प्रणामि
 शसनेह ॥३॥ प्रेमे नमी साबापने, विगर मिते तेषीवार; युद्धीष्टीरे मांमी कर्यो, ते वात तणो विस्तार ॥ ४ ॥ ढाले
 मुलगी ॥ मारी मा न महा बलि, चालियां बन भ्रात हो; शिख करवा आविया, जिहां ठे कुंता मात हो ॥ कुं
 १८ ॥ आगल आवी नामीयो, माताजीने शीश हो; आज पुत्र में सांचल्युं, डहवाणा तुम विश हो ॥ कुं १९ ॥
 हुं आवीश तुम केमले, भेतो धमी न रहेवाय हो; पुत्र पाखे मायमी, तोले हिरि श्राय हो ॥ कुं २० ॥ एतले विडर
 आवीया, माजी कहे एम वाण हो; राजा तुमने ए शुं श्रयो, हुता अधीक सयाण हो ॥ कुं २१ ॥ विडर कहे हुं
 शुं करूं, मारुं कांडू न थाय हो; गंगेव ज्ञोण ए डख धरे, पण डष्टने न केहवाय हो ॥ कुं २२ ॥ माजी मेलो इहां
 कणो, रेहशे अमची पास हो; राजा भीषम जणावीने, तुम्हे चालो वनवास हो ॥ कुं २३ ॥ शिख आपी निज
 नारीने, रेहेज्यो माजी पास हो; सेवी तृप्या अरु जुलमी, डख धणो वनवास हो ॥ कुं २४ ॥ केम रेहेवाये मुज्धी,
 वेरी बहुलो साथ हो; लाज न राखी साहरी, इणे ग्रहा मुज हाथ हो ॥ कुं २५ ॥ वेश खोले कहे मुज्जने, सांचलतां
 तुम कंत हो; जो मुज्जने नचि तेमशो, तो आणीश मुज अंत हो ॥ कुं २६ ॥ चाले साथे प्रेमदा, सासुने पगे लाग्य
 हो; माता पण साथे हुइ, नहि रेहवा मुज लाग हो ॥ कुं २७ ॥ वना तणे पगे लागीने, तात तणी लइ शिख हो;
 पांमव वनमें चालिया, धरी मन समता इख हो ॥ कुं २८ ॥ बाविसा सोमी ढालमें, कोरव कीधो कोप हो; श्री
 गुण पांमव नवी करे, मरजादानो जोप हो ॥ कुं २९ ॥ ॥ दोहा ॥ बिहावें अति डुपडी, कुर अने करमिर;

विया उमाइ पान ज्युं, पांमव नीम समीर ॥ १ ॥ चिडर वीवुध गुरु सारिस्यो, देइ शिख विशेष; पोंहचाची पावो
 वल्यो, आंसु ढाले अशेष ॥३॥ छुट डुमन थामो फरी, कंपिलपुर आणंत; खबर तंदा वनवासनी, याडपति जाणंत
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ हे जाड जगमग जोति सोहावे ॥ ए देशी ॥ ते वात सुणी माय वापनेरे हां, नयण न माए
 निर; मे एक कुंताने पांडारे हां, धरुं न जाए धीर; मेरे साजना सांजलजो सहु कोय ॥१॥ मोनपणो मुखे आदरिरे
 हां, पांमु न बोले बोल; धर्म पुत्र धीरज धरिरे हां, तव करे थइ अमोल ॥ मे० २ ॥ खेदने खरखरो मत करोरे हां,
 तातजी अमे वन जाय; सत्य प्रतिज्ञां पालसुरे हां, वधस्ये तव महिमांय ॥ मे० ३ ॥ सुपुरु न राचे राज्यनेरे हां, राज्य
 जाए तो जाड; सुख डख वन थले वेठिणरे हां, पण एक वचन मत जाड ॥ मे० ४ ॥ धीर्य धरिनें तातजिरे हां, आपो
 अम आ देश; बोल न बोला ए डखेरे हां, रोख्यो कंठ प्रदेश ॥ मे० ५ ॥ हा ना कांइ न करी शंकरे हां, तक
 जाणिने तेह; बांधव पांचिने डोपदिरे हां, वने चाल्या तजी गेह ॥ मे० ६ ॥ पंढु कुंतिने अंधिकारे हां, अंधाने याला
 आद आंसु जले चुंए सिंचतारे हां; केने थयां लहि विखवाद ॥ मे० ७ ॥ ते पांचे पुरथी निसत्यारे हां, तव नगर
 थयुं निस्तेज; जिव जते पंचेडि विनारि हां, तनु तु न रहे जेम तेज मे० ८ ॥ युद्धीष्टीर मावित्रने नामिरे हां, बोले
 एहवा बोल; प्रतिज्ञां अम पालतारे हां, वधशे तमारो तोल ॥ मे० ९ ॥ सुपुरुपने मान धनठेरे हां, रखे धरो मन
 खेद, धर्म सदा विल धारयारे हां, ते साथे अनेक उमेद ॥ मे० १० ॥ मातजि मोह तणे वशेरे हां, परवश थाए प्राण;
 विर पलि विर मातनेरे हां. अरिहंतनि वहियो आण ॥ मे० ११ ॥ अम तात तणि तक साथयेरे हां, सेवजो गुरुनां

पाय; अशिष देयो अमनेरे हा, जेहशी विघन पलाय ॥ मे० १३ ॥ एम आस्वाशी सर्व स्वजननेरे हां, पुरजन
 साहसुं जोय; कांइ करी होय असे किलामनारे हां, ते खमजो सहु कोय ॥ मे० १३ ॥ नीतर ते नयणे वल्यारे हां,
 तव सहु पुरना लोक; पण पण नवि चाले पुर नशिरे हां, सहुने वाध्यो शोक ॥ मे० १४ ॥ उदयरतन कहे सांजलोरे
 हां, ढाल अति रसाल; विसारया न विसरेरे हां, वाहलां कांइ काल ॥ मे० १५ ॥ ढाल १३३ मी ॥ वधावा
 नी देशी ॥ ऋश्र नरेसर आइयो, कांइ आयो हो आयो बहु परिवारशुं ए; पांमव साथे बोलियो, कांइ बोल्यो हो
 बोल्यो सकल प्रकारशुं ए ॥ १ ॥ कौरव कुटि काडिए, कांइ काडि हो काडि दिजे देशधी ए; राजाजीने श्रापिए, कांइ
 श्रापी हो थापी शुं विशेषधी ए ॥ २ ॥ पांमव बोले स्वामीजी, कांइ स्वामी हो स्वामी वनमें चालवो ए; बोल न
 चुक्यो आपणो, कांइ आपुण हो आपुण बोल्यो पालवो ए ॥ ३ ॥ देव प्रसादे तुम्हारे हो प्रसादे सहु पाधरु
 ए, होशे कारज सुंदरुं; कांइ सुंदरु हो सघनुं कारज सादरु ए ॥ ४ ॥ वाइ सुन्नजा पुत्रशुं, कांइ लेइ हो पोब्या प्रसु
 द्वारामति ए; पंचाली पीहरीए, पीहरीए हो पीहरीए न रहि सति ए ॥ ५ ॥ साते माणस संचरे, कांइ संचरे हो
 सुख अने त्रस अवगुणिए; माता पुत्र सनेहने, कांइ नेहने हो राची नारी अति घणी ए ॥ ६ ॥ दिवस केतलाने
 आंतरे, कांइ आंतरे हो, पुरोहित पाव धारीयो ए; मोकलियो कौरव तणो, कांइ कौरव हो कौरवनो हेतकारियो
 ए ॥ ७ ॥ नांखे देव दया करो, कांइ दया हो वनवासे मति संचरो ए; खमो अपराध अमारमो, अमारो हो
 मानेवो कह्यो खरो ए ॥ ८ ॥ इइप्रस्था नामे जलो, पुर आव्यो हो कीधी गाढी विनति ए; बड्ठा तुम सुख

जागवो, जोगयो हो मानो हमारी वीनति ए ॥ ९ ॥ धोलो डध विचारी ए, विचारी हो आया वरिणा वति
 ए; लाख धरे उत्तारीया, उत्तारीया हो जाइ मति घटीया रति ए ॥ १० ॥ विडर कियो उपगार हे, उपगार हो
 सुरंग बणावी पन्वनी ए; कागल मांही जणावीयो, जणाव्यो हो अरीम पती जोयुं धनी ए ॥ ११ ॥ पयशी पेट
 डखदायकु, डखदायकु हो कंस तणी परे जोइज्यो ए; गफील खिजे वन्वन्ना, कांइ तेहधी हो हुशीपारीमें होइज्यो
 ए ॥ १२ ॥ फागुण कालीचवदख, मध राते हो करशे तुम्ह सुकुहमो ए; देशी आग उतावलो, ए ब्राह्मण हो ब्राह्मण
 नहीं चुहमो ए ॥ १३ ॥ पंच पुत्र सुनो करी, कांइ बहुशुं हो रातवसा सुख निरमली ए; आगजगी फीरी पांनव पुल्या,
 साबुढी हो बेटा बहुशुं परजली ए ॥ १४ ॥ नौमे जुजावल साहीयो, साही हो पुरोहित जुहरमां जालीयो ए; पांन
 वजी उवारीया, कांइ काकेहो एह उपडव्य टालीयो ए ॥ १५ ॥ लोरु मली हाहा करे, कांइ हुवो हो एह अकारज
 अति घणो ए; कौरव ती अति कुरलीयो, कांइ लोगमे हो दोश उतारण आपणो ए ॥ १६ ॥ संक कौरवनी खरी
 कांइ पांनव हो नाग जाइते सही ए; गरे पने ने आखने, कांइ जाणे हो विन रात जावे वही ए ॥ १७ ॥ ड्रुम
 गिरीने वन नदी, विसामो हो नवी लीए शंका परहरीयो; दर्जाकुर पग विधीए, कांइ विधे हो कांटा खुंचे कांकरीए
 ॥ १८ ॥ थाकी माता अति घणी, कांइ थाकी हो पंचाली पग नवी नरे ए; नकुल अने सहदेवजी, कांइ थास्या
 हो चालवाने आलस करे ए ॥ १९ ॥ एक खंथोले मायमी, कांइ चोहमीहो विजे खंथोले बहु ए; बंधव दोइ बांधीया,
 कांइ पुते हो समरथयी होये सह ए ॥ २० ॥ राजा अर्जुन कर धरी, कांइ चाल्यो हो चाल्यो मारग बंक्रमो ए; मा

एस खटनीर वाहीया, कांइ जाइ हो जाइ सुखमें नीमनी ए ॥३१॥ तेवीसा सोमी ढालमें, कांइ टलीयो हो टली
 यो उपद्रव्य धर्मथी ए; श्री गुणसागर सुरजी, कांइ हो सेहो होशे सुख सुन्न कर्मथी ए ॥३२॥ ॥दोहा॥ विषम
 पंथ बोली करी, पहुता निश्चल वाम; साथ सुइ सुखमें सह, नीम चलयो जल काम ॥१॥ शरीवर जल लोइ वलयो,
 पुटे लागी ताम; तिष्ठइ सुख न्रांखती, जासहीमंवा नाम ॥ ३ ॥ आवीथी मारण नणी, पण पती करवा काज;
 विनय करी करजोमिने, आगे उनी लाज ॥३॥ नीम नणे सुण नामनी, तुमे प्रकाशो आप; राखसना मही मंवनी,
 बहीन अबुं सकलाप ॥४॥ तुम हणवा हुं मोकली, हुं मोही तुम देख; प्रभु हुशीयारी किर्जीए, राक्षस जोर विशेष
 ॥५॥ व्याहो मुऊ प्राणे सतुम, हुं तुम दाशी समान; वनवाशेखज मत करुं, जिम बाधे मुऊ वान ॥ ६ ॥ वनवासे
 शुं व्याहवुं, नाखे नीम कुमार; आनंबर आणे अवसरे, करत न शोजन लगार ॥७॥ ढाल १३४ मी॥देशी, योगनानी
 वात करंता हावी चाली, राखस तो आइ गयो; लाते मारी बेनने वारे, नीम तणे मन रोस थयो ॥१॥ मांसाहारी
 निच आचारी, अबलाने शुं चोटःकरे; जो बलवंतो ठोमय मंतो, मुऊ साहमा पग किशुं न जरे ॥२॥ धीय शींचाली
 आग तणीपरे, तरु उपामी आइयो, बद्ध उखामी नीम नरेशर, राक्षस उपर धाइयो ॥ ३ ॥ हो तजथा बथहोत
 बथावथ, उपर तले आवी दोइ; जाय हंमंवा कुंती शेती, कहे हणीयो तुम्ह सुत कोइ ॥४॥ खमग संवाही आया
 ध्याइ, राजा जमरुपी होइ; गदा उपमी हेगो पानी, मारी लीयो नीमे सोइ ॥५॥ ताम हंमंवा एह कुटंबा, साथे रही
 साता पावे; जुली पनी पंचाली बाला, देवि तव शोधी लावे ॥६॥ तव ते श्राक्या देवि हंमंवा, सासु बहुने खांधे धरे;

कुंतीनि राजाजी हवे, नीम हंमंवा व्याह करे ॥७॥ मंदिर विविध प्रकारे वणावी, सेज तणी रचना किजे; पान फूलने
 तेज सुगंधा, वस्त्र अन्नोपम पहीरीजे ॥८॥ नीम संघाते सुखयोगल संता, हिंमंवानि गर्ज रहे; गर्ज तणी एकति हंमंवा,
 सासुजी शुं वात कहे ॥ ९ ॥ शाल बाल धृत रसोद्, तिवण तो खाटा खारा; देवि हंमंवा आप समारे, वेयर जेठ
 जमे सारा ॥ १० ॥ चक्राचीध पुरी वेयसर्मा घरे, पांम्यजी आव्या चाली; सासु जेठ तणे आवेशे, हिंमंवा पिहूर
 हाली ॥११॥ रोज सुखंता नीम जणंतो, ब्राह्मण नारीकिञ्च रोवे; माथे हाथ लगावी गाढो, ब्राह्मण गढे वरीयो हवे
 ॥ १२ ॥ जांखे वक नामे एक रादस, शिलावी कुरावो आवे; नगर लोक नयनीत घणेरार, वचने पण अति विहावे
 ॥१३॥ काठसगादिक करणी करतां, परमेष्टी मनमें धावे; राजा प्रजा एक मनानवी, उपद्रव्य करवा पावे ॥ १४॥
 रादस रोस तजीने सुधी, वात राजाशु इम जासे; एक२ नर नदण कारण, नीतं पहोंचावे मुऊ पासे ॥ १५ ॥
 राजा मानी पत्री ठाणी, आज हमारोठे वारो; माता वहीनम्यवर वेठी, रोवेठे ए अयधारो ॥ १६ ॥ केवल ह्यानी
 वात कहीथी, पांम्यथी टलशे कारो; सोतो नाया अमवीन आयो, बोल परवेशी प्यारो ॥ १७ ॥ ए सधुने रोवंता
 राखो, धारे वारे हुं जशुं; रादस हणीने लोक सकलनो, हुंतो रखालो धाशुं ॥१८ ॥ आप गयो रादस आवासे,
 हरल्यो देखी उंचपणो; सयल कुटंबोधापी खागुं, एहने तनुनोमांस घणो ॥१९॥ मांहो मांही मांच्यो जगानो, धग
 ने कारीज सारीयो; गदा प्रहारे ठजवल केलवी, जीमे रादस मारीयो ॥२०॥ पुःफ वृष्टी अंवरनी वाणी, जय जय
 कारते चवजी, मोटो एह उपद्रव्य टलीयो, बोगानी पुगो रली ॥२१॥ जीनयथले करतुती देखी, लोगा पांम्य जा

एयीया; धन्यः माता पित्र्या धन करणी, पांढव सुजस नखाणीया ॥१३॥ चंदन चंद जीहां ३ जाए, तिहां ३ शिलताइ
 हो; ताप हरे परकातनु केरो, एह तणी अधीकाइ हो ॥१३॥ ढाल ए चोवीसा सोमी, बक नामा राक्षस हणीयो श्री
 गुणसागर न रहे बानो, जीम बल जगमांही जणीयो ॥१४॥ दोहा ॥ पांढव प्रभु मन चिंतवे, प्रगट हुवा हमं आज;
 कौरव केमे लागशे, मतको विणसे काज ॥२॥ आधी राते निकला, सुतो सुकी गाम; द्वेतवने झाया वही, राखवा
 निज माम ॥१॥ लोक वचनथी सांचली, ए सधलो विरतंत; डुर्योधन राजा घणो, माने हर्ष अत्यंत ॥३॥ प्रियवंद
 नामे नलो, इत महा वाचाल; काकेजी करुणा करी, मोकलीयो सुविशाल ॥४॥ खबर हुइठे तुम तणी, डुर्योधन
 नरनाथ; आवेठे तुम्ह उपरे, करणादिक बहु साथ ॥५॥ ढाल १ १५ मी ॥ पंथीमो वात करे धुर ठेहधीरे ॥
 ए देशी ॥ डुपतिरे डुपती रीसे परजलीरे, बोले रोस अपाररे; कौरवरे कौर केम बॉमे नहीरे, आवे पमीयो
 लाररे ॥ डु० १ ॥ राजरे राज लीयो धन सधलोरे, बीयो महातम वीनरे; तोपणरे पुठ न बंमे पापीयोरे पुनाइ
 हसहि नरे ॥ डु० ३ ॥ धीग मुजरे नारीपणुं तरतुम्ह तणरे, धीग तुम्ह खत्री नामरे; बांवीरे उपर बिबीनी परेरे, मांमेठे
 पलाणरे ॥ डु० ३ ॥ सासुरे सासु प्रत्ये बहुथर कहरे, विर जननी ए नामरे; कांइरे कांइ धरावे हेजधीरे, जाया पुन्यनी
 कामरे ॥ डु० ४ ॥ पुरुवरे पुरुप सहे किम एवमारे, पीसुन पराचय काजरे; मइगलरे मद मारण न विसरे, अष्टापद धन
 गाजरे ॥ डु० ५ ॥ एकजरे एकजणी नीरनय थइरे, नारी सिंहणी सोयरे; सासुरे पंचजणी निज जोबनरे, वादी गमायो
 जोयरे ॥ डु० ६ ॥ रांकरे रांक तणी पेरे मुफनरे, विगोवी प्रपदा मांहिरि; पांचरे पांचे उजा जोइयोरे, तरणुं न त्रुं प्रांहिरि

॥६००॥ मारे अने मरे त्रिय कारणे, जेहने शिर एक होयरे; पुरुषे पुरुष पंचनी पदमणीरे, विंनवी न उवो कं ॥
 ॥६०१॥ एहरे एह वचननी सुणी तदारे, अर्जुन नीम सहदेवरे; फूकरे फूक दिया सलगे घणीरे, उठीया ततखे ॥
 ॥६०२॥ युगतीरे युगती वचन समजावीयारे, धर्मनंद राखेवा धर्मरे; जेठे मासतणी नदीनी परेरे, आया वाम लि ॥
 ॥६०३॥ प्रियवंदरे प्रियवंद चरतव विसजों, मारी मान चल्या मतिवंतरे; श्रीगीरे श्रीगंध मादन आइयः ॥
 गुपतपणो गुणवंतरे ॥६०४॥ इंधरे किल नगर अठे जनेरे, तिहां राखी निश्चल ध्यानरे; राजारे राजा इंध तने
 सुते, साधे विद्याशुं जाणरे ॥ ६०५ ॥ विद्यारे विद्या विधी आरावतारे; आवी उंची तामरे; जगतारे जावे ॥
 अर्जुनजीरे, कियो विद्या प्रणामरे ॥६०६॥ विद्यारे नांखे कारज शुं करेरे, बसो मुज देहमोजारे; कारजरे कारज
 सकल शिधी करेरे, कोइ आगल न लहुं हारेरे ॥ ६०७ ॥ विद्यारे सिद्ध हुवो हरी नंदजीरे, गिरी शिखरे वे ॥
 आपरे; व्याधकरे व्याधक खेलत आहिमारे, करतो दिवो पापरे ॥६०८॥ वरज्योरे पण नटले ए पापधीरे, जिन
 करंतो गेमाररे; आवरे दनुप संवाही साहमारे, नाणे संकलंगाररे ॥ ६०९ ॥ अर्जुनरे अर्जुन सामो होवंता ॥
 धनुष विनाइ लीधरे; खमगेरे लभतां खमग खसोटीयारे, प्रजुसे अथकी कियरे ॥६१०॥ बाथरे वाथे पनीया रो ॥
 शुरे, यमीया दोइ फुजाररे; हाथ्यारे हाथ्यो अर्जुन आगलेरे, हुवो जस विस्ताररे ॥६११॥ कुसमरे वृष्टी थइ प्र ॥
 उपररे, प्रगठ्यो सुरवर एकरे; माग्यरे माग्य वर मुख नांखतारे, पुठे आणी विवेकरे ॥६१२॥ वरनीरे पाठे आ ॥
 ए कुणवारे, कियो कियो जंजालरे; वेताढ्यरे वेताढ्य गथं ॥६१३॥ रसालरे ॥ ६१४ ॥ इंधरे ॥

इंद्र नामे राजीथोरे, विद्युत माली लघु भ्रातरे; काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति उत्तपातरे ॥ ५० १ ॥
 राखसरे ते तल ताल तणे बलेरे, देश उजामे सोरे; चांख्योरे चांख्यो उपख्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोरे ॥ ५०
 १ ॥ मुख्योरे मुख्यो तुम्ह लेवा जणीरे, में दिवा गिरीवर श्रुंगरे; बलरे बल जोवा माया करीरे, तुम्हे हुं जित्यो
 जंगरे ॥ ५० १ ॥ रथरे रथ बेशी प्रभु आवीथार, राक्षस उपर सुरे; जीत्योरे जीत्यो राक्षस वाजीथार, सुजस तणा
 वरतुरे ॥ ५० १ ॥ इंद्रे इंद्र सनमान लही घणोरे, प्रणभ्यां माजी पाथरे; चित्रांगदरे चित्रांगद मुखचरी सुणतारे
 सहु मन हरखीत थाथरे ॥ ५० १ ॥ ढालजरे ढाल पण विसासोमी जलीरे, हणीयो ते तल तालरे; श्रीगुणरे श्री
 गुणसागर सुरजीरे, पान्च जश विशालरे; ॥ ५० १ ॥ माता पुत्र अने बहु, वेग सुख पावंत;
 कमल एक कंचन तणो, अंबरथी आवंत ॥ १ ॥ पंचाली करमे लीयो, कमल वास निज सास; लेतां मन वाध्यो
 घणो, पामी अति जलास ॥ १ ॥ नामनी नाखे निमशुं, एहवा कमल उदार; आणी आपो मुज नणी, नाहमलावो
 वार ॥ १ ॥ ढाल १ १ ६ मी ॥ शिथलशुं रंगी चुंदनी ए देशी ॥ लावोने कमल सोह्यामणा, कहे नीम नणी
 एम वाणरे; हुंश करं तुम उपरे, मारा पेजजी जीवन प्राणरे ॥ ला ० १ ॥ ए कमल मुजने गमे, लावो नाथ मलावो
 वाररे; तुम सरिखे प्रितम बतेरे, मुज लाखेणो अवताररे ॥ ला ० १ ॥ नामनीनो मन राखवा, उठ्यो नीम कुंवर मति
 वंतोरे; पतिवृताशुं प्रितमी, तिण बोल न फेरी वालंतोरे ॥ ला ० ३ ॥ चाल्यो मारग वंकनो, कांइ जलंधी विखम
 वादरे; देखी कमल वन शोचतो, आवे हुंश धरी वन घाटरे ॥ ला ० ४ ॥ लोइ कमल पाळो वल्यो, पुंठे हुवो रखोपी देवरे

वाधा राख्या आमन, काइ हाला न सफ ह्वरे ॥ ज्ञा० ५ ॥ फरके नेत्र दाहीणो, माताजी मनमें उचाटरे; नीम
 संकट मांही पड्यो, जोता नवी आयो सुन्न वाटरे ॥ ज्ञा० ६ ॥ उगा ताम एताबला, बंधव ध्यरे आणी सनेहरे; पो
 होची न सक्या तेहथी; तव बांधीया पण तेहरे ॥ ज्ञा० ७ ॥ कुंतामाता झुपति, कांइ एकलमी निरधाररे; काउसग ध्यान
 करी रह्यो, सारी रात दिवशमोजार ॥ ज्ञा० ८ ॥ केवड उठव कारणे, सुरपति आपे तव जायरे; सति उपर सुर आयतां
 तव जान रह्यो खजायरे ॥ ज्ञा० ९ ॥ ह्यानवले तव देखीयो, कांइ सति तो रही विदायरे; पांच पांमयने शंखचुम्बजी, कांइ
 बांधीया अति छल थायरे ॥ ज्ञा० १० ॥ सुरपति ए सुर मोकल्यो, सो आयो ठोमावण काजरे; ते कहे लेतां कमनने, में बांधी
 याठे थाजरे ॥ ज्ञा० ११ ॥ ठेढ्यो इंड अविशधी, करी प्रिती घणी संखरायरे; रुमल लेइने आचीया, कांइ प्रणम्यामाजी पायरे
 ॥ ज्ञा० १२ ॥ माता निमी हेजथी, कांइ चांपे हियना साथरे; उपड्डय टलियो धर्मथी, हेजे मलियो सवलो साथरे ॥ ज्ञा०
 १३ ॥ ठविता सोमी ढालमें, श्री जैन तणो धर्म कीजरे; श्री गुणसागर सुरजी, तो ततक्षण कारज सिजेरे ॥ ज्ञा० १४ ॥
 ॥ दोहा ॥ बोलि गीया खट मास जब, पुनरपी आया सोय; द्वैत यने आनंदमें, वासर जाता जोइ ॥ १ ॥ खबर
 लइ डुर्योधन, कीधी दोम ते वार; साहण वाहण सामटे, आयो विपनमो जार ॥ २ ॥ हरी सुत चित्रांगद तणो, सरोवर
 ठे सुविशाल; रखवाला जल रोक्ये, जोर करे जुपाल ॥ ३ ॥ चित्रांगद आयो चढी, कौरव साथ विकराल; सिंचाणो
 जीम चरकलि, लेइ गयो ततकाल ॥ ४ ॥ बुरो चांठत पर तणो, बुरो लहे नर आप; केने पमता पांगवा, कौरव पति
 संताप ॥ ५ ॥ ढाल १२७ मी ॥ जीवरे तुं शिखल तणो कर संग ॥ ए देखी ॥ किधो लाने आपणोजी, कौरवपति

जेम जोय; चित्रांगद लेहू गयोजी, परवश छखियो होयरे; आ सुणजोजी; कौरवपति जेम होय ॥ १ ॥ ए आंकाणी ॥
 हा हाकार सहुको करेजी, जोर न चाबे कोइ; जेहने शीर आवी पकीजी, नीरवाहे शिर सोइरे ॥ आ० १ ॥ सापे
 ताक्यो मींफकोजी, मोरे ताक्यो साप; निज स्वार्थनो आंधलोजी, मारण न जाणे आपरे ॥ आ० ३ ॥ बगलो नंदे
 हंसनेजी, मणिने नंदे काच; काम पड्याधी पारखोजी, सहुने प्यारो साचरे ॥ आ० ४ ॥ श्रीम पड्या चाइ चवाजी
 लोग विराणा जाण; कौरवपतिनी कामनीजी, वेगे करी विजखाणरे ॥ आ० ५ ॥ युधीछर नृप आगलेजी, करती
 अधीक विखास; गोत्र तणा गोवालियाजी, सांचल अम अरदासरे आ० ६ ॥ कुल मंफण कुल केसरीजी, जेठ
 जुगतसुं जोय; पीमाइ माइ घणुंजी, कवण निद तुम्ह सोयरे आ० ७ ॥ मधीयो मिली घन देवताजी, रतन किया
 अपहार; रुपि अगस्त पिवताजी, नाम लियो जल खाररे ॥ आ० ८ ॥ बन् वानल जल बालवेजी, पाज तणो जस
 वाइ; राम करवे सायरुजी, न तजे निज मरजादरे ॥ आ० ९ ॥ गुणग्राहि तो गुण ग्रेहेजी, अयगुण नाखे डर; दांत
 वखाएयां स्वावननाजी, श्री हरी होय हजुरे ॥ आ० १० ॥ राजा हरि सुत गुं कहेजी, वेगेम जावो वार; डुरोधन
 बोमावयाजी, थारु सुर अपाररे ॥ आ० ११ ॥ विनय करीने विनवेजी, अरुन श्रीम कुमार; व्याधी टवी वीण
 उपधेजी, मोन तणो अधीकाररे ॥ आ० १२ ॥ राजा नाखे नाइयोजी, हत्री केरो धर्म; वहिला ग्राउ वाहरुजी,
 सचवाइ कुज कर्मरे ॥ आ० १३ ॥ आइशने जो इश नहिजी, चाल्यो श्री हरी नंद; चित्रांगद साथे अड्योजी, पायो
 सुजस आपणंदरे ॥ आ० १४ ॥ बोमावी कौरवपतिजी, बेशी विमाने आय; चित्रांगद चतुराइ परेजी, अर्जुनने

जइ बाग श० ॥ रथमां घादी झोपवी, रुययमां आणी राग ॥ श० सां० ५ ॥ जयवरथ ते महा चोरटो, रथ खेनी
नावो जाय श० ॥ बाहरे ते पुंते वेगशुं, नीम अर्जुन जब धाय ॥ श० सां० ६ ॥ कुंता कहे तन हे वत्सो, गुनहि पणें
ए रंगे मार श० ॥ जामात बे ए माहरो, रखे मारो तुंमे वार ॥ श० सां० ७ ॥ नीम अर्जुन बे नयंकरा, बहु बहु
नाखता नाण श० ॥ जयवरथने जइ मिल्या, तन तिहां पळ्यो नंगाण ॥ श० सां० ८ ॥ नीमे गवाने घाते कशी, तेहनी
रथ करगो चकचुर श० ॥ काचा कुंन तणी परे, देखी बल सह नावो छर ॥ श० सां० ९ ॥ अर्थचंद्र आपे अर्जुने,
ध्वजा तत्र भादि मुंब श० ॥ जयवरथना तन बेविया, तव चुंवो परभ्यो ते चुंच ॥ श० सां० १० ॥ मातु वचन संनारिने
जिघतो मेहल्यो जयवरथ श० ॥ लुण हरामी जे हुए, ते स्यो साधे अर्थ ॥ श० सां० ११ ॥ उवयरतन कहे सांजलो,
ए कधी दाबरे रसाज श० ॥ टाल्यो केहनो नवि ठले, जेहनो जेहनो हुए टाल ॥ श० सां० १२ ॥ बोद्धा ॥ मुजानी परे कुटियो
मुठ अने धार केस; नाण संधाते कापिया, नांम कियो सुनिशेरा ॥ ५ ॥ दादा १२८ मी ॥ जलकमल वमी
जायरे बादा शांम मारो जागशे ॥ ए देशी ॥ वेयरुपि एक विवश आयो, करण अति उपगाररे; पांमवाशुं प्रगट
जांखे, कौरयां अगिचाररे ॥ वे० १ ॥ नीरश पणुं नन ठामे, प्रतख्य देख्यो एदरे; कष्ट थकी बोमाइ आपे, अक्षो अत्र
गुण तेहरे ॥ वे० १२ ॥ आगथी उगारीया अहि, साह पाभ्यो जासरे; सिंध आखी समाथी किया, वैच पुत्र विपनाश
रे ॥ वे० १३ ॥ अथ विभो शाप मुले, गरल तुंचे जेमरे; आभमे नगार करीयो, होइ जाइ तेमरे ॥ वे० ४ ॥ उतमा उप
गारनी सति, कियां अपर करंतरे; कियांहिथी निच न करे, अत्रतो हेप धरंतरे ॥ वे० ५ ॥ बिडनी तो सिंधु जाणे,

साधु जेस सनेहरे; शिधुनो तो बिंडु माने, निच माणस जेहरे ॥ दे० ६ ॥ शप ताळे सहस फणपति, जीना दोइ
हजारे; वर्षेजे निचनी गती, तोहि न लोहे पारे ॥ दे० ७ ॥ गज अंकुश दिपत मही, नावा निरमोजारे; करी
तोपण निच आपे, हारीयो किरतारे ॥ दे० ८ ॥ चंङ्गेने जे करी कालम, भुलीयो जगवानरे; निचनो मुख करत
कालो, बाधतो तो वानरे ॥ दे० ९ ॥ दखदसा येइ अठेदावी, कहे डुवासा शाररे; लाखने रस सरकी करे, देइ राखी
वापरे ॥ दे० १० ॥ व्याप विसनो बांधी मुक्री, करे रही विधायरे; निचनी तो जीन परगुण, कही न सके न्यायरे ॥ दे०
११ ॥ हेनु तो कल्यामें नव, कौरया समजायरे; धमेतो चोपने गंडो, लागतो न देखायरे ॥ दे० १२ ॥ सनामांही अति
उडाही, वे प्रवाहे वयणरे; नांखे जोले स्वजन टोले, कियो अधिक कुचयनरे ॥ दे० १३ ॥ पांनयने हणे जे नर; लोहे
आथो राजरे; पुरोहित सुत ग्रह्यो विनो, करे विप्र अकाजरे ॥ दे० १४ ॥ प्रौढ विदा नामे कृत्या, करे साधन साररे;
सबल दल बल साजी सुंदर, अठे आवण हाररे ॥ दे० १५ ॥ करी मसुरती सखी विसज्यो, चितवे चित चावरे;
अति उपज्य हरण जाणो, तप तणो सुप्रनावरे ॥ दे० १६ ॥ काउसग करंत सबला, धरे श्री जिन ध्यानरे; सुरने
सनमुखा निश्चल, रह्या मेरु समानरे ॥ दे० १७ ॥ बोलीया एम विवश साते, ध्यान सुंथीरे गतरे; आवमे दिन विधाने
मुखे, उवीयो अति वातरे ॥ दे० १८ ॥ घणा हाथी घणा घोना, घणा रथ घणा जोगरे; उदधीनाकलोलनी परे,
सबल दल बल योगरे ॥ दे० १९ ॥ आइया तव ध्यानमांथी, बहु सासु दोयरे; घाली रथमें लेइ चाल्या, नारी जोर
न कांइरे ॥ दे० २० ॥ हावुकोदर इंद्र नंदन, समर सुर सकाजरे; मात बठल पिसुन पिना, उपजेठे आजरे ॥ दे० २१ ॥

करायात धनु धणता, १५५५५ पामंतरे; ताम ते तो अहुररुपी, तरथ सुतामंतरे ॥३० ५५॥ विन नचन विनारी गिरा,
वह द्विभावंतरे; द्याप द्यापुण द्यासुधासु, उज्जहसता अग्रंतरे ॥३० ५६॥ पिसुन नावा जाइ द्रावा, कोन सांभो होइरे
गिघन दक्षीणो देव बलीयो, धर्मथी जग जोइरे ॥३० ५७॥ अवागीसा रोभी ढालमांही, पुरोहित सुत रोसरे; श्रीगुण
सागर सुरी साखी, हुनो हिया सोसरे ॥३० ५८॥ ॥ दोहा ॥ तिस व्यापी अति आकरी, रोग करंता सुर; आया
ते शरोवर नली, पिथो जल नरपुर ॥ १ ॥ जल पिथो नृग ताहुया, तरु तलो ले निआराम; सुरदाए धरणी पळ्या,
नामी न वाचे तामा ॥ २ ॥ ढाल १ ५५५ मी ॥ स्तनशी गुरु गुणा भिवमरे ॥ १ ॥ ए वेशी ॥ पुंज आनी
झुपतीरे, मृत रुपी कंत; वेशी अकृवापी वशीरे, आरती अति व्यांत ॥ २० १ ॥ रे रे रे वैन कुलदणारे,
किरुं कुस हज्यो अंग; पमीयामें पामे धपुंरे, करतो रंग निरंग ॥ २० २ ॥ एतलो आनी नीलभीरे,
पंचाढीनी पास; पुढणहारीण जेतवरे, शोर मळ्यो आकाश ॥ २० ३ ॥ करती आमंजर धणारे, धरति रूप
कराढा; कुर्या नामे प शधशीरे, आइ गइ ततकाल ॥ २० ४ ॥ जीली जाले सुषा चामनीरे, पदुनो
कर्या नाम; केमे हागीण जळुनेरे, तेहनो केमे वाम ॥ २० ५ ॥ काति काढीतव कापवारे, हागी काया जाम; कामनि
तो अति कंपतिरे, वापी नवे अनीराम ॥ २० ६ ॥ ससणहारी तो को नहिरे, वैवी तुमहारो कोप; तो स्था मांटे इम
कीजीणरे, मर्गयानो हांप ॥ २० ७ ॥ मुगाने खुं प मशिणरे, कांइ वेनि वेणेरे निमारा; एम सुणी अंनरे गइरे, करती
वज्र वशरे ॥ २० ८ ॥ राणी नवि रडे रोनतिरे, जाणी मुवा नरतार; निण नरतारा नामनीरे, पामे दुख अपार

॥ रे० ९ ॥ आंसु लुहिए आंखनारे, नीलि नांखे सार; सुख छुव आपद संपदारे, लागी मोले लार ॥ रे० १० ॥ उगे
 आरंभर घणारे, आथमता नहि वार; दौ अवस्था जोगवरे, दिन मांहि दिनकार ॥ रे० ११ ॥ सरखो न रहे सरयदारे,
 ग्रहण नायक चंद; एक पखवामे वाधतो, बीजे थाइ मंद ॥ रे० १२ ॥ लेहिरी वाधे जीम सायरारे, तिमही घटती जाय;
 जेह्यो माणस धज बजेरे, तेह्यो सिलो थाय ॥ रे० १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, जुगे जग ववहार; रोया
 राज न पामिणरे, उद्यमनो अर्थिकार ॥ रे० १४ ॥ मणि कालि सरीता जलेरे, सिचि३ पठ देह; मुर्ठा मीट जासे
 सहिरे, वेग याशे एह ॥ रे० १५ ॥ पात्र प्ररी पाणी तणारे, पदमनी पोखे प्यार; आलस मोमी उठियारे, नारी
 कख्यो सुचिच्यार ॥ रे० १६ ॥ विसमय पाम्यो पाम्बेरे, एतो अचरज कोइ; एतले प्रगढ्यो देवतारे, परम महा सुख
 होय ॥ रे० १७ ॥ सुर नांखे स्वामी सुणारे, हुं हरणामर देव; तुगे तप वलि तुम्ह तणेरे, आयो करवा सेव ॥ रे०
 १८ ॥ ऋत्या ऋत्य निवारवारे, माहारां कीथां काज; ए सधलाहि जाणजेरे, जग मोटो जीनराज ॥ रे० १९ ॥ समय
 समरवो हु सहिरे, बहुली करी अरदास; आनुपण आपी घणारे, देव गयो आकाश ॥ रे० २० ॥ एगुणतिसा
 सोमी ढालमेरे, पाप नाग जाण्ये; श्री गुणसागर सुरजेरे, पाम्ब पुन्य प्रमाण ॥ रे० २१ ॥ दोहा ॥ विविध
 प्रकारे रसवति, अति रसवति अपार; आपण काजे निपनि, आइ गयो अणगर ॥ १ ॥ नाव घणो आवरपणे, प्रति
 जानो रुपी राय; पांच दिव सोह्यामणां, जय३ शब्द सुणाय ॥ २ ॥ बोले सासन देवता, संवहर ए वार; पोहता
 वरस ए तरमो, गुपतपणानो सार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ बली नकुल कहे सुणो वात राजाजी, गोधीक नामे तिहांजी;

थइ अथ पादाक अनीराम राजाजी, रहेसुं अथाशाला हीशे जिहांजी ॥ १ ॥ गदवी बोल्यो तिहां सहदेन रा० ॥
 गोविंद नामे गोवालीलजी, करशुं गोपालानं काम; निशय बाज ए वाते निहानियोजी ॥ २ ॥ गदवी झोपकी कहे
 सुणो घात रा० ॥ हुं तिहां इशेभी नामे सहिजी, रहेसुं सुभेखा राणिने पास रा० ॥ तेहने सिंगसुं सेनामां रहीजी
 ॥३॥ अंगिकरि निज३ काम रा० ॥ निज३ नेपधारीनेजी, पोहोता बिराट नगर नजिक श्रोताजी, परखी नहि नर
 नारिनेजी ॥४॥ तेतो आनी नगर समीप श्रोताजी, सब शक्ति कोट३मां भरथाजी, तेहनो नेव न जाणे कोय श्रोताजी,
 कल्पान्त जोए तेध्यां करगांजी ॥५॥ तिहुंले पुरमां किच प्रवेश रा० ॥ राज धारे जुधारजी, निराटे आपी बहु मान;
 निज३ कामे थाप्या सुभाजी ॥ ६ ॥ सवें सुखे समाभे तेह श्रोताजी, रहेठे बिराटना राजमांजी; कीइ एहवे नहि
 तिलमात्र श्रोताजी, ले सावधान निज३ काममांजी ॥ ७ ॥ ॥ बोद्धा ॥ चोरि नाम ए आपणां, मछ वेशभें
 जाय; नगरामा राजा धरे, रहीयां पांढव राय ॥ १ ॥ बाल १३० मी ॥ इणपुर कंबल कोइ न देखी ॥ ए देशी ॥
 कंक विप्रनो नाम धराने, राजाजी अहंकार रयाचे; नीम रसोइवार सोहागो, वृद्धनमा हरिनंग कदायो ॥ १ ॥ नकुज
 गिरोपम नाम धराने, ग्वाल तणी मति तोलहु आपणी; पंचाली सेरंझी दासी, माजी गरुया आला रासी ॥ २ ॥ नगर
 तणे परीशर जब आवे, पिढ्यवने ठथियार दिगाने; समीत तथा तरु उपर ठावि, ग्वाल सकल जय वात गतानि
 ॥३॥ रामो पिनाले सोइमाठी, मुंड विनाले मारे आंठी, चतुर शिरोमणी पांचे चाता, एकांते मुकी निज माता ॥४॥
 नगरामा पर घाली व्याया, निज३ कामे सयल लगागा; पुढना ए उत्तर पाया, पांढव घर हस आप सनाया ॥ ५ ॥

पांमनजी तो श्रुते गनवाशी, तेह धकी हम फिरा उवाशी; राजा नांखे प्राग्य हमारो, वरशण लाग्यो श्राज तुम्हारो
 ॥५॥ सुलमे रहिइ ए पर संपे, अठे तुम्हारो राजा जंपे; प्रात समे माजनि वंदे, शील्य लहि सहुइ श्रानंदे ॥७॥ सुद्धभा
 नामे पटराणी, विर घणानी बहिन कहाणी; विमोतर सो किचक जाइ, नृपने साजानो अर्थीकाइ ॥८॥ जेमज नामे छत
 विकराल, ड्योपन मेल्यो सुविशास; पांमनानी जे खबरज आवे, बाल पसाय अनोपम पावे ॥९॥ चाल्यो छत करीने जुहार,
 जागुं खबर नेगे तुमसार; गाम नगर पुर जोतो रंगे, मागे जंग ए नृपति संगे ॥१०॥ बाब्या मुज पासे अमन्या छतो, शक्ति
 न होय तो बांधीयो पुतो; रत्न इम भुपती जीती, सेतो वान महा बल शिती ॥११॥ मठ वेश वैरामो राजा,
 पुरी सना अर्थीकव वाजा; वेगो नृपती परखद्या पुरी, कंकविप्रसु सना सनुरी ॥१२॥ श्रायो जेवी तिहां कणचाली
 देखी सना जाकजमाली; उचो रायने करीय जुहार, राजा पुठे कचण विच्यार ॥१३॥ सुण स्वामी हृथीणापुर नृप,
 ड्योपननो छत अतुप; वेश वेशना जित्ती राणां, आव्यो थाप मनावी थाणा ॥१४॥ होय बखीयो कोइ मुजने
 साथे, नहीतर पुतलु पाइ बांधो; किचक तय मुठीए बलघाब, उठ्यो कोप करी विकराल ॥१५॥ श्रायो भुपती
 हाजी चाली, छते फंगेल्यो पाए जाली; कंकचणै वालीयो बलगत, खाय घणुने ठे मयमंत ॥१६॥ स्वामी जो इहां
 कण थावे, वेश सहुनां पुतबां ठोमाने; राजाए तय पुरुपज नेज्यो, सुतो नीम उगवेहे जो ॥१७॥ चालो स्वामी
 राय बालाये, कंक विप्र तुम वात बणाने; खाइ अन खुटाना कोस, इम वात कहे तिहां जोस ॥१८॥ लेइ चाटवो
 उठ्यो जाम, धरती धणैणाया लागीताम; चालीश्रायो सनामोजार, देखी छतने हरख्यो अषार ॥१९॥ श्रायी कंकपाइ

शिर नाहस्युं, पत्नी जोयुं जेमलश साहसुं; इहां जोध किह्याथी आब्ये, स्या पुतला पग बांधी लाव्यो ॥१० ॥ इहां
 आइने वाकरी बाइ, नहीं जियतो जाए चाइ; इम कही मांही बलग्या, लोगं सहु जुवे जइ अलगगा ॥११ ॥
 वागे हाथ उठे पम्बदां, खम्बे मोल नासे नर वंदा; लात ग्रहारे प्रथवी पम् धुजे, उमे खेह सुरज नवी सजे ॥१२ ॥
 उठी कचेरी राजा पण नाग्यो, पत्नीयो मल भुजाबल लाग्यो; एतो पांमव चीमजी दिसे, इम विब्यारयो विसवा
 विशे ॥ १३ ॥ जाण्यो निम तणो नमवाय, काढ्यो मुख थकी एम वाय; जिच करंतो जाणी गाढो, निमे पत्नामी
 पांम्यो टाढो ॥१४ ॥ त्रिसा सोमी ढाले नणीयो, निमे मल महा बल हणीयो; श्रीगुणसागर सुरवदीतो, पुन्ये पांमव
 जगजस जित्यो ॥१५ ॥ दोहा ॥ एक दिवश परीवारशुं, किचक नामे जुप; बेन तणे घर आवीयो, दिवो सेरंझीरुप ॥१६ ॥
 बहीन नणी एम पुनीयो, ए कुण नारी होय; किहां थकी आवी अठे, रुपे रंजा सोय ॥१७ ॥ जे आपण घर वाली
 यो, तेह तणी ए नार; रहेते मुज आगले, दाशीपणे सुविब्यार ॥ ३ ॥ लाज तजी निरलजपणे, बहानि जणी कहे
 एम; एकवार मुज मंदिरे, मोकलज्यो धरी प्रेम ॥ ४ ॥ वात मकर ए चाइजी, करता होय अकाज; शिल न लोपे
 सुंदरी, एहन पती शिरताज ॥५ ॥ राय बेराटे इम कह्यो, एकोइ कारण रुप; रुमी रिते राखज्यो, जलावी मुज जुप
 ॥६ ॥ ढाल ३३१ मी ॥ रामचंङके वागमे ॥ आंबो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥ उठी चलयो तवे राय, मनमां रिस
 धण्योरी; तेमांव्योरे खवास; करे वात बुरेरी ॥ १ ॥ एकली देखो जोनार, केहज्यो हेत धरीरी; शुं करशे मुज राय,
 पांडु लाज खरीरी ॥२ ॥ एक दिवश नृपनार, रती केल नणीरी; आंवे वन उथान, साथे सखीय धणीरी ॥ ३ ॥

साथे किच कराय, आव्यो अस्व चमीरी; फरता वन था राम, सेरंछी छेष्टे पमीरी ॥ ४ ॥ सतीगुं थाल ए
 चालो मुज घरेरी; हुं जग मोटो राय, सहु मुज थाण घरेरी ॥ ५ ॥ आपु नवलख हार, चौकी रत्न जरीरी; करे
 पटनार, तुजशुं प्रित खरीरी ॥ ६ ॥ बोली चटक लगाय, फिट कुवथी सुलवेरी; वाजुं तारो राज, थावो शिपल
 ॥ ७ ॥ आव्यो चावस लेइ, किचक कोप करीरी; बेनसु दर्शणं ताम, थावी थाप्ते फरीरी ॥ ८ ॥ वाइए वारो
 इम किम कांम करेरी; एतो निरलज दास, एहने कुण वरेरी ॥ ९ ॥ मोटी राजकुमार, परणानुं वरनारी; रहवा
 हथी हव, एहनी जात न सारी ॥ १० ॥ एकवार मुज द्वार, आवे नेह धरीरी; पुरु मन तणी स्वांत, न करं
 फरीरी ॥ ११ ॥ वहीन नये सुण विर, तुं मति चिंत्या करेरी; होशे धिरे काज, जाज थाप घरेरी ॥ १२ ॥ हरखाजो
 राय, होशे काम नलेरी; हुयो विकल नरेश, लाग्यो तास पलोरी ॥ १३ ॥ एक तिसा सोमी ढाल, गुणसागर
 नाशी; लेशे डख अघोर, पापी पाप प्रकाशी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ एक दिवश राणी राजली, निपजावी पव
 गोत्रीज तणी पुजा करी, थापी सहने मान ॥ १ ॥ पात्र कर धरी प्रेमदा, किथो सेरंछी साद; मंदिर थापो
 विरने, गोत्रज तणो प्रसाद ॥ २ ॥ माजी किम मने मोकल्यो, शुं नथी जाणता वात. काल एणे तुम देखतां,
 धणो उतपात ॥ ३ ॥ ड्य देखी मंजारने, हुये लालच जेम; न गणे लाज परनारनी, लंपट माणस तेम ॥ ४ ॥
 केशे तुजने, मे वारयो ठे एह; नाम लीए जो ताहरं, तो टलि आयजे गेह ॥ ५ ॥ परवश प्रेमदा शुं करे, लेइ
 ते पात्र; आव्यो घर जव हुंकमो, थरहर कंपे गात्र ॥ ६ ॥ ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ,

शुभ न पाइजी ॥ ए देशी ॥ पदी मनसां जोयु विमाशी, किचक कुबुधी पुरोजी; एकलमा जाता इये
 मंदीर, रहे किम शियल सनुराजी ॥ ६० १ ॥ एम ठपाती आवी बाला, कैया तणे आवासजी; दिधुं पात्र डुरशी
 उन्नी, लीधुं हाथ खवासजी ॥ ६० २ ॥ मेली थाल वलि जव पाठी, किचक आयो पुंजजी; रे उन्नी रंमा किहां जाइस,
 वाणी वदे इम जुवजी ॥ ६० ३ ॥ पामी त्रास ते सजा सनमुख, नारी नावी जायजी; आवी उन्नी राजा शरणे,
 कामी केने थायजी ॥ ६० ४ ॥ कंक वीत्र देखता मारी, नारी लाते तामजी; वैराटने सर्व सुन्नट जोतां, कीधी सजाग
 तमामजी ॥ ६० ५ ॥ नाथ प्रते इम वदे वाणी, बोमांबो महाराजजी; ए पापीमो मुजने पीने, सुकावे मुज लाजजी
 ॥ ६० ६ ॥ कंक नणे वैराट सचानी, लाज लइ मबरालजी; इमनी सुणी राय जंखाणो हाकलियो जुपालजी ॥ ६०
 ७ ॥ आज मुकुंबुं तुजने जाणी, काले तारी वातजी; आय्य वहे माहरी रायरांणा, आज घणी आख्यातजी ॥ ६०
 ८ ॥ इम कहीने वल्यो पाबो, गयो निज आवासजी; पंचाली तिहांथी आवी, मबरालीनी पासजी ॥ ६० ९ ॥ राणी
 आगल किधुं सघलुं, हेसुं फाटता रोयजी; अम दश तो सहु उजम थइ, सार न लीए कोइजी ॥ ६० १० ॥ अने
 कपरे आशाशना दिधी, राणीए रोती राखीजी; कहेतां माहरा दांतज धाटा, ठे मुज अंतर साखीजी ॥ ६० ११ ॥
 ते दिन बोहीलो गयो रामाने, रात पमी जे वारजी; अक्सर लेइ आवी एकाकी, चिनवीयो मरतारजी ॥ ६० १२ ॥
 कैये मुजने इणीपरे नांख्यो, आणीश तारो अंतजी; आतमघात करुं ते पेहेली, तिए कारण मुज कंतजी ॥ ६०
 १३ ॥ में विनवाया गोइ विबाइ, तुम तणा वन विरजी; ते पण सांजली हेवुं घाल्युं, करी नही मुज चिरजी ॥ ६०

यजी ॥६०१६॥ कंत तणे आदेशे थावी, वात न जाणे कोइजी; सोजशृंगार सज्या तनुं सुंदर, पेरया दरपण जोइजी
 ॥६०१७॥ मारण जातां किचक विठी, घाली जाकफमाजीजी; कामातुर अकुजाणो राजा, फेरी कोट नि हालीजी
 ॥६०१८॥ दिवश रात हिमु तुम्ह जोतां, लागी लेह तुम्हारीजी; आज मनोरथ थया पुरण, किथी सार अम्हारीजी
 ॥६०१९॥ मुख पंचाली बापक बोली, सुणो सुनट एरु वातजी; कोइ मंदिर देखानो एकांते, तो रमीए तुम संयातजी
 ॥६०२०॥ हिमोलखाट ऊंचे उंची, मणीमय मारा थावासजी; थायज्यो रात समे तुम राणी, जीम पुणे मुज
 थासजी ॥६०२१॥ इम संकेत करीने चाल्यो, किचकनीज थायासजी; नामनीए सहू वात प्रकाशी, निम जणी
 वलासजी ॥६०२२॥ ए वतिसासोमी ढाले, वात जणावी तासजी; श्री गुणसागर सुरी प्रकासे, जो जो कुविसन
 विनाशजी ॥६०२३॥ ॥दोहा॥ निम जणे सुण नामनी, थाप सुरंगो वेश; थाशुं केयानि कामनी, हुंश धरी
 सुविशेश ॥१॥ देइ थालंगन एहने, पौंचासुं जम लोरु; तो वुं मुजने जाणजो, निम तणो वजरोरु ॥२॥ आज पवी
 कोइ नारीनो, नाम लिए नही तेह; खोना मंजार तणीपरे, जमतो राखुं एह ॥३॥ ढाल १२३ मी ॥ समुद्र
 विजय सुत चंदलो सांमडीयाजी ॥ए देशी॥ रात समे जम निमजी, मन मोहना; स्नान करी सुची देह, लाजमन
 मोहना; केस समार्यां कामनी मण॥ घाली फुडेल सनेह ॥जा०१॥ सेंथो लाल सोहावीयो मण॥ नरुवेसर रुमो नय

ला०॥ निलवट मोती पुरियो म० ॥ सोवन चुम्बि हथ ॥ ला० १ ॥ रक्त मनोहर कंचुकी म० ॥ मस्तक उढ्यो चिर
 ला० ॥ पग पीतांबर ढलकतो म० ॥ ऋणके नेजर गुहिर ॥ ला० ३ ॥ नांख्यो कंठे लहकतो म० ॥ पंचाली उरनो हार
 ला० ॥ हसी बोली एम नामनी म० ॥ तुम जीती जग नार ॥ ला० ४ ॥ नारी वेश नीसे करयो म० ॥ करवा
 किचक जंग ला० ॥ चाल्यो मथ बजारथी म० ॥ लटके जोतो जंग ॥ ला० ५ ॥ आव्यो किचक मंदिरे म० ॥ दिवो
 अनोपम घाट ला० ॥ मोती कुंभख बांधीया म० ॥ लटके हिमोला खाट ॥ ला० ६ ॥ असुर थारो आवतां म० ॥
 सुबुं वार लगार ला० ॥ दइ शीर चीते पोढियो म० ॥ चरणे चांपी कमाम ॥ ला० ७ ॥ एटले किचक आवियो म० ॥
 पेरी तनुं शणगार ला० ॥ पेवो मंदिर एकलो म० ॥ सेवक रहियो बार ॥ ला० ८ ॥ लालच धरतो आवियो म० ॥
 मोहनी मोटो बंध ला० ॥ दिपक देखी पतंगीयो म० ॥ पनीयो तिम मती अंध ॥ ला० ९ ॥ आज सफल दिन माहरो
 म० ॥ करतो मन सुविचार ला० ॥ आवी आवांशे उचो रह्यो म० ॥ करस्युं कुढ्यो धार ॥ ला० १० ॥ बोलावी
 बोले नहि म० ॥ एहनुं पढी ते शीश ला० ॥ उठो १ नडे हुमे म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ११ ॥ कमाम
 कवीन खखमावीसुं म० ॥ तव सांभल्युं शुं यार ला० चरण संकोचा आपणा म० ॥ राय उधाम्यो द्वार ॥ ला० १२ ॥
 पोल वेइने परवरयो म० ॥ खोलतो खुणा चार ला० ॥ खमकी मंमप नुसरी म० ॥ नवि दिगी त्यां नार ॥ ला०
 १३ ॥ एम सघले जोतां थकां म० ॥ किचके दिवो सोय ला० ॥ कुण कुबुधी इहां आवीयो म० ॥ एतनुं नारी न होय
 ॥ ला० १४ ॥ नीम मधुर एम बोलियो म० ॥ आवो कंत सुजणा ला० ॥ वार घणी मुफने थइ मा ॥ नाथजी जीवन

प्राण ॥ ला० १५ ॥ एम कही उटयो नीमनो म० ॥ किचक पानी चीसला० ॥ हा हा हवे हुं नही कहुं म० ॥ मुको
 मुज्जे इश ॥ ला० १६ ॥ कर जालीने पाटक्यो म० ॥ करतो आक्रंद साव ला० ॥ नीम जणे परनारसु म० ॥ बली
 करजो उन्माद ॥ ला० १७ ॥ मारी कीधो कोथलो म० ॥ शिर चांष्णुं धम मांहि ला० ॥ किचक परतद पामीयो म० ॥
 पाप तणां फल प्रांहि ॥ ला० १८ ॥ नीमे ताम वीच्यारियो म० ॥ ए नृत केली साल ला० ॥ धनुर विया इहां कण
 नणे म० ॥ देखी विशे बाल ॥ ला० १९ ॥ नारवट नार उंचो करी म० ॥ चांपीयो ते मांय ला० ॥ पुनरपी नीम
 वीचारीनं म० ॥ रखे जाणे कोइ श्राय ॥ ला० २० ॥ रक्त तणी सलीका जरी म० ॥ नारोट लीखीयो नाम ला० ॥
 राजा वात जणाववा म० ॥ त्रण अदर तिणी ठाम ॥ ला० २१ ॥ काम करी किचक तणो म० ॥ नीम गयो निज
 स्थान ला० ॥ सकल संबंध आयी कह्यो म० ॥ नारी जणी बहु मान ॥ ला० २२ ॥ तेत्रीसासोमी ढालमें म० ॥ श्री
 गुणसागर जोय ला० ॥ किचक प्रतद पामीयो म० ॥ कीधाना फल सोय ॥ ला० २३ ॥ ॥ बोहा ॥ राय कचारी
 आर्वियो, पुरी सना अन्नराम; किचक न्नाइ सहु मली, वेवा करी परणाम ॥ २ ॥ राजा पुठे सादरो, तुम बंधव गुण
 खाण; हमणा अमो विठा नथी, कुण कारण राजान ॥ ३ ॥ अम नाइ काले चनी, गया हुता कांइ वार; राते पण
 आंव्या नथी, अम मंदिर निरधार ॥ ३ ॥ राए शेक मुकीयां, कैया तणे वरवार; पुठे जइ शा नारीने, किहां ठे
 तुम नरतार ॥ ४ ॥ सांऊ समे शोना धरी, तेनी शेक साथ; गया पुठ्या विण मुज्जे, हजी नवि आंव्या
 नाथ ॥ ५ ॥ ॥ ढाल १३४ मी ॥ सोइ सयाणो जे अवसर साधे ॥ ए देशी ॥ किचक नाइ मली सब

आवे, राजाशुं एम वात सुणवे; हजीय न आव्या किचक राय, राजाजी मन चिंत्या थाय ॥ कि० १ ॥ शेवक
 तेमी पुढयो अन्निराम, ठाकुर तुमचा गया कुण काम; नृत तणी साला नरनाथ, तिहां सुधी हता अमे सहसाथ
 ॥ कि० २ ॥ पढी अमने शिखज आपी, आप एकीला गया थिर आपी; द्वारपाले पण एमज नांख्यो, निकलतां बार
 अमे नवी जांख्यो ॥ कि० ३ ॥ राजा शोध करवा रंगे, उठ्यो सुन्नट लेइ बहु संगे; घर २ शेरी चोकमोजार, जोतां
 न लार्धी शोध लगार ॥ कि० ४ ॥ बैन सुदर्शणा वात ए जाणी, चाइ न दाधो होइ बिराणी; नृतशालाए आवे सहु
 साथ, पण न लाने जोतां नरनाथ ॥ कि० ५ ॥ धरति विवर दिवो तिणे वाम, दिसेवे इहां थयो संग्राम; नारोटे
 आंक दिवा अति राता, बैन जणे इहां सही मुऊं ज्ञाता ॥ कि० ६ ॥ मेता प्रधान तेमावी राजा, वंचवे सहि अद्दर
 ताजा; वांचता एम विचारे सुजाण, में मारयो एम कहे कुण वाण ॥ कि० ७ ॥ एतले राय आवी एम वांच्युं, में
 मारयो मुख कहे तव साचुं; राणी आंखे नांखे बहु निर, तुमे मारयो दिसे मुऊं विर ॥ कि० ८ ॥ कोयक पाप उदय
 थयो आज, कैया तणो एम थयो अकाज; एणे शेरेंडी सजा मांही मारी, मृत्यु जाण्यो एम राय विच्यारी ॥ कि० ९ ॥
 वालीचो आदे मिल्या सहु लोण, नारोटे अलगो कियो बल योग; काढ्यो किचक मली बहु साथ; देखी राणी मीड्यो
 लेइ वाथ ॥ कि० १० ॥ बैन चाइनो अंग निहाले, तिम २ आंखे आंसुमा ढाले; वात विविध प्रकारे दाखी, सहु मली
 एम रोती राखी ॥ कि० ११ ॥ चाइ मीली सुविचारण किजे, सेरेंडिने साथे वहीजे; एह थकी किचकनो नासो, सती
 किहां पामे घर वासो ॥ कि० १२ ॥ शिवका किचक काज ए किजे, केस ग्रंही सेरेंडी लीजे; थरहर २ धुजे सोइ, निम

कहे चिंत्या नही कोइ ॥ कि० १३ ॥ कुरु१ करी किचक कागा, शेरेंडीने नाखण लाग्या; निम जुजा वले ब्रह्म उ
 खाली, किचक बंधव मात्या वाली ॥ कि० १४ ॥ बांधव शोक करंत सरोखी, राजाए राणी संतोखी; एकाकि नाए जे
 राजो, ठेब्यो तो ए विनाशे राजो ॥ कि० १५ ॥ मोकरमी घर बाधज पडवो, एह उखाणो परतक दिवो; एतो आ
 गिन तेरे देखाया हाथशुरे उलाशी जाया ॥ कि० १६ ॥ एतो कोएक उठी उपाधी, साध नही ए रोग असाधी; मुजने
 नो आयो जोगवणो, कावाठे नृप पद नोगवणो ॥ कि० १७ ॥ सुर जालमें हुंठुं पनीयो, सिंह तणी शिकारे चनीयो;
 ससली पेट उपाए पिना, साप संघाते मांमी किना ॥ कि० १८ ॥ काम पखे ए विर बोलाया, अमृत काजे महा विख
 ाया; जइ तुं राख्यो चाहे चुनो, तो मकर एह कदा ग्रह कुनो ॥ कि० १९ ॥ आप नलो जगनुं ननुं नावे, आप सुवा
 षेम बुन कहावे; सो हणीया तस हणता एको, करे किशी ए आणी विंकेको ॥ कि० २० ॥ जे दिन सो दिन आयो
 ाहुंठुं, दिनपणे दलासा बघनुं; गंनीमानी रही जे राणी, शामाटे त्रोमी जे तांणी ॥ कि० २१ ॥ चोत्रीसा सोमी ढाले
 ाणीया, निमे किचक सवला हणीया; श्री गुणसागर सुर वर्दातो, शिल पसाए जगजस जित्यो ॥ कि० २२ ॥
 ाहे ॥ चतुर महाचर चोकशी, फिरी आया प्रभु पास; खवर न पामी पांढया, सोच घणो चिन तास ॥ १ ॥ विडरने
 ापम तणो, बदन विलोके राय; प्रथवी सवली सोधतां, पांढव वखर न थाय ॥ २ ॥ ढाल १ ३५ र्मी ॥ मंतर
 ामुनीवर धन१ तुम अचतार ॥ १ ॥ देशी ॥ बलवंता पांढव प्रथवी मांही प्रसीध, गुणवंता पांढव प्रगट होसेसो शिध
 ा थांकणी ॥ विडर अने त्रियम नणेजी, वाणी अथीक अनुप; पांढवनी सहनाणकाजी, सांनन कौरव रुप ॥ व०

१ ॥ इति अनिती नन्नीतीकाजी, रोग न अर्थीको शोग; पांढव ठे जे देशमेजी, होशे सुखीयां लोग ॥ व० १ ॥
 अरहिंता अतिशयजी साजी, दिशे ग्रंथमो फार; केत लाय अतिशय तिसाजी, पांढवना सुविचार ॥ व० ३ ॥ उत
 नलो तो खरोजी, साचो ए उपमान; म्हा देश महिमा घणोजी, दिनश चमते वान ॥ व० ४ ॥ सुसरमा राजा कहे
 जी, एतो सुधी वात; नगर तणी गौवालकेजी, पांढव प्रगट थात ॥ व० ५ ॥ खुणश हमारी ठे खरीजी, वैरामा नृप
 साथ; स्वामी काज समारताजी, सुजस दियो जग नाथ ॥ व० ६ ॥ कौरवपति सेना सजीजी, साथे सहु परिवार;
 हय गय रथ पायक घणोजी, श्रीमजी पण लार ॥ व० ७ ॥ घमश वागे घुघराजी, पाखर जमीया पलाण; उमी
 रज घमशाणसुजी, गयण ठायो वर न्नाण ॥ व० ८ ॥ देखी दल बल आपणोजी, मुलकाणो मन राय; कुण खत्री
 मुज आगलेजी, युधे जीवतां जाय ॥ व० ९ ॥ सुसर्मा ददण दिशेजी, जाइ लाग्यो जाम; गौ हरता ते ग्वालीयाजी,
 आइ पोकार्यां ताम ॥ व० १० ॥ कत्री सहु चमी चालियाजी, सजी न्नाथा कर वाण; पांढव चार साथे हुवाजी,
 वाग्या ढोल निशाण ॥ व० ११ ॥ नलाश न्न पाखरयाजी, संवाह्या अति सुर; भुप हुवो गोवा हरुजी, वाजीया
 राण तुर ॥ व० १२ ॥ नृप वढवे न्न लढथमजी, न्नाग्या जाइ तुर; उगंता रवी आगलेजी, तम जीम
 नासे डर ॥ व० १३ ॥ खीसती जाणी आपणीजी, सुसरमा कोपंत; मोटा न्नमने मोढवेजी, वैरामो रोपंत ॥ व० १४ ॥
 सुसर्माए बांधीयोजी, वैरामो नुपाल; जोर न चाले कोइनोजी, सोचे बालगोपाल ॥ व० १५ ॥ पांढव चारे धाइयाजी,
 धसमता धुताल; सुसर्माखा थोकियोजी, नाग न्न ततकाल ॥ व० १६ ॥ म्हा राय ढोमावियोजी, नीम नुजा बल

जोय, साथे तो बलिया चलाजी, नबलाथा शु हाय ॥३० १७ ॥ हरख धरी तेही स्वानकेजी, रात रस्यो राजान;
 रुंक तले मुख सांजलीजी, पांमननो आस्थान ॥३० १८॥ अथीनामें अथीहो घणोजी, सुजस सुणी निज हान;
 सस्य करिने सरबहेजी, लीधी सबही मान ॥३० १९ ॥ चारु जेदना एहवाजी, सुर महारे सनुर; ठाकुरनो केह्यो
 फिस्थोजी, विसे एह हजुर ॥३० २०॥ पांतिता सोमी ढालमंजी, नीमे जणाव्यो आप; श्रीगुण सागर, सुरी कहेजी,
 न ठपे तेज प्रताप ॥३० २१ ॥ बोहा ॥ प्रात हुया नौरपती, उचर विशनी गाय; वाली गलीया नेगशुं,
 गाल पोहारया आय ॥३१ ॥ राजानो सह रागणो, राजा साथे जोप; उत्तरा कुंवर एरुलो, पर रखवालो होय ॥३१ ॥
 दुंवारच श्रवणे सुणी, बोले राज कुमार; म्हारे नही कोइ सारथी, रुहे जणानण सार ॥३१ ॥ महीलाने माय आगले,
 गाल मारतो जाण; सेरेंडी बोली हशी, कुंवर अरती मन आण ॥३१ ॥ ढाल १२६ मी ॥ आठी लालजी
 नवर वांढवा निसरचांजी ॥ ए देखी ॥ तव सेरेंडी बाल, बोले बचन रसास; आठे लाल ॥ कुंवरपे चटक लगायनेजी
 ॥३१ ॥ अहो कुंवर कहुं तुज, जुथ करणानि वृज आं ॥ तो सारथिठे सोह्यामणोजी ॥३१ ॥ ए नरविंदल नेस, ठेसारथी
 सुविशेश आं ॥ अदनुत रूप सोह्यामणोजी ॥३१ ॥ हरनिंदनो रथ आप, खेमतो परम प्रताप आं ॥ ते रथ खेमनो
 ताहरोजी ॥३१ ॥ ह्यो तुम एहने संग, होस्ये जित अचंग आं ॥ हुंश मराखीश को ह्येजी ॥ ५ ॥ हस्तां रोतां एह,
 आब्यो परुणो गेह आं ॥ कुंवर पुठयो सारथीजी ॥३१ ॥ कहें विंदल महाराज, एतो आठो ठाज आं ॥ आण्णने
 गोरालतांजी ॥३१ ॥ मायने महलणी पास, पेरी वगतर तनुखास आं ॥ रणरंग रमया सज थयोजी ॥ ८ ॥ बहीन

फीरो संग्राम; हाथ जोमी उजो रह्यो, अयुनप अन्नोराम ॥१॥ खीजने ठे हथीयार वर, धनुष वाण उदार; कवच
 प्रमुप आयुथ सह, तुं जइ लाव्य कुमार ॥२॥ आदेश लेइ अयुननो, आव्योपी नृप वन; अहि रूपे आयुथ सबे,
 दिग तिहां नृप तन ॥३॥ मर आणी पागे फीयों, देखी काला नाग; अयुनपें आबी कह्यो, कोइ न फावे लाग ॥
 ॥ ४ ॥ ढाल १३७ मी ॥ साहिवारे मारा मेरु तणी पेरे धीर ॥ ए देशी ॥ हरिनंद आपे आयनेरे लाल, लीथा
 कर हथीयार; वज्र कवच तनुयी जब्बोरे लाग ॥ उपर सामी उदार ॥१॥ चमी आयो लाला, पारथ प्रवल प्रताप ॥
 ए थांकणी ॥ आबी रखने सनमुखेरे लाग ॥ पुरयो संख जे वार; कर्ण आदे सह राजीयारे लाग ॥ चमक्या चितमो
 जार ॥ च० २ ॥ नाद शंखनो सांजलिरें लाग ॥ पन्नणे श्री गंगेव, ए बाला रूप सोह्यामणोरे लाग ॥ पण अयुन
 अहमेव ॥ च० ३ ॥ कौरवपति तव कलकलारे लाग ॥ अहो३ जगदिश, ठे सह मुफ उपरेरे लाग ॥ एतो विसवारे
 वीस ॥ च० ४ ॥ जोण वदे नम सांजोरे लाग ॥ हमणा होशे इतपात, इण अक्सर टलवी जळोरे लाग ॥ शुक्रन
 अपशुक्रन थाय ॥ च० ५ ॥ सुनट दल जांखो धयारे लाग ॥ च० दिश हुवो अंधार, धरणी पन धुजे घणोरे लाग ॥
 आयो अयुन इणीवार ॥ च० ६ ॥ मुकी धण पाठा वल्यारे लाग ॥ तव नांखे हरी सुत, कापर किम पाठा वळोरे
 लाग ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ७ ॥ लज्या पामी राजीयोरे लाग ॥ आबी उन्नारे सुर, ठायो गयण घमशाणसुरे
 लाग ॥ वाजीया रखतुर ॥ च० ८ ॥ कर्ण कहे सह सांजलोरे लाग ॥ इख म आणशो कोय, आ रण अयुन मे
 वरथोरे लाग ॥ एम कही आयोरे सोय ॥ च० ९ ॥ दल देखी कौरव तणोरे लाग ॥ वेराट सुत कहे एम, तिलक सुनट

कुण एहमेरे लाण॥ कह्यो अर्थुन मुऊ तेम ॥ च० १० ॥ क्रिपाचार्य रथ तणीरे लाण॥ निलि ध्वज अही नाए, कनक
 दंम ध्वज रथ नलोरे लाण॥ ए छोण गुरु गुण खाए ॥ च० ११ ॥ ए दोइ मुऊ उपगरीयारे लाण॥ दिधी कला
 असमान, ए गुरु चरण पसायधीरे लाण॥ हुं धरुं धनुप बाण ॥ च० १२ ॥ धनुप ध्वजे छोण सुतजीरे लाण॥ करे
 अमरसुरे वाद, नागकेतु वर रथ नलोरे लाण॥ दिसे ड्योधन आइ ॥ च० १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे लाण॥
 ए कर्ण अचीराम, एम सधला अर्थुन कहेरे लाण॥ सुन्नट महारथी नाम ॥ च० १४ ॥ बाणे अंबर ठाइयारे लाण॥
 दल पसरया चिहु दीस डेर, आया कर्ण रथ सनमुखेरे लाण॥ करी आम्बर जोर ॥ च० १५ ॥ अर्थुन रथना नादथीरे
 लाण॥ सुचट न धरेरे थीर, सींह तणी पेरे गजतेरे लाण॥ आवी उजो वरु वीर ॥ च० १६ ॥ शस्त्र ठेदि कर्णनारे
 लाण॥ कहे अर्थुन तजी रीस, इण अवसर अंग रायजीरे लाण॥ पुगी सधली जगीस ॥ च० १७ ॥ विंदाचल
 गजनि परेरे लाण॥ अमीया दोइ ततखेव, अचरज पामी अंबरेरे लाण॥ मलिया कौतिक देव ॥ च० १८ ॥ मोटा
 नमने मोमतेरे लाण॥ एकजमो हरी नंद, मोर्बाइ धरणि विरेरे लाण॥ परीया कर्ण नरंद ॥ च० १९ ॥ छोण
 गुरु तव आवियारे लाण॥ हरखाणो मन जुप, आज गुरु नजे अवि्यारे लाण॥ देवा शोभन अनुप ॥ च० २० ॥
 प्रथम बाणे हरी नंदजीरे लाण॥ किधो गुरु प्रणाम, मुकी बाण वर इसरोरे लाण॥ ठेदे ध्वज अचीराम ॥ च० २१ ॥
 अर्थ जाणी आकरोरे लाण॥ प्रभु दया दिल आण, कौरवना दल उपेरेरे लाण॥ मुके मोहन बाण ॥ च० २२ ॥
 सेन सकल धर्णी पड्योरे लाण॥ न रही सुध लगा, वार मणना जो धमेरे लाण॥ तोपण न लहेरे सार ॥ च० २३ ॥

निली ध्वज कौरव तणीरे ला० पिले कर्ण निराज, क्षेत्रे ध्वज रलीयामणीरे ला०॥ तुज नगनीनेरे काज,॥च० २४॥
 निपम नय मनमां धरीरे ला०॥ कुगर जिम शंरु, क्षेत्रे ध्वज पाठो वल्योरे ला०॥ कपे श्रटारीरे लंक ॥च० २५॥
 कौरव राय पाठो वल्योरे ला० ॥ धरतो मन संताप, गौधन नाजी उतरारे ला०॥ श्यायो प्रभुने प्रताप ॥च० २६ ॥
 सामन्नीसा सोमी ढालमेरे ला०॥ अर्जुन वेसायोरे आप, गुणसागर पांम्य तणोरे ला० ॥ चमत्तो तेज प्रताप ॥च०
 ॥२७॥ ॥दोहा॥ मठराय पर आनीयो, पामी खबर तेगार; उतरा कुमर एकसो, हुयो कौरव लार ॥ १ ॥ भुप
 चढाइ कारणे, उयम करे अशेश; आनी ताम नयामणी; जिल्यो कुमर नरेश, ॥२ ॥ कंठ निप्रने रायजी, वेग सना
 मोजार; सारी पासा खेसतां, उलटनो अधिकार ॥३॥ करत प्रशंशा पुत्रनी, कंक कहे सुविचार; दहनमा जस सार
 धी, जिते क्युं न कुमार ॥४॥ ढाल १ २७ मी॥ इणे श्रवसर श्रयामो वालीक ॥ गथते वरश इग्यार ॥ ए वेशी॥
 ॥ तथा देवनी वेशी ॥ एतले चली आया जगत सोहाया, हरी सुत नितर जाया; कुमर पने लागी उचो आगी, आ
 क्षेणे तव राय ॥१॥ सुह माथो चुंबी अंधर अंधि, वारंगार प्रशंशो; आपुणपे रुस्तो मुख उचरतो, कुंजर कुल श्रव
 तंशो ॥२॥ तव कुमर नासे मर्म प्रकाशे, जितो जास प्रसादी; ते तजियासर आप चवोभर, प्रगट कुंज श्रयंतंतो ॥३॥
 विन त्रीजो पामी पांम्य सामी, प्रगट थया सुख कारो; तव नाइ धोइ पावन होइ, पहेरी धोती उदारो ॥ ४ ॥
 जिनवर श्रारार्थो, सुर विधी साधी; सिंयासण वेसंतो; ते सधला विरा साहस धिरा, प्रचुना पग प्रणमंतो ॥ ५ ॥
 वादलने टलवे पुजा मिलवे, सहस किरण विनकारो; देखाने थापो प्रवल प्रतापो, जगमांही जयकारो ॥ ६ ॥ तिम

कुंती जाया तेज सवाया, आप आपणी सोह; पखंता पेखी वात चिशेखी, लोंगाइहा पोह ॥७॥ पामव जाणी ज
ए३ आपणी, नामता निज शिशो; चिरंजीवइ सो कोम वरीसो, नाट जणे आशिशो ॥८॥ तव वेगे वधावा आवे
गावा, गाम तणी वर गोरी; नाचंती पात्रो सुललीत गात्रो, चतुर सहा चित चोरी ॥९॥ निशाणं धनुके ठंड न चुके
नाडे अंबर गजे; दिजे बहु दानो अति सनमानो, उबव अर्थीक बिराजे ॥१०॥ वयरामो राजा अधिक दवाजा,
करतो आवे ताम; चरणे शिर नामी निज हेत कामी, करत घणो गुण ग्राम ॥११॥ ते निज करजोमे देवो लोमे,
संपत सरीसो राजो; अर्जमान न राखे फिर३ चांखे, तुम्हे सारथा हम काजो ॥१२॥ सगपण करवे अति विस्तरवे,
नेह तणी अधिकारो; आतास्युं उलजी जाइ न सुलजी, लट जगनो विवहारो ॥१३॥ कुंवरनी जगनी ठे शुन
लगनी, शुन लक्षण शुन्नकारी; अति रुप रसाली जाक उमाली, वाली ठे सुविचारी ॥१४॥ अहेवनने दिजे कारण
सीजे, मानो एह अरदासो; ए सरखो मेलो थाय जो भेलो, तो पहेंचे मन आशो ॥१५॥ वाहालानुं वंढिं आपण
इबिं, काम महा अन्निरामो; राजाजी मानी प्रीत प्रमाणी, पण पुढी जे सामो ॥१६॥ नृप स्याम सलुणो दिन३
डुणो, तेज प्रताप प्रकासो; तव हरीसुं जाइ वात सुणाइ, हरी मानी उल्हासो ॥१७॥ प्राणेजा साथे श्री जगनाथे
आणी व्याह करायो; हाथीने घोमा पाट सजोमा, मणी कंचनमन आयो ॥१८॥ दिथां वर हेते ते परणे ते, वाध्या
रंग सवाया; युवा शुं बंधु हरी गुण सींधु, द्वारामती चली आया ॥१९॥ नोजननी जगती जण३ युगति, साचवता
अति सेवो, आदर अति दिजे खिजमत कीजे, हलधरने हरि देवो ॥२०॥ यादवनि कुमरी जेहवि अमरी, ते ज्यारे

परणाया; नन२ सुखयाशी लील गिलासी, परम माहा सुख पाया ॥२१॥ ए ढाल सोहाणी श्रति मन जानी, श्राम्तिसा
 सोमी बारु; श्री गुणसागर सुरी उजागर, पांम्य चरीतन पारु ॥२२॥ ॥ चोपाइ ॥ खंमरे खंम रस ते नय नगा,
 सुणातां मिवा साकराजा, श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, सातमो खंम ए पुरण थयो ॥१॥ ॥ ७७ ॥ ७७ ॥ ७७ ॥ ७७ ॥

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा सप्तमोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥खंम ८ मो॥

॥दोहा॥

श्रुत ज्ञानी जगमें बम्भो, प्रणमुं चाव उदार; अब अष्टम अधीकारनो, उद्यम करुं
अपार ॥१॥ कुंवर यादव पांमव तणां, मली मननो मेल; द्वारामती मांहे करे, नित नित नवली केल ॥ १॥
यादव बहु हित दाखवे, पांमव शुं धरी अित; वणा नेहे धरनी परे, रहे तिहां सुच रित ॥३॥ समुद्र विजय आदी
सहु, तव मिली जादव नाथ; पांचे पांमवने कहे, वारु सुणो एक वात ॥४॥ प्रतीज्ञा पुरण थद, पण अधुरी वात
शत्रु पराचव बहु सर्था, बल न रह्यो तिल मात ॥५॥ हवे तो अवसर पामीने, सधलो मेली साज; ए कटक कटकी
तरुपर, ए ठेदो तुमे आज ॥६॥ पांमव प्रथवी वालवा, यादव करे विवेक; डुर्योधन राजा कन्हे, उत मोकली सुविशेष
॥७॥ तव कौवर पति कलकले, हारी धरती फेर; किम देवाए देवजी, न्याय नजरसु हेर ॥ ८ ॥ ढाल ॥

त्रिपदीनी ॥ तव धर्म पुत्र कहे धरीने काजे, युध हुं न करुं सहीं कुल लाजे; नार माहरो वली जाजे ॥ १ ॥ जुलेश
काजे चाइने नेछं, पांख पोतानी कहो केम ठेछं; हुं नही कुलड ॥३॥ झौपदीए तव किधी सांन, तिहारे अिम प्रांगे
बलवान, तुमे सांजलो राजान ॥३॥ आज लगे तो तुम कह्यो किधुं, हवे तो ते सर्व श्रयुं शिधु; पण पणी निर
वही लिधुं ॥ ४ ॥ हवे तो अमे आप्या वाजी, दिलनी प्रलीपरे प्रांगीशुं दाजी; वमाशुं रुमीपरे बाजी ॥५॥ अब ए
अचरे रह्यो न जाय, लोक मांहि पण हांशि थाए; बलतुं बल न खमाए ॥ ६ ॥ तुंमे तो. ठो टाढा हिम, आगिना
नमका सरिखुं हुं नीम; हवे नहि पातुं निम ॥७॥ युधिष्ठीर कहे तुंमे युधे सुरा, सकल पराक्रममा सदा पुरा; नहि
मेहलो अधुरा ॥८॥ तोपण गुले जो समजी गुंमा, तो आपण नहि शइए जंमा; बांधव थाए जंमा ॥९॥ सहुनी

आण लहि अद्भुत, जय नामां तव मोकल्यो छत; गजपुरे तेह पाहत ॥१०॥ कश्नो छत हुं तुं राजान, सांचली
 सवे थइ सायधान; कथन सुणो धरी कान ॥११॥ तेर वरस महा डःखे गाली, पांनवे पुरी प्रतिज्ञा पाली; हवे तुमे
 जुन संजाली ॥१२॥ एहुनो तुमे हवे आपो राज, जेम तुमारि वाधे लाज; करो विचारी काज ॥१३॥ राज्य ना
 पोतो आपो पांच गाम, इंछप्रस्थ तिलप्रस्थ काशी अन्निराम; गजपुर वारणायति नाम ॥१४॥ छत वचन डुर्योधन
 काने सुणी, अहो मुने युधे आरोखो, बोलीउ ज्युं उखो ॥१५॥ सुठो मरनीने दंतज धरनी, आलस मोनीने अधर
 ते करनीत; आंख्ये आंखो तरनी ॥१६॥ हार्युं राज आबुं किम हेय; एतो मारा शत्रु स्वयमेव; सांजलो वात सत्येव
 ॥१७॥ आज लगे ए जीहां रखां जेह, प्रथवी माहरी जाणी तेह; नाग आप्यो मे एह ॥१८॥ सुए अणिए चंपाए जेती, अवनि नवि आपुं एहुने
 करयो, युय करता मत उतरजो; वराए तो जइने वरजो ॥१९॥ सुए अणिए चंपाए जेती, अवनि नवि आपुं एहुने
 तेनी; फोगट थारे ए फजेती ॥२०॥ एतो रुनी ढाल पुराणी, उदयरतन एम बोले वाणी; जिनवाणी नजो प्राणी
 ॥२१॥ ॥ दोहा ॥ एम सुणी कहे छत तव, राजन मानो वयण; गोत्र विरोध नहि नहुं, जुन विचारी सयण
 ॥२२॥ किचक वक २ किम थीर जीस्यां, हेमंवादिक हल्यां जेये; ते नीम आगले सही, नागशो केहेशो न कह्यो केण
 ॥ २ ॥ ढाल ॥ ॥ रुकमणी राणी मोहलमां ॥ ए देशी ॥ छत कहे सुणो रायजी, नीम तणी नमवाय हो राज;
 उब्या जाए आकाशमां, तुम सरिखा केइ राय हो राज, छत कहे सुणो रायजी ॥२॥ अर्जुन आगल नहि आशरो,
 तुमारो तिलमात्र हो राज; राधा केथ साध्यो जेये, बोलो विचारी गात्र हो राज ॥ छत २ ॥ विद्याधर दल जीतिने,

तुमने दिधुं जिवितदान हो राज; ते माटे ते पुज्य ठे, कां थाउ अज्ञान हां राज ॥ उत० ३ ॥ तु अकार क० १५१ ॥
 करे उपकार हो राज; धर्म पुत्र धरमातमां, तुं मारो हितकार हो राज ॥ उत० ४ ॥ वहनी मेघ वरसावतां, युधीधीर
 जलधार हो राज; वालि राखेठे विरने, आज जगे निरधार हो राज ॥ उत० ५ ॥ देव दाणव जेणे दम्ब्यां, जेणे मारयो
 कंश हो राज; आश्रवाए तेहने, तेनो जग अघतंस हो राज ॥ उत० ६ ॥ पावक सरिखा पांढवा, तुंतो घास समान
 हो राज; वनमाली वायु परे, प्रेरेठे वली तास हो राज ॥ उत० ७ ॥ तव त्रीण्म झोण विडर कहे, साची मानो ए वात
 हो राज; मनना आमला मेलनि, मिलि बेसो सहु भ्रात हो राज ॥ उत० ८ ॥ शिखामण ते सांभली, वली कोण्यो
 विशेष हो राज; अहीज्वाला परे उपण्यो, धरतो दिलमां देश हो राज ॥ उत० ९ ॥ तव क्रश उत कहे कोपिने, आव्युं
 तेहने सुत हो राज; युधे ते सहु जाणजो, जाशे गोफण गोला सुत हो राज ॥ उत० १० ॥ एम कही उत आव्यो
 वही, क्रश पासे सदेश हो राज; सांढीने सवें कद्यो, एके एक आशेश हो राज ॥ उत० ११ ॥ सजन सहु ढाले
 जुन, डुर्योधन बिल मांहि हो राज; कपट राख्याथी उदय कहे, हवे ए आगने अं थाय हो राज ॥ उत० १२ ॥
 ॥ अथ नारथता इपदा ॥ गग वेहागमो ॥ मानो वृष्ठी हमारी हो राजा मा० पांच गाम पांढवुने दिजे, उर सब नोमी
 तुम्हारी हो राजा ॥ मा० १ ॥ कुरुदेश हस्तापुर नगरी, अंग देश पंचालो; उत्तर देश अयोध्या नगरी, दखण देश
 बंगालो हो राजा ॥ मा० २ ॥ पांच नाइ पांढव केवराड, अर्जुन जोर अपारो; निमरोन ज्यारे नारथ रचशे, तारे नही
 उगरानो आरी हो राजा ॥ मा० ३ ॥ केवुं होय तो हमणा किजे, तुम्हो क्रशजी कारो; प्रथवी एक कणीको नआपुं

नित्य चरावनहारो; राज नित्य
 एतो गाय चरावनहारो; राज नित्य
 गइ नोम तमारी हो पांभवो
 वापु गइ नोम तमारी हो पांभवो
 अथ द्वितीय पद ॥ गइ नोम तमारी हो पांभवो
 वापु गइ नोम तमारी हो पांभवो
 अथ द्वितीय पद ॥ गइ नोम तमारी हो पांभवो
 वापु गइ नोम तमारी हो पांभवो
 अथ द्वितीय पद ॥ गइ नोम तमारी हो पांभवो
 वापु गइ नोम तमारी हो पांभवो
 अथ द्वितीय पद ॥ गइ नोम तमारी हो पांभवो
 वापु गइ नोम तमारी हो पांभवो

आणी, कौरव राय विराजो हां राजा ॥ क० १ ॥ एकवास सहस्र आप्त ॥ १ ॥
 त्रिसतनवसहसलाख पायक; एक अद्दोहणी लिजे हो राजा ॥ कि० ३ ॥ पांमव प्रगट प्रमाण आ
 द्दोहणी साची; जोसो हेते भ्रमे जाइ जुला, मांहीमांही मची हो राजा ॥ कि० ४ ॥ गोत्र कदर्थनां जाणी जुवे, समता
 वंत अपारु; चर्णी ग्रहीने शिवपद साधे, विडर विचारी वारु हो राजा ॥ कि० ५ ॥ ॥ दोहा ॥ हवे पांमव उजम
 जरे, बहु करी कटकनो बंध; यादव पण सर्व सज्या, वली विराट नरींद ॥ १ ॥ दृष्ट प्रद्युमनने सत्यकी, सौजइ उपद
 अग्निमन्य; घटोत्कथ आदे घणा, मलीया बहु राजान ॥ २ ॥ अर्जुन आर्थात विद्याधरा, इंद्र चुममणी चुम; चित्रांगदने
 वीचदगति, आव्या विमाना रुठ ॥ ३ ॥ अर्जुनने कर्ण वे जणा, आप आपणी सजाही; अन्योअन्ये पण करी, मारणानुं
 उस्यांहि ॥ ४ ॥ डुरजोधन पण उत मोकली, पदपति राजान; रण काजे तेमाविया, आपी आइरमान ॥ ५ ॥ भुरिशवा
 ने जगदत वे, सैल्य शकुनी कर्ण; त्रीष्म सोमदतने वालहुहीक, क्रपाचार्यने डोण ॥ ६ ॥ सुक्ति सौ बजने हला युध,
 क्रतवर्मा ब्रखशेन; उलुक आदे बहु आविया, निज निज लेइ सेन ॥ ७ ॥ विडरे तो दिक्षाग्रहि, युध समये गयो वन;
 कुंताए कर्णने समजावीयो, पण न तजे ए स्वाधु अन ॥ ८ ॥ कर्ण कहे माता सुणो, डुर्योधन न तजाय; अंगिक्रत जो
 ठोमीए, तो महा पातक थाय ॥ ९ ॥ तोपण कुंता तेहनो, जय वांठे सदाय; पांमवथी अधिको गणे, किहारे नवी
 हेमे साय ॥ १० ॥ बहु सेन्यगुं परीवरयो, डुर्योधन माहाराण; कुरुद्वेत्रमां आवीयो, करी अवर्तित प्रयाण ॥ ११ ॥
 सैन्य मल्युं सधनुं तिहां, अद्दोहीणी इग्यार; त्रिष्म करयो सेन्यापती, डुर्योधन तेणी वार ॥ १२ ॥ पांमव पण आव्या

तिहां, सैन्य लेइ श्रद्धोहिणी सात, कुरुक्षेत्र सोहावियो, चाली सयले वात ॥१३॥ दृष्टप्रद्युम्न सेनापति, पांमवे ॥३॥
 धरी प्रेम; पांमवने कौरव मिल्या, रामने रावण जेम ॥ १४ ॥ शाम दाम नैद मुकीने, केवल नीग्रह एक; दामा ॥
 रणक्षेत्रमां बढुं एह विशेष ॥ १५ ॥ ढाल ॥ तुम हे पीतांबर पेहेरोजी मुखने मरकलमे ॥ ए देशी ॥ ग ॥
 मुहुरत निरधारीजी, राजवी रण रशीया; आयुध अरची अर्धीकारीजी राज, धुप दीप अर्चन फुलेजी राज; त्रिं ॥ १६ ॥
 युध बहु मुलेजी राज ॥ १७ ॥ नीशाण तले नीधोपेजी राज, जाणे ते वीर रश पोपेजी राज; अरुणोदय वेला रणे धः ॥ १८ ॥
 जी रा० ॥ रवी सरस्वा थया वीर राताजी ॥ रा० १९ ॥ कोजाहल रणे उठलियोजी रा० ॥ सीहनाद मांहि जही ॥ २० ॥
 उजी रा० ॥ रणवुरना थया रणकाराजी रा० ॥ नैरीना वाजे नणकाराजी ॥ रा० २१ ॥ ढकाका हल ढणकाराजी ॥ २२ ॥
 हुंमक पनरो पोकाराजी रा० ॥ घण धरणी लाज राखेजी रा० ॥ धीरपणुं शीर धारेजी ॥ रा० २३ ॥ गयवर गाजे ॥ २४ ॥
 लाजेजी रा० ॥ वाजां रणना बहु वाजेजी रा० ॥ हयवरना जो रहे स्वाराजी रा० ॥ चिहुदिशे रथना चित्काराजी ॥ रा० २५ ॥
 वली सुचट शब्द नयंकाराजी रा० ॥ कौदंन तणा टणकाराजी रा० ॥ गयवरनी घटा तिहां चालेजी राण ॥ पोढाण ॥ २६ ॥
 स्या मालेजी ॥ रा० २७ ॥ मदजर मयंगल रोशालाजी रा० ॥ सुर्मीना करे उलालाजी राण ॥ ध्वज घुघरी घंट वाः ॥ २८ ॥
 रा० ॥ रथ देखी रवीरथ लाजेजी ॥ रा० २९ ॥ इन जाणे आयुधशालाजी राण ॥ धणणी चतुर्थटवालाजी राण ॥ धवश धाः ॥
 चक्रुथाराजी रा० ॥ प्रथवीना थाय पचकाराजी ॥ रा० ३० ॥ नाना तद्विण तोखाराजी राण ॥ खेमता रथ थाए होकान ॥ ३१ ॥
 रा० ॥ हयंवरना थाए हिलोलाजी रा० ॥ जाणे समुद्र तणा कलोलाजी ॥ रा० ३२ ॥ नौये तोपगनवी मंमिजी राण ॥ ३३ ॥

करशो गात्रनो ॥ ए देशी ॥ अश्वस्थामातिहारे उचल्यो, आव्यो पांमव दल मांहे; जलधरनी परे वरसतो, बाण धारा
 ते गाय; जोरो जोयोरे युधनो ॥ १ ॥ पांमवनां दल उपरे, अस्त्र नारायणी नामे; मुक्युं महा क्रोधे करी, विश्व कण्युं
 ते ठामे ॥ जोरो ० ३ ॥ जाणे कोलियो करशो विश्वनो, सैन्य लीधुं सर्व घेर; तेहने समर्थ नहि कोइ वारवा, जोरावर पण
 थया जोर ॥ जोर ० ३ ॥ तव क्रश्ने वचने पांमवे, आयुध मेहली छर, विनय करि ते शपरि करे, हेजे रहि हजुर ॥ जो ०
 ४ ॥ न्त्रिकिनी युक्ति तुठि तदा, शक्ति ते श्रद्ध शान्त; बार पोहर युद्ध ते थयुं, अनेकनो आव्यो तिहां अंत ॥ जो ० ५ ॥
 कर्ण सेनापति थापियो, कौरव मिलि ते ठाम; रणांगण मांहि आवियां, वत्यो माहा संग्राम ॥ जो ० ६ ॥ तव कर्णांत
 ताणी कोदंमने, कर्णने पार्थ दोय; कल्पांत काल रवीनि परे, क्रोधे कोप्या कुल होय ॥ जो ० ७ ॥ बले पुरा ते बिहु
 सहि, बाणावलि पण तुल्य; शरिपे शांमाने बे न्त्रे, नुजळे जेहना अतुल्य ॥ जो ० ८ ॥ श्रीम नुजा बलि जालीने,
 नांल्यो छःशाशन; नुजा काढी नुज बले, वीर हरथा धरि मन ॥ जो ० ९ ॥ रवि ए रहेवायुं नहि, नाशी गयो निज गेह,
 रात्रि पमी तव रण तजी, शानक पोहोतां तेह ॥ जो ० १० ॥ कर्णे प्रतिज्ञा तव करि, अर्जुनने मारुं आज; शल्यने सा
 रथी थापिने, शंखनो करी अवाज ॥ जो ० ११ ॥ रणांगण मांहि आवियो, गर्जनां करतो घोर; दशो दिशी बहिरी
 करी, नय लागो चिहुं उर ॥ जो ० १२ ॥ शजल जलद घटानि परे, अवानि आकाश प्रथंत; तिर ते त्रिभुवने विस्तरचां,
 जाणे कोप्यो कृतांत ॥ जो ० १३ ॥ पनग अस्त्र कर्णे मुक्युं, पार्थे गरुमा अस्त्र तांम; एम अस्त्र अनेक अफल्यां करचां,
 अर्जुने तेणे ठाम ॥ जो ० १४ ॥ शंखचुम निशा निधे, कर्ण मारयो दिनांत; करण पड्ये कौरव तणी, जांगी सधली व्रांत

॥जो० १५॥ आशा बलवंती जगमां लहि, तव शल्य कल्या शनानि, रणांगणमां आविया, हजु हुंशत्रवे जीत्यानि
 ॥जो० १६॥ शल्य ते शल्य सारिखो, वाणनो वरसतो मेह; तिहां युधीष्टार एक थीर रह्यां, थयं युथ अठेह ॥जो०
 १७॥ दीधी दावानल सारिखो, सकुनी आव्यो तक जोय; उत्तर वयर संचारिने, शल्य युधीरे सोय ॥ जो० १८ ॥
 शक्ति मेहलने संहारीयो, दिनाने दल मांहे; एतो ढाल रसाल ए, उदय वदे उठेह ॥जो० १९॥ ॥दोहा॥ शल्य पन्ते
 महा शल्य थयो, कौरवने ते काल; लोक मांहे लाजतो, मुख ढंके मठराल ॥१॥ डुर्योधन तय नार्शनि, अलोप
 थयो ते आप; कोइ सरोवर मांहे जइ पन्थो, अताग देखी आप ॥२॥ढाल॥ चनि आव्यो जाल प्रार्थ प्रवल प्रताप
 ॥ए देखी॥ धौं धौं नगरां वाजता वाहलां, चमयो डुर्योधननो सेन; वन मांहे बोली विधुवा, मुख मेहलता फेन ॥२॥
 माहरा नाथ गुमानी, कुण लेशेरे म्हारे मुज्जो आजुनो; आवी मीलोरे म्हारा भुप अची मानी ॥३॥ ए आंकणी ॥
 खान्ते वग्नो खोलतां, वाकि हां एक लाधी जाल; जल मध्ये तिहां जाणीने वाण॥ सहु बोले समराल ॥मा० ३॥पांमव
 पण पोहोतां तिहां, माहरा वंधु ठधिला, कुण करेशेरे जेने युथ आजुनो, रणमां आव्येरे महारा रणनां रंगिला ॥ ए
 आंकणी॥ तुं अचीमानी राजवी वाण॥ तुं सुरा मांहे सुर माहराण॥ तुज्जे न घटे नासवुं वाण॥नहि रहे नासतां नुर
 ॥मा० ४॥कानु कुलने लाजवे वाण॥पुशातनु करी मलीन माण॥पाणीमां पोढ्यो थको वाण॥ दिसेते महार्दान ॥मा०
 ५॥अर्जुन रुपे आथले वाण॥ कहेने किम रहेवाय माण॥ ए शरोवरनो स्यो आशरो वाण॥ शोखाचे जो समुद्र शोपाय
 ॥मा० ६॥ अथवा तुं जो उंसरे वाण॥ सेनासुं युथ न थाय माण॥ तो मन माने जेहगुं वाण ॥ ते एरुगुं बडोरण

वाय ॥सा० ७॥ जेणे तणे वाते जाणए वा०॥ माथे आव्युं ठे मृत मा०॥ ते माटे दिन तातजी वा०॥ मरेतुं सुरातन
 सहित ॥सा० ८॥ तव तिहां ड्योधन बोलीयो वा०॥ गदा युद्ध नीसने साथ मा० ॥ मानी सरथी मगरस्यो वा० ॥
 नीसरथो कौरव नाथ ॥सा० ९॥ पांढव कौरव सहु सीली वा०॥ बेठा सन्ना बनाय मा० ॥ प्रीम करथो धन वेचने
 वा०॥ मारे गदाना घाय ॥सा० १०॥ मलपरे ते बे मिल्या वा०॥ पोढा पर्वत मांही मा०॥ उंचा निचा उठले वा०॥
 धम्ने धनी धरती घेराए ॥सा० ११॥ रोखारुण थया रातना वा०॥ जोया केणे न जाय मा० ॥ ड्योधन नावो घणुं
 वा०॥ प्रथवीए न मेहली पाय ॥सा० १२॥ लघु लाघवी कला लही वा०॥ लवीण नवी ठेतराय मा०॥ जंघमां गदा जोरे
 शुं वा०॥ प्रीम मारे महाकाय ॥सा० १३॥ भुंए पानीने नीमने वा०॥ मारी पाटुना प्रहार मा०॥ मुकुट नांगी भुको
 करथो वा०॥ पुरव कोप संभार ॥सा० १४॥ उदयरतन कहे सांनलो वा०॥ एतो ढाल रसाल मा०॥ विघन घणां वांका
 ननां वा०॥ आवी पोहोते काल ॥सा० १५॥ ॥दोहा॥ संबंधी जाणी ते समय, बलनद्ध बहु रिसाय पांढव सहुने
 प्रवगुणी, निसरी छरे जाय ॥१॥ पांढव तव पुंते गया, आगे ऋश करेह; बलनद्धने मनाववा, निज मने आणी नेह
 ॥२॥ दृष्ट धुमन खेनीयो, रक्षाने रणमांही; थिर करीने थापीयां, रद्यां रणप्रवगाही ॥३॥ ढाल ॥ शिथल सुरंगी चुनमी
 ॥ए देशी॥ होजी ड्योधनने ते आवी कहे, होजी ऋतवर्म ऋपा प्रथस्थाम; होजी अंत समथे आव्या अमे, होजी
 तुम स्वरुप जोवाने काम ॥१॥ साहीबीया बोलर रेजे कहो ते करुं अमें॥ए आंकणी ॥ होजी तमे तो सहुने तजी,
 होजी सुता मरण शथाए; होजी तोपण आपो आगना, होजी ते काज करुं उठांहे ॥शा० १॥ होजी आपोजो

तुमे आगन्या, होजी तो पांढवना शिवा होजी मुख आंगे आणी मेहलीए; होजी एह अमारी आशीश, ॥शा० ३॥
 होजी वयण सुणी वेधाडुया, होजी आपे धइ उजमाल; होजी वांसो थापीने मोकल्यां, होजी ड्योंधने ततकाल ॥
 शा० ४॥ होजी ते त्रिल्ये रणमां जई, होजी युध करीने जोर; होजी दृष्ट्युमन श्री पंढीया हथी, होजी सुन्य लही
 रणवोर ॥शा० ५॥ होजी पांढवनां पांच पुत्रनां, होजी माथा लेइ पंच; होजी सुह आगलेआणी मेहलीयां, होजी
 ड्योंधन लहि प्रपंच ॥सा० ६॥ होजी शीसु शीर उन्नखी वोलियो, होजी तुमने पढो धीकार; होजी बालहत्या मुज
 आपीने, होजी नारखो अति पापने नार ॥ सा० ७ ॥ होजी मुखे एम कहितो थको, होजी पोहोतो ते परलोक;
 होजी ते पण त्रील्ये किहांइ गयां, होजी पामी आजने शोक ॥ सा० ८ ॥ होजी उदयरतन एम ड्येरे, होजी ढाल
 चनी रसाल, होजी मरण अकाले तेमरे; होजी जेहने पापनो ढाल ॥ सा० ९ ॥ दोहा ॥ चक्किचाय विनये
 करी, बजनडने बहु मान; देइ मनावी पांढवा, आढवा करी रण स्थान ॥१॥ पुत्र हण्यां लेइ शोके अति, कोरवने
 पांढव नंद; स्वजनांदि क सहु साधनां, करि अमृत कार्य नीरानंद ॥ २ ॥ सरसति सरितां तटे, पांढवे मृत काज;
 उजवणीउ पालिया, सर्वेने शुच साज ॥ ३ ॥ इती पांढव कोरव संग्राम चरित्र संपूर्ण ॥ ढाल मुजगी ॥ ड्योंधन
 सेनापति श्रीपम; कियो बलियो जाणी, घुष्ट्युमन पांढव थीर थाप्यो; कटक तणो आंगे याणी होराजा ॥ कि० ६॥
 अत्रेवन कुमार अधीक वजवंतो, सर्वे सुजटने आंगे; रण रंगे रमया रलियायत, ब्रहत बलसु लागे हो राजा ॥कि०
 ७॥ श्रीपमकेतु अत्रेवनू कपि, श्रीपमर होवे; ठेवे केतु श्रीमनी भुपति, देव तमासो जेवे हो राजा ॥कि० ८॥ उत्तर

कुंवरने डखदाइ, सल नरेशर देखी: अजुन कौरवना दल मोने, जीष्म शीस विशेषी हो राजा ॥ कि० ९ ॥ संट शीखनी
 आगे राखी, इंद्र तणो सुत कोपे; जीष्म तनु तव बाणे विंध्यो, प्रभु मरजादा न लोपे हो राजा ॥ कि० १० ॥ तृष्यावंत
 नंदी सुत जाणो, अर्थुन पावे पाणी; संथारो करी स्वर्ग बारमे, हुवो अमर विमानी हो राजा ॥ कि० ११ ॥ झोणाचार्य
 सेन्या नायक, होइ रणमे आवे; आरंजी आरंज घणरो, करतो शंक न पावे हो राजा ॥ कि० १२ ॥ श्री जगदत हरार्यो
 अर्थुन, जयदथ अर्थुन नंदो; जयदर्थ अर्थुन करी प्रतिज्ञा, पाज्यो ततखीण मंद हो राजा ॥ कि० १३ ॥ सात अद्दोहणी
 चउदशने दिने, खिली कौरव केरी; हिम्बा सुत हार मनावी, करणे करीय घणैरी हो राजा ॥ कि० १४ ॥ घृष्टद्युमन आगे
 परपंचे; झोणाचार्य हारयो; अणसण बले पंचम सुर लोके, आढो कार्य सारथो हो राजा ॥ कि० १५ ॥ सेन्या नायक
 करण कियो तव, आस्था अमर कहावे; अर्थुन करण सरीखे लम्बे, हुंश कांइ न रहावे हो राजा ॥ कि० १६ ॥ प्रीम
 प्रचम बलिने आगे, डयोधन बल नाग्यो; दियो परहार गदानो गाढो, आइ धरतिपर लाग्यो हो राजा ॥ कि० १७ ॥
 हारथो कौरव पांभव जीत्या, धर्म जय जग जाण्यो; यादवराय धणुं गह गहिया, पांभव शुं दिन पीढायो हो राजा
 ॥ कि० १८ ॥ राव मलि उठव कियोरे, आया गजपुर मांहि; राज बियो पुगी रल्लिरे, पुन्य तणे बज प्राहि हो राजा
 ॥ कि० १९ ॥ धरती लीधी आपणीरे, आपदा काढि डुर; सत प्रजावे पांभवारे, जोगवे सुख भरपुर हो राजा ॥ कि०
 २० ॥ ए गुण चालिसा सोमी ढालमेरे, कौरव पांभव बाद; श्री गुणसागर सुरजीरे, उषज्यो अहलाद हो राजा ॥ कि०
 २१ ॥ ॥ दोहा ॥ एक दिवस हरीनी सजा, इंद्र सजा सम जोय; वन बना राणा राजीया, पावे शोभा सोय ॥ १ ॥

तुमि आगन्या, होजी तो पांमयना विश होजी सुख आगे आणी मेहलीए; होजी एह अमारी आशीश, ॥शा० २॥

गव्य करे मनमें धरुंरे, हुं मोटी संसारे जाणी, पांच पुरुषनी नार वखाणी; मव आवेहीसु अती मती, न्याए रहे रस
रंगे राती ॥१॥ जी नारवजीरे, कवली तरुनी उपसारे; जाणी काल विणास, फल मुके तिम डुपदरे; पद्मीयो चाहे
पास, पद्मीयो चाहे पास ते एतां; मुजने तो अण आवर देतां, तो हुं जोरे विणसुं काम; एम कही रुपी चाटयो ताम
॥ जी० २ ॥ सोल हजार ए देशमारे, वरते हरीनी आण्य; पद्मोचायुं तेही स्थानकरे, जीहां न चाले हरी प्राण;
जीहां न चाले हरीनो प्राण, सोधु सोजइ निश्चल ठाण; द्वीप समुद्र उंधवी जाय, नारद करवा काल उमाय ॥जी०
३ ॥ द्वातकी खंम नरतमारे, सुर कंकाह उवाह; पद्मनात्री राजा जलोरे, सात सयात्रय नाह; सात सयात्रीय केरो
नाह, आपुणपे जाणे गुण गाह; नारी निरोपम शुं सुख वाशी, नोग पुरंदर लिलवी लाशी ॥जी० ४॥ नारद चाली
आइयारे, महील मांही मनरंग; राजा राणी साचवेरे, शेवा धर्मसु चंग; शेवा धर्मसु चंगपणरे, अति आवरशुं रुप न
णरे; मुज अंते वर सरोखो रुनो, किहां ए विठो मती न्नांख्यो कुनो ॥ जी० ५ ॥ नारद न्नांखे रायजीरे, स्यो जुवो
अहंकार; कुया मीमक सारीखारे, तुं दिसंत अपार नरेशर, अवर न वीगी नार अलवेशर; जीणे
हि जेतो देख्यो पेर्यो, ते तोही मन वात विशेख्यो ॥ जी० ६ ॥ जंबुद्वीपे जाणीएरे, खेत नरत सुस्थान; हर्षाणा
पुरमे हर्षशुरे, पांमय नारी प्रधान; पांमय नारी प्रधान कहाये, पंचाली जगमें जस पाये; तेहने पग अंगुते आणी;
लाखमें नगरे नाचे तुज राणी ॥जी० ७॥ एम कही रुपीजी गयेरे, नृपने तो रढ लागी; विपया वसे आतुर थयेरे,
देखणानी मती जागी; देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन किधी ताम; सुर न्नांखे सा अवर न चाहे, शुं कर

स्यो इण साथ उमाहे ॥जी० ७॥ नृपनो हव जाणी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत; आपी नींझा आकरिरे, किधी
 अधीक अचेत; किधी अधीक अचेत जेवारे, पुरव संगीत काम समारे; राजाना मंदीरधी लीधी, पद्मगान्नीने जइने
 दिधी ॥जी० ९॥ महील मांही अति नलोरे, ब्रह्म अशोक उदार; आणी राणी रुपदिरे, किधो अति अवीचार; कि
 यो अति अविचार विमासे, राजाने एम वात प्रकाशे; ए कामथी तुं जाणजे राजा, जग वाग्या अपकीरती वाजा
 जी० १०॥ हवे मुजने मत तेमावजेरे, एक हुंहुं तुज आज; सती शिरोमणी ए खरीरे, धिरे करजे काज; धिरे करजे
 काज निवेरो, एधी मकरजे हव घणोरो, सुर गयो एम कहींने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल कहाणी; श्री गुणसागर
 सुर वखाणी ॥जी० ११ ॥ ॥दोहा॥ जागी राणी रुपवी, जाण्यो ए अपहार; आरतीवंती अति खरी, मनशुं
 करे विचार ॥१ ॥ हथीणापुर किहां रहो, सासु ससरो जेव; मुज प्रितम पांनव किहां, सुखरो कारण तेथ ॥ २ ॥
 किहां ते मंदीर मालीयां, किहां रत्नाली सेज; किहां दाशी मलीयागरी, वालपणानो हेज ॥३॥ ए हिंमोलो माहेरो,
 पण नवी ए मुज वाग; कोइ वैरी मुज अपहरी, एम चिंतवे महा जाग ॥ ४ ॥ जलंजा देइ आकरा, राणी विविध
 प्रकार; दैवम उठो उतरे, आज अठे तुजवार ॥५॥ नृप अंते उरशुं चली, आणी जणावे आप; केलवणी करतो
 घणी, ताम प्रकासे पाप ॥६॥ ढाल १४३ मी ॥ अथ रागनो वाचगीत देशी वंदलीनी॥ राजा कुमरी प्रते बोले,
 नारी कुण तारा तोले हो; सुंदर वयण सुणो, ते नगरी मांही सारी; मृगानयणी पदमनी नारी हो ॥सुं० १॥ तुज
 रूपे रंजा हारी, तुज नयनाकी वलीहारी हो; सुं०॥ तोरी वात कही ब्रह्मचारी, रचीपची विध आप समारी हो ॥सुं०

२॥ तुज कारण देव मनायो, धिजे उपवासे आयो हो सुं० ॥ तोने तिहांथी आणी, एही साची सहनाणी हो ॥ सुं०
 ३॥ मनमे मतको मर आणो, मुज नगरी सबलो थाणो हो सुं० ॥ रुण राजा रावण राणो, मुजथी को नवि तंपराणो
 हो ॥ सुं० ४॥ हमसुं हर ठोम हगिली, राजकुमरी रंग रंगिली हो सुं० ॥ माननी मन मान नियारो, मुज विनतनी
 अवधारो हो ॥ सुं० ५॥ सहू राज तणी धणीयाणी, तुज करी थापुं पटराणी हो सुं० ॥ मुज धरे पेहली जे राणी,
 तुज आगल आणशे पाणी हो ॥ सुं० ६॥ धन्य दिन दरशण पायो, धन तुजसुं प्रेम लगायो हो सुं० ॥ जिलापति
 नाम धराठ, गज गमनी विरह गमाठ हो ॥ सुं० ७॥ मुज देखी कुमरी तुं लाजी, हवे क्रिण वाते तुं राजी हो सुं० ॥
 मन गांठ ठोमी कर वोलो, गुंघट पट परहो खोलो हो ॥ सुं० ८॥ कुमरी राजा प्रते चासे, व्रत राखण एम विमासे
 हो सुं० ॥ जे हुवे शिपल अटंको, तस वाल न होवे वंको हो ॥ सुं० ९॥ ॥ दोहा ॥ काल खेपणा कारणे; देवी
 करे अरदास, लागी मुवानो नहि समो, मागी लीया, खट मास ॥ १॥ एतला मांहि बाहुरं, धांशो देव मोरार; नहि
 तो वश तुं ताहरे, राजा आरति नीवार ॥ २॥ पांमव वजने हरी तणां, रथ जज धलमे जाय; मनोरथ अनुसारयो,
 किंहीहि न खजाय ॥ ३॥ ढाल १४२ मी ॥ राम पधारीयाजी, रामण करे गेह ॥ ए देशी ॥ धन धन २ सती
 जी, आपुण राखे एम; काल खेपणा करे वणीजी, नीरवाहे निज नेम ॥ ध० १॥ साठ सहस वरसां लगेजो, सुंदरीए
 तप कीध; काया करी अती डवलीजां, प्रभु पासे व्रत लीय ॥ ध० २॥ सतिया मांहि सीरोमणीजी, सत्यवति त्रीय
 देख; राजा रावण आगलेनी, राखी टेक विशेष ॥ ध० ३॥ सेवश तो अति सोहिलीजी, शिलं तणो सुविचार; पण

तो परवश दोहिलोजी, राखेवो आचार ॥ध० ४॥ लेखण खटीका कामनीजी, हाथ पराड जाय; साबत पाठी ना
 बहिजी, लागे वचन ए प्रांहि ॥ ध० ५॥ रागी तो रावण घणोजी, उति राणी ताम; तोपण शियल नव खंभीयोजी,
 त्रिनोवनमे शाबास ॥ ध० ६॥ गुफा मांहि एकलीजी, राजुल राणी आप; पमत्तो देवर उधस्थोजी, शीयल गुणे थिर
 थाप ॥ध० ७॥ चेना नुपतानी सुताजी, संतानिक निज नार; एवंती पति डेतख्योजी, सुजस घणो संसार ॥ध० ८॥
 कष्ट पद्मीया कामनीजी, न तजे नेम लगार; मोटा माणस तेहनेजी, प्रणमे प्रात अपार ॥ ध० ९ ॥ दो डपवासे
 पारणोजी, आंबील तपसुं प्रेम; करति वरते डुपदिजी, सानीध होवे केम ॥ध० १०॥ युधीष्टर नृप जागीयोजी, देवी
 न दिसे ताम; अरहुं परहुं सोधी घणुंजी, सुध न लाधी जाम ॥ ध० ११ ॥ आज अम्हारा राजमांजी, कोन करे
 अन्याय; लोह जमथो शिर केहनोजी, कुलहिणी तथे जाय ॥ ध० १२ ॥ बाप कन्हे आया चलिजी, मांखी सयली
 वात; पाखरीया नम मोकल्याजी, वसुधा मांही विख्यात ॥ध० १३॥ सुनट सहु फीरी आवीयाजी, खबर न हुइ
 कोइ; राजा पांफुजी खरोजी, आरतीवंतो होय ॥ध० १४॥ कुंती शुं पांफु कहेजी, द्वारामती तुं जाइ; वात जणावो
 मोरारनेजी, जीम ए काम सराय ॥ध० १५॥ बेंतालीसा सोमी ढालमंजी, कुंती करवा काम; श्री गुणसागरजी कहे
 जी; किम नेटे नृप साम ॥ध० १६॥ ॥ दोहा ॥ कुंती आमंवर घणो, बेशी वम जगराज; आवी नगरी द्वारीकां,
 कारीज करवा काज ॥१॥ आप हरीसा वागमें, डत मोकल्यो एक; खबर करण नत्रीजने, प्रजु तव करे विवेक ॥
 २॥ ढाल ॥ १४३ मी ॥ शियल सलणी मयण रद्या सतीरि ॥ए देशी॥ शोना विविध प्रकारशुरे, किधी

नगरीमें ग्राहीरे; जण१ जय१ उचरेरे, बाजा वाजता उठाहीरे ॥१॥ नतीज भुवा शुं सादरोरे ॥ ए आंकणी ॥ येसारा
 विधी साचविये, हय गय रथ पायक साररे; वेसी वने गजराजीएरे, साथे सहु परीवाररे ॥ न० २ ॥ देतो दान महा
 बलिये, हरजी हरखे आवंतरे; दरशण देखी छरथीरे, प्रजुजी सुख पावंतरे ॥ न० ३ ॥ हाथीथी तव उतररीरे, प्रणमी
 जुवाना पावरे; नगति करी नल जावसुरे, चित्तनो चोखो चावरे ॥ न० ४ ॥ जन्म क्रतारथ माहुरोरे, माहरो जीव
 सो उल्हासरे; दिवो दरशण ताहरोरे, सुफल हुइ सव आशरे ॥ न० ५ ॥ कंठे लगायो प्रेमसुरे, आणी अधीक
 जगीशरे; फूजी अंग नमायहिरे, तव जुवाजी विए आशीपरे ॥ न० ६ ॥ चिरंजीवे चिरनंद जेरे, चिर लगी पालजे
 राजरे; चिरं आश्रित सहु लोकनारे, प्रजु पुरे वंठित काजरे ॥ न० ७ ॥ जुवा नतिजो एकठारे, वेवा वरु गजरायरे;
 नगरिमें पाठधारीयारे, धर१ हुवो उठायरे ॥ न० ८ ॥ नोजांजुं नगति महारे, नणदिसुं नेह उवाररे; बुहतेर सहस
 सोह्यामणिये, प्रणमे हेत अपाररे ॥ न० ९ ॥ हलधरने हरजी तणिये, नारी अधीक छमेवरे; विसामणा विधी साचवोरे,
 टलियो सयलो खेदरे ॥ न० १० ॥ नोजन नगती करी खरीरे, हरी पुहुं आगमनी वातरे; वात सुणंता विशेषधीरे,
 हरी हांसो हिए न समातरे ॥ न० ११ ॥ एकीजो हुं एतलिये, केरो थाउं रखवालेरे; ए पांम्य पांचे महा बलिये,
 नरखाणी एकहि वालेरे ॥ न० १२ ॥ क्रश्न कहे फइ सांचजोरे, मरुतो चिंता लगाररे; पतालथो पेदा करेरे, सोपुं तुज
 सुखकारे ॥ न० १३ ॥ आसासना विधी धणीरे, थापी बहुला मालरे; पोंहचावि हथीणा पुरेरे, शा आवी ततकाजरे
 ॥ न० १४ ॥ क्रश्ने साद फेरवियोरे, त्रिहुं खंम खबर कढायरे; जाधी नहि इहां सुपविये, हरी मन कांखो थायरे ॥

ज० १५॥ तेतालिसा सोमी ढालमेंरे, हरजी करवो ए कामरे; श्री गुणसागर सुरजीरे, कहे मोटानो मोटो नामरा॥ ज०
 ॥१६॥ ॥ दोहा ॥ एतले नारद आवियो, दियो बहु सनमान; अपरति अति उतावली, पुढे श्री जगवाना॥
 १॥ गाम नगरपुर पाटणां, फिरता नव३ देश; किहां दिवी तुमे डुपदि, बात कहो शुं विशेष ॥१॥ सुरकंका नगरी
 नली, पद्मनाम्नी नृप गेह; में पंचाली सारखी, दीवी पण संदेह ॥३॥ हरी चांखे नारद प्रत्ये, थारा काम मुनिंद;
 एम कहि उठी गयो, नीश्वे लख्यो नरंद ॥४॥ ॥ ढाल १४४ मी ॥ वावा कीशनपुरी ॥ ए देशी ॥ माधव
 कागल लखीयो नलो, गजपुर नगर अठे गुण निलो; पांढू भुपति पांढव जु धणी, कागल मांहि लखी हेत नणी
 ॥१॥ मेरो जाग्य नलो मेरो जाग्य नलो ॥ ए आंकणी ॥ उत तेनी हरी कागल नृप दियो, करी जुहार तेणे
 उंचो लियो; डुपदि खबर कहेजे सुखदाय, हथीणापुर तुं वेगे जाय ॥ मे० १ ॥ धार्तिक खंम इहांथी डर,
 अमर कंका नगरी धनपुर; पदमनाम नृप महील मुजार, तिहांठे डुपदी राज कुमार ॥ मे० ३ ॥ कहे जे किसन
 हुवा अप्रसार, साथे लशकर अपरंमपार; पुरव सागर तट वैताल, तिहां चाल्या वागी करनाल ॥मे० ४॥ जाजो
 कटक साथे लावज्यो, अम पासे वेगा आवज्यो; उत शिख लेइ चाल्यो गजपुरे, अनुक्रमे गयो नगरी परसरे ॥मे०
 ५ ॥ पंदुरायने किहो जुहार, कागद दियो हरख अपार; वांची कागद हुवो संतोप, पांढव लस्कर करी बहु जोष
 ॥मे० ६॥ हवे नारायण जोर मंजाण, गाम नगर करता मेजाण; अनुक्रमे दरीया कांठे गया, नली वाम जइ मेरा
 दिया ॥मे० ७ ॥ पांढव आव्या मननी रली, हरी दिवा मनवांठा फली: मांहो मांही मल्या सस नेह. जीम हरखे

पांढव सुणो, रो उना मती फुरोरे; हवे नाशी किहां जाइसो, बारकां तो रही डुरोरे ॥पा० १३॥ एही वचन मुज
 मानजो, डशमन डर नसाबुरे; पदमनाचने जीवतो, अणुतो तास बंधाबुरे ॥पा० १४ ॥ पित्तालीसा सोमी ढालमें,
 सनमुख उठ्यो सोइरे; श्री गुणसागर देखजो, हवे कुण तमाशो होइरे ॥पा० १५॥ ॥दोहा॥ कुज करण माधव
 चढ्यो, करी आम्बर जोर; पदमनाच सेना सजी, उन्नो ए कणकोर ॥ १ ॥ आज अमारो जय होशे, पदमनाचनो
 नाश; एम कही रथ उपर चढ्या, दारुक सारथी पास ॥२॥ ढाल १४६॥ मी॥ ॥ देशी कमखानी॥ धजा २५;
 फरहरे देखी वेरीन्दरे, एक रथ सहस रथ आंखी दिसे; जाणे गढ नेलशे कोनी सुन्नट मेलस्ये, किसन लोचन अ
 हुंरीसे ॥१॥ हवे गढ नेलवा चढ्यो वसुदेव सुत, सुर जीम तेज दिपे सवायो; अमर कंकपुरी रतन माणक चं
 नप करी थिर हरी कोण आयो ॥ह० ३॥ पांच पांढव तणी वात श्रवणे सुणी, रोस धरी रथ चमी क्रश्र अत्रः
 डरथी अटकल्यो गाम नृप खलनल्यो, ए कुण सामत तुम सबल दावे ॥ह० ३॥ देव दिते पम्था रथेरथ आथमः
 क्रल मुख हाथशुं संखवायो; तिसरो जाग लशकर तणो घटि गयो, मिट गयो जुप बलतो न आयो ॥ ह० ४ ॥
 धनुष सारंग मनरंग हरी कर धरी, पण वढण काज तिणवार नावो; जाग त्रिजो कटक सुन्नट पण चातस्या, प
 पण ठोमीया हुतो नावो ॥ह० ५॥ अमर कंका जमी नगर जागज पमी, खलचट्या लोक सहु एम जांखे; भुप
 लंपटी न्याइ प्रभुता घटी, नास्तां जागतां कवण राखे ॥ह० ६॥ अमरकंका जीहां क्रश्र आवे तिहां, रथथी उत्तग
 कोट देखे; ढाहि ढम ढेर करी सुसहि ततखिणे, रूप नरसीहनो करी सुविशेषे ॥ह० ७॥ हवे क्रश्र नरसीहनो

सबलो कियो, अमरकंकापुरी कोट पामयो; वम वमा मेहेल तो रण पमया धमहमी, पोलनो बार हरी आप उयामया
 ॥ह० ७॥ अमरकंका धणी चित चिंता घणी, एकले कवण ए काम कियो; कटक नाशी गयो, कोट पण इण लियो
 कोटि दे राखीए आप जियो ॥ ह० ८॥ आप अलोच करि हियो निज वाम करी, डुपदि पासे भुपाल आवे; माहरी
 धर्मरी बेहेन मुज रावले, सुमती दे ताहरी दाय आवे ॥ ह० ९० ॥ डुपदि कहे सुण वाणी कल्याण मुज, पदम तुं
 रदन करे देश सारो; सार जंमरथी लाल बहु माल ले, लाग्य हरी पाय जो नाग्य थारो ॥ह० १०॥ दिन दिवो धरी
 लेइ अंते उरी, त्रणो दांत धरी साथ मोरे; मन हठ परहरी हाथ जोमी करी, राख ले माधवा शरण तोरे ॥ह० ११॥
 हुं कहुं तिम करो क्रश्चथी मत मरो, चरण लागी करी एम ज्ञाखो; सामी नो शरण संसार तारण तरण, मुज गुनह
 माफ कर माम राखो ॥ ह० १३॥ क्रश्च बोलया तव बुटस्यो किम हवे, बहिन तें माहरी केम आणी; मारी सत खंम
 जुज दंम शीर मुंम करी, करुं तेम बेल वहे जेम घाणी ॥ ह० १४॥ हवे मुजने मल्यो कोप सयलो टल्यो, जा घर ताहरे
 पदम पापी; डुपति लेइ करी तिहां शक संचरी, द्वारकां गमनरी वात थापी ॥ ह० १५ ॥ क्रश्च पांमव मिल्या, डुपदी
 लेइ वल्या, बहु रथ पाबली राते चाल्या; नाग्य मोटे क्रश्चननाहि कोइ वसन, घणा पकवान लेइ साथ घाल्या ॥ ह०
 १६॥ डुपदी शिल बजे किसन शोभाग्य बले, पांडु सुत नाग्य बले विजय पायो; पारको वध धावली पारकी, पार
 की जइ जलनीधिमैं सवायो ॥ह० १७॥ ढाल तेंतालीसा सोमी सोह्यामणी, डुपदी शिल शकी काज सरीयां; श्री
 गुणसुरी गुरु नवीकने शिखवे, शिल केमे वृत सवलाही धरीया ॥ह० १८ ॥ तिणे काले तिणे समे,

घातकी खंभमोक्षार; पुरव धातकी नरतमें, चंपा नगरी सार ॥१॥ नगरी बाहीर उद्यानमें, राजेश्री जैनराज; कंपी
लपर मुख परपदा, वेठी अधिक सकाल ॥२॥ ढान १४७ मी ॥ इमर आंवा आंबलीरे ए देशी॥ जीन दर
सन मन उलसेरे, आणंद अंग न माय; जीन देशना सहको सुणेरे, सुणता आवे दाय ॥१॥ जीनेशर एम जांखे
उपदेश ॥ ए आंकणी॥ तिण बेला सुणी तिहारे, शंख शब्द घननाद; चित्त चमक्यो नृप चित्तवेरे, मन उपनो विख
वाद ॥ जी० २ ॥ कोइ नवो इहां उपनोरे, वासुदेव बलवंत; मुज सरीखो जाणीएरे; जीण बले अचल चलंत ॥ जी०
३॥ हरी पुठे जीनेते नमीरे, शंख शब्द सर्वंध; जीन बोलैथें मत मरोरे, पदमनाज प्रबंध ॥ जी० ४ ॥ एक खेत्र ए
कणसमेरे, चक्री जीन बलदेव; वासुदेव पण जोमलेरे, नवी उपजे नितमेव ॥ जी० ५ ॥ पदमनाज शुं झुज तारे,
किसन वजायो शंख; ते सांचली तुज उपनोरे, वासुदेव निशंक ॥ जी० ६॥ कंपील वात सुणी हरखीयोरे, टाल्यो
मन संदेह; जीनवादी एम विनवेरे, क्रम मिलण मुज नेह ॥ जी० ७॥ बलतुं मुनीशुं व्रत नणेरे, वासुदेव सुण वाण;
हुउं न होशे हुइ नहीरे, ए तुं निश्चे जाण ॥ जी० ८॥ हरीशने नवी मलेरे, जो करे कोम उपाय; देखीश ध्वज हरी
रथ तणीरे, सागर तट तिहा जाय ॥ जी० ९॥ प्रनुने मांझी गज चमीरे, कंपील चाल्यो ततकाल; सा गर विच दिवी
तिसेरे, धजा पित शितलाल ॥ जी० १०॥ शंख बजायो मन रलीरे, किसन सुणो अरदास; एक वार देदार दियोरे;
मुज मन पुरो व्याश ॥ जी० ११॥ हरी पण शंख बजाइउरे, शंखे शंख मिलंत; घणी नोमी अमो आवीयोरे, रथ गाढा
न बलंत ॥ जी० १२॥ हइख धरी पाढो बल्योरे, सुर कंका चणी जाय; पद्मनाज पण साहमेरे आवी लण्यो पाय

॥जी० १३॥ पद्म ज्ञानी तव पुढीयोरे, किस्थो नगरी प्रकार; कुण वैरी ए तुजनेरे, संताप्यो निर धार ॥ जी० १४ ॥
 स्वामी ताहरी साहीबीरे, लेवा कारण आज; हरी आपुण आव्यो हुतोरे, में आय्यो तस वाज ॥ जी० १५ ॥ कंपीज
 क्रोधतुर थयोरे, सांजली एहवी वाण; आणा थकी अलगो कियोरे, पाम्यो डख असमान ॥ जी० १६ ॥ तेन्नावी तस
 नंदनेरे, थाप्यो नरपती पाट; राजा निज स्थानक गियोरे, टाली डख जचाट ॥ जी० १७ ॥ सम तालीसा सोमी कहीरे,
 ढाल अनोपम एह; गुणसागर जीन वाणीएरे, उपजे अधीको नेह जी० १८ ॥ दोहा ॥ मारग जातां एम कहे,
 पांमवने हरी राय; सुस्वीक सुर नेटी करी, हुं आवीश सुखदाय ॥१॥ यान पात्र तरी जानवी, लेजो जइ विआम;
 प्रवहण पाढो मुकज्यो, मुफ कारण अन्निराम ॥२॥ गंगाने त्रट आवीया, पांमव पंच उदार; ढवी राणी डुपदी, रथ
 वाहन अति सार ॥३॥ नावा मोटी मनोहरु, वेठो सघलो साथ; खेम खुशल जल उत्तरया, चित चिंतवे नर नाथ
 ॥४॥ ॥ ढाल १४८ मी ॥ इण पुर कंवल कोइ न लेशी ॥ ए देखी ॥ चित चिंतवे तव नर नाथो, एक
 मतो ठे सघलो साथो; होण हार मेढ्यो नवी जाय, सघलानी मती सरखी थाय ॥१॥ कुंम कुंमनो जुदो पाणी,
 तुंम तुंमनी जुदी वाणी; मस्तके मस्तके मती ठे जुइ, पण सहुनि एकज हुइ ॥२॥ सहु सयाणा सोंचो कांही,
 ज्ञावीनो बल मोटो प्रांही; पांमवजी सरीखा जो चुके, सुमति सरोवर तो कुण हुंके ॥३॥ हांसि मिसे उपाव उठावे,
 सांतकमें वैताल जगावे; एह अजाणपणो जग मोटो, जाणी बुजी खाजे खोटो ॥४॥ नाव ठिपावे एम विचारी,
 कितनो एक बलवंत मोरारी; हांसो काम विणा सणहारी, हांसाथी चिम थाइ पीयारी ॥५॥ स्वाम तदा सुरने संतोखी,

पत्नी परचल पोखी; श्री गंगा तटी चाली आया, नाव न देखे तव हरी राया ॥६॥ एक हाथे रथ खेदु
 पोता, बिजे हाथ तरे जल थोम; पोट नबिनो जोयन वासठ, ते पण जोजन देव तणो पट ॥७॥ जल अथविचे
 आया जामो, थाक्या अति न तराड तामो; चित त्रितरे ए चिंत्या थापी, पांमव तो बलवंता आपी ॥८॥ नाव
 चिंत्या एपयरीउपाणी, हय स्थने नीरवाहे राणी, एह अचंचो विसे ज्ञारी, किम आया अरी आगें हारी ॥९॥ जाणी
 हरी चिंत्याए चंप्यो, गंगा देवीए विधो थाह, हरी मन उपज्यो अधीक उठाह ॥
 ॥ १० ॥ पाणी पयरी कांठे लागे, पांमव आयी उन्ना आगे; श्री हरी पांमव प्रेम अपारो, अथ उपजे मन मांदि
 विकारो ॥११॥ इसण तो हरीनो नचि विसे, पांमवानो तो विसया विशे; जुगमतो धोयंत कुहाना, न रहे साजो होइ
 अति जाना ॥१२॥ अमृतालिसा सो ढालतुं जांसी, चंव सुरज वो विधा साखी; श्री गुणसागर सुरी प्रकाशे, मति
 सुस्या नर गाढा घासे ॥ १३ ॥ ॥ बोहा ॥ क्रत्र कहे पांमव सुणो, तुम बलवंत अपार; गंगा जल भुज बले
 तरया, नारी क्षिया वली लार ॥१४॥ जल अथविचे आवियो, दुं अति थाक्यो ताम; गंगादेवीए माहरी, सानिध करी
 सकाम ॥१५॥ तो हमथी बलवंत तमो, जांखे हरीस सनेह; पद्मनाभ नृप आगले, वारधा एह संवेद ॥ १६ ॥ ढालनी
 गाथा ॥ सरला जाखे सरली वाणी, नचि मेले कोइ डुजी आणी; आहल्या जांख्यो हरी मम जार, गंगा वाख्यो
 हर भरतार ॥१७॥ ॥ बोहा ॥ कपट तजी पांमव जणे, आणी सरलो जान; जोया तुम बल कारणे, हमे तपायी
 नाव ॥१८॥ ॥ ढाल १४५ ॥ मी ॥ मारा घणुरे पीयारा प्रभुजी ॥ ए वेदी ॥ निस्वणी एह

रास नराया हा कुमुदा; उ पउ अग्या पुऊ आइ, बालपणेथी जेला, वस्तां थइ एवमी वेला हो ॥ कु० १ ॥ गोवरधन
 गीरीराज, में उपामयो बल काज हो कु० ॥ वली बालपणे महा नाग्य, में नाथो कालंजरी नाग हो ॥ कु० २ ॥ वली
 जरासंध लमाइ, हुइता पण अधीक वमाइ हो कु० ॥ तप अठम करी में साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
 कु० ३ ॥ बिल खलवण कहाय, उलंधी जीत्यो वमराय हो कु० ॥ पदमोतर जगमो जेथ, तिहां हुता आपुण सहु
 सेथ हो ॥ कु० ४ ॥ लमतां पदमोतर जंग, तुम प्राणी आव्या मुज संग हो कु० ॥ देखी मुऊ बल कावो, नृप पदमो
 तर गीयो नावो हो ॥ कु० ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेवो मेहेल मांही राजा हो कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रूप,
 तिहां आवी नम्यो ते भुप हो ॥ कु० ६ ॥ ते बल नाव्यो तुम दाय, हजी केतो बल जोवाय हो कु० ॥ एतो आव्या
 पुन्य पसाय, ऋश्र जाता तुमारुं शुं जाय हो ॥ कु० ७ ॥ तुम प्रत्ये मली तुम नार, ऋश्र वाट जुवे बत्रिस हजार हो
 कु० ॥ आपुण सरियां काम, तारे कुण बिचारो साम हो ॥ कु० ८ ॥ पण एटली तो नचि जाणी, जे रोशे हरी
 पटराणी हो कु० ॥ ऋश्रनी वाट विचाल, जोतां हुसे बालगोपाल हो ॥ कु० ९ ॥ जात जो गंगा मोजार, तो कुण
 आपत समाचार हो कु० ॥ नीगुण नीवोर सुखे मीत, तुज रुदय कठण अति धीत हो ॥ कु० १० ॥ तुम वात सकल
 में लाधी, तुम पांचे वना अपराधी हो कु० ॥ हवे तजवो तुम्ह साथ, एस प्रांखे श्री लडुनाथ हो ॥ कु० ११ ॥ न कलु
 वातके काज, तुम्ह किधो अधीक अकाल हो कु० ॥ तुम्ह नीलेहि थया आज, मुज लेखे न किधां काज हो ॥ कु० १२ ॥
 लोह दंम उपामीने आयो, केशवजी कोपे नरायो हो कु० ॥ ए गुण पचास सोमी ए ढाल, गुणसागर कहे सुविशाल

हो ॥ कु० १३॥ ॥ दोहा ॥ जुप जुजंगम सारिखा, जालविया सुख होय; आसंगे असोह्यामणा, पांमवन्
 जोय ॥१॥ केशव कोपे परीयो, देखी थरहरी बाल; आम्नी फिरी उन्नी रही, नांखे वचन रसाल ॥ २ ॥ ढाल
 मी ॥ रायजी अमने हिड आणा राय गराशीयारे लोल ॥ ए देखी ॥ ऋश्रजी तुमने कहुं करजोम के, सुए
 विनतीरे लोल; प्रचुजी नहि कोइ तुमचो दोशके, निवोर थया मुज पतीरे लोल; प्रचुजी तुमशुं एवमी हाशके,
 केम घंटेरे लोल; प्रचुजी लख्या ठवीना लेखके, मटाम्नाया नवि मटेरे लोल ॥ १ ॥ प्रचुजी दोश नहि तुम क
 फिरतार एहि गमेरे लोल; प्रचुजी ठोरु कठोरु थायके, मावितर तोहि खमेरे लोल; बंधव तुमची मोटी लाजके,
 विचारीयेरे लोल; प्रचुजी विनयु गोद विठायके, रोस नियारीएरे लोल ॥२॥ प्रचुजी तुमे मोटा माहाराजके, म
 जाणीयेरे लो०॥ प्रचुजी पोतानो परीयारके, विलमं आणीएरे लो०॥ प्रचुजी मोटा होय दातारके, बोले मुख म
 लो० ॥ प्रचुजी मोटा न कथे आजके, करे अण दिवमुरे लो० ॥ ३ ॥ डुपती तारा पतिना बोलके, खीणर सां
 लो० ॥ डुपदी इणे कीधा जे कामके, बेरी पण नवी करेरे लो०॥ डुपदी मारी एकज वातके, गदा पाठी नवी
 लो० ॥ एहने वन देखामुं आजके, हरी मन रोस धेरे लो० ॥ ४ ॥ राणी बिलखाणी तेषीवारके, आंखे आंसु
 लो० ॥ ज्राइजी एवमो मकरो रोसके, उन्नी एम टलवलेरे लो० ॥ प्रचुजी फइकुंताजीनी लाजके, विलमां आ
 लो० ॥ प्रचुजी पंढुराय मयायके, मनमां जाणधारे लो० ॥ ५ ॥ प्रचुजी गौब्राह्मण प्रतिपालके, सहु तुमने कहेरे
 प्रचुजी तन्ह शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे लो० ॥ प्रचुजी नीवोर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे

प्रभुजी कठण करमनी वातके, वांक केहनो नहिरे लो० ॥६॥ प्रभुजी माणस होशे एह तो, वात घणी थड्डरे लो० ॥
 प्रभुजी बांहे ग्रह्यानी लाजके, राखो हेत लड्डरे लो० ॥ प्रभुजी करणी तणा कल एहके, तुमची बेनफिरे लो० ॥ प्रभुजी
 पुरव नवनो पापके, तास वेला पद्रीरे लो० ॥ ७ ॥ प्रभुजी एवमी तुमची धातके, हवे हुं कीम सहुरे लो० ॥ प्रभुजी
 अखंम एवातण राखके, जाणुं शुं कहुंरे लो० ॥ प्रभुजी राखो एटली लाजके, बोरु करी डोमवोरे लो० ॥ प्रभुजी सेलो
 मननी रीसके, वेला रथ जोरुवोरे लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी यड्डराथके, मनसुं विचारियोरे लो० ॥ हवे मलियो
 अबला अंतके, एम मन वालियोरे लो० ॥ केशव डपामी लोह दंभके, कोप करी तिहारिरे लो० ॥ पांचे रथ किया
 चकचुरके, पांमव उन्ना जिंहारे लो० ॥ ९ ॥ ज्ञांखे रोस धरी हरी रायके, आण साहरी वेहरे लो० ॥ पांमव तुमचो
 सहु परीवारके, रेहवा नवि लहरे लो० ॥ रेहेज्यों डष्ट थकी तुमे डरके, पासे मति आवज्योरे लो० ॥ प्रभुजी मन फाटो
 न संधायके, सहि एम जाणजोरे लो० ॥ १० ॥ प्रभुजी रथ मर्दनने तामके, कोठो वसावीयोरे लो० ॥ प्रभुजी सेन सकल
 तेथीवारके, सनमुख आवियोरे लो० ॥ प्रभुजी द्वारापुरी सहु साथके, पोहोत्या ते सहिरे लो० ॥ प्रभुजी एकसो पंचासमी
 ढालके, गुणसागर कहिरे लो० ॥ ११ ॥ ॥ दोहा ॥ पांमव प्रभु सोचे घणुं, कीयो किसो कीरतार; विगमी वात विशेषथी,
 खीज्यो देवसोरार ॥ १ ॥ जेह नुसेहे जग नुसिये, जेह रुसे जग रोस; सोतो प्रभुजी पामीए, नुंसाहि संतोष ॥ २ ॥ पांचे
 पांमव डुपदी, तिहांथी आया गेह; पांमुराय कुंता मलि, जाग्यो अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्यां अंगज देखने, पुढे पांम
 विचार; कुंति बेवी सांजले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥ ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगने नवि जावुं हो

तन कीजीए ॥ ए देशी ॥ पांम्व बोल्या बोल, माता पीताजी हो एक वचन सुणो, श्रीपति सेति प्रीत, जाजेरी हुती हो सुख पण हुतो पणो ॥१॥ संप्रती रुठो जाण; कहंने जइ कहीए हो देशवटो वियो; वचन कहां वसवीस, ते तो हम साले हो एक जाणे हियो ॥२॥ पुढे पांनु नरंद, ए किम खटपट होथें हरी शुं करी; सायर कांठे जाय, हरी पाय लागी हो उजा हेत धरी ॥३॥ सुस्थीत सुर थाराय, श्रीपती साथे हो खट रथ छेइ छरी; पहुता पेले पांर, जर्हां कण विसे हो थमर कंका पुरी ॥४॥ माधव कियो जुबोल, जुफ करीने हो कटक जगामीयो; कियो नरसंग रूप, गढमढ पानी हो पदम नसामीयो ॥५॥ जुपवी आपीने विध, हरी पगे लागी दो पदम पाठो बल्यो; रथचमी पुरण प्रित, जलधी वलंधी हो हरी सुरने मल्यो ॥६॥ थम्ह दिधो ध्या देश, गंगा जइने हो पार तुम्हे करो; हुं पण थाइल वेग, जाइली पांम्व हो मन थिरज धरो ॥७॥ हम पण गंगा आय, नाव चमीने हो गंगातट लल्यो; हरीनी जोतां वाट, तळ तले वेठां हो हियमी गह गल्यो ॥ ८ ॥ एतले किसन नरेश, शिख करीने हो सुर शेती बली, आया गंगा तिर, निर निहाले हो तरली अटकली ॥९॥ नाव न लाधी कांइ, हरी जुज वले हो गंगा उतरी; म्हे लाग्या हरी पाय, हली मलीने हो उजाहेत धरी ॥१०॥ पवी हरी बोल्या एम, गंगा तरीने हो थें किम थाइया; नावा हुती थम्ह पास, तिण हम तरीया हो पंचे प्राइया ॥११॥ वली माधव बोजंत, किम ते नाणी हो सनमुख नाव नी; निज जुज तरंगे केम, हरी बल जोस्यां हो अमे एम तेवमी ॥१२॥ वचन सुणी निज कान, रुस रिसाणो हो बोले थाकरो; रुतधन मुंढ नीटोल, पांम्व ते विठा हो वचन कल्यो वुरो ॥१३॥ लाख जोयण वो मान, सागर वलंधी

हो आणी तुम बहु; मुज बल तो हिन दिठ, थें मन कुमा हो जगत जाणे सहु ॥ १४ ॥ सुख न देखामजो सुढ,
 एम बलजो हो देइने हरी गया; भें पण तिहांथी एथ, उमना आया हो तुम्ह दरसण थया ॥ १५ ॥ पांमुराय सुणी
 वात, बलता बोलै हो बुत्र थें बुंरी करी; किशन किया कुण काम, माम वधारी हो तुम्हे तो एवी करी ॥ १६ ॥
 मोतीने मन लाख, लाखने सुले हो मोती तो मलै फरी; पण मन जाग्यो जाए, ते रंग नावे हो कोम जतन करी
 ॥ १७ ॥ पांमुराय महीपती ताम, कुंती तेम्हीने हो वचन एसो कहे; सकरो अवर विचार, श्रीपती पासे हो जायवा मन
 वहै ॥ १८ ॥ कहेज्यो घरनो सुख, माधव लज्या हो राखो हवे माहरी; तें पुरथा मन कोम, वली हुं श्रीपती हो
 भुवा ताहरी ॥ १९ ॥ एम दीधी नृप शिख, कुंती चाली हो पोहता एम अनुक्रमे; दारामतीनो राय, माधव आवी
 हो जुवाने पाथ नसे ॥ २० ॥ पुरुषोत्तम करजोरु, कुंती पुढी हो केम पधारीया; कुंती जांखे एम, तेंतो रिसे हो
 पांमव वारीया ॥ २१ ॥ अण खंरु प्रथवी मांही, आण तुम्हारी हो लघली शिर वहै; जाइ नलपण जाए, ताम वतावो
 हो विरा जीहां रहै ॥ २२ ॥ बोरु जपरँ रिस, मात पितानी हो पाणी बल रहे; वली मनावे आप, खोलै बेसारी हो
 शिख वचन कहे ॥ २३ ॥ जो थें करख्यो रोस, तो जाइ पांरुव हो जइने किहां वसे; वली मोदो संताप, देखी डर
 जन हो ड्योथन सुत हरी ॥ २४ ॥ बाहु बल जरतने जीस, रोस धरति हो बंधव निधेदीयो; आणी जाइ सनेह,
 पम्ता अपुगे हो तास जीली वीयो ॥ २५ ॥ आप जनेरी रुख, कोइ न कापे हो जो फल नवी दिए; एसोहे तुम पास,
 डर मकाढो हो को गुण जेइ हिए ॥ २६ ॥ रहेता पिहरनी डल, आइ विरानी हो जुवाने हुती घणी; थोमामां

दियो ठेद, बाल दिचारे हो एतो आबी दणी ॥२७॥ दिन वचन सुधी एम, माथ्य जांखे हो चुवा डख मती धरे .
 उंठुं मथाणशो एह, पांढवथी मारे हो अधीक नको खरो ॥२८॥ कहेजो सुतने जाय, दक्षीण सागर हो बेल ट
 जीहां; तिहां रहेज्यो चित लाय, पांढु मथुरां हो नगरी वाडी तिहां ॥ २९ ॥ कहे चिरं लगी पालजो राज, अदि
 शेवाथी हो कारीज सारज्यो; उनोशी लारे निर, स्वाद न आवे हो सुल एम धारज्यो ॥ ३० ॥ कुंती मानी वा
 तिहां थकी आबी हो पती सुतने कल्यो; हवे कुण करे विचार, गजपुर माधी हो किम जाइ रह्यो ॥ ३१ ॥ डि
 लगे पुन्य प्रकाश, तिहां क्षेगे बंधव हो सुजन मेजावभे; गुणसागर कहे एम, जिहां लगे सुरज हो तिह लगे ता-
 ॥३२॥ पांढुराय मथुरां निवास, नगर वसावी हो रस्या मननी रली; सुखमें पाले राज, एकायनसोमी हो ढाल जां
 नजी ॥३३॥ श्री जीन नेम दयाजजी, अतिशयवंत अशेश, अस्ती अमुख डख ढालतां; चिचरे देश विदेश,
 ॥३४॥ नदलपुर आया सही, हरख्या लोक अपार; राजा वंदन आबीयो, साथे सहु परवार ॥ ३ ॥ सोलस' सुधी
 आचीका, नाग निरोपम नाम; खट नंदनशुं आबीया, श्री जिनवंदन ताम ॥३॥ ॥ ढाल १५२ मी॥ देवी
 झुमखमानी ॥ हाथमां ते लोधी कोथलींर लाल ॥ चाल्यो रतनपाल ॥ मननी आस्या फली ॥ ए देवी॥ दे उपदेश
 सोह्यामणोरे, ए संसार असार; सुंदर सुसकारी, धन योग्यन परीवार सहुरे, कोई न थाये लार ॥ सुं० १ ॥ वसे
 छंति दोहिलोरे, माणसनो नव एह सुं० ॥ आस तजी आतुर थइरे, किजे धर्म सनेह ॥ सुं० २ ॥ श्री जीन वाणी
 सांनजींर, ते खटही सुकुमार सुं० ॥ समजाये माता पितारे, लेवा संजम नार ॥ सुं० ३ ॥ वत्रीशे वर कामनीरे,

अमरीने अवतार सुं०॥ वत्रीशे कंचन तणीरे, कोमी तजी तेही वार ॥ सुं० ४ ॥ जीन मुख संजम लुचरेरे, पाले
 सुधाचार सुं०॥ दो उपवासे पारणोरे, सदा करे सुखकार ॥ सुं० ५ ॥ स्वामी पधारथा. द्वारीकारे, वंदन श्रीहरी राय
 सुं०॥ आर्यो आमंवर घणोरे, वाणी सुएया सुख थाय ॥ सुं० ६ ॥ खट बंधवनी पारणोरे; एकण दिन सुविशेष
 सुं०॥ संघाभा त्रण जुजुवारे, पामी प्रभु आदेस ॥ सुं० ७ ॥ नगरी मांही आवीथारे, जुदा पमीयां जाम सुं०॥ एक
 जुगल हरी मंदीरेरे, आया तव अन्निराम ॥ सुं० ८ ॥ दिवां राणी देवकीरे, विधी वंदन अधीकार सुं०॥ अंतरजामी
 आत्मारे, हेज जणावण हार ॥ सुं० ९ ॥ लामु तो हरी केसरीरे, वोहराव्या भरी थाल सुं०॥ निज हाथे उलटपणोरे
 आणी नाव रसाल ॥ सुं० १० ॥ जेहनो चित्त देवा तणोरे, तेहने चित्त मजोय सुं०॥ वितवंतने चित्त नहीरे, चित्तवीत
 पुन्ये होय ॥ सुं० ११ ॥ चितवित दोइ संपज्यारे, पात्र पाये तो वादी सुं० ॥ पात्र वनो संसारमारे, सुक्रीत सहुनि
 आदी ॥ सुं० १२ ॥ पोखी न जाणे पात्रनेरे, पोखे काया जेह सुं०॥ विण शींगाही जाणीएरे, ढोर सरीखा तेह सुं०॥
 १३ ॥ व्याजे दिया दोणो वधेरे, चतुर गुणो व्यवसाय सुं०॥ खेति सेहे सगुणो हुबेरे, दियो अनंतो थाय ॥ सुं० १४ ॥
 कुप बागने गोतणोरे, परतख देखी विचार सुं०॥ देतां दान न थाकीएरे, दान वनो संसार ॥ सुं० १५ ॥ दिधां राणी
 देवकीरे, मोद्यक खरा अमोल सुं०॥ एतले विजो आवीथारे, संघामो समतोल ॥ सुं० १६ ॥ बावन सोमी ढालमें
 रे, दाता करता दोय सुं०॥ श्री गुणसागर सुरजीरे, एक सरीखा होय ॥ सुं० १७ ॥ ॥ दोहा ॥ सोइ लामु थाल
 सोइ, विधी वंदन पण सोइ; सोइ नाव उदारशुं, प्रती लाजा सुनी दोइ ॥ १ ॥ देवयोग्य एवो हुवो, त्रिजो जुगलजीवार;

श्री हरी जननीने घरे, आया सही तिणी चार ॥१॥ उही लामु उही चिथी, विहराव्या मुनी तेह; पण तो शंका उप
 नी, राणीने मनएह ॥२॥ ढाल १५२ मी॥ पुढी हो पुठि कोइ नार ए वेशी॥ पुठे हो पुठे राणी यात, फरि फीरी
 हो आया तुम्ह घर माहरेजी; वारी हो वारी दु सोवार, वारी हो वारी दर्शण ताहरेजी ॥१॥ मिलीया हो मिलीया
 साधु अपार, न मिल्यो हो न मिल्यो योग अहारनोजी; करवी हो पिंन गवेपणा सुध, कल्यो हो उद्यम सुधा चार
 नोजी ॥१॥ मुनियर हो मुनियर ज्ञांखे याण, वाणी हो वाणी अमृत सारखीजी; हमखट हो हमखट बंधय जाण; न
 सत्ते हो कोइ जुदा पारखीजी ॥२॥ नदिल हो नदिलपुर अयत्तार, सोलसा हो सोलसा माता माहरीजी; तिसहो तिस
 अने दोइ नार, एति हो कोमी कनकनि परीहरीजी ॥४॥ नेट्या हो नेट्या नेमी जिणंद, जाण्यो हो जाण्यो जीन जग
 तारणोजी; लीथो हो लीथो संजम नार, फिजे हो दोइ उपवासे पारणोजी ॥५॥ जोमा हो जोमातीने आज, आया
 हो बोहरण थारे श्राविकाजी; लालच हो लामुनी नही कोइ, लालचि हो शीवनी पुन्य प्रचनिकाजी ॥६॥ राणी हो
 चित्तु चिते ताम, मुजसुं हो निमित्तीये एम नांखीयोजी; थारे हो थारे उत्तम नंद, होशे हो होशे एम कहि वाखीयो
 जी ॥७॥ म्हारो हो म्हारो कान नरंद, जेहवा हो तेहवा खट जाणीएजी; मुजथी हो मुजथी सोलसा सोय, मोटी
 हो मोटी आज बलाणीएजी ॥८॥ वंदन हो वंदन नेम जीणंद, आवी हो आवी सा उतावलीजी; वेखी हो वेखी
 तेह मुनिंद, उपजे हो उपजे अति मननी रलीजी ॥ ९ ॥ सुरहि हो सुरहिनी परे जोय, हिंसे हो हिंसे हेज हिए
 घणोजी; नयणा हो नयणा ज्ञानी होय, उलखी हो उलखी ले जण आपणोजी ॥ १० ॥ ढालज हो ढालज मीठी

त्रेपन हो त्रेपनने सोमी जलीजी; श्री गुण हो श्री गुणसागर सुर, माता हो माता सुत मनसा रलीजी ॥११॥
 दिोहा ॥ पुढे राणी देवकी, नेम जीणंदा पास; ए खट मुनीवर देखतां, माहरे मन उल्हास ॥१॥ ए प्रव के
 प्रव तणो, सगपणको व्यवहार; देव दया करी दाखवो, ज्ञान तणा जंकार ॥२॥ ढाल १५४ मी ॥ मेता
 ज मुनिवर धन धन तुम्ह अवतार ॥ए देशी॥ बली जाड प्रजुजी प्रांजो एह संदेह; साधु सलुणा देखताजी; उपनो
 अधीक सनेह ॥ब० १॥ सांजल राणी देवकीजी, जांखे श्री जगनाथ; ए खट नंदन ताहराजी, नीसुणो सधलो साथ
 ॥ब० २॥ सारद नामे सारदाजी, सारद देवी होय; वरुवखती तुज सारखीजी, नारी न वीजी कोय ॥ब० ३॥ कंस
 कर्म आदे करीजी, संजलाव्यो विर तंत; हरखी राणी देवकीजी, वांढी श्री जगवंत ॥ब० ४॥ घर आवी एम चिंतवेजी,
 जाया नंदन सात; बालपणे न रमायीजी, एकहि धीग मुज मात ॥ब० ५॥ जागवंती सा जामनीजी, बालिक
 जेहने गोड; हुजरावे हयमे धरीजी, वासर जाय विनोद ॥ब० ६॥ में कुण कुण पुरव प्रवेजी, पोढा पातिक कीथ,
 केसर वरणो नानमोजी एहवो मुज देवे न दीध ॥ब० ७॥ एम केहती धरती लीखेजी, सजल सलुणां नेण; थया
 अणगमता कालनेजी, वाली सखी न वेण ॥ब० ८॥ अरती अलुर वाधी घणीजी, आहट उहट ध्यान; पणे लागवा
 आवीयोजी, एटले श्री नृप कान ॥ब० ९॥ च्यार च्यारसें मायनेजी, हरी नमे नित्य आय; एम ठ मासे वांदताजी,
 नीज जननीना पाय ॥ब० १०॥ निज पखेरां आंतरोजी, मोटा नाणे कोड; मेह अने शशी देवताजी, सहुने सरीखां
 ॥ब० ११॥ उपजणो अरती तणोजी, माता मनहि मोजार; श्री हरीजीनो आवणोजी, तिणही वार विचार

॥१०॥ १३॥ धीनय करीने धीनवेजी, जननी श्री हरी राय; माय मया करी नांखीएजी, थारती एवढी कांड ॥३०॥ १३॥
 अति लांबो भिसासणेजी, मेलहि बोली माय; सात नंबन में जाइयाजी, तुज सरीखा हरी राय ॥३०॥ १४॥ स्वट
 नाध्या सोन सा घरेजी, तुंपण गोकुल मांहि; हुंश न पुगी माहरीजी, बाल रमाग्रण प्रांहि ॥३०॥ १५॥ ठदिनथी परवश
 पणेजी, बेरी केरे यास; नंबन होवे आठमोजी, तो मुज पुरे आश ॥ ३०॥ १६॥ माय मनोर्ष पुरयाजी, कान्हे
 क्रिया ठपयास; वेचवीने आयोयोजी, राणी उदर नियास ॥३०॥ १७॥ जोख्यो संख्या पुननाजी, माग्या नंबन होइ
 चेत्तणा च्या कारणेजी, रोइ न लिहिए सोइ ॥३०॥ १८॥ चोपन सोमी ढालमेंजी, माधव केरी मात; श्री गुणसागर
 सुरी कहेजी, सुख मांही विन जात ॥३०॥ १९॥ ॥ दोहा ॥ नविक जिव प्रतिबोधया, जिनवर करे विहार; पाप
 तिमर निरघाठया, सहस क्रिणं विनकार ॥१॥ गर्नं वियस पुरा करी, जायो सुंदर नंब; घर२ रंग वधामणां, घर२
 अति आनंद ॥२॥ ढाल १५५ मी॥ नमिराय धन धन तुम अयतार ॥ ए वेशो ॥ राणीजी हो जायो पुत्र
 रतन, जीहो कोमल जिम गजताडु; लाला ०॥ नामे गंज सुकुमाल ॥२०॥ १॥ जीहो हरख्यो श्रीहरी राजीयो ला ० ॥
 ॥२०॥ १०॥ किधां बहु मंमाण, जीहो नगरीनी शोना घणी ला ० ॥ हरख्यो सहु परिवार ॥२०॥ २॥ जीहो बंविखाडा मोकलां
 घाटि ला ० ॥ आवे गाने गित, जीहो थारण कारण किजीए ला ० ॥ साचरीए सुन रित ॥२०॥ ४ ॥ जीहो विजे म
 न मोटका ला ० ॥ तिजे बंमंग नग जीजे तिजे मोटा मळ ॥२०॥ ५॥ जीहो वारसमो

दिन आवीयो लाण॥ नाम दियो अनिराम, जीहो चंदकला जिम वाधतो लाण॥ रुप कला गुण धाम ॥ रा० ६ ॥
 जीहो खेलावणी हुलरावणी लाण॥ चुंवावणी चित लाय, जीहो न्हवरावणी पेहरावणी लाण॥ आंगी अंग लगाय ॥
 रा० ७ ॥ जीहो आंखजमी अंजावणी लाण॥ जीहो चाले करावण चंद, जीहो गालाटीकी सामली लाण॥ आलंगन
 आनंद ॥ रा० ८ ॥ जीहो पगमंण ग्रहि आंगुली लाण॥ वसुक वसुकती चाल, जीहो बोलण चापा तोतली लाण ॥
 रिजावणी अति ख्याल ॥ रा० ९ ॥ जीहो रोटी दहिय जिमावणी लाण ॥ लिला बाल विनोद, जीहो सबहीपरे माय
 देवकी लाण॥ पावे अधिक प्रसोद ॥ रा० १० ॥ जीहो पढयो गुण्यो मति आगलो लाण॥ यडपतिजिवन जोय, जीहो
 प्यारो प्राण थकी खरो लाण॥ माताजीने सोड ॥ रा० ११ ॥ जीहो एतले नेम समोसरथा लाण॥ बंदन देवमोरार,
 जीहो लघु नाड आगे करी लाण॥ परीवरीयो परिवार ॥ रा० १२ ॥ जीहो सोमल ब्राह्मणनि सुता लाण॥ परणावणने
 काज, जीहो सुकि मंदिर आपणे लाण॥ जड वांदे जिनराज ॥ रा० १३ ॥ जीहो पुजी प्रणमी सांभलेलाण॥ वेति प्रपदा
 बार, जीहो श्री जिनवाणी विस्तरी लाण॥ नविकजना सुख कार ॥ रा० १४ ॥ जीहो पंचावन सोमि ढालमें लाण ॥
 कुंवर गज सुख माल, जीहो श्री गुणसागर सुरजी लाण॥ धर्म सुणे छुविसाल ॥ रा० १५ ॥ दोहा ॥ उपदेसे
 श्री नेमीजिन, जिवा जिव विचार; दान शियल तप चावनां, श्री जिन धर्म उदार ॥ १४ ॥ नच नच हरका चावनां,
 वार तयो विस्तार; विविरा गुं विवरी कहे, त्रिचुवन तारण हार ॥ १५ ॥ ढाल १५६ मी ॥ ए जग थिर
 नही ॥ ए देशी ॥ जे कण जायेजे, फिरी नावेले तेह; चेत २ नर चेतिए ही, कर २ धर्म सनेह ॥ जे १ ॥ अथ अनित

जावना ॥ ए सत्सार अत्सार विच्यारो, पंखी तरुवर वासो; हाट मिला वाजागर केरो, पत्तरे प्रगट तमासो; तिरथ
 मेलो जेहवो तेहवो, जग व्यवहार विमासो ॥जे० १॥ अत्र पटल जिम उपजे विणसे, तनु धन योवन जाणो; गगन
 नगर सरीखो साचो, पदमनी प्रेम प्रमाणो; साजन साथ सरिस सुहावां, विद्युतवान वखाणो ॥जे० ३॥ १॥ अथ शरण
 जावना ॥ मृग शावक वन मांही फरतो, करतो केली विचारो; सिंधसुरी देखी सुविसेली, ले चलियो निरधारो; काल
 तणी असवारी होता, कोइ न राखण हारो ॥जे० ४॥ ३॥ अथ संसार जावना ॥ चउगति फेरी करीय घणेशी, अ
 मर थयो ए प्राणी; नरगतिरी अवतार अनंता, पाप तणी अहि नाणी; नरचवे धन रामारामा, विजी वातन जाणी
 ॥जे० ५॥ ३॥ ॥अथ एकत्व जावना ॥ जिहां तिहां नर थाप एकिलो, फिरे रमतो सोइ; परचवे जातां जोइ पनो
 ता, साथे नावे कोइ; कां धन कां धणियाणी धरति, धर्म सखाइत होइ ॥जे० ६॥ ४॥ ॥अथ अतल जावना ॥
 जिव सचेतन देहि अचेतन, एक कहो किम होवे; उशिव वंठे उन्नव इठे, उजागे उसोवे; आतम देहि विचारे बुदि
 सोइ अथ मल धोवे ॥जे० ७॥ ५॥ ॥अथ अश्रुचि जावना ॥ काय अश्रुचि अनेक प्रकारे, धोया सुधि न पावे;
 दसहि द्वार श्रवे निसवासर, ते किम सोचल हावे; साते धाते पुरित ए तनुं, वाहिर सोह देखावे ॥ जे० ८॥ ६॥
 ॥अथ आश्रव जावना ॥ श्रवण नयणने घाण घणी परे, रसना फरस कहि जे; हरिण पतंग जमरने मठा, मयंगल
 मरण लहि जे; एक २ इंद्रिय कारणेए तो, पंचे वयुनकशीजे ॥जे० ९॥ ७॥ ॥अथ संवर जावना ॥ आश्रव
 रोक्या होवे संवर, संवरथी फल मोटो; व्यापारी व्यापार करतां, जाणी न खाइ खोटो; समज शरे, जिव सल्लणा

डुख घणो सुख ढोटो ॥जे० १०॥ ७॥ ॥अथ निजरा जावना॥ उदय उदिरण डनी प्रकारे, कर्म निर्जरा कहिए
 श्री जिन सासन ढांडो अनेरां, एतो मर्म न लहीए; तप जप उःकर करणीने बले, निश्चल होइने रहिए ॥जे० ११॥
 ए ॥ अथ लोक जावना ॥ चउइ राज तिम उंचो निचो, लोक प्रमाण विचारो; सात पांचने एक राजवर, चउमपणे
 अवधारो; किउ न किएहि कोइ न करेगो, जीसठे तिम निरधारो ॥जे० १२॥ १०॥ ॥अथ बोध जावना॥ थाव-
 रथी ए त्रसपणो छलन, त्रसथी इंडीपुरा; पांचे इंडिमै माणसनी गती, आर्य खेत्र सनुरा; साधु योग संजमनो धरवो
 जोतो पुन्य अंकुरा ॥जे० १३॥ ११॥ ॥अथ धर्म जावना ॥ धर्म विन्यासब धंधो दिसे, कांइ हाथ न लागे;
 धर्म विन्या रुलीयो जवश्में, रे मन सुख आगे; वित्यो काल अनंतो सोवत; अबहि क्युं नवि जागे ॥जे० १४॥
 आगे जिव अनंत विगुतो, पत्नीया धन प्रमादे; विखया वाह्या न रह्या साह्या, माची रह्या उनमादे; पण परमारथ
 एह न जाएयो, तरवो गुरु प्रसादे ॥जे० १५॥ १२॥ एकसो ढपनमी ढाले, श्रीमुख जिन उपदेशा; जविकजना मन
 मान्या कानी, किधा क्रोध किलेसा; श्री गुणसागर सुरी सोहावे, समतानाव विशेषा ॥ जे० १६॥ दोहा ॥ जिन
 वाणी श्रवणे सुणी, गज सुकुमाल कुमार; विपयाथी विरच्यो खरो, मन शुं करे विचार ॥ १ ॥ विषया विषहीथी
 तुरी, विषीया नाम कुनाम; विपया वाह्या मानवी, दो जवगमें निकाम ॥२॥ आग अने विषया कही, एक सरसीखा
 जोय; सलगनीने बहिर पत्नी, हाथ न आवे सोइ ॥३॥ धुरही दाबी राखीए, न लहे अति विस्तार; ए निश्चय मनमां
 थरयो, व्याह तणो परीहार ॥४॥ ढाल १५७ मी॥ कांनजी मेलोने कांवलीरे ॥ ए देशी ॥ प्रभु प्रणमी घरे

थायीयोरे, माताजीनी पाल; अनुमतीने उतावलोरे, संजमसु उल्हास ॥१॥ माता अनुमत दिजीएरे, लेशुं संजम
 नार; जइ जोवं उतावलोरे, मुक्ती मनोहरनार ॥ मा० २ ॥ मुर्बाणी मा देवकीरे, वात सुणंता ताम; जाया तुं मुज
 वाहोरे, प्राण धकी अनिराम ॥ मा० ३ ॥ डरलन उंवर फूलजीवंरे, सांजबवो जग मांही; तो तो देखेवो किहारे,
 तिम तुम दरसण प्राही ॥ मा० ४ ॥ पांन फूलनो जीव तुंरे, कोमल केली समान; लहुंने अति लाम्बीनोरे,
 लाल न लिलां थांन ॥ मा० ५ ॥ चारीत्र कोठोठे खरोरे, जिन वचने विख्यात; मिएण तणे वंते करीरे, लोह चण्या
 न चवात ॥ मा० ६ ॥ वाय जरेयो कोथलोरे, चालवो खांमा धार; सायर तरवो जुज बलेरे, डःकर संजम नार ॥ मा०
 ७ ॥ धुरी होइ उतावलोरे, ठांमी घर परीसह उपज्योरे, ठिला पमेही अपार ॥ मा० ८ ॥ लुदलजावे
 जातीनोरे, वामें एक नहोय; ना घर ना संजमपणोरे, वादी गमे नव दोइ ॥ मा० ९ ॥ कुमर कहे माजी सुयोरे,
 रागीनो ए माग; जाणयो जुगतो सहिरे, पण जुदो वेराग ॥ मा० १० ॥ जे वंठक एह लोकनारे, नवि वंठक
 परलोक; ते कायरने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ११ ॥ सुरवीरने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास;
 तेहने तो सहु पाथरोरे, कांड न दोहिलो तास ॥ मा० १२ ॥ योवनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह;
 साणपणानो नाम एरे, संजम साथे सनेह ॥ मा० १३ ॥ धनीजियासंजोगधारे, त्रपती न पावे जीव; संतो
 खी सुखीया महारे, समतावंत सदिव ॥ मा० १४ ॥ समजावी संजम लिउरे, नेमी जीनेशर हाय; ध्यान
 धत्यो समसानमेरे; उरु दिउ जगनाथ ॥ मा० १५ ॥ सोमल ससरो आवियोरे शिर माटीनी पाल;

अंगारा लेइ खेरनारे, धंग धगता ततकाल ॥ मा० १६ ॥ मेलि भस्तके चालीयोरे, साधु न चुक्यो ध्यान; चकते परीणामें लह्योरे, केवल पद निरवाण ॥ मा० १७ ॥ खटमासी रजनी थड्रे, सुत विरहे विक रान; प्राति पधारी प्रभु कन्हारे, देखण गज सुकमाल ॥ मा० १८ ॥ वाढा उपर हिसतिरे, सुरहि आवे जेम; सुत मुख निरखण सांजलिरे, माता आवी तेम ॥ मा० १९ ॥ अकुलाणी अणोदेखवरे, पुढ्या त्रिजोवन स्वाम; नंद हुजु आनंइमरे, पोहोंचा अविचल ठाम ॥ मा० २० ॥ फरसी ढेदी माली जीउरे, ढली पनी सामाय; रोवे गोरी गहवरीरे, हरी हलधर डख थाय ॥ मा० २१ ॥ हरी पुढ्यो जीनवर कह्योरे, धसकि ढटशे प्राण; बंधव हता ते जाणवो रे, स्वामी कह्या सहि नाण ॥ मा० २२ ॥ सेरी वाटे आवतारे, सोग धरी हरीराय; सोमलसां साहीमें मुडरे, किधांना फल पाय ॥ मा० २३ ॥ उत्कृष्टा पातिक जे करेरे, उत्कृष्टी हि वार; पापे पचे घणुं आपणोरे, नहि संदेह लगार ॥ मा० २४ ॥ जे हुवा त्रिजोवनपतिरे, तेहनो सोग न कोय; कीधी हरी समजावणिरे, नेमी जिणंदा जोय ॥ मा० २५ ॥ सतावन सोमी ए ढालमरे, मुगती गया सुकुमाल; श्री गुणसागर सुरजीरे, प्रणमुंचरण त्रीकाल ॥ मा० २६ ॥ दोहा ॥ श्री हलधर हरीशुं कहे, पुन्य घटंतो आप; दिसेवे तेहि कारणे, उपज्यो ए संताप ॥ १ ॥ मोटाना तो कुंकरा, आसंगे नहि कोइ; भाइ हण्यो सुकुमालसो, वज्रो अचंनो जोइ ॥ २ ॥ ढाल १५८ मी ॥ कपुर होवे कान्ति भजलोरे ॥ ए देशी ॥ श्री बलदेव विनो करीरे, पुढ्या नेमी जीनेस; होतार्थ जे गलोरे, सुख डख हरख किलेस

जे उगे ते अपायमरे, कोइ नहि विखवाद ॥ म० २ ॥ ए नगरी ए साहिबीरे.

आधीयोरे, माताजीनी पास; अनुमतीने उतावलोरे, १५५ ॥ माता अनुमत दिजीएरे, जेणुं संजम
 चार; जइ जोडं उतावलोरे, मुक्ती मनोहरनार ॥ मा० १ ॥ मुर्बाणी मा देवकीरे, वात सुएंता ताम; जाया तुं मुज
 याहोरे, प्राण धकी अनिराम ॥ मा० २ ॥ डरलच उंवर फूलजाडोरे, सांजलवो जग मांही; तो तो देखेवो किहारे,
 तिम तुम दरसण प्राही ॥ मा० ३ ॥ पांन फूलनो जीव तुंरे, कोमल केली समान; लहुडने अति लामीलोरे,
 लाज न लिलां थांन ॥ मा० ४ ॥ चारीत्र कोगेठे खरोरे, जिन वचने विख्यात; मिण तणे दांते करीरे, लोह चण्या
 न चवात ॥ मा० ५ ॥ वाय जरेवो कोथलोरे, चालवो खांमा धार; सायर तरवो जुज बलेरे, उःकर संजम चार ॥ मा०
 ६ ॥ वाय जरेवो कोथलोरे, वांमो घर व्यापार; पळी परीसह उपज्योरे, ढिला पमेही अपार ॥ मा० ७ ॥ लुदलजावे
 रागीनो ए माग; जाणेवो जुगतो सहिरे, पण जुदो वैराग ॥ मा० ८ ॥ कुमर कहे माजी सुणोरे,
 परलोक; ते कायरने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ९ ॥ जे वंठक एह लोकनारे, नवि वंठक
 तेहने तो सट्टु पाधरोरे, कांड न दोहिलो तास ॥ मा० १० ॥ सुर्याग्ने साहसारे, त्रिकरण सुधा जास;
 साणपणानो नाम एरे, संजम साथे सनेह ॥ मा० ११ ॥ योवनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह;
 खी सुखीया म्हारे, समतावंत सदिय ॥ मा० १२ ॥ धनीजीवासंजोगधारे, त्रपती न पावे जीव; संतो
 धर्यो समसानमेरे; इउं दिउं जगनाथ ॥ मा० १३ ॥ समजावी संजम लिउंरे, नेमी जीनेशर हाथ; ध्यान
 जगनाथ ॥ मा० १४ ॥ सोमन ॥ मा० १५ ॥ आधियोरे, शिर माटीनी पाल;

सुवभागीरंद ॥ १ ॥ पण न चले चवी तव्यता, एहनो जोर अपार; संब प्रमुख अति सामटा, खेदण चल्या
 कुमार ॥ ३ ॥ ढाल १ ५ ए मी ॥ हवे राणि पद्मावतिरे हां ॥ आवि मदिरा वासनारे हां,
 हरख्या कुंवर जाम; नावि बलवंति, सधला आव्या आसनारे हां; खाधी मदिरा ताम ॥ जा० १ ॥ ढाक चढ्यो
 उयलां घणोरे हां, बुमता चलंत ॥ जा० दिवो दिपायण जतिरे हां, तव अमरष पालंत ॥ जा० ३ ॥ संब कहे सहु
 सांजलोरे हां, एहनो किजे नास ॥ जा० ॥ नगर अने घर याद्वारे हां, एहथी ठे विपनास ॥ जा० ३ ॥ लात
 धमुका लाकमीरे हां, गाढो कुट्यो तेह ॥ जा० सुवो जांणि मुकियोरे हां, दियो संधुकण एह ॥ जा० ४ ॥ कुमार
 साप मसावियोरे हां, सूरि माढमें बाल ॥ जा० ॥ लग्नवार ते वर हुवेरे हां, आइ मील्यो ततकाल ॥ जा० ५ ॥
 प्रति केसवशकरेरे हां, पावे सही वीपनास ॥ जा० ॥ सीतापती नल पांम्नवारे हां, जोगवियो वनवास ॥ जा० ६ ॥
 दूःसासन खेंब्या खरारे हां, पंचालिना चीर ॥ जा० ॥ जुजा उपामी ज्रीमजीरे हां, हणीया सोइविर ॥ जा० ७ ॥
 किचकतणा कुसीलथीरे हां, बंधव सताहि संहार ॥ जा० ॥ सयण सयाणो स्युं करेरे हां, नाविनो अधिकार ॥
 जा० ८ ॥ रिसवसे तिहां तापसेरे हां, किधो इम नियाण ॥ जा० दूखदाइ द्वारामततिरे हां, होज्यो तपहि प्रमाण ॥
 जा० ९ ॥ वात सुणी उतावळारे हां, हरी हलधर आवंत जा० ॥ विविध प्रकारे खामणारे हां, पगे लागी खामंत ॥
 जा० १० ॥ ए मुख मुऊ नंदनेरे हां, खिजाव्या तुम्ह आज जा० ॥ कृमा करो रुषीरायजीरे हां, तुम्हने सधली लाज
 ॥ जा० ११ ॥ चंदन कंचन सेलमीरे हां, अणर रसोइ वंस जा० ॥ संताभ्या ए अति घणारे हां, रंचन राखे मंस ॥

ए श्री क्रश् नरेश; क्व लगी रहस्ये एहबोरे, यादव जोर विशेष ॥ म० ३ ॥ नेमी कहे सहु सांजलोरे, जवो जग
 ववहार; भिनतां दिन जागे घणारे, विठमत्ता नही वार ॥ म० ४ ॥ रंग कुसंज पतगनोरे, दिसे अधीक सुचंग; दीवस
 दसाने आंतरेरे, सो फीर धाड विरंग ॥ म० ५ ॥ तन धन योवन गारवोरे, परीअणने परीवार; ज्यार दिवसनो चह
 चहोरे, पाठे विस अणार ॥ म० ६ ॥ द्वारामति नगरी तणोरे, मदिरा हेते विणास; वारसंम वरसें होसेरे, करस्ये ए
 श्री व्यास ॥ म० ७ ॥ निज खामे श्री हरी तणोरे, जरत कुमरने हाथ; वन कोसवे निश्रे शुरे, मरण कह्यो जगनाथ
 ॥ म० ८ ॥ एह सुणंता वातमीरे, खलजनीया सहु कोय; आरती उपजे अति घणीरे, हरी हलरने जोय ॥ म० ९ ॥
 जाड सुतने सुंदरीरे, अवर अनेरा कोड; दिख्या लिए सादरीरे, श्रीहरी अनुमति होड ॥ म० १० ॥ केता एक दि
 द्वा ग्रहिरे, केता नगरी मोऊार; आया हरी निज मदिरेरे, उपकर्मा अधिकार ॥ म० ११ ॥ मदीरा नगरी वाहिरेरे,
 कीधी सयली जाम; दिपायन तप आकरोरे, तपवा लाग्यो ताम ॥ म० १२ ॥ जरत कुमर उदाशीजरे, वनही मांही
 वसंत; पानो पथर उपरेरे, घाढो करी घसंत ॥ म० १३ ॥ खिस्यो अणि तव आगलोरे, पाणी मांही पफंत; गलीयो
 मोटे माडलोरे, पनोयो जाले तुरंत ॥ म० १४ ॥ उदरथी कियो डूकनोरे, तिर तणे आकार; निकलीयो ते तिरशुरे,
 घायो हरीण गेमार ॥ म० १५ ॥ हरीण गयो वनमें वजीरे, माथ्यो जरत कुमार; तरकस मांही राखीयोरे, सोड
 तिर ते वार ॥ म० १६ ॥ अगवन सोमी ढालोरे, साचा श्री जिन बोल; श्री गुणसागर सुरजीरे; अन्निय समा
 नेर मोल ॥ म० १७ ॥ ॥ दोहा ॥ चंद चले सुर्य चले, चले सोड निरंद; शेष चले सायर चले

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा अष्टमोऽधिकारः समाप्तः ॥

ना० १२ ॥ व्यास कहे हरीजी सुणारे हां, जुवी थव मनाहार ना० ॥ ५२५ ॥ नियाणो आकरोरे हां, ते न मीटे
 किरतार ॥ ना० १३ ॥ तुम्ह दो बंधव बाहिरोरे हां, अघर न ठोमूं कोइ ना० ॥ संजमपारी उगरेरे हां, तुंगरसे गृहि
 होइ ॥ त्र० १४ ॥ तव घर आयो आपणेरे हां, माधव महीमावंत ना० ॥ द्वायक समकित नो धणीरे हां, निश्चवंत
 अर्नंत ॥ ना० १५ ॥ व्यासे नियाणो बांधीयोरे हां, द्वारामती डुल्य हेत ना० ॥ उपज्यो अग्नी कुमार मेरे हां, आणी
 मिल्यो संकेत ॥ ना० १६ ॥ ए गुण साठीसो ढालमेरे हां, लिले संजम नार ना० ॥ श्री गुणसागरशुर बंधेरे
 हां, सांधानो परीवार ॥ ना १७ ॥ गाथा ॥ चोपाइ ॥ खंन खंन रस ठे नव नवा, सुणता मिवा साकर लवा,
 श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, आवमो खंन ए पुरण थयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

केलवणीनी कोरु ॥१॥ जीसथी तिम धसकी पनी, न रही सुध लगाऱ; वाँहे धरी वेठी करी, करीश अति उपचार
 ॥ १ ॥ ढाल १६१ मी ॥ सोदागर लाल चलण न देशा ॥ ए देशी ॥ प्यारे हमारे लाल एसी न कीजे, तुम विण
 आठे लाल कहो किस किजे प्या० ॥ ठातिया मेरी लाल तिखी काति, कालज कापे लाल अति अकुलाती ॥ प्या०
 १ ॥ तुम विरहेरे लाल वितक विते, फीर क्युं चाहुं लाल वेदि न बिते प्या० ॥ छव ठातिया मेरे लाल आगज उठि,
 तनुं जालेरे लाल न समजे झुठी प्या० ॥ ठातियामे लाल छव न समावे, दामिम ज्युरे लाल फाठी आवे ॥ प्या० १ ॥
 तुम्ह वीरहेरे लाल वितक विते, फीर किडं चाहुं लाल उदि न बिते प्या० ॥ छवहुं तेरे लाल जेते चारे, तुम्ह आइरे
 लाल नीठ विसारे ॥ प्या० ३ ॥ ब्यारे दिनाकी लाल करीथ उजवाली, पुनरपी थाइ लाल रजनी काली प्या० ॥ दइय
 मनाइ लाल ए दिन लोमे, कहा करो हो लाल तोमा तोमे ॥ प्या० ४ ॥ बेटा करी लाल आस्या एति, कहिय न
 जाइ लाल अंबर जेति प्या० ॥ देश प्रदेशा लाल सुखनीरे साइ, माताने हुवे लाल सुतथी वमाइ ॥ प्या० ५ ॥ सुंदर
 जाइ लाल सुंदर जाथो, नेह वसेरे लाल ज्युं घर आयो प्या० ॥ सुंदर जाइ लाल खरीय सपुति, सींहणी ज्युरे लाल
 सुखनर सुती ॥ प्या० ६ ॥ उंची लेइरे लाल अन्ने अमाइ, निचि किएरे लाल जात वमाइ प्या० ॥ छव न सहाइ
 लाल कहि जे कासुं, सोका वासो लाल होसे हांसुं ॥ प्या० ७ ॥ लाल नगीनो लाल तुं सुज किंको, तुज विण लागे
 लाल ए सहु फिको प्या० ॥ रोवंत अति हे लाल रुखमणी राणी, भर३ आवे लाल नयणें पाणी ॥ प्या० ८ ॥ मदन
 हे लाल मायन रोजे, जेम दिन आयो लाल किमुं सोपे सोजे प्या० ॥ मोहन किजे लाल मोहन माच्यो, संग अनेके

॥खंम ए मो॥ ॥दोहा॥ मन वचन रुमणा सुथशुं, नेमी नमुं सुखकार; अत्र नयमा अधिकारनो, नवीक,
 सुणो सुविचार ॥१॥ कामदेव एम वितवे, सारी जे निज काज; संसारीक सुख नोगव्यां, साथी जे शिवराज ॥२॥
 ॥ढाल १६० मी ॥ श्री रामजीए नार गमाइ हो ॥ए देशी॥ अनुमती मागे हो, विनो करी पगे लागे; मदन
 वनो हरी आगे, मोह निंदयी जागे ॥अ० १॥ अनुमती नाम सुणंता मुरठ्या, हरी हलधरशुं देवा हो; वज्र पात
 सम वात विचारी, धरणी पड्या ततखेया हो ॥अ० २॥ संजम स्योने स्यो तुं कुंवर, किजे नोग विलास हो; विणहि
 धामे जे विख खाइ, ते तो पावे हास हो ॥अ० ३॥ कुंवर कहे जिन वचने शंका, मुफने कांइ नावे हो; द्वार धकी
 निज मंवीर लाग्यो, काढण कोइ न पावे हो ॥अ० ४॥ पंफत मुरख बुढा वाला, कायर सुरा जोइ हो; राजा राणी
 राविसुत आगे, रहेण न पावे कोइ हो ॥अ० ५॥ आदीनाथ आदी चोयांस, जिनवरचक्रा वारे हो; केसव युग गण
 हरने हलधर, ए सहुए यम सारे हो ॥अ० ६॥ मातपीताने बंधव वेटा, वार अनंता पाया हो; परचव जातां कोइ
 पनांता; मुफने आमा नायाहो ॥अ० ७॥ नुल्योतूं तो अतिहो भुल्यो, अत्र नुल्यो नवी जाइ हो; अणजाएया विप पाथो
 केवल, जाएया विप न खवाइ हो ॥अ० ८॥ जगत तणी स्थिती क्षणीक देखी, थयो हुं नववेरागी; योअनुमति तोलीवंदिद्व
 जिन वचने रढ लागी हो ॥अ० ९॥ समजाव्यो वावाने बुढो, समजाव्यो निज तातो हो; चारीत्रने उमाह्यो अर्थीको, अत्र
 गमे नहि वातो हो ॥अ० १०॥ सारी अने एकसोमी ढाले, हरीनो लहि आंदिसो हो; श्री गुणसागर सुरी परंपे,
 वाध्यो नाच विशेषो हो ॥अ० ११॥ ॥ दोहा ॥ मातासुं विनति घणी, काम करे करजोद; संजम लेवा मेलवे,

देखजी; वरशी तप तरु ठाली चाटतो, राचो रूप विशेषजी ॥ बो० ८ ॥ भरत सुंदरी साथे मोह्यो, दिख्या
 लेण न दिथजी; साठ सहस वरसां तप तपवे, काया खिणी किथजी ॥ बो० ९ ॥ प्रजापति नृप कियो किरावर,
 ते तो न करे कोइजी; इस कंधर दस माथाशेति, लंका सरखी खोइजी ॥ बो० १० ॥ रामचंद्र शिताने काजे,
 किधो किम विलापजी; पवन जय पदमनीने लधि, देह तजे तो आपंजी ॥ बो० ११ ॥ सातनुं नंदन आरतीवंतो,
 निखम पुरी आशजी; करम तां कुतिने कारण, पांरुव हुञ्ज उदाशजी ॥ बो० १२ ॥ देव हमारे सुसरे सुंदरी, सासु
 काजे किलेसजी; अष्टादश अक्षोहणीशुं, मारयो वनो नरेशजी ॥ बो० १३ ॥ पांरुव हरीपर खंम शिधाव्या, पं-
 चालीने कामजी; नाम कहुं केतां जग जोतां, पार न पावे स्वामजी ॥ बो० १४ ॥ नैरव ऊंषा कमलनी पुजा, करवत
 कासि मांहिजी; पंचागनी साथे सीर उंधे, धुञ्ज धुटे प्रांहिजी ॥ बो० १५ ॥ एहवि कलपना करीने कामी, वंढे नारी
 नोगजी; नाह पामनीं परहरीए, किय दीतो परलोकजी ॥ बो० १६ ॥ काम कहे कामनी तुसे नीसुणो, दोग नोगयी
 नलचुरजी; योगीयोग युगती जालवतां, हुवा मोहक हजुरजी ॥ बो० १७ ॥ तुम वाट पामी मुगत पंथनी, जाणी श्री
 जीनरायजी; सहस बाणुं तजे समकाले, तो वैरागी थायजी ॥ बो० १८ ॥ चारीत्र कविए होवे कंता, करवो केलो
 बोचजी; परधर आसा धरवि नीतकि, नीह्वाकेरो सोचजी ॥ बो० १९ ॥ उन्हो पांणी आठण वांणी, पिधो कहो किम
 पायजी; अणुंवाणा पाइ चालेबुं, फीरी पठतावो थाचजी ॥ बो० २० ॥ नाहविन्ध्यां नारी नीरधारी, निपटनी कामी
 तो; अंगुठाविए आंगुलीया जीम; नारी निहाली जोयजी ॥ बो० २१ ॥ सासरुं सखसाता न लहे, न लहे पियर

लाल प्राणी नाच्यो ॥ प्या० ९ ॥ अथार मलार लाल प्या० १० ॥ इत्कथारे लाल किजे करणी, तो तो
 जन्म जरारे लाल पुंठे लागी, कियुं वुटिजे लाल तेहथी ज्रागी ॥ प्या० १० ॥ उत्कथारे लाल किजे करणी, तो तो
 मीटरे लाल यमकि मरणी प्या० ॥ अजर अमर लाल अब हम होसुं, सिध ग्रहने लाल त्रिचोयन जोसुं ॥ प्या०
 ११ ॥ देव युगति लाल कहि समजावो, काम कुमेरे लाल माय मनाची प्या० ॥ एकसठ सोमी लाल ढाल सोहायी,
 कहे गुणसुरी लाल ज्ञानि मन चावी ॥ प्या० १२ ॥ ॥ दोहा ॥ मातानी अनुमित लड, अंतै पुरमां जाय; समजावे
 अंतै उरी, वाणी वदे सुखदाख ॥ १ ॥ प्रीतीवंत नीसुणो प्रिया, हमे ग्रहां वांदिप; पाठे रुमा चालजो, एह हमारी शिख
 ॥ २ ॥ ढाल १६२ मी ॥ वासजणा गुं वाद न कीजे ॥ ए देशी ॥ बोले राणी अति वीलखाणी, नाखे नयणे
 पाणीजी; आरतिवंत आतुरसखली, नाखे गदश चाणीजी ॥ वो० १ ॥ प्रीतम प्रेम विहुणी वाणी, किम जांपोवो आजजी,
 चारीत्रनी चतुराइ वांनो, तुम्हने करवो राजजी ॥ वो० २ ॥ तुम्ह प्रनु इंड तणे अबतारे, हम इंडाणी रुपजी; सिजे
 जाहो नरनच केरो, सांजल जादच चुपजी ॥ वो० ३ ॥ नारिने कारण नर जग में, कष्ट करतां कोमजी; एक
 मना उचा नृप आगे, सेव करे करजोमजी, ॥ वो० ४ ॥ अर्धीक प्रयंकर सागर लेंबे, अटविमें पय संतजी;
 रोल महा संग्रामे सुरा, आतुर थद धसंतजी ॥ वो० ५ ॥ अहिला रूपे इंड विगुतो, ए प्रगटो अबवाताजी, एक
 जाख हजार केइ; न सरगुं खाधी लांचजी ॥ वो० ६ ॥ पारासर सरीखां पातरीयो, पातरीयो श्री व्यासजी,
 सतकी वेसा गुं पातरीयो, पांम्यो प्राण विणासजी ॥ वो० ७ ॥ ब्रह्मा पुत्रि शुं पातरीयो, तापस तरुणी

॥ सं० ८ ॥ एम सुएंता आया, जीनराज समीपे सोहाया; तव श्री मुखे संजम पाया हो ॥ सं० ९ ॥ सांब कुमर
 वर वैरागी, वृत साथे महा लव लागी; ए मदनतणी परे त्यागी हो ॥ सं० १० ॥ अते उरए विधि किजे, पिउ साथे
 संजम लिजे, राजेमती पासे रहीजे हो ॥ सं० ११ ॥ जानु कुमरे पण लिधो, चारीत्र साथे चित दिधो; तिनो पण
 कारज सिधो हो ॥ सं० १२ ॥ रुखमणी आदे पटनारी, ए आठे सुविचारी; चारीत्र लिधो सुखकारी हो ॥ सं० १३ ॥
 मदन महा मुनिराया; परमारथ शुं चित लाया; ए साध सकलहि सुखदाया हो ॥ सं० १४ ॥ त्रेसव अने सोमी ढाले,
 मुनी चोखुं चारीत्र पाले, गुणसागर कुल अजुवाले हो ॥ सं० १५ ॥ ॥ दोहा ॥ हरी हजधर जीनने नमी, आंसु
 ढाले अपार; मन मेली कुंवर कन्हे, घर आया तेहिवार ॥ १ ॥ मेहेल मांहि नवि सुंदरी, सजा मांहि सुकुमार; अण
 देख्या हरी जाणीयो, सुनो सहु संसार ॥ २ ॥ ढाल १ ६४ मी ॥ राम रसे राची घणुं ॥ ए देशी ॥ श्री हरीजी
 आलिंगे नहि, ते वात न जाइ कहि हो ॥ श्री० १ ॥ रोम२ सं राचियो, रुखमणी केरो राग हो; खांचि काढयो डखहि,
 नहि उपधनो लाग हो ॥ श्री० २ ॥ सुना मंदीर मालिया, सुनीधर पटसाल हो; सुनीसेज मरामणी, विण रुखमणी
 सुकुमाल हो ॥ श्री० ३ ॥ खाट हिंचोले हिंचता, हरीनो हियो नराय हो; उंचो नीचो देखहि पतिव्रता नहि पाय हो
 ॥ श्री० ४ ॥ भोजन तो जावे नहि, नहीं पाणी प्यास हो; आरव्या न लागे सोवतां; लांवा लिए निसास हो ॥ श्री०
 ५ ॥ जो कदाचित दैवधी, पलक मझति जोय हो; सुपने रुखमणी स्युं खरी, वात करे हरि सोय हो ॥ श्री० ६ ॥
 जाग्याथी कांइ नहीं, आरतिवंत मोरार हो; आव्य निरासी निंझमी, फीरी ज्युं देखुं नार हो ॥ श्री० ७ ॥ उवत

लाल श्रेष्ठ नाच्यो ॥ प्या० ९ ॥ अर्थीर भेलोरे लाल कहो किम ठाजे, सर्द धन ज्यरे लाल फोगट गाजे प्या० ॥ १० ॥
 मानजी; धणी गया धणियापो लुटे, घर आंगण मसाणजी ॥ वी० २१ ॥ वेढा पोता जनक जमाइ, गांठे जाजा दाम ॥
 अनेवेसर अन्नगाथी कहिए, तोपण नाम कु नामजी ॥ वी० २३ ॥ धन३ दवदंति सतवंति, धन३ पांभव नारः ॥
 आपदमांही साग आहारी, हुइ खिजमतदारजी ॥ वी० २४ ॥ नारीने पियु साथे नजो, कां घर कां वनवासः ॥
 पतिवृता वृत साचो ते, सुखडुख सरीखो जासजी ॥ वी० २५ ॥ पेठनीलारे संजमलेसा, साथे सानिज काजः ॥
 महल मुगतमें सामी सरसी, करीसां अविचल राजजी ॥ वी० २६ ॥ वासाठने एकसोमी ढाले, हरल्या काम कुः ॥
 रजी; श्री गुणसागर नीजपद धाप्यो, श्री अनीरुथ कुमारजी ॥ वी० २७ ॥ दोहा ॥ उठव मांभव्यो अतिवां ॥
 संजमनो मंदाण; धन विलसे मन मोकले, साजनमल्यां सुजाण ॥ १ ॥ चुपतने चुपतिनी सुता, मीत्रोने परीवः ॥
 संजम लेवा चालियो, श्री परजुंन कुमार ॥ २ ॥ ढाल १६३ मी ॥ दधीसुत विनतनी सुणजो ॥ ए देशी ॥
 संजम लेवा संचरीयो, समतारसतुं चित नरीयो; प्रजु परीवारे परवरीयो हो ॥ सं० १ ॥ हाथी उपर आरोहे, र ॥
 तत्र मद्या मनमोहे; चामरकि सोजा सोहे हो ॥ सं० २ ॥ तव राजा वाजे वारु, तव नाचे पात्र उदारु; तव दीजे दः ॥
 अपारु हो ॥ सं० ३ ॥ हरी हलधर साथे आचे, लोगानो पार नवि पावे; पुरमांही होइ सिधावे हो ॥ सं० ४ ॥ माधवः ॥
 सरीखो तातो, स्वमणीजो सरीखि मातो; एह अचंनानि वातो हो ॥ सं० ५ ॥ आपण पेतो प्रजुताइ, एसः ॥
 वाते वमाइ; ठांमी ले ए ठकुराइ हो ॥ सं० ६ ॥ चिंधी विंधी अति बुढी, साचि पति तणी तो कुढी; ॥
 तजाइ मनकि गुढी हो ॥ सं० ७ ॥ खेचरनी धरती सांधी, चुचरनि प्रजुता लाधी; प्रजु चाहे सीव आराधी ॥ १ ॥

सतीजी ॥ ए देशी ॥ सांब प्रजुन सुएंढ, चारत्रि पाले निरमलोजी; प्रणमे पाय नरंढ, आराधे मार्ग प्रलोजी
॥१॥ जंगम श्रावर जीव, आप समानां राखइंजी; जाणी दोष अपार, मृपा नाख न नांखीएजी ॥ १ ॥ स्वामी
जीव जीन देव, गुरु अदता न आदरेजी; वामी विसुध विशेष, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥ अंतर बाहिर
नेद, परीग्रह सहु परीहरेजी; रात्री जोजन त्याग, खट काया रक्ता करेजी ॥४॥ जित्या विषय विकार, पांच इंझीना
पांढूवाजी; निरलोची अणगर, आतमराम रमानवाजी ॥५॥ आणी कृमा गुण सार, पर्मीलेहण नल नावशुंजी;
करण विसुध विहार, चतुर महा चित चावशुंजी ॥ ६ ॥ संजम सुध विसुध, मन वचन काय करी जिएजी; शिता
दिकनी पिरु, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥७॥ मर्णा तिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीएजी; आदि थकी एटक,
पाढा पावन दिजीएजी ॥८॥ साधु गुणे शिरदार, डःकर तप करणी करेजी; पामी लवधी अपार, सुर थइने संचरेजी
॥९॥ एकांतरथी सांकी, मासा आया बल्हशीजी; उत्कृष्ठा तप किध, कंचन जिम काया कशीजी ॥१० ॥ पंच वि-
गयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी; समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥ ११ ॥ वर्षा काल
विषेश, तरु मुले वासो रहेजी; मांसमसा शुं द्वेष, नाणे निश्चलता रहेजी ॥१२॥ शियाले अति टाढ, टाढे काया थर
हरेजी; शितल वाजे वाय, वाए शिलक विस्तेजी ॥१३॥ ग्रीपमकाले जोय, जुजलवाजे आकरीजी; गिरी शिर धरी
यो ध्यान, तदाशीलावेअनुसरीजी ॥१४॥ सुता कुसमरी सेज, इहां कांकरासें संथरीएजी; चालंता चढी गजराज
इहां अणवाणे पाठ धारीएजी ॥१५॥ करतां सोल शणगर, इहां उढण जिर्ण पढेवर्माजी; चुवा चंदन वास, इहां

वेसत चालतां, सहस रत्नमणी होय हो; आख्या अंगे रत्नमणी, सुख पामे अजलोज हो ॥ श्री० ७ ॥ आसन
सयन विलोकतां, वेदन तो असमान हो; साजनिया साले नहि, साले एअहि ठाण हो ॥ श्री० ९ ॥ अवरं पारं
नहीं, रत्नमणीको सु विलास हो; आंवलिया नयि पुगहिं, आंवा केरी आस हो ॥ श्री० १० ॥ सिता विठोहो रामतः
नयण आवण मेह हो; ऊरुमंती वरसे सहीं, नारी नीरोपम नेह हो ॥ श्री० ११ ॥ हुं कुण तुं कुण एम कइतः
रत्नमणजी गुं राम हो; अूरीं पंजर हुवा, मुद्रांककण नाम हो ॥ श्री० १२ ॥ अवरं साथे न एहयो, जेहवो अंन
सुं चाव हो; मंलावानि कोपरी, वेद कियो उपाव हो ॥ श्री० १३ ॥ रुप नहि कांड एहवो, कला एहवि नहि हां
मटका मोटा मोहवा, नारी न अवरं मांहि हो ॥ श्री० १४ ॥ अक्षर चारु रत्नमणी, हीए वसी हरराय हो; वास
तो निठे नहि, रयणी ठमासी थाय हो ॥ श्री० १५ ॥ मदन कुमरनि मुरति, जोवतां जग मांहि हो; सारीखी अ-
देखवे, पुरुषोत्तम डल्य प्राहि हो ॥ श्री० १६ ॥ हेलविया हीरा तणां, फरकेश हाथ हो; रत्नमणीं मदनने, संन-
जगनाथ हो ॥ श्री० १७ ॥ चोसवने सोमी ढालमें, उलंजो अधीकार हो; श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम र-
सार हो ॥ श्री० १८ ॥ ॥ दोहा ॥ सांव अने परयुनने, अधीको धर्म सनेह; तप जप किजे एकठा, सो सीजे नी ।
देह ॥ १ ॥ चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटा मुनिराय; सुमति गुपति खप करे, जीती विपय कपाय ॥ २ ॥ एवणा सु ।
आहारनि, करे गवैखणा शुय; सुधाचारी साधुनो, मारग ए अवरिध ॥ ३ ॥ सताविसे गुण धरे, साधु तणा सुखका-
मुनिवर महियल संचरे, नेमीनाथनिलार ॥ ४ ॥ तात्त १ ६ ॥ ५ ॥ रु पाय, गुणरे गासु राजेर्मनि ॥ ६ ॥

ता०॥ डर गयां जे मानवी, आणी कियां हजुर हो ॥ ता० वा० ४ ॥ गढमढ पोल पगार्थुं, मंदिर महील उदार हो
 ता०॥ राज जुवन सुविशेशी, बलता न लागे वार हो ॥ ता० वा० ५॥ बाल हत्या ने गौ हत्या, ब्रह्महत्याने नार हो
 ता० ॥ चार हत्या चंमालनी, कियी कोमी प्रकार हो ॥ ता० वा० ६ ॥ पार नही पसुपंखीया, पदमनी करे
 पोकार हो ता० ॥ अरे अदेखा पापीया, करे किसुं कीरतार हो ॥ ता० वा० ७ ॥ बोरु गोरु आपणां, ठाती
 आगे राख हो ता० ॥ बलती बाला बलबले, दिन महा अति नांख हो ॥ ता० वा० ८ ॥ मांहो मांहि आफले,
 सहि न जाइ जाब हो ता० ॥ निकलवा पावे नहि, विलवे बाल गोपाल हो ॥ ता० वा० ९ ॥ नारी नांखे
 नाहसुं, सयला साथे तोम हो ता०॥ जोमथी मुण्ठी खरी, अबकां जाउ ठोम हो ॥ ता० वा० १० ॥ बालक बलतां
 विनवे, माताजीसुं एस हो ता०॥ जवराअग्नीथी राखिया, आज न राखे केम हो ॥ ता० वा० ११ ॥ सेवकसुं स्वामी
 कहे, नित्यहि रहेतां पास हो ता०॥ ताप न देता लागवा, अबकां जाउ नास हो ॥ ता० वा० १२॥ आ रेणीथी आ
 णीयो, आंमो घोमो घाली हो ता०॥ अब मुज मुकि नाइजी, कां जाउ मुह टालि हो ॥ ता० वा० १३॥ मीत्र मनोहर
 माहरा, मतिसागर तुज नाम हो ता०॥ एह उपद्रव्य जो टले, तो तुज नाम सकाम हो ॥ ता० वा० १४ ॥ कंथने
 देखी कामनी, कामनिया पण कंथहो ता०॥ जे जीमया ते तिम बल्यां, अइ अइ जगवंत हो ॥ ता० वा० १५ ॥
 बहूतेरकुल३ कोमीनो, नगरी मांहि नियास हो ता०॥ साठि कहि पुर वाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो ॥ ता० वा०
 १६ ॥ ढाल ॥ नगरी बलति देखिनेरे, घणु हुवा बलगीर; हयमु लागुं फाटवारे जाइ, नयणे बलुटा निररे;

मलसु मेझी देहमीजी ॥१६॥ पामे था जग त्रास, इहां सांती होइ चाले खराजी; आलस नहीं लगाए, साधु क-
 रिया सुं सादराजी ॥१७॥ परी साह बावीस, सुरापणीधी जित्तीयाजी; हिंसादिक अढार, पाप सहु अलगा कियांजी
 ॥१८॥ तेज तपत दिनकार, चंद जिम चढती कलाजी; सायर जेम गंजीर, गुण आचारे आगजाजी ॥१९॥ पमीया
 ह्यादश अंग, चर्वीक नरां प्रति बुजवेजी; जावे जावना वार, आपे आपो सुजवेजी ॥ २० ॥ आया गढ गिरनार,
 कर्म सबल दल नाशीयोजी; पांम्या केवल ज्ञान, लोक लोक प्रकाशीयोजी ॥२१॥ ज्यारा प्रकारां देव, खेचर जुचर
 आचीयाजी; यादव यादव राय, मुनी दरशण सुख पावीयाजी ॥ २२ ॥ करि केवल उठाह, रुपामुख देशनां सांच-
 लेजी; जिवा जिव विचार, संशय जवश्नां टलेजी ॥२३॥ मालव देशे स्वाम, साथे सहु स्युं चालीयाजी; निस्तारा
 बहु लोक, पाप परानवना टालीयाजी ॥२४॥ पांसव सोमी ए दाल, बैरागी सुखीया सहुजी; पनणे श्री गुणसुर, रागी
 दुख पावे बहुजी ॥२५॥ ॥दोहा॥ द्वारामतीनो देखीयो, ते वीपायण देव; तप धले पोहची न वीशके, पण न
 तजे अहमेव ॥२॥ नावीनो बल आचीयो, काल विनाश जेवार; लोक पत्न्या परमादमें, स्वइठा हार विहार ॥२॥
 ॥ढाल १६६ मी ॥ साहीब चाहु जिणेशर विनयुं ॥ ए देशी ॥ तापस ठन पांम्यो ते देवता, उलका पात अपार हो;
 हो तापस किधी वाय विकुवणा, आणी पुरीमोजार हो ॥१॥ तापस वाले नगरी द्वारिकां, द्विपाय न अति क्रोध
 हो; ताण ॥ रिस वसे नर आंधलो, नवी पामे प्रतिबोध हो ॥ ताण वाण २ ॥ काठ घणाने टण घणा, जुहरनो सम
 दाव हो ताण ॥ आणी मेजो एकवो, पामिने प्रस्ताव हो ॥ ताण वाण ३ ॥ हाहाकार हुबो घणो, आरम नेरम जुहो

ता०॥ डर गयां जे मानवी, आणी कियां हजुर हो ॥ ता० वा० ४ ॥ गढमढ पोल पगारशुं, मंडिर महील छदार हो
 ता०॥ राज जुवन सुविशेशी, वजता न लागे चार हो ॥ ता० वा० ५॥ वाज हत्या ने गो हत्या, ब्रह्महत्याने नार हो
 ता० ॥ चार हत्या चंमालनी, किधी कोमी प्रकार हो ॥ ता० वा० ६ ॥ पार नहीं पसुपंखीया, पदमनी करे
 पोकार हो ता० ॥ अरे अदेखा पापीया, करे किलुं कीरतार हो ॥ ता० वा० ७ ॥ वोरु गोरु आपणां, उाती
 आगे राख हो ता० ॥ वजती बाढा बजवले, दिन महा अति जांख हो ॥ ता० वा० ८ ॥ सांढो मांहि आफले,
 सहि न जाइ जात्र हो ता० ॥ निरुनयाः पावे नहि, विजवे वाज गोपाल हो ॥ ता० वा० ९ ॥ नारी जांखे
 नाहलुं, सयजा साथे तोम हो ता०॥ जोमीथी मुजयी खरी, अक्कां जात्र तोम हो ॥ ता० वा० १० ॥ बालक बलतां
 विनवे, माताजीसुं एम हो ता०॥ जवराअग्नीथी राखिया, आज न राखे केम हो ॥ ता० वा० ११ ॥ सेककुं स्वामी
 कहे, नित्यहि रहेतां पास हो ता०॥ ताप न देता जागवा, अक्कां जात्रे नाल हो ॥ ता० वा० १२॥ आ रेणीथी आ
 णीयो, आंमो बोमो घाडी हो ता०॥ अत्र मुज मुकि जाइजी, कां जात्र मुद्र दालि हो ॥ ता० वा० १३॥ मीत्र मनोहर
 माहरा, मत्तिसागर तुज नाम हो ता०॥ एह उपड्य जो टले, तो तुज नाम नकाम हो ॥ ता० वा० १४ ॥ कंयने
 देखी कामनी, कामनिया पण कंयहो ता०॥ जे जीमथा ते तिम बल्यां, अइ अइ जगवंत हो ॥ ता० वा० १५ ॥
 बहुतेरकुजश कोमीनो, नगरी मांहि निवास हो ता०॥ साठि कहि पुर बाहिरी, ए सहु लह्यो चिनास हो ॥ ता० वा०
 १६ ॥ ढाल ॥ नगरी वजति देखिने, वणु हुवा इजगरिः हयमु जागुं फाटवारे जाइ, नयणे वटुटा निरे;

माथव एम बोले ॥ १ ॥ बंधव बेहुं तिहांमलारं, वात कर कुरणा ए; डख साले ड्वारकां तणुरे जाइ, कथु कांड न
 जाये ॥ मा० १ ॥ किहां ड्वारकांनि साहिबीरे, कीहां गजदलनो ठाठ; सजन मेलायो किहां गयारे जाइ, खिणमं
 हुयां घनधांटेरे ॥ मा० ३ ॥ माथव कहे सूणो बंधवारे, जाग्यां पूर्वलां पाप; अगनी चउदसें परजलीरे जाइ, काढो
 माथनें वापरे ॥ मा० ४ ॥ मातपिता कहे सुणो दांवरारे, न फरे नेमनी बांण; नोए संथारो आदरोरे, तजी अन्नने
 पानरे ॥ मा० ५ ॥ रथ जोमी रीपन आणीनेरे, लागी चोदसे लाह; आपण बहुजण ताणीएरे जाइ, बलध लेवा
 कोण जायेरे ॥ मा० ६ ॥ रथे जुता बेबंधवारे, अगनीं विचे पामी वाट; देवतातो कोप्या सहिरे जाइ, तुटीने पमीयो
 माढरे ॥ मा० ७ ॥ रथ घोमाने वेलु वलेरे, वेतालीस२ लाय; अमृतालिसक्रोम पाला वलेरे जाइ, खणमांहि होइ
 गइ खाखरे ॥ मा० ८ ॥ हरी नांखे बलदेवनेरे, धिग२ जीवत मोय; नगरी वले मुज देखतारे, मारु जोर न चाले
 कोयेरे ॥ मा० ९ ॥ बलती नगरी देखीनेरे, हुं राखि न सकुं एम; इंड धनुष अमे धारीयेरे जाइ, ते बल जांगो केमरे
 ॥ मा० १० ॥ जेणीदसे आपणे जोवतारे, संवक सेस अनेक; हाथ जोमी रहेतां खनारं, जाइ आज न दीसे एकरे
 ॥ मा० ११ ॥ वादल विजतणी परेरे, रीथ विल लाइं सोय; एणी वेलामां आपणुरे, सगुं न दीसे कोयेरे ॥ मा० १२ ॥
 मोटा २ राजवीरे, सरणो रहेतां आय; ठलटो सरणो ताकीयेरे, जाइ वेरण वेला पायेरे ॥ मा० १३ ॥
 हरी नांखे बलदेवनेरे, सांचदो बंधव वात; धरति आपणसुं फीर गइरे, जाइ कोइ डुसमने वतायेरे ॥ मा० १४ ॥
 माथव वचन सांचलीरे, हलाधर बोले एम; पांम्य फरी कृता तणारं. जाड चालो तेनं गामरे ॥ मा० १५ ॥

॥ ढाल मुलगी ॥ हरी माताने रोहिणी, श्री वसुदेव तिवार हो ता० ॥ अणसणने बले पामीने, देव तणे
 अवतार हो ॥ ता० वा० १७ ॥ सोल सहस हरीनी त्रीया, अणसण बले सुर लोड हो ता० ॥ पोहति चादवनी त्रिया,
 अवर अनेरी जोय हो ॥ ता० वा० १८ ॥ नेमीनाथनो शीपळुं, करतो एम पोकार हो; ता० ॥ नंदन श्री वसुदेवनो, देवालियो
 उवार हो ॥ ता० वा० १९ ॥ श्री हरी हलधर निकल्या, उजा वाहिर जाय हो ता० ॥ बलती देखी द्वारिकां, दुख
 हिए न समाय हो ॥ ता० वा० २० ॥ श्री हलधर हरीसुं कहे, आपा अलगी वात हो ता० ॥ नगरी अवर वसा वसां,
 सांजल सुंदर भ्रात हो ॥ ता० वा० २१ ॥ सगो सगानी जफ अठे, सगो सगा आधार हो ता० ॥ प्रजुजी पांभव
 संचारीया, आपदने अर्थकार हो ॥ ता० वा० २२ ॥ पांडु मथुराने चल्यां, केवल बंधव दोय हो ता० ॥ पाणीहि पावा
 जणी, साथ न त्रिजो कोड हो ॥ ता० वा० २३ ॥ न हय न गय वाहणी, पाला पुलाया सोड हो ता० ॥ अंतर नयणे
 नीरखज्यो, दिन पलटे डम होड हो ॥ ता० वा० २४ ॥ गर्व मकरजो जाठिनो, कोड एक लगार हो ता० ॥ जो न हुड
 नीज कंतनी, बिजा कवण विचार हो ॥ ता० वा० २५ ॥ लठि आवंती जलि, जातां जाय विगोय हो ता० ॥ एतो
 पमठो आशानो, द्वारामति पति जोय हो ॥ ता० वा० २६ ॥ फिटरे लठी कुलक्षणी, बटकी देखायो ठेह हो ता० ॥
 देव्य कराव्यो हरी कियो, निगुणी सरसो नेह हो ॥ ता० वा० २७ ॥ निजवल परवल पाधरो, दिन पाधरो जेवार
 हो ता० ॥ दिन वांके वांकु सहु, घणुं किस्तुं वितार हो ॥ ता० वा० २८ ॥ हरी हलधर तनुवल घणा, सुर बलनो
 नवी पार हो ता० ॥ एकही आमो नावीयो, मेटण व्यास किकार हो ॥ ता० वा० २९ ॥ खट मासा लगी द्वारिकां

बली बुझाणी जाण हों ता०॥ सायर जल विटी बल्यो, पुरवले परीमाण हो ॥ता० वा० ३०॥ ता० सामा ढालम
 लठि न चाले लार हो ता०॥ श्री गुणसागर सरजी, पुन्य वनो संसार हो ॥ता० वा० ३१॥ ॥दोहा॥ कर्म इंद्र
 विगोइयो, कर्म चंद्र कलंक; कर्म मोटा राजवी, वनमें ज्ञम्या निशंरु ॥१॥ सतवंति आदे सति, कर्म करी सदोश,
 कर्मार्गन नवि वुटिया, हरीहर त्रहा सरोस ॥ २॥ ढाल १६७ मी ॥ महाविदेह खेत्र सुहामणो ॥ ए देशी ॥
 कीथा कर्म न वुटिए, राय रंक सम जाय लालरे; हरी हलधर दोइ चालिया, पंढव मथुरां जाय लालरे ॥कि० १॥
 हस्ती कल्पनामे सहि. आयो पुर अनीराम ला०॥ दोइ बंधव तिहां वागमें, तरु तले ले विसराम ॥ला० कि० २॥
 साजन जन लोगां तणो, हरीने बहुजो डख ला०॥ एताहिमे आकरि, आवी लागी खुब ॥ला० कि० ३॥
 खुब अनागणी, बाल्हा खाइ तरुं नाम ला०॥ आप जणावण आकति, न गणे ठाम कुगंम ॥ ला० कि० ४॥ जुंभी
 हलधरसु हरजी कहे, ए वीरीनों वास ला०॥ नृपठे दंत मरामणो, मति आणो विसवास ॥ ला० कि० ५॥ त्यो मुज
 करनी मुंझनी, वेची सारो काम ला०॥ लावो खावा सुखनी, बाकी लावो दाम ॥ला० कि० ६॥ हलधर पुरी मांहे
 बल्यो, कवोडनी पास ला०॥ नामांकित सामुझनी, जोइ बांचे उल्हास ॥ला० कि० ७॥ वात जणावी रायने, राजा
 दलवल साज ला०॥ घेरी लीधो सांकरे, नाद कियो बलराज ॥ला० कि० ८॥ नाद सुणी हरी धाइयो, मारे लात
 कमाम ला०॥ उर्माने अनगां पड्या, आणी जिती राम ॥ ला० कि० ९॥ मांग चली पण खोखरी, तोपण हांभी
 योग ला०॥ राजा धशी पणे लागीयो, पणे लागे सहु लोग ॥ला० कि० १०॥ पुनरुपी आया वागमें. हलधर ॥ वृष

स्वाम ला०॥ आरोगी ते सुखमी, चाल्या आगे ताम ॥ला० कि० ११॥ वन कोसवे पोहोचीथा, त्रज्या व्यापी अ-
 पार ला०॥ सुतो हरी तरु बांयमी, पुगी वेला वार ॥ला० कि० १२॥ हलधर जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार
 ला०॥ सो सर तिहां सांधीयो, जांणी हरण तेवार ॥ला० कि० १३॥ विंघाणो पग बांणशुं, धिगश करतो सोय ला०
 ॥जरत कुमार हरी आगले, आवी उन्नो होय ॥ला० कि० १४॥ हरी प्रांखे सुण भाइला, तुज्जे कोइ न दोश ला०॥
 जारेजा उतावलो, हलधर कश्ये रोस ॥ ला० कि० १५ ॥ सहनाणीने आपीयो, कोस्तुन्न रल ग्रथान ला० ॥ लेइ
 चाल्यो एतले, बट्या हरीनां प्राण ॥ ला० कि० १६ ॥ ठाशठ सोमी ढालमें, क्रश तणो निरवाण ला० ॥ श्री गुण
 सांगर सुरजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥ला० कि० १७॥ ढाल गर्व न करजोरे गात्रनो, आखर एह असाररे;
 राखु केहनुरे नही रहें, कर्म न फरे करतारे ॥गर्व० १॥ समण पमण विद्वंसण, जेहवो माटीनुं चंमरे; क्षिणमां वाले
 ते खोखरुं, ते किम रहे अखंमरे ॥ग० ३॥ मोहने पुठिने जे जिमे, पान खाथ चूटी वींठरे; ते मोह बंधाणा
 जाणुए, कागमा चरकता वींठरे ॥ ग० ३ ॥ मोह मरमीने मोजो करे, कामनीसुं करे ठाले केळरे; ते जइ सुए सम
 सानमां, मोह ममताने मेलरे ॥ ग० ४॥ हस हस बोलतां हेजमां, नरनारी लाख कोळिरे; ते जइ सुइ मसाणमां,
 धणकण कंचन ठोळिरे ॥ग० ५॥ कोम उपाय जो किजीए, तो पणी नवि रहेने ठार; सजन मली सहु तेहने, करे
 अगननी अेटिरे ॥ ग० ६॥ कल सखिखो जुड राजीड, वज्जचइ सरिखो जो वीररे; जंगल मांहे जुड तेहने, ताकी
 मारशे तीररे ॥ग० ७॥ बत्रीस सहस अंतें पुरी, गोवालीणी सोल हजाररे; तरसे तडफे ते त्रीकमां, नही को पाणी

पानारे ॥ ग० ७ ॥ कोम सजा करे धरी, गिरधारी थरुं नामरे; वेवा न थाय ते बले, जुड कर्मनां कर्मनां कामरे ॥ ग०
 ९ ॥ जणतां केणे नवि जाणीड, मरतां नही को रोनारे; महा झटवी माहे एकलो, पमो करे पोकारे ॥ ग० १० ॥
 तविलो वत्र धरावतो, फेरवतो चारे दिश फोजरे; वनमां वासुदेव जिहां वसा, वसे जिहां वनचर रोजरे ॥ ग० ११ ॥
 गजे वेसी जेह गाजता, थती जिहां नगरानी वोररे; दुअन होला तीहां घुबवे, सावज करे ठेसोररे ॥ ग० १२ ॥
 कुमार तां जंगल वसे, ते खेलेठे सकारे; हरी पगे पदम ते हेरीडं, मृगनी व्रति तेण ठाररे ॥ ग० १३ ॥ तीर
 तेणुं तश्रे; बाणे केले मुजने विंधीड, एहवो कोण ठे पापीष्टरे ॥ ग० १४ ॥ आप बले तव उठी कहे, रे
 कुमारे, कहे वसुदेव पुत्रु, रहुंनुं थारण मुजाररे ॥ ग० १५ ॥ शब्द ते क्रश्नो सांजनी, वृद्ध तले जरा
 न वीतुं कोय मानयी, आज लगे नीरथाररे ॥ ग० १६ ॥ क्रश्न रखोपाने कारणे, वरस थया मुजने वाररे; पणिमें
 आपवा, बली लगामवा लाजरे ॥ ग० १७ ॥ डुष्ट कर्म तणे उदे, इहां आव्या तुमे आजरे; मुजने हत्यारे
 ड, न मटे श्री नेमनां वचनरे ॥ ग० १८ ॥ क्रल कहे उरो थाय बंधवा, जेण कारण तुं सेवेठे वंनरे; ते हुं क्रश्न तें मारी
 उपजरी उदवेगरे ॥ ग० २० ॥ आ समे किम जाठ वेगलो, तुं इहांथी जारे वेगरे; नही तो बलनच मारशी,
 आंसु जलथाररे ॥ ग० २१ ॥ इष्ट अगोचर ते थयो, एढाल अति रसालरे; उदयरल कहे एटजी थड, सडुको सुणजो वजमालरे
 ॥ ग० २२ ॥ दोहा ॥ जस्त कुमर वेगे करी, पांम्य मथुरां जाय; जल वेड हरी पाखती, हलथर झावो ॥ २ ॥ वळे

प्रभु पाणी पियो, देव न बोले जाम; रिसाणो प्रभु जाणीयो, हलधर बोले ताम ॥३॥ ॥ ढाल १६८ मी॥ गोरंजी
 थें सुने गोमे न राख्यो ॥ ए देशी ॥ उठो प्रभुजी पिवो पांणी, अणमलतां एती वार लगांणी; तुं मुऊ बंधव प्रांण
 पियारो, चाइजी मानो बोल हमारो ॥ उ० १॥ हुंतो शेवक आदि तुमारो, गोकुलमां तुं फिरत कुमारो; ते दिनथी
 तुं प्रितम प्यारो, हुं न रहु तुमथी खिण न्यारो ॥ उ० ३॥ पुर्व जवंतर नेह ध्येरो, गंगदतने लज्जितांग नलेरो; चारीत्र
 पाली देव विमानी, पुनरपी आपूण प्रितथ पाणी ॥ उ० ३॥ एति तो प्रभु कदही न कीधि, हम तुम्ह एकलास प्र-
 सिधी; वासर जाणी आज अपूठो, कहेरे बंधव तुं पण रूठो ॥ उ० ४॥ उख प्ररी आंख्या आंसु ढाले, उंचो निचो
 खरोही निहाले; कोइ नही जे रोटों राखे, रान रोज मली एही साखे ॥ उ० ५॥ खांधि धरी चाख्या बलदेवा, खटमास
 लगी करतां शेवा; सुर उध्दांत अनेक बतावी, दाघ दियो हलधर समजावी ॥ उ० ६॥ चारण रुखी समजावे आयो
 जिननो प्रेरयो बली मन जायो; संजम लेइ पाले निरतो, विषय कषाय थकी मन विरतो ॥ उ० ७॥ रुखमणी आदि
 आवे देषि, इग्यारे अंग पढीशुं विशेषी; वरस विस व्रत पाली सारी, मास सलेखणां मोक्ष सिधारी ॥ उ० ८ ॥
 संब अने परयुन सुनिसां, चारीत पाली सोल वरीसा; शेडुंजे संथारो साधी, मोटा मोटी पदवी लाधी ॥ उ० ९ ॥
 सार्द्ध त्रिकोटी कुमर कहियां, मदन सामने साथे लाहिया; ते सधनाए शिव गती पांमी, नाथ निरंजन अंतरजांमी
 ॥ उ० १०॥ अनी कयसादिक ते खट बंधु, क्रियावंत महा गुणसिंधु; विमल पणे विमलाचल आवी, अमल विमल
 गति उत्तम पावि ॥ उ० ११ ॥ यादवने यादवनी नारी, मोक्ष गथा बहु कर्म निवारी; नामशुं गेत सदा सुखदाइ,

त्रिविधि त्रिकाल नमुं वित लाइ ॥ उ० १ २ ॥ अफसत अने सोमी ढाल कहावे, श्रीवलदेव महाव्रत पाले; श्रीगुणसागर
 सुरी सोहावे, हर्ष धरी रूपीनां गुण गावे ॥ उ० १ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीवलदेव महामुनी, द्विविध शिख संयुत; पंक्ति
 राज शिरोमणी, समदम गुण संपुत ॥ १ ॥ तुंगीयागीरी शिखरे, ध्यान तणो अधिकार; चिदा लेवा पुरीजणी, आवे
 श्रीअणगर ॥ २ ॥ ढाल १ ६९ मी ॥ ॥ ऊमखमानी देशी ॥ चिदा लेवा पुरजणी हो, आवे श्रीअणगर; रुद्रा
 साधु नमो, श्यां मारग सोधतां हो; गयंवरनी गति सार, रुद्रा साधु नमो ॥ १ ॥ कुवाकांठे कामनी हो, सातपांचनी
 जोम रु० ॥ काठे पाणी हेजशुं हो, खांचे होमहोम ॥ रु० २ ॥ रूपे मोही नामनीहो, गाफील थइ ते वार रु० ॥
 फांसो देइ सुतने गले हो, न लहे सुधी लगार ॥ रु० ३ ॥ श्री रूपीजी चिच चितवे हो, रूप नहि ए फंद रु० ॥ मान
 निया मन मोहनि हो, पाठा फीर्यारे मुणंद ॥ रु० ४ ॥ एको गहिल गेमरानी हो, राचे रूप रसाल रु० ॥ सव वीधी
 सुंदर नारिना हो, होसे कवण हवाल ॥ रु० ५ ॥ चंद समावे तापने हो, ए जग प्रगटि रीत रु० ॥ लहे ताप जग
 चढी हो, एतो अति विपरीत ॥ रु० ६ ॥ सुर कह्यो उद्योतमे हो, जोरे करे अंधार रु० ॥ सुर नहि ए साचलो हो,
 राहु तणो अयतार ॥ रु० ७ ॥ नाव करीठे निरमे हो, पावण परले पार रु० ॥ जो बोले जलधारमे हो, तो कुण
 राखणहार ॥ रु० ८ ॥ अजरामर कारी कह्यो हो, आठा अमृत पान रु० ॥ कुण वरुतण वाधवो हो, करता जगनो
 जान ॥ रु० ९ ॥ दिठे दरसण साधुने हो, संजम गुणनो पोख रु० ॥ जोरे असंम उपजे हो, तो ए मोठो दोष ॥ रु०
 १० ॥ जाणी लान विशेषी हो, साह करे व्यापार रु० ॥ त्रोट्टे जेति रचे नहि हो, पावे नाम गेमर ॥ रु० ११ ॥

आज पत्नी वस्ती विषे हो, मेनावेवो एह रु० ॥ किथो निश्रे आकरो हो, जंगल साथे नेह ॥ रु० १ १ ॥ उःकर तप
 करणी करे हो, समता रुपी होइ रु० ॥ वनमांहि आहारानि हो, करे गवेषण सोइ ॥ रु० १ ३ ॥ मास षमण करतो
 जला हो, सावि महा सुखकार रु० ॥ पांच खमण पण एटला हो, चोचोमासी सार ॥ रु० १ ४ ॥ पुढि अपुढि राखके
 हो, बेसे ध्यान अनुप रु० ॥ मतिको देखे खंचरी हो, मोहे माहरे रुप ॥ रु० १ ५ ॥ अभृतवाणी वीशेषथी हो, विधीसुं
 दीए उपदेस रु० ॥ वाधसंध प्रतिबोधीया हो, हींसा तजेरे अपसेस ॥ रु० १ ६ ॥ हिरण एक हरख्यो खरो हो, सेवा करे
 सुजाण रु० ॥ साथे फरे जीम खेलणा हो, पाम्यो पुन्य प्रमाण ॥ रु० १ ७ ॥ एक दिवस रथ कारने हो, जाणी जोजन योग
 रु० ॥ साधु पथारथा वोरवा हो, मलीयो सुन संजोग ॥ रु० १ ८ ॥ वोहोरावे रथकारजी हो, वोहेरे श्री रुषीराय रु० ॥
 जावना जावे हिरणलो हो, धर्मी पोहोति आय ॥ रु० १ ९ ॥ तुटि साख्या तरुतणि हो, चंपाणा ते तिन रु० ॥ स्वर्ग
 पंचमें देवता हो, सुर सुखमें लयलिन ॥ रु० १ १० ॥ ए गुण तेरसोमी ढालमे हों, राम रुपी निरवांण रु० ॥ श्री गुणसागर
 सुरजी हो, किजे संघ कल्याण ॥ रु० १ ११ ॥ दोहा राम रुपी सुरगति लहि, तपतणो परकार; दान गुणे रथकारजी,
 भृगलो वनो विचार ॥ १ ॥ ढाल १ ७० मी ॥ आजतो आणंद वथामणा, दिवा रुषन्न जीणंद ॥ ए देशी ॥
 साधु कहे जावि सांजलो, एहनो एह विचार; दान सीयल तपने विषे, जावननो अधीकार ॥ १ ॥ जगमें मोटो
 जावनां, जावो हृदय मोजार; जाव थकी नवनीधीतरे, पामे जवनो पार ॥ ज० १ ॥ लुणविन्धा जीम रसवती,
 जोजनविण तंबोल; दानविना कमला जीसी, साचविना जीम बोल ॥ ज० ३ ॥ कंधविना जेम कामनी, सीलविना

सण्णार, पुत्रवीना घर आंगणो; रायविना दरवार ॥ ज० ४ ॥ करणी तिमवण जावनां, न लहे सोच लगार; नार
 पकि चारे धनो, जाव वनो संसार ॥ ज० ५ ॥ दांन नाम धनधी हुवे, शिलरो केवो चित्त; तप करी काया सोसवि
 नावे न लागे वित्त ॥ ज० ६ ॥ श्री मरुदेवि स्वांमिनी, आदिनाथनी मात; नाव वले नवजल तरी, ए प्रगढ्यो अत्र
 वात ॥ ज० ७ ॥ श्री नरते सर जावनां, जावे ते केवल लाथ; तिमही आत पटोधरां, जावन जोर अग्राथ ॥ ज०
 ८ ॥ पुत्र एजाची जोड्यो, किण विध सारया काज; एम छटांत अनेकजी, परतप्य दिसे आज ॥ ज० ९ ॥ ड्य
 जामण जावना, कांजी क्षूड प्रणाम; जावनावे नव नासनी, दाज घणो विण वाम ॥ ज० १० ॥ शितेर सोमी ढालमे
 नाव कियो शिरदार; श्री गुणसागर न्यायए, हिरण लहो पद सार ॥ ज० ११ ॥ दोहा ॥ जरत कुमर जाइ
 कह्यो, जुवा नाइयां साथ; विदंसण दारामति, काल कियो जगनाथ ॥ १ ॥ ए आचर्ण हरी कंठनो, आप्योठे धरी
 नेह; जुवाजी हवे आजयी, आसम करशो एह ॥ २ ॥ ढाज १७१ मी ॥ नायकनी ॥ प्राग्य प्रवल नृप चंद-
 नेरे ॥ ए देशी ॥ कुंति कालज कापीयोरे, धरणी पनी ततकालेरे माय; ड्य नरती अति रोवतिरे, विलवेता अस-
 रालेरे माय ॥ कु० १ ॥ हाहा ए खुं निपनुरे, अणचितव्युं वली आमरे माय; नाइ नामे घणुं पामतारे, शितलता
 अन्निरामरे माय ॥ कु० २ ॥ हरी हलधरनी सरतिरे, मुरती अयर न कोपरे माय; मरदा नामरदां सिरेरे, एह अय-
 स्था होपरे माय ॥ कु० ३ ॥ इंछुरी दारामतिरे, सयलाही जगनो साररे माय; कनकमय सुर निरमडरे, जडी वडी
 दुइ वाररे माय ॥ कु० ४ ॥ गुण संनारो एहनार, निरमल गंगा निरेरे माय; हरकुवण लागी छिपेरे

नार; करसणनी आजीवकाजी, आपदनारे नंभार ॥सा० १॥ सुरतिने? सातनुं३ जाणीइजी, देवने३
 गुण; नामे सुनद्रक ५ पांचमोजी, त्रितातणो मंभाण ॥सा० ३॥ श्री जसोधर गुरु पापतीजी, लीधो संजम
 शोर; सुमति गुपति व्रत पालतांजी, महियल करेरे विहार ॥सा० ४॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेर
 आचार; साख कला करी आगलाजी, आगला धर्म वीचार ॥सा० ५॥ सुरति करथो कनकावलिजी, रतनावलिय
 विसेप; सातनुं सुरी सुगतावलिजी, सुमति तणो तप देष ॥सा० ६॥ सिंहनि केनी न साचव्योजी, आंबिल तप वृ-
 धमान; साधु सुनद्रनो जाणवोजी, ए तप पंच प्रथान ॥सा० ७॥ मास सनेहेण विधी करीजी, स्वर्ग अनुतर पाम;
 एतुम्ह आंविने उपनाजी, पंचहि पांभव नाम ॥सा० ८॥ एम सूणि व्रत आदर्योजी, परीकृतने देइ राज; पंच मुनी-
 सर मोटकाजी, सारे३ आपणां काज ॥सा० ९॥ मात कुंताने छुपदिजी, चारीत्र लियो तेहीवार; कर्मपद्वे तिम
 धर्मनेजी, पद्व तजी नहि लार ॥सा० १०॥ तुंहेंतेर सोमी ए ढालमेजी, पांभवनारे वैरग; श्री गुणसागर साधसेजी,
 मुनिवर मोदुनो माग ॥सा० ११॥ ॥दोहा॥ जगजीवन जगवबलु, जगतपति जगप्रतिपाल; विचरेठे महिमंम-
 ले, श्री जिन नेम दयाल ॥१॥ नेम दयाले देवता, सुरीपुरी उद्यान; रेवतकाचल मस्तके, हार मनाइ जाए ॥३॥
 जरासंधना युयमें, जरा व्यापना काल; दल रोकी सहु राषिया, चुप अपुवो वाल ॥३॥ दहनकाले द्वारामति, जोजीन
 होतो मांहि; तो द्विपायन द्वारिकां, वालि न सकतो प्रांहि ॥४॥ गुण अनंत भगवंतना, कहिता न आवि अंत; ग-
 गनमवे कुण आंगुला, गाढो विद्यावंत ॥५॥ ढाल ३७४ मी ॥ धन धन सीयल सीरोमणी ॥ ए देशी ॥ धन३

हनुमता खर आयो ॥ ए देशी ॥ समजे हो तुम्हे नवी प्राणी, ए जगत विणां शिजाणी; श्री जिन
 चटके जिम गिरी टोला ॥ स० १ ॥ त्रिवीध वातां वैरागो, नोग नयंकर नागो; नोगे जुल्या जे चोला,
 करी पुरी ॥ स० ३ ॥ चिंहुं गती मांहे नर गाढो, रूखतान विहुड ताढो; पहीरण खाण अयुरी. रोग विथा
 दोलत पाये ॥ स० ४ ॥ त्रिकर्ण सुध राखी जे, करणीना फल चाखी जे; आवमदानो परीहारो, करतां नवनो
 विकथा चारु निगारी, पांम्या प्रजुता चारी; विकथा चाहीनो करनी, सवलाए नांखे सरनी ॥ स० ६ ॥
 लथा विगुता, हिंमेठे एहां हुता; साता साते फरशीजे, तजीया शिव दरशीजे ॥ स० ७ ॥ विस नवी
 अपजमथी अति मरीए; दिन डुखी उथरीए, पुन्ये करी घर नरीए ॥ स० ८ ॥ पाप अढारे परीहरीए,
 समाणी; समता केरी सहनाणी, पांम्य पांचा सोहाणी ॥ स० १० ॥ बुतेरा सोमी ढाले, पांम्य पाप पखाले; सुरि
 गुणसागरजी साचो, श्री जिनमत हिरो जाचो ॥ स० ११ ॥ दोहा ॥ सदगुरु केरी देशनां, दुध सरिखी जाण;
 पुंटर पिथी पांम्या, पुठे जोमी पाण ॥ १२ ॥ पूर्वजयंतरनी यली, नांखो श्री गुरुराज; नयसायने तारवा, तुम्ह यम
 सफरी जीहांज ॥ १३ ॥ ढाल १०३ मी ॥ विरे यखाणी राणि चेलणाजी ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नृप सांचलो
 जी, पुयं नयंतर वात; पांचहि तुम परचव तणाजी, धुरथी सुणो अयवदात ॥ सा० १ ॥

पंच सहोदर सार; करसएनी आजीवकाजी, आपदनारे जंमार ॥सा० ३॥ सुरतिने? सातनुंश जाणीइजी, देवनेइ
 सुमति सुजाण; नामे सुनद्रक ५ पांचमोजी, त्रितातणो मंभाण ॥सा० ३॥ श्री जसोधर गुरु पापतीजी, लीधो संजम
 नार; सुमति गुपति व्रत पालतांजी, महियल करेरे विहार ॥सा० ४॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणरे
 आचार; साख्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म वीचार ॥सा० ५॥ सुरति करथो कनकावलिजी, रतनावलिय
 विसेप; सातनुं सुरी मुगतावलिजी, सुमति तणो तप देष ॥सा० ६॥ सिंहनि केमी न साचव्योजी, आंबिल तप वृ-
 धमान; साधु सुनद्रनो जाणवोजी, ए तप पंच प्रधान ॥सा० ७॥ मास सजेहण विधी करीजी, स्वर्ग अनुतर पाम;
 एतुम्ह आंविने उपनाजी, पंचहि पांमव नाम ॥सा० ८॥ एम सूणि व्रत आदरथोजी, परीकृतने देइ राज; पंच सुनी-
 सर मोटकाजी, सारेइ आपणां काज ॥सा० ९॥ मात कुंताने डुपदिजी, चारीत्र लियो तेहीवार; कर्मपदके तिम
 धर्मनेजी, पदक तजी नहि लार ॥सा० १०॥ तुहंतेर सोमी ए ढालमेजी, पांमवनेरे वैराग; श्री गुणसागर साधसेजी,
 मुनिवर मोदुनो माग ॥सा० ११॥ ॥ दोहा ॥ जगजीवन जगवठलु, जगतपति जगप्रतिपाल; विचरेछे महिमं-
 ले, श्री जिन नेम दयाल ॥१॥ नेम दयाले देवता, सुरीपुरी उद्यान; रेवतकाचल मस्तके, हार मनाइ जाण ॥३॥
 जरासंधना युधमें, जरा व्यापना काल; दल रोकी सहु राषिया, नुप अपुठो वाल ॥३॥ दहनकाले द्वारामति, जोजीन
 होतो मांहि; तो द्विपायन द्वारिकां, बालि न सकतो प्रांहि ॥४॥ गुण अनंत जगवंतना, कहिता न आवे अंत; ग-
 ननमवे कुण आंगना गढो विद्यावंत ॥५॥ ढाल १७४ मी ॥ धन धन स्तीयल सीरोमणी ॥ ए देशी ॥ धन ३

म जीनेसरु, धन३ यादव वंस उदारतो; पुरुष रतन जाहां उपना, तेतो त्रीचुवननां शीणगारतो ॥ ध० १ ॥
 णा प्रनु तारीयां, तारी३ राजेमति वर नारतो, पहिली मुगते मोरुली; जाणुं३ राखे ठाम समारतो ॥ ध० २ ॥
 नेती पालवी, गाढि३हे कावी जगमें जोयतो, राजुज साथे नेमजी; ठेहा ठेहे हेनिवाहि सोइतो ॥ ध० ३ ॥ कां
 नय कां सुरनये, कांरे मनोहर मुगति मोजारतो; सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न करी एक लीगारतो ॥ ध० ४ ॥
 प्रारज देश अनारजे, विचरां हे स्वामी करत विहारतो; प्रतिबोध्यां नविजन घणां, केइ समकित केइ वृत धारतो
 ५ ॥ जाणी समो निरवाणनो, स्वामी आब्या हे गढ गीरनारतो; दिधी ठेली देशनां, जीव घणांना काम सम
 ६ ॥ पंच सया पट तिसस्युं, संथारो हे कियो सुविसालतो; शोग धरंता सामटा, आया इंड्र हे चलि तत
 ७ ॥ स्वामी पधारया शीवपुरी, जनम जरानो हे प्रभु आण्यो अंततो; झानादिक वर आठस्युं, सीधग
 ८ ॥ संस्कार काया न्रणि, चंदन कांवे हे कियोठे तामतो; माढा लीधी सुरपतिए, सु
 ९ ॥ द्वीप गया नंदिस्वरे, आठ दिवस हे उठव अधीकार तो; हरी पोहत
 १० ॥ श्री जीवन गुण सारतो ॥ ध० १० ॥ श्री गरिनारे जीन तणा, दिव्या नाण हे अने नीरद
 ११ ॥ ते माटे हे ए स्थानक प्रथानतो ॥ ध० ११ ॥ नेम जीणंद आणंदमें, जय३ हे जीनवर जन
 १२ ॥ कथाणीक तिने नंजां, ते माटे हे ए स्थानक प्रथानतो ॥ ध० १२ ॥ चिमोतेर सोमी ढालमें, नांख्यो नांख्यो
 १३ ॥ गणसागरहे सुरी साधु सुजाणतो ॥ ध० १३ ॥ दोहा ॥ पांम

महामुनी, बढी कुंता माय, पंचाली ए सातांह, तप करी सोसे काय ॥१॥ गुण आचारे आंगलां, उःकर उःकर कार; चरम शरीरी प्राणीयां, पुनरपी नही अवतार ॥२॥ ढाल १७५ मी॥ ते मुनी वंदो ते मुनी वंदो ॥ ए देशी ॥ आणी अमा पांमव पंचसुहा वंदा, सुहा वंदारे सुहा वंदा; महासुनी सर कहां वंदा, धन आंगणे जिहां आवंदा, एहां मोती शाल वधा वंदा ॥सु० १॥ गांस नगर पुर पाटण विचरे, भवी नरांसन भावंदा; ज्ञान ध्यान शुं तत्व पिढानी, एकांतम समजा वंदा ॥ सु० ५ ॥ राग द्वेप दो डुर निवारी, त्रिकर्ण सुथ करा वंदा; अ्यार कषाय तजण चतुराड, इंझी पांच दमा वंदा ॥ सु० ३ ॥ पिहरीया खट काया केरा, नय साते नवी आणंदा; मद आवे परीहरी नव विध, सियल सदा सुष जाणंदा ॥सु० ४॥ दसही प्रकारे धर्म धरंदा, इग्यारे अंग पठा वंदा; वारे निक्षु प्रतीमा पाले, क्रिया तेर तजा वंदा ॥ सु० ५ ॥ चउदे जेहे जिव विचारी, कोमा कारज सारंदा; जंगम तिर्थ जिवन जगनां, आप तेरे परतारंदा ॥सु० ६॥ हती कल्पपुर वनमें आया, वहीरण साधु खंदा वंदा; मोदक कल्याणीक नेम तणो सुणी, शेनुंजे सिधा वंदा ॥सु० ७॥ अठार हजार मुनी परिवारे, संधारो गहा वंदा; माताजीशुं पांचे पांमव, केवल मोदक लहा वंदा ॥ सु० ८ ॥ अवर मुनीवर केइ मुगति, केइ स्वर्ग वसा वंदा; शेष कर्म बाकी सोधतने, सुर सुखनो चित जावंदा ॥सु० ९॥ पंचाली पंचम सुर लोके, नवही मांही रहा वंदा; अणगमतो आहार दियाथी, अज हुपार न पावंदा ॥ सु० १० ॥ नारद रुपी विधी वात करीने, निश्चल मन फरसा वंदा; पाप पखाली अणसण पाली, सिव गतिनु दरसा वंदा ॥सु० ११॥ पंच्योतेर सोमी ढाले, पांमव शिव पद पावंदा; श्री गुणसागर सुरी उजागर, नागर

गरु गुण गांवा ॥ मु० १३ ॥ ॥ दोहा ॥ संघ चतुरविय तिर्थमें, शांतिनाथ दातार; धुलनछ आचारमें, मंत्रमें न-
 रकार ॥ १ ॥ मलीमां मणी चिंतामणी, ग्रह गणमें दिनकार; श्री गौतम गुरु गणहरा, तरुमें सुरतरु सार ॥ ३ ॥ सुर
 मांदि जिम सुरपती, नरमें नरपती जेम; वंसांमें हरी वंसजी, विख वदीतो तेम ॥ ३ ॥ ढाल १७६ मी ॥ श्रेणीक
 रायदुरे श्रनाथी निग्रंथ ॥ ए देशी ॥ ॥ में गायो श्रीहरी वंश उबार, सरीयारे मनवंठित काज में ॥ पामी परसंसा
 खरी, अधिकाइरे उपनी आज ॥ में १ ॥ वारे दसमा जिन तणे, वंस ए उतपन; में ० विस्तरी साखा घणी, कांइ हुयारे
 बहु पुरुप रतन ॥ में ० ३ ॥ अपर नाम सोह्यामणो, नृप यछथी जोय; में ० राय जादय राजीया, कांइ पुहवारेपर सिथा
 सोय ॥ में ० ३ ॥ विसमो बाचीसमो, ए वंशे जिणंद; में ० उपजीया आणंद, कांइ आयारे तिहां चोसठ इंच ॥ में ० ४ ॥
 कश्ने वज्रदेवजी, वंसमें अयतंस; में ० वासी नगरी द्वारीहां, कांइ किधारे अरि कुल विदंस ॥ में ० ५ ॥ माल फइयाइ
 जाइ जना, धर्म नंदने निम; में ० सक सुत शोना धरी, कांइ पोद्धीरे पौरखनी शिम ॥ में ० ६ ॥ सांब अने परजुननां, बल तणो
 नही पार; में ० एक एकाथी वनां, कांइ अगणीतरे हरी वंशकुमार ॥ में ० ७ ॥ इंचनगरी द्वारिकां, द्वारिकां पण सोइ; में ० ठपमा
 सरखी सही, कांइ अंतररे नदिसे कोइ ॥ में ० ८ ॥ नित हरख विनोदमें, नित हरख विलास; में ० द्वारीकां नगरी तणो
 कांइ नित्य कोरे बाथतोरे वास ॥ में ० ९ ॥ नित्य सुत जनमोवुं, नित्य सुत निसाल; में ० नित्य सुत परणेतना,
 कांइ ठरीणरे घरथ कट्याण ॥ में ० १० ॥ खेज खेजनां खरा, बुधरा घमकार; में ० धोक धपमप मादला, कांइ वाजेरे चार्जीत्र
 उपार ॥ में ० ११ ॥ फिजीण लीन मेयनां साध जगती अणार; में ० जही चावे जायनां कांइ जावियारे जन नाव

उद्धार ॥ में० १३ ॥ प्रथम भाव प्रज्ञावनां, परम पुन्य प्रकाशः, में० श्रीफलां श्री कारणी, कांइ पुगिरे पुगी मन आश ॥
 में० १३ ॥ नारी निकां शोजती, पहेरीयां पटकोलः, में० तनु सोल शृणगार करी, कांइ बोलेरे मुख मीठा बोल ॥ में० १४ ॥
 रंगरोल कचोलभा, थाले मोती सारः, में० करे सुगुरु वधामणा, कांइ वरतेरे जीनमत नीवार ॥ में० १५ ॥ आज अबे
 दिवालिका, नारी जाक जमालः, में० आज परव पजुसणां, कांइ किजेरे उठव सुविसाल ॥ में० १६ ॥ मीले साहमी
 सामटा, साहमीणी सुविचारः, में० धवल मंगल ब्यारसुं, कांइ जण जणरे जयशकार ॥ में० १७ ॥ गठ स्वगठ परिमांण
 स्युं, विजयवंत विशेषः, में० श्री विजय गठ राजीया, कांइ दिपेरे गुरु धर्म नरेश ॥ में० १८ ॥ विजयरुपी विद्याबली, धर्म
 दास मुनिशः, में० द्विमासागर खेमजी, कांइ जेहनिरे जगमांहि जगिश ॥ में० १९ ॥ पद्मसागर सुरजी, सुजसश नरपुरः,
 में० पाय प्रणमी प्रजु तणां कांइ पनयेरे गुणसागर सुर ॥ में० २० ॥ सवंत सोल बहुतेरे, मास श्रावण शुधः, तिज सोम
 सुसुरतां, कांइ वासररे वारु अचिरुध ॥ में० २१ ॥ कुर्कटस्वर नगरमें, पास स्वामी पसायः, संघने उठकपणे कांइ,
 रचियेरे में चरीत सुनाय ॥ में० २२ ॥ ढालसागर नाम ए, श्री हरिवंसनो विस्तारः, सुधजावे सांचले, कांइ पामेरे
 सुख संपति सार ॥ में० २३ ॥ एकसो हुंतेर ए, ढालनो सो नागः, आदे तो आशावरी, कांइ अंतरे धनासी राग ॥
 में० २४ ॥ जब लग गीरी मेरुजी, सकल गीरीवर इसं; तब लगे हरीवंश ए, कांइ धाज्येरे थीर विश्वाविस ॥ में० २५ ॥
 ॥ कलस ॥ हरीवंस गायो सुजस पायो, ज्ञान बुधी प्रकाशनो; पाप त्रावो गयो नावो, पुन्य आयो आशनो ॥ १ ॥
 कर्ण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुणत सोह्यामणो, पुज्य श्री गुणसुरी जंपे, संघ रंग वधामणो ॥ २ ॥ ६३ ॥ ६३ ॥

॥ शार्ङ्गल विक्रीडित वृत्तम् ॥

श्रीमत्साधु शिरोमणे बुधजना लंकारः
३ युक्तस्यापि च सप्तविंशति गुणैर्नैर्द्रव्यैः
साहचर्यान्मुनि दीपचंद्र सुगुरोः सद्बोधिः
प्राग्द्वयाय च ढालसागर इति ग्रंथेयम् ॥

